विज्ञापन

गूजरातपुरातत्त्वमन्दिरनी ग्रन्थ समितिना संवत १९७९ ना भाद्रवा वद १३ नी बेठकना ठराव १ (परिशिष्ट १) मुजब आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामा आवे छे

गूजरात विद्यापीठ कार्यालय,
अमदावाद.
आसो वद १२ सं० १९८१ } प्रकाशक

प्रवेश

प्राकृतव्याकरणना शिक्षक अने शिष्य माटे आ पुस्तकना परिचय पूरती थोडी माहिती आ प्रमाणे छे

अहीं नीचेना चार मुद्दाओ विषे क्रमवार लखवानुं छे–

१ रचनाशैली
२ प्राकृतभाषा
३ अर्धमागधी भाषा
४ प्राकृतभाषाना व्याकरणो

१ रचनाशैली

आचार्य हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणने सामे राखीने आ पुस्तक लखवामां आव्युं छे पण क्रमने फेरववामां आव्यो छे. हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणमां सौथी पहेलां प्राकृतभाषानुं व्याकरण आपेलुं छे अने पछी क्रमे शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने छेल्ले अपभ्रंशनुं व्याकरण आपवामां आवेलुं छे त्यारे प्रस्तुत पुस्तकमां ए बधा व्याकरणोने साथे साथे समाववामां आव्यां छे एटले आ पुस्तकमां प्राकृतनुं व्याकरण आपतां जे जे नियममां शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने अपभ्रंशनी विशेषता होय ते पण साथे साथे–प्राकृतभाषाना नियमनी साथे–ज आपवामां आवी छे. जेमके,

प्राकृतमां साधारण रीते क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने व नो लोप थाय छे (जूओ पृ० १०) आ नियम आपवानी साथे ज तुलना थइ शके ए दृष्टिए एम पण जणाव्युं छे के, शौरसेनीमां 'त' नो 'द' थाय छे, मागधीमां 'ज' नो 'य' थाय छे, पैशाचीमां 'द' नो 'त' थाय छे अने अपभ्रंशमां 'क' नो 'ग' थाय छे (जूओ पृ० १२ अने १३)

आ रीते वर्णविकारने लगता बधा नियमोने आपवामा आव्या छे नियमोमा सौथी पहेला सर्व साधारण नियमोने आपवामा आव्या छे अने पछी विशेष (आपवादिक) नियमोने मूकवामा , आव्या छे नाम अने आख्यातना प्रकरणमा प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना रूपोनी साधना बताव्या पछी क्रमवार प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना रूपोने मूकवामा आव्या छे अने केटलेक ठेकाणे ए बधा रूपोने साथे साथे एक ज ओळमा पण मूकेला छे (जूओ पृ० १२५–१२६–१२८–१२९–१३०–१३२–१३३ नामप्रकरण अने पृ० १४१ तथा पृ० २९१ आख्यात प्रकरण)

खास विशेषता (विशेषताओने टिप्पणमा मूकेली छे)

(१) पालिनी साथे सरखामणी

प्राकृतभाषाना वर्णविकारना नियमोने पालिभाषाना वर्णविकारना नियमोनी साथे सरखाववामा आव्या छे अने केटलेक स्थळे तो पालि शब्दोने पण मूकवामा आव्या छे (पालिशब्दो माटे जूओ पृ० ८–१५–१८ वगेरे) *

नामना, धातुना, कृदतना अने तद्धितना रूपोने पालिरूपोनी साथे मूकवामा आव्या छे अने केटलीक जग्याए पालिना प्रत्ययो आपीने पण सरखामणी जणावी छे (प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४८ अने ३२४) संधिप्रकरणमा अने बीजे पण समवित स्थळे सरखामणी माटे पालिना नियमोने आपवामा आव्या छे. एकदर रीते पालिनी अने प्राकृतनी सरखामणी सविस्तर दर्शाववामा आवी छे अने ते एटला ज माटे के, प्राकृतनो अभ्यासी साथे साथे पालिने पण सर्वांशे शीखी शके

(२) वैदिक संस्कृत अने प्राकृतनो संबंध

जूनामां जूना वररुचिथी छेक छेल्ला मार्कंडेय सुधीना बधा प्राकृतव्याकरणकारोए प्राकृतरूपोनी साधना माटे लौकिक (वैदिकेतर) संस्कृतनो ज उपयोग करेलो छे, तदनुसार आ पुस्तकमां पण ए ज शैलीने मान्य राखवामां आवी छे. परंतु अत्यारना विपुल साधनोथी एम जणाय छे के, प्राकृतभाषानो संबंध वैदिक संस्कृतनी साथे पण छे (जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० १९४–२०९) तेथी प्राकृत रूपोनी साधना माटे वैदिक शब्दोने पण मूळभूत राखवा ए, सरखामणीनी दृष्टिए विशेष अगत्यनुं छे आ वातने सूचववा वैदिक संस्कृतने मूळभूत राखीने पण सरखामणी करवामां आवी छे. (जूओ पृ० ४९–९४–२०९)

प्राकृतना एवा तो घणा य नियमो छे जे वैदिक संस्कृतना रूपो साथे मळता आवे छे,

[जेमके, अन्त्यव्यंजनलोप (जूओ पृ० १० नि० १)

वैदिकरूपो

पश्चा (पश्चात्)

उच्चा (उच्चात्)

नीचा (नीचात्)

युष्मा (युष्मात्)

देवकर्मेभि (देवकर्मभि)

आ बधा वैदिक रूपोमां अन्त्यव्यंजननो लोप थएलो छे

'र' 'य' नो लोप

(जूओ पृ० १९ नि० ५ तथा पृ० १५ नि० ४)

अप्रगल्भ (अप्रगल्भ)

तृच (त्र्यृच)

पेला रूपमां 'र' नो अने बीजामां 'य' नो लोप थएलो छे

संयुक्तनी, पूर्वे ह्रस्व (जुओ पृ० ४ नि० १)
रोदसिप्रा (रोदसीप्रा)
अमत्र (अमात्र)
'ऋ' नो 'उ' (जुओ पृ० ७ नि० ८)
वृन्द (वृन्द)
'द' नो 'ड' (जुओ पृ० ६८-६९ द-विकार)
दुदम, दूडभ
पुरोदाश, पुरोडाश वगेरे.

उपर्युक्त उदाहरणोना वैदिक स्थळो माटे अने विशेष उदाहरणो माटे जुओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० २०३ थी २०८]

पण पुस्तक वधी जाय अने प्रवेश करनारने कठण लागे एथी ए बधा नियमोने अहीं नथी आपवामां आव्या.

(३) आदेशो करवा करतां मूळ शब्द उपरथी ज विकृत शब्दने बताववो

जूना वैयाकरणोए संस्कृत शब्दोना आदेशो करीने प्राकृत शब्दो बनाववानी रीत स्वीकारी छे पण भाषानुं ऐतिहासिक अने शास्त्रीय दृष्टिए निरूपण करवुं होय तो जे जे शब्दोनी सरखामणी करी शकाती होय त्यां आदेशो करवा करतां ए मूळ शब्दोना ज उच्चारणजन्य वर्णविकारोने बताववा जोइए. जेमके,

'ओल' सूचक प्राकृत 'ओलि' शब्दनी साधना माटे नकामुं, आळसु, निरर्थक, प्रामाणिक, वींछी, मधमाखी, सखी, श्रेणि, लीटी, पुल, डको अने कुल एटला अर्थमां (अर्थो माटे जुओ आप्टेनो कोश) वपराता 'आलि' शब्द उपरथी 'पंक्ति' अर्थमां 'ओलि' बनाववानी सरखामण करवी ए करतां 'पंक्ति' अर्थवाळा

ज 'आवलि' शब्दना 'आउलि' 'ओलि' रूपो बतावीने 'ओलि' शब्द बनाववानी रीत ऐतिहासिक अने भाषाशास्त्रनी दृष्टिए वधारे सुसंगत लागे छे.

'सूक्ष्म' ना 'ऊ' नो 'अ' करीने 'सण्ह' रूप बनाववा करतां 'श्लक्ष्ण' नुं सहज भावे थतुं 'सण्ह' रूप ज अधिक संगत लागे छे.

आम करवाथी उच्चारणोथी थता क्रमिक वर्णविकारो कळी शकाय छे अने व्याकरणमा आवतो गौरवदोष पण अटकी शके छे.

आ हकीकत अहीं मात्र एक उदाहरण द्वारा ज दर्शाववामां आवी छे (जूओ पृ० ९४)

(४) आगमोनां नहि सधाएलां रूपोनी साधना

जैन आगमोनां केटलांक रूपो जे अत्यार सुधी अणसाध्यां हतां तेने पालिभाषाना रूपो द्वारा साधवानो प्रयत्न करवामा आव्यो छे (जूओ पृ० १३६ अने २६४)

२ प्राकृतभाषा

शौरसेनी अने मागधीनुं क्षेत्र एना नाम उपरथी ज जाणितुं छे. पैशाचीनुं क्षेत्र—

" पाण्ड्य–केकय–बाल्हीक–सिंह–नेपाल–कुन्तलाः ।
सुधेष्ण–भोज–गान्धार–हैव–कन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् " ।

(षड्भाषाचंद्रिका पृ० ४ श्लो० २९–३०)

आ श्लोकमां जणावेलुं छे. साधारण प्राकृत अने अपभ्रंशनुं क्षेत्र व्यापक छे एटले ए माटे कोई देशने निर्देशी शकाय नहि.

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छे १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत.

[१ जेनी व्युत्पत्तिमो वधारे संबंध बन्ने प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत.

२ संस्कृतनी जेवु प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत.

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे.

" चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलमूले विभावरी परिहीणा " ॥ १ ॥

(*भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे

" रे म्वेआलुअ रोसल इमाण ल्होट्टीण मज्झमावडिओ ।
उट्टिस्समि घइ व तुमं अकुडिओ टक्कराहि कुडं " ॥

(देशीनाममाला पृ० ९८ श्लो० ६५]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतुं छे. बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनुं प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न बनेलु होवाथी आमां तेनु निरूपण करवु योग्य धार्यु नथी एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देशी भाषाना कोशोथी ज चलावी लेवुं पडे एम छे.

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषाओनु व्याकरण लखतां आमां क्याय अर्धमागधी विषे लखवामां नथी आव्युं, एथी कोई एम तो न ज समजी ल्ये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी.

---

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमां समसंस्कृतप्राकृतनां आवां अनेक काव्यो छे, आ सर्गनु नाम ज 'भाषासमावेश' छे.

જૈનસૂત્રોમાં કેટલેક ઠેકાણે અર્ધમાગધીને ભાષા તરીકે જણાવી છે અને સાથે એમ પણ કહેવામાં આવ્યું છે કે, 'ભગવાન્ મહાવીર અર્ધમાગધી ભાષામાં ઉપદેશ કરતા હતા.'

અર્ધમાગધીને લગતા જૈનસૂત્રોના ઉલ્લેખો આ પ્રમાણે છે

"भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवाय–अंगसूत्र पृ० ६० समिति)	"ભગવાન્ અર્ધમાગધીભાષા-દ્વારા ધર્મને કહે છે."
प्र०—"देवा णं भंते कयराए भासाए भासंति? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति?	"હે ભગવન્! દેવો કઈ ભાષામાં બોલે છે? અથવા બોલાતી ભાષામાં કઈ ભાષા વિશિષ્ટ છે?
उ०—गोयमा! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सा वि य णं अद્धमागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ" (भगवती—अंगसूत्र श० ५ उ० ४ पृ० १८१ प्रश्न–२० राय० अने समिति पृ० २३१ सू० १९१)	હે ગૌતમ! દેવો અર્ધ-માગધીભાષામાં બોલે છે અને બોલાતી ભાષામાં પણ તે જ ભાષા—અર્ધ-માગધીભાષા—વિશિષ્ટ છે."

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छेः १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत.

[१ जेनी व्युत्पत्तिभो घणोरे संबंध वधे प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत.

२ संस्कृतनी जेवुं प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत.

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे.

" चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलमूले विभावरी परिहीणा " ॥ १ ॥

(*भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे:

" रे गेआलुअ खोसल इमाण खोट्टीण मज्झमावडिओ ।
छुट्टिस्ससि कह य तुमं अड्डहिओ टक्करादि फुडं " ॥

(देशीनाममाला पृ० ९८ श्लो० ६५]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतुं छे. बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनुं प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न बनेलुं होवाथी आमां तेनुं निरूपण करवुं योग्य धार्युं नथी. एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देशी भाषाना कोशोथी ज चलावी लेवुं पडे एम छे.

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषाओनुं व्याकरण लखतां आमां क्यांय अर्धमागधी विषे लखवामां नथी आव्युं, एथी कोई एम तो न ज समजी लये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी.

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमां समसंस्कृतप्राकृतनां आवां अनेक काव्यो छे. आ सर्गनुं नाम ज 'भाषासंनिवेश' छे.

जैनसूत्रोमा केटकेटले ठेकाणे अर्धमागधीने भाषा तरीके जणावी छे अने साथे एम पण कहेवामा आव्युं छे के, 'भगवान् महावीर अर्धमागधी भाषामा उपदेश करता हता.'

अर्धमागधीने लगता जैनसूत्रोना उल्लेखो आ प्रमाणे छे

" भगवं च ण अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ "
(समवाय–अगसूत्र पृ० ६० समिति)

" भगवान् अर्धमागधीभाषाद्वारा धर्मने कहे छे."

प्र०—" देवा णं भंते कयराए भासाए भासंति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?

" हे भगवन् ! देवो कई भाषामा बोले छे ? अथवा बोलाती भाषामा, कई भाषा विशिष्ट छे ?

उ०—गोयमा ! देवा ण अद्धमागहाए भासाए भासंति, सा वि य ण अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ "
(भगवती—अंगसूत्र श० ५ उ० ४ पृ० १८१ प्रश्न–२० राय० अने समिति पृ० २३१ सू० १९१)

हे गौतम ! देवो अर्धमागधीभाषामां बोले छे अने बोलाती भाषामा पण ते ज भाषा–अर्धमागधीभाषा–विशिष्ट छे."

" तए णं समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स भंभसारपुत्तस्स अद्धमागहाए भासाए भासति " (औपपातिक–उपाग-सूत्र पृ० ७७ समिति)	" त्यार पछी भगवान महावीर भंभसारपुत्र कोणिकने अर्ध-मागधीभाषामा धर्म कहे छे "
प्र०–" से किं तं भासारिया ?	" भाषानी दृष्टिए आर्यो कोने कहेवा ?
उ०—भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासंति " (प्रज्ञापना–उपागसूत्र पृ० ५६ समिति)	जेओ अर्धमागधीभाषामा बोले छे तेओने भाषानी दृष्टिए आर्यो समजवा "

आ उपरथी 'अर्धमागधी' ने भाषा तरीके अने 'महावीर अर्धमागधीभाषामा उपदेश करता हता' ए बन्ने वातो स्वीकारी शकाय एवी छे पण 'अर्धमागधी' ना भाषा तरीकेना उल्लेख मात्रथी ज कांइ एनुं व्याकरण लखी शकाय नहि.

व्याकरण लखवा माटे तो एना विपुल साहित्यने सामे राखवुं जोइए, जेथी बीजी भाषाओ करता अर्धमागधीनी जे खास खास विशेषताओ होय ते बधी साधी शकाय. कांइ बे चार रूपोनी विशे-षताने लीधे कोइ एक भाषाने बीजी भाषाथी जुदी पाडी शकाय नहि तेम ज बे चार रूपोने साधवा माटे जुदुं व्याकरण पण लखी शकाय नहि, जो फक्त बे चार रूपोनी ज विशेषताने लीधे एक

भाषाने बीजी भाषाथी जुदी गणावी शकाती होय अने एनुं व्याकरण पण लखी शकातुं होय तो भाषाओनो अने व्याकरणोनो अंत ज केम आवत ?

आ संबंधमां आचार्य हेमचंद्रनुं ज उदाहरण बस छेः श्री हेमचंद्रे प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना व्याकरणो लख्यां छे तेम साथे साथे आर्षप्राकृतने पण लीधुं छे. साधारण प्राकृत करता आर्षप्राकृतमा काइक विशेषता जरुर छे पण ते एटली नजीवी छे के, तेनुं जुदुं व्याकरण करवुं तेमने योग्य नथी जणायुं. आ ज कारणथी साधारण प्राकृतना पेटामा आर्षप्राकृतने पण एमणे भेळवी दीधुं छे.

हेमचन्द्र जेवा जैन वैयाकरण शौरसेनी, मागधी अने पैशाची जेवी प्रायः जैनेतर ग्रंथोमा वपराएली के नाटकीय भाषाओनुं व्याकरण लखवा प्रेराय अने जैनआगमोनी भाषानुं व्याकरण न लखे ए काइ अर्थविनानी वात नथी.

जैनपरंपरामा अर्धमागधीना साहित्य तरीके प्रसिद्धि पामेलुं समस्त-आगमसाहित्य एमनी सामे ज हतुं, ए विषेनो भाषानो अने भावनो एमनो अभ्यास पण गंभीर हतो छता य एमणे ए साहित्यने लगतुं एक जुदुं व्याकरण केम न लख्युं ? ए प्रश्न एमने माटे थवो सहज छे.

ए प्रश्ननो उत्तर आचार्य हेमचंद्रे पोतानी कृतिद्वारा ज आपी दीधेलो छे. आपणे जेम आगळ जोइ गया के, आर्षप्राकृतना जुदुं व्याकरण करवा जेवी खास विशेषता न जणायाथी जेम एने साधारण प्राकृतना पेटामा समावी दीधुं छे तेम आगमसाहित्यनी भाषामां पण ए बधे प्राकृतो करतां एवी विशिष्ट विशेषता न जणायाथी

एमणे ए भाषाने ए बन्ने प्राकृतोमा भेळवी दीधी छे अने ए ज कारणथी एनुं जुदुं व्याकरण करवा तेओ प्रेराया पण नथी.

एमना समयनुं वातावरण जोतां तो जरुर ए पाणिनिना वैदिक व्याकरणनी पेठे जैनआगमोनी भाषानुं पण व्याकरण लखवाने प्रेराया होत.

जैनपरंपरामां आचार्य हेमचंद्र ज एक एवा प्रतिष्ठापक पुरुष छे जेमणे जैनोनी साहित्यने लगती प्रतिष्ठा.साचववानो भगीरथ प्रयत्न सेव्यो छे. नवुं व्याकरण, नवुं छंदःशास्त्र, नवुं अलंकारशास्त्र, नवुं धातुपारायण, नवा कोशो, नवो निघंटु, नवुं पुराण अने नवुं योगशास्त्र वगेरे ए बधुं जैनोनी विशेषताने खातर नवुं नवुं लखवा छतां आगमोनी भाषाना ज प्रसंगमां एमणे वृद्धप्रवादनी सामे पण जे मौन बताव्युं छे ते ज आपणा ए प्रश्नना पूर्वोक्त उत्तर माटे पूरतुं छे.

वळी, आचार्य हेमचंद्र पोते एम पण मानता लागे छे के, आगमोनी भाषा अर्धमागधी तो जरुर कही शकाय पण जो एमां 'अर्धमागधी' नामने योग्य केटलीक विशेषताओ मागधी भाषानी पण भळेली होय. आ विशेषताओ तपासतां एमने तो फक्त मागधीनी एक ज विशेषता मुख्यपणे जणाणी छे. ते विशेषता-प्रथमाना एकवचनमां मागधीना 'ए' प्रत्ययनो प्रयोग. जेमके; जीवे, अजीवे, लोए, अलोए, आसवे, संवरे, बंधे, मोक्खे वगेरे. पण आ एक ज विशेषताने लीधे तेओ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी योग्य धारता नथी अने प्राकृत के आर्षप्राकृतथी जुदी पण गणी शकता नथी. माटे ज एमणे आगमोनी भाषाने माटे पोताना व्याकरणमां कोई खास स्थान आपेलुं नथी. साथे साथे एटलुं पण जणावी देवुं जोइए के, हेमचंद्रना

ध्यानमा आवेली ए एक विशेषता पण काइ आगमोनी भाषामा व्यापक रीते आवेली नथी, एमा तो 'ए'ना प्रयोगनी पेठे प्राकृतना 'ओ' प्रत्ययवाळा पण घणा रूपो–ते पण आचाराग जेवा प्राचीन सूत्रमा य–मळी आवे छे जेमके निक्खतो, उद्देसो, अप्पमाओ, निरामगधो, उवरओ, उवेहमाणो, आलीणगुत्तो, सहिओ, नाणागमो, सयवो, दोसो, हव्ववाहो, दुरणुचरो, मग्गो वगरे (आचाराग सूत्र पृ० ४१–१२४–१२७–१३०–१६९–१६८–१८३–१८४–१८९–१९०–१९२ समितितु) एमणे ज आ सबधमा एम जणाव्यु छे के, "प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" (प्रा० व्या० पृ० १६९ सू० २८७) अर्थात् "आर्ष प्रवचनमा प्राय मागधीना 'ए' प्रत्ययनु ज विधान छे, पण मागधीना बीजा बीजा लक्षणोनु नथी" आ उल्लेखमा वपराएलो 'प्राय' शब्द आगमोमा 'ए' प्रत्ययनी वपराशनो पण सकोच बतावे छे अने एथी ज एम जणाय छे के उपर्युक्त 'ओ' प्रत्ययनी वपराशनु आगमिक क्षेत्र पण काइ हेमचद्रना ध्यान बहार छे एम नथी

सार आ छे के, आचार्य हेमचद्रे पोताने उद्भवेला जैन आगमोनी भाषाने लगता प्रश्नो खुलासो आम बे रीते करी बताव्यो छे

एक तो जैन आगमोनी कहेवाती अर्धमागधीने पोतानी कृतिमा खास जुदु स्थान नहि आपीने बीजु, एमा जोइए तेटला प्रमाणमा मागधीनी विशेषताओ न होवानु जणावीने

'आ आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत के आर्षप्राकृत छे' एम स्पष्ट शब्दोमा कहेवा जेवु जैन समाजनु वातावरण अत्यारे पण नथी तो सप्रदाय भक्तिना बारमा सैकामा तो शी रीते होय? छता य एक जवाबदार अने प्रामाणिक वैयाकरण तरीके आचार्य

हेमचंद्रे उपर्युक्त सादी हकीकतने पण आगळ जणावेली भंगिए आबाद रीते जणावेली छे अने साथे वृद्धप्रवादना अनुसंधाननी युक्ति पण बतावेली छे. आ संबंधमा एमनो आखो उल्लेख आ प्रमाणे छे: "यदपि 'पोराणमद्धमागहभासानियय हवइ सुत्तं'[1] इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य"

(प्राकृत व्या० पृ० १५९ सू० २८७)

---

१. आ उल्लेख निशीथचूर्णिमा छे. जुओ लिखित प्रति पा० ३५२ पूना भा० प्रा० वि०म० स०. ए उल्लेखमाना 'अद्धमागह' शब्दनी व्याख्या करता श्रीजिनदास महत्तरे जणाव्युं छे के; "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अथवा "अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागधं" अर्थात् एमणे 'अर्धमागध' शब्दनी बे व्याख्या करी छे: पहेली— मगध देशनी अडधी भाषामा नियत ते अर्धमागध. बीजी—अढार जातनी देशी भाषामा नियत ते अर्धमागध

वर्तमान आगमोनी भाषामा पहेली व्याख्या तो घटती नथी एम हेमचंद्र पोते कहे छे.

बीजी व्याख्या पण जो आगमोनी भाषामा घटी शके तेवी होत तो जरूर तेने प्रधानपद आपी आचार्य हेमचंद्र ए विषे काइक जुदुं लखत अने ए रीते वृद्धप्रवादनु ज समर्थन करत. पण ए प्रखर वैयाकरण ए व्याख्या तरफ उदासीन रह्या छे, एथी जणाय छे के, ए व्याख्या पण आगमोनी भाषामा घटती नहि होय अथवा ए व्याख्यामा कहेला अढार देश क्या समजवा? ए प्रश्न ज गुंचवाळो छे.

राजकुमारोना विद्याध्ययनना प्रसंगमा 'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' शब्द जैन सूत्रग्रंथोमा मळे छे. त्या तेनो अर्थ 'अढार (जातनी) देशी भाषामा विशारद' थाय छे. ए शब्दना संबंधमा ए सिवाय बीजी

कदी वीतराग टीकाकारोए आपी नथी तेम अढार जातनी देशी भाषाने अर्धमागधी तरीके ओळखावी पण नथी.

'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' नो उल्लेख ज्ञातासूत्रमां अने औपपातिक सूत्रमां मळे छेः

"तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए*अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए"

ज्ञातासूत्र पृ० ३८ समिति

टीका पृ० ४२ ,,

"त्यार पछी ते मेघकुमार बोंतेर कळामां प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

[टीकाकारना मत प्रमाणे 'अढार जातनी भाषामां नहि पण अढार जातनी लिपिमां' प्रवीण थयो. आ अढार जातनी लिपिनो उल्लेख प्रज्ञापना सूत्रमां अने नंदीसूत्रमां मळे छे]

"तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापंडिए* अट्ठारसदेसीभासाविसारए"

औपपातिक सूत्र पृ०९८ समिति

"त्यार पछी ते दृढप्रतिज्ञ नामनो कुमार बोंतेर कळामां प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

सूत्रना ए उल्लेखो जोता अढार देशने लगती आपणी ए गुंच उकली शकती नथी पण एटलुं कल्पी शकाय छे के, कदाच आ उल्लेखोने जोइने ज श्रीजिनदास महत्तरे पोतानी चूर्णिमां अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' नु नाम आप्यु होय.

श्रीहरिभद्रना विद्यार्थी अने समसमयी तथा श्रीशीलाक अपरनाम तत्त्वादित्यना शिष्य श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिए बनावेली 'प्राकृत कुवलयमाला' ने जोता अढार देशने लगती आपणी ए गुंच कदाच उकली शके,

पण याद राखवु जोइए के; प्रस्तुत अर्धमागधीनी चर्चा साथे कुवलय-मालामां आवता अढार देशने लगता ए उल्लेखनो कशो ज संबंध नथी.

कुवलयमालामां ए देशोनी गणना आ प्रमाणे करेली छेः

" लाडा कण्णाडा वि य मालविया कन्नुज–गोल्लया । करय मरहट्ठ य सोरट्ठा ढका किरि अंग सेंधवया ॥ " कु० लि० प्रति पृ० ७५.	" लाटदेश, कर्णाटकदेश, मालवदेश, कनोजदेश, गोल्लदेश, करय (कारवाड ?) देश, महा- राष्ट्रदेश, सोरठदेश, ढक्कदेश, किरदेश, अंगदेश अने सिंधदेश "

पेली प्राज्ञ मं० ५. पूना मा० प्रा० वि० मं० स०

आ उल्लेखमां मात्र बार देशोने गणावयामां आव्या छे परंतु आ पछीना एक बीजा उल्लेखमां (पृ० ७६) एथी वधारे देशोने मूकेला छे. आ नीचेना उल्लेखमां देशोना नामो साथे तेने देशना मनुष्योनो स्वभाव अने भाषाना एकबे शब्दोने पण मूकवामा आव्या छे अने छेवटे उपसंहारमा जणावेलुं छे के,

" इय अट्ठारसदेसी– भासाउ पुलइऊण सिरिदत्ते । अन्ने इ य पुलएती जवस–पारस- बब्बरातीए ॥ "	" ए प्रमाणे श्रीदत्त नामनो कोइ गृहस्थ अढार देशनी भाषा- ओने जोइने (सांभळीने) बीजा- ओनी पण–एटले अनार्यो पैकी जवस, पारस अने बर्बर लोकोनी पण–भाषाने जुए छे (सांभळे छे) "

ग्रंथकारे उपसंहारमा आम अढार देशी भाषानो उल्लेख कर्यो छे अने देशोनी गणनाना प्रसंगमां मात्र सोळ देशो ज जणावेला छे तेनुं कारण समजातुं नथी.

जे उल्लेखमा ए देशोने जणावेला छे ते उल्लेख आ प्रमाणे छेः

॥ तत्थ य पविसमाणेण दिट्ठा अणेयदेसभासालक्खिए देसवणिए। ॥ जहा–
फरुसणा निठ्ठुरवयणे बहुकसमर (?) भुजए अलज्जे य।
'अरडे' त्ति उल्लवते अह पेच्छइ गोल्लए तत्थ॥
णयनीइसंधिविग्गहपटुए बहुज पए य पयईए।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे मज्झदेसे य॥

त्यां प्रवेश करता श्रीदत्ते अनेक देशनी भाषाना जाणकार ते ते देशना वणिकोने जोया. ते जेमके, प्रथम गोल्ल देशना लोकोने जोया, ए लोको निष्ठुर भाषी, काळा, समरभोगी (?) अने निर्लज्ज होय छे तथा 'अरडे' एवु बोलनारा होय छे. पछी मध्यदेशना लोकोने जोया, ए लोको नय, नीति, संधि अने विग्रहमा चतुर, बहुबोला अने 'तेरे मेरे आउ' एवु बोलनारा होय छे.

नीहरियपोट्ट–दुवन्न–मडहए सुरयकेलितल्लिच्छे।
'एगेले' जपुल्ले अह पेच्छइ मागहे कुमरो॥
कविले पिंगलनयणे लोयण–कहदिन्नमेत्तवावारे (?)।
'किं ते किं मो' पि य जंपिरे य अंतवेए य॥

पछी मगधना लोकोने जोया, ए लोको दुर्वर्ण, वधेला पेटवाळा, ठिंगणा, सुरतप्रिय अने 'एगेले' एवु बोलनारा होय छे.

पछी अंतर्वेदिना एटले गंगा जमनानी वच्चेना प्रदेशमा रहेनारा लोकोने जोया, ए लोको वर्णे कपिल, मांजरी आंखवाळा अने 'किं ते किं मो' एवु बोलनारा होय छे

उच्चुगथूलघोणे कणयवन्ने य भारवाहे य।

पछी कीरदेशना लोकोने जोया, ए लोको वर्णे कनकवर्णा, उंची

'सरि पारि' जंपिरे कीरे
कुमारो पलोएइ ॥

थने जाडी नासिकावाळा, भार वहनारा अने 'सरि पारि' एवुं बोलनारा होय छे.

दक्खिन्नदाणपोरुस-विन्नाण-
दयाविवज्जियसरीरे ।
'एहं तेह' चवंते ढक्के
उण पेच्छइ कुमरो ॥

पछी ढक्क देशना लोकोने जोया, ए लोको दाक्षिण्य, दान, पौरुष, विज्ञान अने दया विनाना होय छे अने 'एह तेहं' एम बोलनारा होय छे.

सललियमिउमद्दवए गंधव्व-
पिए सएसगयचित्ते ।
'वसे दइणो' भणिरे सुहसे
अह सेंधवे दिट्ठे ॥

पछी सिंधना लोकोने जोया, ए लोको ललित, मृदु, गांधर्वप्रिय, स्वदेशपरायण, हसमुखा अने 'वसे दइणो' एम बोलनारा होय छे.

कविंजडे (!) य जड्डे बहु
भोई कढिणपीणरूणगे ।
'अप्पां तुप्पा' भणिरे अह
पेच्छइ कारुए तत्तो ॥

पछी कारुदेशना लोकोने जोया, ए लोको कपिजल (!) जड्, बहु-भोजी, कठण अने पुष्ट अंगवाळा तथा 'अप्पा तुप्पा' एम बोल-नारा होय छे.

घयलोणियपुट्ठंगे धम्मपरे
संधिविग्गहे निउणे ।
'न उ रे मल्लउं' भणिरे
अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥

पछी गूर्जरलोकोने जोया, ए लोको घी अने माखणथी पुष्ट शरीरवाळा, धर्मपरायण, 'संधि विग्रहमां निपुण अने 'न उरे मल्लउं' एम बोलनारा होय छे.

ण्हाओलित्तविलित्ते कयसीमंते
सोहियंगत्ते ।

पछी लाटना लोकोने जोया, ए लोको (माथामां) सेथो

'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे
अह पेच्छइ लाडे ।

तणुसामममडहेदेहे कोवणए
माणजीवणे रोद्दे ।
'भाउ य भइणी तुब्भे'
भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥

उक्कडदप्पे पियमोहणे य
रोद्दे पयगवित्ती य ।
'अडिपांडि रमरे' भणिरे
पेच्छइ कनाडए अण्णे ॥

कुप्पासपाउयंगे मासणइ (?)
पाणमयणतल्लिच्छे ।
'असि किसि मणि' भण
माणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥
सव्वकलापव्भट्ठे माणी पिय
कोवणे कढिणदेहे ।
'जल तल ले' भणमाणे
कोसलए पुलइए अवरे ॥
दढमडहसामलंगे सहिए
अह माणकलहसीले य ।
'दिन्नल्ले गहियल्ले' उल्ल
विरे तत्थ मरहट्ठे ॥

पाडनारा, लेपन करनारा, सुशोभित शरीरवाळा अने 'अम्हं काउं तुम्हं' एम बोलनारा होय छे.

पछी माळवाना लोकोने जोया, ए लोको, काळा अने नाना शरीर वाळा, क्रोधी, अभिमानी, रौद्र अने 'भाइ य भइणी तुब्भे' एम बोलनारा होय छे.

पछी कर्णाटकना लोकोने जोया, ए लोको दर्पवाळा, मोहवाळा, रौद्र, चपल अने 'अडिपाटि रमरे' एम बोलनारा होय छे.

पछी ताइ लोकोने जोया, ए लोको कंचुक पहेरनारा अने 'असि किसि मणि' एम बोलनारा होय छे.

पछी कोशलदेशना लोकोने जोया, ए लोको सर्वकलाहीन, मानी, कोपी अने 'जल तल ले' एम बोलनारा होय छे.

पछी महाराष्ट्रना लोकोने जोया, ए लोको शरीरे दढ, नाना अने काळा होय छे तथा सहितमा मान-कलहशील अने

हवे ' वर्तमान जैन आगमोने महावीर भाषित समजीने कोई ए आगमोनी ज भाषाने अर्धमागधी कहे अने ए उपरथी ज एना व्याकरण अने कोष बनावे तो न बनी शके ? ' ए प्रश्ननु समाधान आचार्य हेमचद्रे पोतानी कृतिद्वारा अने उपर्युक्त उल्लेखद्वारा पण करी नाख्यु छे एथी आ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी समजवी के एम समजी ए विषेना पुस्तको लखवा ए भाषाना इतिहासमा गोटाळो करवा सिवाय बीजु शुं होई शके ?

आचार्य हेमचद्रना पूर्ववर्ती अने अगसूत्रोना टीकाकार आचार्य अभयदेवे पण अर्धमागधी नाम धरावती भाषाने प्राकृत लक्षणनी बहुलतावाळी जणावी छे तेमणे लख्यु छे के

पियमहिलासगामे सुदरगोत्ते य
भायणे रोद्दे ।
'आट्टि माटि' भणति अवरे
अधे कुमारो पलोएइ ॥

' दिचल्ले गहियल्ले ' एम बोल नारा होय छे
पछी आध्रना लोकोने जोया, ए लोकोने स्त्री अने सग्राम बन्ने प्रिय होय छे, एमना गोत्रो सुदर होय छे, अने ए लोको रौद्र तथा भयकर अने 'आट्टि माटि' एम बोलनारा होय छे.

उपरना उल्लेखमा गोल्ल (गौड ?), मध्यदेश, मगध अन्तर्वेदि, कार, टक्क, सिंध, मारु (मारवाड), गूर्जर, लाट, मालव, कर्णाटक, ताइअ (?) कोशल, महाराष्ट्र अने आध्र एम सोळ देशोने जणावेला छे

कुवलयमालानो आ उल्लेख अहीं एटला माटे आप्यो छे के, एमा ए देशोनी गणना ए रीते करेला छे (आचार्य जिनविजयजीनी एक नोधद्वारा आ उल्लेखने हु 'कुवलयमाला'मांथी मेळवी शक्यो छु)

" ' र–सो–र्लशौ मागध्याम् ' इत्यादि यत् मागधभाषालक्षणं तेन अपरिपूर्णा प्राकृतभाषालक्षणबहुला अर्धमागधी "

(औपपातिक टीका पृ० ७८ समिति)

अभयदेवे आगमोनी भाषा उपरथी नक्की करेलु अर्धमागधीनुं स्वरूप जोता तो ' अर्धमागधी ' नाम ' देवादार 'ना ' रणछोड ' (ऋणने छोडनार) नाम जेवु लागे छे. तेओ साफ साफ कहे छे के, आगमोनी भाषा प्राकृतलक्षणनी बहुलतावाळी छे अने एक लक्षण सिवाय मागधीना बीजा खास लक्षणोने एमा काइ स्थान नथी, एथी ज वाचनार समजी शकशे के, वर्तमान आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी के प्राकृत कहेवी ?

' आगमो प्राकृत छे ' ए मत तो आज घणा समयथी चाल्यो आवे छे अने हेमचद्र अने अभयदेव करता य प्राचीन अने प्रामाणिक आचार्योए ए मतने स्वीकारेलो छे.

ए सबधमा आचार्य हरिभद्र जणावे छे के,

'" प्राकृतनिबन्धोऽपि बालादिसाधारण " इति

---

१ दशवैकालिकनी टीकामा जे प्रसग आचार्य हरिभद्रे आ उल्लेख कर्यो छे ते प्रसग आ छे , "

" दर्शनाचारना आठ प्रकार छे, तेमा पेहेलो प्रकार निःशकित रहेवु ते, 'निःशकित 'नु विवरण करता कह्यु छे के, शकाना बे प्रकार छे–सर्वशका अने देशशका. सर्वशका एटले सर्व प्रकारे शका अने देशशका एटले थोडी शका तेमा ' सर्वशका 'नु स्वरूप बतावता जणाव्यु छे के,

"'सर्वशङ्का तु प्राकृतनिबद्धत्वात् सर्वमेवेद परिकल्पित भविष्यतीति।"

अर्थात् 'प्राकृत भाषामा रचेलु होवाथी आ बधु य बनावटी केम न होय ? ' आवी जे जिनागम प्रत्ये शका करवी ते सर्वशका, आनु समाधान करता हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेख टाकी बताव्यो छे

आटलुं लख्या पछी ए आचार्यवर "उक्तं च" कहीने पोताना उल्लेखना पोषणमां एक जूना संवादने टांकी बतावे छे–

"बालस्त्रीमूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतैः कृतः ॥"

(दशवैकालिक टीका पृ० ११२ बाबु०).

आ उपरथी आपणे जोई शकीए छीए के आपणो आ मत हरिभद्र करतां य जूनो ठरे छे.

जे प्रसंगमां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने मूकेलो छे ते ज प्रसंगमां वादिदेवसूरिना गुरु आचार्य मुनिचंद्र पण ए ज उल्लेखने (हरिभद्रना धर्मबिंदुनी टीकामां) मूके छे. धर्मबिंदु पृ० ७७, द्वितीय अध्याय आत्मानंद सभानी आवृत्ति.

आचार्य मलयगिरि पण प्रज्ञापनानी पोतानी टीकामां एवा ज प्रसंगमां ए ज वातने जणावे छे–प्रज्ञापनासूत्र टीका समितिनुं पृ० ६०.

हेमचंद्रनी पछी थयेला आचार्यो द्वारा पण ए ज मतने टेको आपवामां आव्यो छे—

आचार्य प्रभाचंद्रे बनावेला अने श्रीप्रद्युम्नसूरिए शोधेला प्रभावकचरित्रमां (पृ० ९८–९९) जणाव्युं छे के,

"अन्यदा लोकवाक्येन जातिप्रत्ययतस्तथा।
आ बाल्यात् संस्कृताभ्यासी कर्मदोषात् प्रबो(बा)धितः॥१०९

१ उपरना बधा उल्लेखोमां वपराएलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारसूत्रमां 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषाना अर्थमां वपराएलो छे. (पृ० १३१ थ०) वैयाकरण भरतमुनिना समयथी तो ए शब्द ए अर्थमां वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे. माटे कोईए अहीं ए शब्दने अटकवो नहि.

सिद्धान्तं संस्कृतं कर्तुमिच्छन् संघं व्यजिज्ञपत् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादरः ॥ ११० ११
+ + +
यदि (इदं) विश्रुतमस्माभिः पूर्वेषा संप्रदायतः ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११४
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः ।
अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११५
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय स ।
प्राकृतां तामिहाऽकार्षीदनास्थाऽत्र कथं हि वः ” ॥ ११६

अर्थात् “ सिद्धसेन दिवाकर नामना सुप्रसिद्ध जैनाचार्ये प्राकृत जैन आगमोने संस्कृतमा करवानी इच्छा करी ” आटलुं जणावी ग्रंथकार पोताना तरफथी वधु जणावता कहे छे के, “ बाल, स्त्री, अने मूर्ख वगेरेनी सगवडताने माटे पूर्व पुरुषोए–सुधर्मस्वामिए–ए आगमोने प्राकृतमा रच्या छे, तो एमा आपणे शामाटे अनास्था करवी ?”

“ यत उक्तमागमे ” अर्थात् ‘ आगममा कह्यु छे के ’ एम लखीने श्रीविजयानंदसूरि पोताना तत्त्वनिर्णयप्रासादमा जणावे छे के,

मुत्तूण दिट्ठिवायं कालिय–उक्कालियंगसिद्धंतं ।
थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥

अने साथे हरिभद्रे उद्धरेलो श्लोक पण टांके छे. (खरी रीते तो आ प्राकृत गाथाने हरिभद्रनी पहेला ज मूकवी जोइए पण मने एनु मूळ स्थान न जडवाथी एना उध्धृत करनारना कालक्रममा एने मूकवामा आवी छे.)

अनुयोगद्वार सूत्रमा जणाव्यु छे के,

“ सक्कया पायया चेव भणिइओ होंति दोण्णि वा ”

(पृ. १३१ समिति)

अर्थात् 'संस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे.'

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसगमा छे. आ उपरथी एटलु तो जरर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमा अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामा आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण सूचववी भूले खरा ?

आ प्रमाणे एक नहि पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमा प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमा पण जैन आगमोना केटलाक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंधेला छे.

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमा आवेली भाषाना संबंधमा चर्चा थइ, तदुपरात बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थइ शके छे. तेमा—

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषाना व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी.
भरतना नाट्यशास्त्रमा कह्यु छे के,
"चेटाना राजपुत्राणा श्रेष्ठिना चार्धमागधी"

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोमा पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे. भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोना ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कळी शकीशुं.

नाटकोनी भाषाना नमूना—

(भासनुं प्रतिज्ञायौगंधरायण)

भट.—को कालो अह महिदारिआए वासवदत्ताए उदए कीळिदुकामाए भद्दवदीपरिचारअं गत्तसेवअं ण पेक्खामि । भाव पुप्फदंतअ गत्तसेवअं ॥ पेक्खामि । किं भणासि एसो गत्तसेवओ कण्डिळसुहिणिणीए गेहं पविसिअ सुरं पिबदि त्ति।पृ० १०२

भट —सव्वं दाव चिट्ठदु राअउले मद्दपीठिअं ण णिक्कामिअ कुदो अअं आहिण्डदि त्ति । पृ० १०६

भट —किं णु खु एवं + होदु, इमं वुत्तंत्तं अमच्चस्स णिवेदेमि । पृ० १०६

(भासनुं चारुदत्त)

चेट —अय्यो अय्यमेत्तेओ ।

चेट —अय्यो भट्टिदारओ । पृ० १७

चेट —सुहोदेसु पादेसु भूमीए पळोट्टिदव्व । पृ० ९८

(भासनुं स्वप्नवासवदत्त)

भटौ—उस्सरह उस्सरहं अय्या उस्सरह । पृ० ८

चेटी—एदु एदु भट्टिदारआ इद अस्समपद पविसदु । पृ० १६

चेटी—अत्थि राओ पज्जोदो णाम उज्जइणीए सो दारअस्स कारणादो दूदसपादं करेदि पृ० १७

(शूद्रकनु मृच्छकटिक)

चेट —अज्जुए चिश्ट, चिश्ट ।

उत्ताशिता गच्छशि अंतिका मे
शंपुण्णपुच्छा विअ गिम्हमोरी ।
ओवग्गदी शामिअ भश्टके मे ।
वणे गडे कुक्कुरशावके व्व ॥ पृ० २७

चेटः—सामेहि अ लाअवल्लहं तो लाहिरी मच्छमंसाकं ।
एदेहिं मच्छमशकेहिं शुणआ मडअं ण शेवंदि ॥ पृ० ३१
आ बधी भाषा चेटोनी छे.

राजपुत्रनी भाषा आ प्रमाणे छेः

(कालीदासनुं शाकुंतल)

बाल.—जिंभ जिंभ दंदाणि ते गणइस्स पृ० २९९
बाल·—बलिअ भीद म्हि पृ० २९६
बाल —इमिणा एव्व दाव कीलिस्सं पृ० २९८

हवे शेठियाओनी भाषानो नमुनो—

(शूद्रकनुं मृच्छकटिक)

चन्दनदास.—जेदु अज्जो

चन्दनदास.—किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो परिहवादो वि महंतं दुःख उप्पादेदि । ता इह य्येव उचिदाए भूमीए उवविसामि ।

चन्दनदास—अह इ अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिदा वणिज्जा । पृ० १४

चन्दनदासः—आणवेदु अज्जो किं केत्तिअं इमादो जणादो इच्छी-अदि त्ति ।

चन्दनदास.—अज्ज अलिअं एदं केणवि अणज्जेण अज्जस्स णिवेदिदं । पृ० १५

चन्दनदास —फलेण संवादिदं सोहदि दे विकत्थिदं । पृ० १७

नाट्यशास्त्रकार भरतना उल्लेख प्रमाणे चेट, राजपुत्र अने शेठनी भाषाने अर्धमागधी कहेवामां आवे छे. एना नमुना उपर आपवामा आव्या छे. उपरना नमुनानी भाषा साथे आपणे आगमोनी भाषाने सरखावीए तो केवळ सामळवा मात्रथी ज शुं नथी जणातु के,

ए नाटकोना पात्रोनी भाषामा अने आगमोनी भाषामा केटलो बधो तफावत छे ?

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनुं नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणां छे, ए बधाना नामो पण हवे पछी आपवानां छे बधा प्राकृत व्याकरणोमा वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे. एमा 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने यही छे अने शौरसेनी करता जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छे —

१ मागधीमा 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो.

२ ,, 'ज' ने बदले प्राय 'य' बोलवो

३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करता जेम होय तेम ज बोलवु

४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो.

५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो

६ ,, अकारांत शब्दना प्रथमाना एक वचनमा 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो.

७ ,, मागधीमा अकारान्त भूतकृदतना प्रथमाना एक वचनमा उपरना बे प्रत्ययो उपरांत 'उ' प्रत्यय पण वापरवो

८ ,, षष्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय वापरवो.

९ ,, सबोधनना एकवचनमा अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो

१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमा वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमा 'चिष्ठ' धातु वापरवो

११ „ 'कृत' ने बदले 'कड' 'मृत' ने बदले 'मड' अने 'गत' ने बदले 'गड' रूपो वापरवा.

१२ „ संबधक भूतकृदंतने सूचववा 'त्वा' प्रत्ययने बदले 'दाणि' प्रत्यय वापरवो.

१३ „ 'हृदय' ने बदले 'हडक,' 'अह' ने बदले 'हके' 'हगे' 'अहके' अने 'शृगाल' ने बदले 'शिआल' तथा 'शिआलक' शब्दो वापरवां.

वररुचिए बतावेलुं मागधीनुं स्वरूप उपर प्रमाणे छे, आ सिवाय शौरसेनीना जे नियमो वररुचिए आपेला छे तेमाना निरपवाद नियमो मागधीमा पण उमेरी लेवाना छे आगमोनी[1] भाषाने जोता तेमा फक्त वररुचिए बतावेली ६ ठ्ठी विशेषतानो य अमुक अश ('ए' नी वपराश) जोवामा आवे छे, तो मागधीना एक ज अशनी वपराशने लीधे आगमोनी भाषा अर्धमागधी कहेवाय के नहि? ए साक्षरो ज विचारी ले.

'वर्तमान आगमोनी भाषामा मागधीभाषानु स्वरूप केटले अंशे देखाय छे?' ए प्रश्ननी परीक्षा करता आपणे भास वगेरेना नाटको जोया, प्राचीन वैयाकरण वररुचिने तपास्यो. हवे अशोकनी धर्म लिपिओनी भाषाने पण आपणे जोइ जइए ए लिपिओनी भाषाने 'कई भाषा कहेवी?' ए प्रश्न हमी विवादग्रस्त छे तो पण एने 'प्राचीनमागधी' कहेवामा काइ दोष जणातो नथी—बौद्धोना त्रिपि-

---

१ मागधीने लगतु स्वरूप अने उदाहरणो माटे जुओ प्राकृत-प्रकाश पृ० १२८ थी १३२ तथा १३२ थी १३७ अथवा ११ मो परिच्छेद अने बारमो परिच्छेद.

२ आगमोनी भाषाना उदाहरणो माटे जुओ "जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कई?" ए लेख (जैन साहित्यसशोधक पु० १ अ० १ पृ० ३१ थी ३७)

टकनी भाषा ए लिपिओनी साथे सरखामणीमा आवी शके एवी छे. त्रिपिटकमा पण 'मागधी' भाषानो उपयोग थयानुं नीचेनी गाथा जणावे छे[१].

अशोकनी धर्मलिपिओमा वपराएली भाषानु बधारण तपासता आ नीचे जणावेला मुख्य नियमो उपजी शके छेः

१ अद्विर्भाव (वर्णनुं नहि बेवडावुं)

' संयुक्त अक्षर अनादिमा होय अने संयुक्त अक्षरमानो एक अक्षर लोपाय त्यारे जे शेष अक्षर होय छे ते बेवडाय छे अथवा संयुक्त अक्षरनी पहेलानो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे '

प्राकृत भाषाओनो आ एक साधारण नियम छे. अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषामा ए नियम क्वचित् ज सचवाएलो जोवाय छे पण जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे ए नियम बराबर सचवाएलो छे.

लिपिओनी भाषामा वपराएला एवा द्विर्भाव विनाना अने दीर्घस्वर विनाना रूपो[२] आ प्रमाणे छे

लिपिओनी भाषा	आगमभाषा	संस्कृतरूप
अप	अप्प	अल्प
कप	कप्प	कल्प

१ " सा मागधी मूलभासा नरा यायाऽऽदिकप्पिका ।
ब्रह्मुना चस्सुतालापा संबुद्धा चापि भासरे "॥

२ आमा अशोकनी धम्मलिपिमाथी जे रूपो आप्या छे ते उदाहरण रूपे छे, एने मळता बीजा अनेक रूपो छे. पण बधा अहीं विस्तार भयथी आप्या नथी. बीजी ए एक वात लक्ष्यमा राखवानी जरुर छे के, अशोकना प्रान्तीय पाठ भेद पण केटलेक ठेकाणे छे, जो के में बने त्या सुधी सर्व साधारण रूपो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे.

युत	जुत	युक्त
निखम	निक्खम	निष्क्रम
कलाण	कल्लाण	कल्याण

२ 'र' नो वैकल्पिक 'ल'

अशोकनी लिपिओमां 'र' ना स्थाने सर्वत्र 'ल' नो प्रयोग वैकल्पिक रीते थएलो देखायछे त्यारे जैन आगमोमां प्राकृत भाषाना धोरणनी पेठे 'र' नो ज प्रयोग कायम रहेलो छेः

लि०	आ०	सं०
आदिकले आदिकरे	आइकरे आइगरे	आदिकरः
परिसा पलिसा	परिसा	पर्षत्
चरणं चलनं	चरणं	चरणम्
हिलंन हिरण	हिरण्ण	हिरण्य
मरण मलने	मरणं	मरणम्

३ अनादि—असंयुक्त व्यंजननो लोप

अशोकनी धर्मलिपिओमां अनादि–असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, व, य अने व लोपाता नथी त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे ए बधा अक्षरो लोपाएला छेः

लि०	*आ०*	*सं०*
सुकतं	सुकयं	सुकृतम्
मिगे	मिए	मृगः

उच्चावुचछंदो	उच्चावयच्छंदो	उच्चावचच्छन्दः
समाजसि	समायम्भि	समाजे
एते	एए	एते
विवादे	विवाओ	विवादः
पापुनाति	पाउणइ	प्राप्नोति
		वगेरे

४ श, स, ष नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां श, ष, अने स नो उपयोग थएलो छे त्यारे आगमनी भाषामा प्राकृत भाषानी पेठे मात्र एक 'स' नो ज उपयोग थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पशु पसु	पसु	पशु
शत सत	सय	शत
दोस दोष	दोस	दोष
ओषढिनि ओसधानि	ओसहाणि	औषधानि
सार शाल	सार	सार
पंचसु पंचषु	पंचसु	पञ्चसु

५ विजातीय संयुक्त व्यंजननी वपराश

अशोकनी धर्मलिपिओमां विजातीय संयुक्त व्यन्जनोनी वैकल्पिक वपराश घणी छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषाना बंधारण प्रमाणे ए वपराश ज नथी.

लि०	आ०	सं०
प्राण पान	पाण	प्राण
दिव्यानि दिवियानि	दिव्वाइं	दिव्यानि
सेठे सेस्टे	सेट्ठे	श्रेष्ठः
अस्ति अत्थि	अत्थि	अस्ति
सहस्रानि सहस्तानि	सहस्साइं	सहस्राणि
पुत्र पुत	पुत्त	पुत्र
मित मित्र	मित्त	मित्र
नास्ति नथि	नत्थि	नास्ति
समण श्रमण	समण	श्रमण वगेरे

६ 'ख' 'थ' 'घ' 'भ' नो ह

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ख' 'थ' 'घ' अने 'भ' कायम

रहे छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृत भाषा प्रमाणे ए चोरेने स्याने 'ह' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
लिखित	लिहिअ	लिखित
सुख	सुह	सुख
यथा	जहा	यथा
तथा	तहा	तथा
बहुविध	बहुविह	बहुविध
वध	वह	वध
साधु	साहु	साधु
आलभितु	आलहिउ	आलभताम्
		वगेरे

७ 'न' नो 'ण'

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'न' नो 'ण' नथी थएलो त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतना नियम प्रमाणे 'न' नो 'ण' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
देवानं	देवाणं	देवानाम्
पियेन	पियेण	प्रियेण
अनुदिवसं	अणुदिवसं	अनुदिवसं
बहूनि	बहूणि	बहूनि
दानं	दाणं	दानम्
महानसासि	महाणसंसि	महानसे

८ 'ण' नो न

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'ण' ने स्थाने 'न' पण वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामा तेम नथी जणातु

लि०	आ०	स०
गननासि गणनसि	गणने	गणने

९ 'त' नो ट

अशोकनी धर्मलिपिओमा एकला 'त', नो के सयुक्त 'त' नो 'ट' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा एटले प्राकृतनी प्रक्रिया प्रमाणे एकला 'त' नो 'ड' थएलो छे अने सयुक्त 'त' नो 'त' थएलो छे

लि०	आ०	स०
पटिवेदना	पडिविअणा	प्रतिवेदना
पटिपाति	पडिवत्ति	प्रतिपत्ति
कट	कड, कय	कृत
मट	मड, मय	मृत
कटव कटविय	कायव्व	कर्तव्य
किति किटी	कित्ति	कीर्ति वगेरे

१० 'प' नो व

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'प' नो 'व' नथी थएलो पण जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतनी पेठे 'प' नो 'व' थएलो छे

लि०	आ०	स०
लिपि	लिवि	लिपि
कृपा	कृवा	कृपा
पाप	पाव	पापम्

प्रेरक प्रक्रिया ना प्रत्ययो	आप / आपे	आव / आवे	
	सामीपे	सामीव	समीपम् वगेरे

११ 'द्य' नो य

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'द्य' नो 'य' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा प्राकृतनी पद्धति प्रमाणे 'द्य' नो 'ज्ज' करवामा आवेलो छे

लि०	आ०	स०
उयान	उज्जाण	उद्यान
उयाम	उज्जम	उद्यम

१२ 'ञ' नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'न्य,' 'ण्य' अने 'ज्ञ' ने स्थाने 'ञ' नो पण उपयोग थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामा ए त्रणेने स्थाने प्राकृतनी प्रमाणे 'ञ,' 'ण' के 'ण्ण' नो ज व्यवहार थएलो छे

लि०	आ०	सं०
हञति	हणति, हञति	घ्नन्ति
मञति, मनति	मञइ	मन्यते
अञ, अन	अण्ण, अञ	अन्य
हिरञ	हिरण्ण	हिरण्य
पुञ, पुन	पुञ, पुण्ण	पुण्य

ञाति नाति	नाइ	ज्ञाति
रञो	रण्णो	राज्ञः
		वगेरे

१३ ति अने तु

अशोकनी धर्मलिपिओना क्रियापदोमा 'ति' अने 'तु' प्रत्ययो वपराएला छे त्यारे आगमोनी भाषामा प्राकृतनी शैली प्रमा 'इ' अने 'उ' प्रत्ययो वपराएला छे

लि०	आ०	सं०
भोतु होतु	होउ ,	भवतु
होति भाति	होइ	भवति
क्लेति	करेइ	करोति
		वगेरे

१४ त्य नो च

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'त्य' नो 'च' वैकल्पिक रीते वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामा प्राकृतना धोरण प्रमाणे 'त्य' नो 'च' ज करवामा आवेलो छेः

लि०	आ०	सं०
सातिय– सतिय–	सच	सत्य
आचायिक अतियायिक	अच्चइअ	आत्ययिकः
निच	निच्च	नित्य

चज तिज	चय	त्यज
		वगेरे

१५ नामने लगता प्रत्ययो

	लि०	आ०
प्रथमाना एकवचननो प्रत्यय—	ए ओ	ए ओ
चतुर्थीना एकवचननो प्रत्यय—	य ये	ए
स्त्रीलिंगी नामने लगता तृतीयाथी सप्तमी सुधीना प्रत्ययो—	य या ये	ए

१६ 'राजन्' ना रूपो

अशोकनी धर्मलिपिओमा 'राजन्' शब्दना जे जातना रूपो मळे छे तेमानु एक रूप पण आगमोनी भाषमा मळतु नथी. जे मळे छे ते बधा प्राकृतना धोरणे सधाएला छे

लि०	आ०	सं०
लाजा	राया	राजा
लाजानो राजानो	रायाणो	राजानः

राजिना राजा	}	रण्णा	राज्ञा
राजिने राजाने	}	रण्णो	राज्ञे
रञो राञो	}	रण्णो	राज्ञ

आ उपरांत—

ए धर्मलिपिओमां अनादि 'ट' नो 'ट' ज रहेलो छे (घटिते) त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत प्रमाणे 'ट' ने बदले 'ड' थएलो छे (घडिए)

ए धर्मलिपिओमां 'अह' ने बदले 'हक' रूप पण वपराएलु छे त्यारे आगमोनी भाषामां क्यांय ए रूपनो उपयोग ज नथी थएलो

आ रीते अशोकनी धर्मलिपिओनी प्राचीन मागधीनुं स्वरूप पण वर्तमान आगमोनी भाषामां एने अर्धमागधी कहेवरावबा पूरतु य घटी शकतु नथी, ए हकीकत उपर जणावेला उदाहरणोथी ज जाणी शकाय एम छे

ए आगमोनी छेल्ली संकलना थया पहेलां, एमां जेवी भाषा अत्यारे छे तेवी नहि होय ए हकीकत तो आगमोमां रहेला केटलाक जूना रूपो उपरथी ज जाणी शकाय एवी छे.

आगमोनी रचनासमयनी भाषाना अने देवर्धिगणिनी संकलना समयनी भाषाना अंतरने समजवा माटे गूजराती भाषानु नीचेनु उदाहरण बस छे

सं. १७३९ नी भाषा

" समवसरणनुं हुउं रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासनी बईठा जिनवीर,
दिइ देशना अरथ गंभीर ॥
विद्युनमाली सुर तिहां आवइ,
जिन वांदी आनंद बहु पावइ।
चरम केवली कुण प्रभु थास्यइ,
श्रेणिक पूछइ मन उल्हासइ॥
प्रभु कहइ सुणि श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युनमाली,
सातमेइ दिनि ए चवी शुभशाली॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामइं,
चरम केवली जंबू नामइ ।
होस्यइ ते सुणि देव अनादी,
हरषइ परखइ निज कुल आदी ॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने तेमनी हस्तलिखित प्रतिमांथी उतारेली)

सं. १९४४ नी भाषा

समवसरणनो हुओ रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासन बेठा जिन वीर,
दीए देशना अर्थ गंभीर ॥
विद्युन्माली सुर तीहां आवे,
जिन वंदी आनंद बहु पावे ।
चरमकेवली कुण प्रभु थाशे,
श्रेणिक पूछे मन उल्लासे ॥
प्रभु कहे सुण श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इन्द ।
चउदेवीयुत विद्युन्माली,
सातमे दिने ए चवी शुभशाली॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामे,
चरम केवली जंबू नामे ।
होस्ये ते सुणी देव अनादी,
हरखे परखी निजकुल आदी॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने जंबुस्वामिना रासनी चोपडी मांथी उतारेली)

---

१ जुओ छट्ठी गुजराती साहित्यपरिषदना रिपोर्ट पृ० ८२ मुनि कल्याणविजयजीनो निबंध

उपर आपेलो कविता एक ज कर्तानी छे, छतां एमां काळभेदने लीधे केवो फेरफार थएलो छे, ए, जाडा अक्षरोमां मूकेलां रूपो उपरथी जणाइ आवे छे.

जो के २० मा सैकानी असरथी रूपांतर पामेली ए कवितामां १८ मा सैकानी कविनी भाषाना केटलां य रूपो जळवाइ रह्यां छे तो पण रूपांतर पामेली ए कवितानी भाषाने काइ १८ मा सैकानी नहि कहेवाय तेम १८ मा सैकानी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय ते ज रीते श्री वीरना १००० मा सैकामां रूपांतरने पामेला ए आगमोमां भगवान महावीरना समये रचाएला आगमोनी भाषानां केटलां य रूपो जळवाइ रह्यां होय तो पण ए वीरना १००० मा सैकामां रूपांतरने पामेला आगमोनी भाषाने काइ वीरना समयनी भाषा नहि कहेवाय तेम वीरना समयनी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय. तात्पर्य ए छे के, भास वगेरे प्राचीन कविओनी, वररुचिनी अने छेवट अशोकनी धर्मलिपिओनी मागधी भाषानु थोडुं घणुं पण स्वरूप वर्तमान आगमोमा रहेलुं होय तेम जणातु नथी तो पछी आगमोनी भाषाने 'अर्धमागधी' नाम कइ रीते अपाय?

अत्यार सुधी तो आपणे 'अर्धमागधी'ना संबंधमा पुरातन ग्रंथ, लेख अने व्याकरणने आधारे विचार कर्यो, पण हवे ए संबंधमां आधुनिक ग्रंथकारोनो अभिप्राय पण जोइ लइए.

फक्त मार्कंडेय अने क्रमदीश्वर सिवाय बीजा कोइ अर्वाचीन वैयाकरणे अर्धमागधीना स्वरूपने लगतो काइ उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

मार्कंडेय कहे छे केः—

"शौरसेन्या अदूरत्वाद् इयमेवार्धमागधी ॥

प्राकृतसर्वस्व पृ० १०३

आम लखीने ए ज ग्रंथकार अर्धमागधीना उदाहरण तरीके आ वाक्य आपे छे—

" अज्ज वि णो शामिणीए हिलिम्बादेवीए पुत्तवडुक्कशोए ण उवशमदि " (वेणीसंहार तृतीय अंक)

अने साथे—

" राक्षसी–श्रेष्ठि–चेटाऽनुकम्प्यादेरर्धमागधी "

ए भरतनु वाक्य पण टकी बतावे छे.

क्रमदीश्वर पोताना संक्षिप्तसारप्राकृतपादमा जणावे छे के.

" महाराष्ट्रीमिश्राऽर्धमागधी " ५–९८

आ उल्लेखनी व्याख्या करता आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य आ प्रमाणे जणावे छे—

" अर्धमागधी शब्द टि द्वाराई जानिते पारा याईते छे ये, ए भाषार शब्दप्रभृतिर अर्ध अंश ठीक मागधी अर्थात् प्राकृतमागधी। तबे ताहार अपर अर्ध अंश कि ? क्रमदीश्वर बलियाछेन ताहा महाराष्ट्री–प्राकृतमागधी महाराष्ट्री सहित मिश्रित हईया अर्धमागधी नाम धारण करे।

ताहार उदाहरण—

लमशवशनमिलशुलशिलविअलिदमंदालल्लाजिदंहियुगे।
वीलजिने पक्खालदु मम शयलमवज्जजंबालं ॥ "

पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६–१७

उपर्युक्त बंने वैयाकरणोए जणावेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप आगमोनी भाषामा घटी शके खरु ? आ प्रश्नो उत्तर आ० विधु-शेखरजीए जणावेली उपर्युक्त गाथा ज आपी रही छे.

आ उपरथी वाचको जाणी शक्या हशे के, वैयाकरणोए अर्धमागधीनु जे लक्षण नक्की कर्यु छे ते आगमोनी भाषामा घटे छे के नहि ?

मार्कडेय वगेरेए नक्की करेलु अर्धमागधीनु स्वरूप आ पुस्तकमा शौरसेनीमा अने मागधीमा आवी जाय छे, एथी पण अहीं अर्धमागधीने माटे जुदु प्रकरण राखवामा नथी आव्यु

प्राकृतना केटलाक व्याकरणोना अने तेनी वृत्तिओना नामो

नाम	कर्ता	संवाद
१ प्राकृतप्रकाश	वररुचि	प्रसिद्ध छे
२ प्राकृतलक्षण	चड	,,
३ प्राकृतव्याकरण	हेमचन्द्र	,,
४ प्राकृतसजीवनी	वसतराज	आनो उल्लेख मार्कडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मा छे पृ० १ श्लो० ३.
५ प्राकृतकामधेनु	लकेश्वर	
६ प्राकृत्याकरण	समतभद्र	
७ ,, वृत्ति	त्रिविक्रमदेव	
८ प्राकृत प्रक्रियावृत्ति (ढुंढिका)	उदयसौभाग्य	प्रसिद्ध छे
९ प्राकृतप्रबोध	नरचद्र	
१० प्राकृतकल्पतरु	रामतर्कवागीश	

११	प्राकृतचंद्रिका	कृष्णपंडित (शेषकृष्ण)	
१२	,,	वामनाचार्य	
१३	प्राकृतमनोरमा	भामह	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३.
१४	प्राकृतरूपावतार	सिंहराज	प्रसिद्ध छे
१५	प्राकृतदीपिका	चंडीश्वरशर्मा	
१६	प्राकृतमंजरी	कात्यायन	प्रसिद्ध छे
१७	प्राकृतसर्वस्व	मार्कंडेय	,,
१८	प्राकृतानंद	रघुनाथशर्मा	
१९	प्राकृतप्रदीपिका	नरसिंह	
२०	प्राकृतमणिदीपिका	चिन्नबोम्मभूपाल	'षड्भाषाचंद्रिका'नी प्रस्तावना पृ० १७ टि० पृ० १८ टि०
२१	प्राकृतमणिदीप	अप्पयज्वन्	,,
२२	षड्भाषामंजरी		
२३	षड्भाषावार्तिक		
२४	षड्भाषाचंद्रिका	लक्ष्मीधर	प्रसिद्ध छे
२५	षड्भाषाचंद्रिका	भामकवि	
२६	षड्भाषासुबंतादर्श		
२७	षड्भाषारूपमालिका	दुर्गणाचार्य	षड्भाषाचंद्रिका पृ० २२–२–२–९ सूत्रनी वृत्ति.

२८ संक्षिप्तसारप्राकृतपाद क्रमदीश्वर आ० विधुशेखरजीनी पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६ टि०

२९ प्राकृतव्याकरण शुभचंद्र जोएलु छे

आ उपरांत शाकल्य, भरत, कोहल (मार्कंडेयनु प्राकृत सर्वस्व पृ० १ श्लो० ३) भोज अने पुष्पवननाथ (षड्भाषाचंद्रिकानी प्रस्तावना पृ० १७ टि०) आ पंडितोए पण प्राकृत व्याकरणो लखेला छे.

जे व्याकरणोना नाम अहीं आप्या छे एमाना फक्त ६ के ७ जोवामा आव्या छे. नामो तो बधा 'बंगीय विश्वकोश' अने 'केट लोगस् केटलोगोरम'माथी लईने मूकेला छे.

आ पुस्तकमा पालिप्रकाशनो उपयोग बहु करवामा आव्यो छे तेथी एना कर्ता आचार्य विधुशेखरजी तरफ मारी पूरी कृतज्ञता छे, ए सिवाय जे सज्जनोए मने बहु मूल्य सूचनो कर्या छे तेओ बधा तरफ पण हु पूर्ण कृतज्ञ छु.

आ पुस्तकमा खास करीने प्राकृतभाषा सबंधे ज सविशेष लखवामा आव्युं छे अने बीजी बीजी भाषाओने लगता मात्र विशेष नियमो ज दर्शाव्या छे, उदाहरणो दर्शाव्या छे खरा पण ते प्राकृत जेटला नहि. अपभ्रंशने समजवा माटे सविशेष शब्दो अने उदाहरणो जरूर मूकवा जोइए पण स्थानाभावने लीधे अहीं तेम नथी बनी शक्युं

प्राकृत भाषाना प्रथम अभ्यासीए प्रथम प्राकृत भाषाना ज नियमो तरफ विशेष लक्ष्य राखवुं अने पछी बीजा वाचन वखते बीजी बीजी भाषाओने साथे लेवी.

आभार

बनारसमा अभ्यास करती वखते प्राकृतना प्राथमिक अभ्यास माटे 'प्राकृतमार्गोपदेशिका' नामे एक पुस्तक में आजथी १९ वर्ष पूर्वे लख्युं हतुं ते पुस्तक करता वधारे विगतवाळु अने विस्तृत व्याकरण लखवा माटे मुंबईनी जैनश्वेतांवर कॉन्फरन्स ऑफीसे मने प्रेरणा करी, तेथी स० १९७७–७८मा में कॉन्फरन्स ऑफीस माटे आचार्य हेमचंद्रना क्रम प्रमाणे मूळ आ व्याकरण तैयार कर्युं हतुं पाछळथी ए पुस्तक रा० रा० केशवलाल प्रेमचंद मोदी तरफथी पुरातत्त्वमंदिरने छापवा माटे आपवमा आव्युं मंदिरे एने छपाववानो निर्णय कर्यो अने 'आखु पुस्तक हुं फरी एकवार जोइ जाउ अने साथे साथे तुलनात्मक पद्धतिनो पण एमा उपयोग करुं' एवी सूचना मने मंदिरना मंत्री भाइ श्रीरसिकलाल परीख तरफथी करवामा आवी, जे मने एक रीते विशेष उपयोगी लागी अने तेना परिणामे पूर्वे लखेलुं आखुं पुस्तक फरी तपासी तेमा आवश्यक सुधारा वधारा करी हालना रूपमा ए प्रकट करवामा आवे छे. ए माटे ए बधा प्रेरकोने साभार धन्यवाद घटे छे

बेचरदास जीवराज दोशी

विषयानुक्रम

+ 'टि०' एटले टिप्पण

१०	ऌ	=	इलि	७
११	ऐ	=	ए	७
	ऐ	=	ए (पालि) टि० २	७
१२	औ	=	ओ	७
	औ	=	ओ (पालि) टि० २	७
	अ	=	इ (अपभ्रंश)	८
	अ	=	ई ,,	८
	अ	=	उ ,,	८
	उ	=	अ ,,	८
	उ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	अ ,,	८
	ऋ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	इ ,,	८
	ऋ	=	उ ,,	८
	ऋ	=	ऋ ,,	८
	ऌ	=	इ ,,	
	ऌ	=	इलि ,,	
	ए	=	इ ,,	
	ए	=	ई ,,	
	औ	=	अउ ,,	
	औ	=	ओ ,,	

	द्फ	= प्फ (,,) टि० ४	१४
	द्ग	= ग्ग (,,) टि० ५	१४
	द्ध	= त्त (,,) टि० ६	१४
	श्छ	= च्छ (पालि) टि० १	१५
	श्म	= म (,,) टि० २	१५
	ष्ट	= ट्ठ (,,) टि० ३	१५
	ष्ठ	= ट्ठ (,,) ,, ,,	१५
	ष्क	क्क (,,) ,, ,,	१५
	ष्प	प्प (,,) ,, ,,	१५
	स्ख	क्ख (,,) टि० ५	१५
	स्क	= क्क (,,) ,, ,,	१५
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	१५
	स्थ	= थ (,,) ,, ,,	१५
	स्थ	= त्थ (,,) ,, ,,	१५
४	संयुक्त 'मादि'	= लोप	१५
	स्म	= स्स* (पालि) टि० ७	१५
	ग्न	= ग्ग (,,) टि० २	१६
	ह्य	= य्ह (,,) टि० ३	१६
५	संयुक्त 'लादि'	= लोप	१६
	क्ल	= क (पालि) टि० ४	१६
	ध्व	= ध (,,) टि० ५	१६
	द्व	= द्द (,,) टि० ६	१६
	र्क	= क्क (,,) टि० १	१७
	त्क	= क्क (,,) टि० २	१७

* जूओ आगला पृष्ठनु टिप्पण.

	(१) 'र'	= लोप (अपभ्रंश)	१७
६	'द्र'	= लोप	१८
	र	= लोप (पालि) टि० २	१८
७	'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'		१८
८	'कादि' नो 'य'		१८
	क	= य (पालि) टि० ४	१८
	ज	= य (पालि) टि० ५	१८
९	'खादि' नो 'ह'		१९
	ख	= ह (पालि) टि० ३	१९
	ध	= ह (,,) टि० ४	१९
	भ	= ह (,,) टि० ५	१९
	(१) थ	= ध (शौरसेनी)	२०
	(२) घ	= ख (चूलिकापैशाची)	२०
	ध	= थ (,,)	२०
	भ	= फ (,,)	२०
	(३) झ	= छ (,,)	२१
१०	ट	= ड	२१
	ट	= ड (पालि) टि० १	२१
	(१) टु	= तु (पैशाची)	२१
११	ठ	= ढ	२१
१२	ड	= ळ	२२
	ढ	= ळ्ह (पालि) टि० १	२२
	(१) ड	= ट (चूलिकापैशाची)	२२
	(२) ढ	= ठ (,,)	२२
	(१) ण	= न (पैशाची)	२२

	ण	= न (पालि) टि० १	२३
१३	न	= ण	२३
	न	= ण (पालि) टि० २	२३
१४	न	= ण	२३
१५	प	= व	२३
	प	= व (पालि) टि० ३	२३
१६	प	= व	२४
	(१) प	= व (अपभ्रंश)	२४
१७	फ	= भ	२४
	फ	= ह	२४
	(१) फ	= भ (अपभ्रंश)	२४
	(१) ब	= प (चूलिकापैशाची)	२५
	ब	= प (पालि) टि० १	२५
१८	ब	= व	२५
	ब	= व (पालि) टि० २	२५
	(१) म	= वँ (अपभ्रंश)	२५
१९	य	= ज	२६
	य	= ज (पालि) टि० १	२६
	(१) य	= य (मागधी)	२६
	(१) र	= ल (मागधी, पैशाची)	२६
	(१) ल	= ळ (पैशाची)	२६
२०	श	= स	२७
	ष	= स	२७
	श	= स (पालि) टि० १	२७
	ष	= स („) „ „	२७

प्रकरण ४ थुं पृ० २९–४३

संयुक्त व्यजनोना सामान्य फेरफारो

	थ्व	= छ, च्छ	३२
	द्व	= ज, ज्ज	३२
	ध्व,	= झ, ज्झ	३२
२६	थ्य	= च्छ	३२
	थ्य	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	श्च	= च्छ	३२
	श्च	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	त्स	= च्छ	३२
	त्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	प्स	= च्छ	३२
	प्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	(१) च्छ	= श्च (मागधी)	३३
२७	द्य	= ज, ज्ज	३३
	य्य	= ज, ज्ज	३३
	र्य	= ज, ज्ज	३३
	द्य	= ज, ज्ज (पालि) टि० १	३३
	द्य	= य्य (,,) ,, ,,	३३
	र्य	= यिर, य्य, रिय (,,) टि० २	३३
	(१) र्य	= य्य (शौरसेनी)	३४
	र्य	= य्य (पालि (टि० १	३४
	(१) द्य	= य्य (मागधी)	३४
	[illegible]	= य्य (पालि) टि० २	३४
२८,	ध्य	= झ, ज्झ	३४
	ध्य	= झ, ज्झ (पालि) टि० ३	३४
	ह्य	= झ, ज्झ	३४
	ह्य	= य्ह (पालि) टि० ५	३४

२९	र्त	= ट	३५
	त	= ट (पालि) टि० २	३६
	(१) न्त	= न्द (शौरसेनी)	३६
३०	ज्ञ	= ण, ण्ण	३६
	ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० १	३६
	ज्ञ	= ण, ण्ण	३६
	ज्ञ	= ण (पालि) टि० १	३६
	(१) ज्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) ञ्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	(१) ण्य	= ञ्ञ ,,	३६
	ण्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) न्य	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
३१	स्त	= थ, त्थ	३७
	स्त	= थ त्थ (पालि) टि० १	३७
	(१) र्थ	= स्त (मागधी)	३७
	स्थ	= स्त (,,)	३७
३२	ष्ट	= ठ, ट्ठ	३७
	ष्ट	= ट्ठ (पालि) टि० २	३७
	ष्ट	= ट्ट (पालि) टि० ४	३७
	(१) ष्ट	= स्ट (मागधी)	३८
	ष्ठ	= स्ट (,,)	३८
	(१) ष्ट	= सट (पैशाची)	३८
३३	ड्म	= प, प्प	

	क्म	= प, प्प	३८
	ड्म	= डुम (पालि) टि० १–२	३८
	क्म	= कुम (,,) ,, ,,	३८
	क्म	= च्म (पालि) टि० ३	३८
३४	ष्प	= फ, प्फ	३९
	स्प	= फ, प्फ	३९
	ष्प	= प्फ (पालि) टि० १	३९
	स्प	= फ, प्फ (,,) ,, ,,	३९
	ष्प	= प्प टि० २	३९
	स्प	= प्प टि० २	३९
	ष्प	= प्प (पालि) टि० २	३९
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	
३५	ह्व	= भ, ब्भ	३९
	ह्व	= भ (पालि) टि० ३	३९
३६	न्म	= म्म	३९
	न्म	= म्म (पालि) टि० ४	३९
३७	ग्म	= म्म	३९
	ग्म	= गुम (पालि) टि० ५	३९
३८	श्म	= म्ह	४०
	ष्म	= म्ह	४०
	स्म	= म्ह	४०
	ह्म	= म्ह	४०
	क्ष्म	= म्ह	४०
	श्म	= म्ह (पालि) टि० १	४०
	ष्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०

	(१) म्ह	= म्म (अपभ्रंश)	४०
३०	श्न	= ण्ह	४०
	ष्ण	= ण्ह	४०
	स्न	= ण्ह	४०
	ह्न	= ण्ह	४०
	ह्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्म	= ण्ह	४०
	श्न	= ण्ह, ञ्ह (पालि) टि० ३	४०
	ष्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्न	= ण्ह (पालि) टि० ३	४०
	ह्न	= ण्ह (,,) टि० ३	४०
	ह्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	क्ष्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	(२) स्न	= सिन (पैशाची)	४१
	स्न	= सिन (पालि) टि० १	४१
४०	ह्ल	= ल्ह	४१
	ह्ल	= ल्ह (पालि) टि० २	४१
४१	ज्ञ	= ञ	४१
	ज्ञ	= ञ (पालि) टि० २	४१
४२	र्ह	= रिह	४१
	र्ह	= रह, रिह (पालि) टि० ४	४१
४३	र्श	= रिस	४२
	र्ष	= रिस	
	र्श	= रिस (पालि) टि० १	४२
	र्ष	= रिस (,,) ,, ,,	४२

(घ) ई = उ
(ङ) ई = ऊ
(च) ई = ए
ई = अ (पालि) टि० ४ ९१

'उ' विकार ९२–९४

९२

(क) उ = अ
(ख) उ = आ
(ग) उ = इ
(घ) उ = ई
(ङ) उ = ऊ
(च) उ = ओ
उ = अ (पालि) टि० १ ९६
उ = इ (पालि) टि० २ ९३
उ = ओ (पालि) टि० १ ९४

'ऊ' विकार ९४–९५

९३

(क) ऊ = अ
(ख) ऊ = इ
(ग) ऊ = ई
(घ) ऊ = उ
(ङ) ऊ = ए
(च) ऊ = ओ
ऊ = अ (पालि) टि० २ ९४
ऊ = अ (संस्कृत) टि० २ ९४
ऊ = ओ (पालि) टि० २ ९५

६१–६७

६७ 'त' विकार

त = च
त = छ
त = ट
त = ड
त = ण
त = र
त = ल
त = व
त = ह
त = ट (पालि) टि० १ ६६

६७–६८

६८ 'थ' विकार

थ = द
थ = ध
थ = ठ (पालि) टि० ३ ६७

६८

६९ 'द' विकार

द = ड
द = ध
(क) द = र
(ख) द = र
द = ल
द = व
द = ह
द = ड (पालि) टि० १ ६८
द = ळ (पालि) टि० ५ ६८

७७ 'य' विकार ७०–७१

य = आइ
य = ज्ञ
य = त
य = ल
य = व
य = ह
य = र टि० १ ७०
य = ल (पालि) टि० ३ ७०
य = व (") " ४ ७०

७८. 'र' विकार ७१–७२

र = ड
र = डा
र = ण
र = ल

७९ 'ल' विकार ७२

ल = ण
ल = र
ल = न (पालि) टि० १ ७२

८० 'व' विकार ७२

व = म
व = म

प्रकरण ૭ मुं

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

९१		ज्ञ, ञ	
	न्य	= ञ	
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० २	७६
९२		ञ्ञा	७७
	न्य	= ञ्ञा	
९३		ञ्ञु	७७
	ञि	= ञु	
९४		ट्ट	७८
	(क) ष्ट	= ट्ट	
	(ख) र्थ	= ट्ट	
	(ग) स्त	= ट्ट	
	त	= ट (पालि) टि० २	७७
९५		ठ्ठ, ठ	७७–७८
	(क) र्थ	= ठ्ठ	
	(ख) स्त	= ठ	
	(ग) स्थ	= ठ	
	स्थ	= ठ्ठ	
	र्थ	= ठ (पालि) टि० २	७७
	स्था	= ठ (पालि) टि० ४	७८
	स्थ	= ठ्ठ (") टि० ४	७८
९६		ड्ड	
	(क) र्त	= ड्ड	
	(ख) र्द	= ड्ड	
९७		ड्ढ, ढ	
	(क) र्ध	= ड्ढ	७९

	प्म	= फ	
	स्म	= प्प	
	त्म	= तुप (पालि) टि० ४	८०
१०३	म्भ, म्ब, म्भ		८१
	र्भ	= म्भ	
	म्र	= म्ब	
	(क) श्म	= म्भ	
	(ख) ष्म	= म्भ	
	म्र	= म्ब (पालि) टि० २	८१
१०४	र		८१
	(क) र्य	= र	
	(ख) र्ह	= र	
	(ग) त्र	= र	
१०५	ल, ळ		८२
	ण्ड	= ळ	
	र्ध	= ळ	
	र्थ	= ळ (पालि) टि० १	८२
१०६	स्स		८२
	स्स	= म्स	
१०७	ह		८२-८३
	(क) र्ष	= ह	
	(ख) ग्ध	= ह	
	(ग) र्थ	= ह	
	(घ) र्घ	= ह	
	(ङ) र्व	= ह	



कारक–विभक्त्यर्थ प्रकरण ११ मु पृ० २३९–२४१



शुद्धिपत्र

अशुद्ध–	शुद्ध–	पृष्ठ–	पंक्ति–
व्यञ्जनम्	व्यजनम्	१०	१९
त्य	घ	१४	२१
न–धृष्टद्युम्न. धट्ठज्जुणो	आ उदाहरण अने ए उपरनुं टिप्पण पृ० २६मा पं. ४ म्न–ना उदाहरणमां मूको	१६	१
	'र' लोप	१७	९ मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
अपभ्रंशमा	(१) अपभ्रंशमा	१७	७
	ध्य, श्च, त्स प्स–च्छ	३२	१० मी पंक्ति पछी मथाळु वधारवुं.
स्म	ए 'म्ह'	४०	१०
टिप्पण	टिप्पण २	४७	२८
पृ० ४४	पृ० ४५	४७	२८
६	२	५१	१०
	उ = आ विद्युत विद्दाओ	५३	२१ मी पंक्ति पछी वधारवुं.
दश	दस	७३	१
न्त न्ध	१०१ न्त, न्थ	८०	११

आ पछी बधा अंको सुधारीने वाचवा.

अर्थांत्	अर्थात्	१२	१५
ण	१ ण	९८	९
उत्तिष्टविश	उत्तिष्ठोपविश	१०६	१६
आ निज्ञानी	* आ निसानी	१२०	२६
		१२८	२२ मी पंक्ति पछी × × × × × न जोइए.
शे०	शौ०	१४१	२
३ गामना	गामनी	१-९	२२
यद्द	थइ	२७४	१३
तय	तव्व	३२०	१२

पम्हह	पम्हुह	३३७	अंक ७४
अग्घ	अग्ग	३३९	,, १००
विमुर	विसूर	३४३	,, ११२
उसिक	उम्सिक	३४४	,, १४४
हक्खव	हक्खुव	३४४	,, ,,
लोट्ट	आयम्ब	४४४	,, १४७

आ पुस्तकमां वपराएला ग्रंथो अने तेना संकेतोनो खुलासो.

(१)

अजितशान्तिस्तव	
अमरकोश	अमरको०
आचारांगसूत्र	आ०
उत्तराध्ययनसूत्र	
उपासकदशांगसूत्रटीका	
काशिका	का०
चतुर्विंशतिस्तव	
जीवविचार	
पाणिनीय अष्टाध्यायी	पाणि० पाणिनि०
पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया	वैदिकप्र०
पालिकोश	
पालिप्रकाश	पालीप्र० पालिप्र० पा०प्र०
पालिव्याकरण (कात्यायन)	
प्राकृतकथासंग्रह	
प्राकृतरूपावतार	
भगवतीसूत्र	भगव० भग०
मुनिवंदनसूत्र	
ललितविस्तर (बौद्धग्रंथ)	ललितवि०
विशुद्धिमग्ग	
श्रमणसूत्र	

षड्भाषाचन्द्रिका	
सूत्रकृताङ्गसूत्र	सू० सूत्र० सूत्रकृ०
सूर्यप्रज्ञप्तिटीका	
हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण	हे० हे० प्रा० व्या०
हेमचन्द्र संस्कृत व्याकरण	हे० सं०

(२)

अ०	अध्ययन, अध्याय
उ०	उद्देश
गा०	गाथा
द्वि०	द्वितीय
नि०	नियम
पालि० सं०	पालिप्रकाश सन्धिकल्प
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रथम
रा० जि राय०	रायचन्द्र जिनागमसंग्रह
श्रु०	श्रुतस्कन्ध
सू०	सूत्र

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमा नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यंजनो वपराय छे.

[1]स्वर—

अ, इ, उ (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, [2]ए, ओ, (दीर्घ)

---

१ प्राकृतमा 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'ऌ' नो विकार ' इलि ' थाय छे माटे ए बे स्वतन्त्र स्वर नथी 'ऐ' नो विकार ' ए ' के ' अइ ' थाय छे अने ' औ ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतन्त्र स्वर नथी

२ ' एक्को ' ' सेज्जा ' ' सोत्त ' ' सो त्थिअ' वगेरे शब्दोमा आवेला ' ए ' अने ' ओ ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचन्द्र जणावे छे (-शुभचन्द्रनु प्राकृत व्याकरण अ० १ ? -४०—लिखित पृ० ४) आ उपरथी ' ए ' अने ' ओ 'नी एकमात्रिकता पण व्याजबी जणाय छे उच्चारणनी दृष्टिए तो द्विर्भावने पामेला व्यंजननी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए, अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज द्विमात्रिकनी रीते थइ शकतो नथी आचार्य हेमचन्द्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमा पण ' ऐ ' अने ' औ 'ना उपयोगने इष्ट गणे छे (८-१-१) आचार्य हेमचन्द्र पण ' अयि 'ना प्राकृतरूप ' ऐ ' ने सम्मत गणे छे (८-२-१६९) तो पण तेमने ए सिवाय क्याय ' ऐ ' अने ' औ ' नो व्यवहार इष्ट नथी.

षड्भाषाचन्द्रिका	
सूत्रकृताङ्गसूत्र	सू० सूत्र० सूत्रकृ०
सूर्यप्रज्ञप्तिटीका	
हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण	हे० हे० प्रा० व्या०
हेमचन्द्र संस्कृत व्याकरण	हे० सं०

(२)

अ०	अध्ययन, अध्याय
उ०	उद्देश
गा०	गाथा
द्वि०	द्वितीय
नि०	नियम
पालि० सं०	पालिप्रकाश संधिरूप
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रथम
रा० जि राय०	रायचन्द्र जिनागमसंग्रह
श्रु०	श्रुतस्कन्ध
सू०	सूत्र

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमा नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यंजनो वपराय छे.

[1]स्वर—

अ, इ, उ. (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, [2]ए, ओ, (दीर्घ)

---

१ प्राकृतमा 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'लृ' नो विकार 'इलि' थाय छे माटे ए बे स्वतंत्र स्वर नथी. 'ऐ' नो विकार 'ए' के 'अइ' थाय छे अने 'औ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतंत्र स्वर नथी

२ 'एक्को' 'सेज्जा' 'सोत्त' 'सो च्चिअ' वगेरे शब्दोमा आवेला 'ए' अने 'ओ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचंद्र जणावे छे (–शुभचंद्रनु प्राकृत व्याकरण अ० १–२–६०—लिखित पृ० ४) आ उपरथी 'ए' अने 'ओ नी एकमात्रिकता पण व्याजवी जणाय छे उच्चारणनी दृष्टिए तो द्वित्वभावने पामेला व्यंजननी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए, अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज द्विमात्रिकनी रीते थइ शकतो नथी. आचार्य हेमचंद्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमा पण 'ऐ' अने 'औ' ना उपयोगने इष्ट गणे छे (८–१–१) आचार्य हेमचंद्र पण 'अयि' ना प्राकृतरूप 'ऐ' ने सम्मत गणे छे (८–१–१६९) तो पण तेमने ए सिवाय क्याय 'ऐ' अने 'औ' नो व्यवहार इष्ट नथी.

[१]व्यजन—

क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग)

च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)

---

१ आचार्य हेमचद्रना जणाव्या प्रमाणे प्राकृतमा स्वरसहित व्यजनने एटले खास व्यजनने के जे तद्दन विजातीयसयुक्त व्यजननो–च्च, क्न, स्म वगेरेनो प्रयोग थतो नथी तो पण 'ण्ह' 'ह्' अने 'ल्ह'नो प्रयोग होवानु तो हेमचद्रे पण स्वीकार्यु छे (जूओ ८–२–७४–७ –७८) 'अकस्मात्' शब्दने मागधदेशीय होवानु आचार्य शीगाके जणावेलु छे (जूओ– 'इत्थ वि जाणह अकस्मात्'" मू० आ० पृ० २६९ तथा एनी टीका पृ० २६७ स०) एथी प्राकृतमा ए ए स्थळे खोटो व्यजन पण आवे छे ण्ह ह्व अने न्ह उपरात मागधीमा 'स्त' 'स्म' वगेरे सयुक्त व्यजनो पण वपराय छे ए विषे सयुक्त व्यजनना विकारोने जणावता आगळ जणावीशु ए सिवाय जे जे शौरसेनी वगेरे भाषाओमा व्यजननी वपराशमा प्राकृत करता विशेष फेरफार छे ते विषे पण आ पुस्तकमा ते ते ठेकाणे जणावीशु ड नो ल' थतो होवाथी एने मूर्धन्य पण कहेवामा आवे छे पालीमा ए 'ळ' ने ज जूदो गणीने ३३ व्यजनोने गणाववामा आव्या छे (जूओ कच्चा० पा० व्या० सू० ९)

२ 'प्राद्' प्रत्यद् 'अद्' 'उदङ्' –वगेरेनी पडे प्राकृतमा कोइ पण शब्दमा स्वतत्र रीते 'ङ' वर्णनो उच्चार थता नथी, किंतु सङ्गो, सङ्गो पङ्को, पङ्का अगण, अङ्गण ग्गण, ङ्ङ्गण— वगेरे शब्दोमा स्वयम्भूप 'ङ' नो प्रयोग शिष्टसमत छे सस्कृतनी पडे प्राकृतमा 'ङ' प्रयोग अमुक शब्दोमा ज थतो होवाथी ए वर्ण भाषामा स्वतत्र ङ नो वपराश शिरल कहेवाय

३ धातुना ('युञ्ज' वगेरे) पद । रूपो सिवाय सस्कृत मा स्वतत्र 'ञ' नो प्रयोग मळतो नथी जेम प्राकृतमा

ट, ठ, ड, ढ, [illegible] (टवर्ग)

त, थ, द, ध, न (तवर्ग)

प, फ, ब, भ, म (पवर्ग)

य, र, ल, व (अतस्थ)

स, ह (ऊष्माक्षर)

ं– अनुस्वार[1]



पण क्याय स्वतत्र ' ञ ' प्रयोजातो नथी कञ्चुक , लाञ्छनम्, जञ्ज पूक –वगेरे प्रयोगोनी पेठे प्राकृतमा कञ्चुओ, लञ्छण, जञ्जवूओ वगेरे प्रयोगो मुख्यवहृत छे मात्र पालीमा ञाति (ज्ञाति), ञात (ज्ञात), ञाण (ज्ञान) वगेरे प्रयोगो सस्कृतना ' ज्ञ ' जेया पण मळी आवे छे सस्कृतमा अने प्राकृतमा एकला ' ञ ' करता स्ववर्ग्यसयुक्त 'ञ' नो प्रयोग विशेष प्रचलित छे अहिमञ्ञु (अभिमन्यु) पुञ्ञ (पुण्य), अवञ्ञा (अवज्ञा), अञ्जली (अञ्जलि)–मागधी अने ञ्ञान (ज्ञान) विञ्ञान (विज्ञान)–पैशाची ' ञ्ञ 'ना प्रयोगमा पाली, मागधी अने पैशाची विशेष समानता धरावे छे– (८–४–२९३ तथा ३०३) तथा (पालिप्र०पृ० २३–२४)

१ पालीमा ' अनुस्वार 'ने व्यजनमा गणावीने ' निग्गहीत 'नी सज्ञा आपेली छे अने ललितविस्तरमहापुराणमा तो एने (अनुस्वारने) अने विसर्गने स्वरोनी साथे ज गणावेला छे आ प्रथमा वर्णवेली नाराक्षरी आपणी गूजराती बाराखडी जेवी छे (जूओ ललितवि०पृ०१२७)

प्रकरण २

सामान्य स्वरविकार.

दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर[1]

१. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला दीर्घस्वरो प्राकृतमा प्राय. ह्रस्व थई जाय छे अर्थात् संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला 'आ'नो अ, 'ई' नो इ, 'ऊ'नो उ, 'ए' नो इ अने 'ओ' नो उ थई जाय छे. जेमके:—

आ=अ–आम्रम् अम्बं । आस्यम् अस्सं । ताम्रम् तम्ब । *विरहाग्निः विरहग्गी ।*

ई=इ – तीर्थम् तित्थं । मुनीन्द्रः मुणिंदो ।

ऊ=उ–गुरूल्लापाः गुरुल्लावा । चूर्णः चुण्णो ।

ए=इ –नरेन्द्रः नरिंदो । म्लेच्छः मिलिच्छो ।

ओ=उ–अधरोष्ठ अहरुट्ठ । नीलोत्पलम् नीलुप्पलं ।

ह्रस्वस्वर=दीर्घस्वर.

२. सस्कृतना श्य, श्र, र्श, श्व, श्श; ष्य, ष्र, र्ष, ष्व, ष्ष; स्य, स्र, र्स, स्व, अने स्सनी पूर्वे रहेलो ह्रस्वस्वर प्राकृतमा प्रायः दीर्घभाव पामे छे. उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे:—

श्य—आवश्यकम् आवासयं। कश्यपः कासवो। पश्यति पासइ।

श्र—मिश्रम् मीसं। विश्राम. वीसामो। विश्राम्यति वीसमइ ।

[2]र्श—संस्पर्शः संफासो ।

---

१ जूओ पालीप्रकाश पृ० ८, नियम–११ (दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर) तथा पृ० ५९ (ए=इ) अने (ओ=उ) अने पृ० ९ (औ=उ)

२ जूओ पालीप्र० पृ० ११–(परामर्श=परामासो) टिप्पण.

श्व—अश्व आसो । विश्वसिति वीससइ । विश्वास वीसासो ।

श्श—दुश्शासन दूसासणो । मनश्शिला मणासिला ।

ष्य—पुष्य पूसो । मनुष्य मणूसो । शिष्य सीसो ।

र्ष—वर्षक वासओ । वर्ष वासो । वर्षा वासा ।

ष्व—विष्वक् वीसु । विष्वाण वीसाणो ।

ष्ष—निष्षिक्त नीसित्तो ।

स्य—कस्यचित् कासइ । सस्यम् सासं ।

स्र—उस्र ऊसो । विस्रम्भ वीसम्भो ।

स्व—निस्व नीसो । विकस्वर विकासरो ।

स्स—निस्सह नीसहो ।

आ=अ

३ संस्कृतना आकारक अकारान्त पुल्लिंगी शब्दना आदिना 'आ' नो प्राकृतमां विकल्पे 'अ' थाय छे जेमके —

प्रकार पयारो, पयरो । प्रचार पयारो, पयरो । प्रहार पहारो, पहरो । प्रवाह पवाहो, पवहो । प्रस्ताव पत्थावो, पत्थवो ।

इ=ए

४ संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व आवेला 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे जेमके —

¹डिण्डिम—डेण्डिमो, डिण्डिमो । धम्मिल्लम् धम्मेल्लं, धम्मिल्लं । पिष्टम् पेट्ठं, पिट्ठं । पिण्डम् पेंडं, पिंडं । बिल्वम् बेल्लं, बिल्लं । विष्णु वेण्हू, विण्हू । सिन्दूरम् सेंदूरं, सिंदूरं ।

¹ जुओ पा० मा० पृ० ३–(इ–ए)

उ=ऊ.

५. संस्कृत शब्दोमा रहेला [1]त्स अने च्छ नी पूर्वना 'उ'नो 'ऊ' थाय छे.—

त्स–उत्सरति ऊसरइ । उत्सव· ऊसवो ।

उत्सिक्त· ऊसित्तो । उत्सुकः ऊसुओ ।

च्छ–उच्छ्वासति ऊससइ । उच्छ्वासः ऊसासो ।

उच्छुकः ऊसुओ ।

उ=ओ.

६. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व रहेला 'उ', नो प्राकृतमा 'ओ' थाय छे. जेमके —

[2]कुट्टिमम् कोट्टिमं । कुण्ठ· कोंठो । कुन्त कोंतो ।

तुण्डम् तोंडं । पुद्गलम् पोग्गल । पुष्करम् पोक्खरं ।

पुस्तक· पोत्थओ । मुण्डम् मोंडं । मुद्गर· मोग्गरो । मुस्ता मोत्था ।

लुब्धकः लोद्धओ । व्युत्क्रान्तम् वोक्कंतं ।

[3]ऋ=अ

७. संस्कृत शब्दना आदिभागमा आवेला ' ऋ ' नो प्राकृतमा 'अ' थाय छे.

कृतम् कयं । घृतम् घय । घृष्टः घट्ठो ।

तृणम् तणं । मृगः मओ । मृष्टम् मट्ठं । वृषभः वसहो ।

---

१ आ नियम आ बे शब्दोमा लागतो नथीः–उत्सन्नः उच्छन्नो । उत्साहः उच्छाहो ।

२ जूओ पालीप्र० पृ० ५४–(उ=ओ)

३ जूओ पालीप्र० पृ० १–(ऋ=अ)

ऋ=उ

८ सामासिक अने गौण संस्कृत शब्दना अंत्य 'ऋ' नो प्राकृतमा 'उ' थाय छे.

पितृगृहम् पिउघर । पितृपति पिउवई ।
पितृवनम् पिउवण । पितृष्वसा पिउसिआ । मातृगृहम् माउघर ।
मातृष्वसा माउसिआ । मातृमण्डलम् माउमंडल ।

[1]ऋ=रि

९ संस्कृतना केवल—व्यंजन वगरना—'ऋ' नो प्राकृतमा 'रि' थाय छे.

ऋक्ष रिच्छो । ऋद्धि रिद्धी । ऋषभ रिसहो ।

ऌ=इलि.

१० संस्कृतना 'ऌ'नो प्राकृतमा 'इलि' थाय छे —
क्लृप्त किलिन्नो । क्लृस किलित्तो ।

[2]ऐ=ए

११ संस्कृतना 'ऐ'नो प्राकृतमा 'ए' थाय छे —
ऐरावण एरावणो । कैटभ केढवो । कैलास केलासो ।
त्रैलोक्यम् तेलुक्क । वैद्य वेज्जो । वैधव्यम् वेहव्व ।
शैला सेला ।

[3]औ=ओ.

१२. संस्कृतना 'औ'नो प्राकृतमा 'ओ' थइ जाय छे —

---

१ जूओ पालीप्र० पृ० ३–(ऋ=रि) टिप्पण
२ जूओ पालीप्र० पृ० ३–(ऐ=ए)
३ जूओ पालीप्र० पृ० ७–(औ=ओ)

क्रौञ्चः कोंचो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी ।
कौशिक. कोसिओ । कौस्तुभ. कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वण ।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमा पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमा ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते एटले जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी. तेमा क्याय क्याय ' अ 'नो इ, ई, उ; 'उ'नो अ, आ; 'ऋ' नो अ, आ, इ, उ, ऋ; ' ऌ 'नो इ, इलि; ' ए 'नो इ, ई; अने 'ओ'नो अउ अने ओ थाय छे [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरखु छे, पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जूदु पाडी शकाय छे.]

अ–इ, ई, उ—

सं० प्रा० अ०
वचनम् वअण (वइणं) वेण ।
(वईण) वीण ।
शयनम् सअण (सइनं) सेनं[1] ।
नयनम् नअण नइण (नइनं) नेन ।
नवनीतम् नअणीअं (नउणीअ) नोणीअ ।

[वस्तुत. आ रूपो 'य' अने 'व' ना सम्प्रसारणथी बनेल्ग छे]

उ–अ, आ—

बाहु.—बाहा (स्त्री०) बाहा, बाह, बाहु ।

ऋ–अ, आ. इ, उ, ऋ—

कृत्यम् किच्च कच्चु, कृच्चु ।

---

[1] जूओ सिर्धदिग्गम पा० सू० २८.

तृणम् तण तिणु, तणु, तृणु ।

सुकृतम् सुकय सुकिउ, सकिदु, सुकृदु।

ऌ–इ, इलि—

क्लृप्त किलिनो क्लिनो, किलिन्नओ ।

ए–इ, ई—

रेखा लेहा लिह, लीह, लेह ।

औ–अउ, ओ—

गौरी गोरी गउरी गोरी ।

व्यंजनविकारोना प्रसंगमा तो ज्या ज्या प्राकृत करता शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमा विशेषता छे तेने ते ते स्थळे जणाववाना छीए

क–तीर्थंकर तित्थयरो। लोक लोओ।
ग–नग नओ। नगरम् नयर। मृगाङ्क मयङ्को।
च–कचग्रह कयग्गहो। शची सई।
ज–गज गओ। प्रजापति पयावई। रजतम् रयय।
त–धात्री धाती–धाई। यति जई। रसातलम् रसायल।
रात्रि राति–राई। वितानम् विआण।
द–गदा गया। मदन मयणो।
प–रिपु रिऊ। सुपुरुष सुउरिसो।
ब–विबुध विउहो।
य–वियोग विओओ।
व–वडवानल वलयाणलो। लावण्यम् लायण्ण।

(आ बीजो नियम अने एवा बीजा असंयुक्त व्यंजनना विकारने लगता सामान्य के विशेष नियमो पैशाची भाषामा लागता नथी जेमके,

सं०	प्रा०	पै०
मकरकेतु —	मयरकेऊ—	मकरकेतू।
सगरपुत्रवचनम्—	सयरपुत्तवयण—	सगरपुत्तवचन।
विजयसेनेन लपितम्	विजयसेणेण लविय—	विजयसेनेन लपित।
पापम्—	पाव—	पाप—
आयुधम्—	आउह—	आयुध।)

पूर्वोक्त नियम द्वारा प्राकृतमा 'क' 'ज' 'त' अने 'द' नो लोप जणावेलो छे तो पण प्राकृतना पेटभेदरूप शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमा ते वर्णो लोपाता नथी, किंतु बीजा बीजा वर्णोना रूपमा फेरवाइ जाय छे

[1]त–द

(१) शौरसेनीमां अने क्याय अपभ्रंशमां 'त' नो 'द' थाय छे

सं०	प्रा०	शौ०, अप०	सं०	प्रा०	शौ०, अप०
कथितम्	कहिअ	कधिद ।	प्रतिज्ञा	पइण्णा	पदिण्णा ।
तत	तओ	तदो ।	मारुति	मारुई	मारुदी ।
पूरित	पूरिओ	पूरिदो ।	मन्त्रित	मंतिओ	मंतिदो ।

[3]ज–य

(२) मागधीमां आदिस्थित के अनादिस्थित 'ज' नो 'य' थाय छे

सं०	प्रा०	मा०	सं०	प्रा०	मा०
जनपद	जणवओ	यणवदे ।	दुर्जन	दुज्जणो	दुय्यणे ।
जानाति	जाणइ	याणदि ।	वर्जित	वज्जिओ	वय्यिदे ।
गर्जित	गज्जिओ	गय्यिदे ।			

त, [4]द–त

(३) पैशाचीमां अने चूलिकापैशाचीमां 'त' कायम रहे छे अने 'द' नो पण 'त' थाय छे

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ९ (त=द)

२ शौरसेनीना बधा दरेक नियमो मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां पण लागु थई शके छे

३ जूओ पा० प्र० पृ० ७ (ज=य)

४ जूओ पा० प्र० पृ० १० (द=त)

सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०	सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०
भगवती	भगवई	भगवती।	प्रदेशः	पदेसो	पतेसो।
पार्वती	पव्वई	पव्वती।	मदनः	मदणो	मतनो।
शतम्	सयं	सतं।	वदनकम्	वदणयं	वतनकं।
दामोदर.	दामोदरो	तामोतरो।	मदनम्	सदणं	सतन।

'ग—क, ज—च.'[2]

(४) चूलिकापैशाचीमा 'ग' नो 'क' थाय छे अने 'ज' —नो 'च' थाय छे.

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गिरितटम्	गिरितडं	किरितडं।	जर्जरम्	जज्जर	चच्चर।
नगरम्	नयरं	नकर।	जीमूत:	जीमूओ	चीमूतो।
मार्गण	मग्गणो	मक्कनो।	नियोजितम्	नियोजिअ	नियोचित।
राजा	राया	राचा।			

क[3]—ग.

(५) अपभ्रंशमा क्याय 'क' नो 'ग' थाय छे.

सं०	प्रा०	अ०
विक्षोभकर.	विच्छोहयरो	विच्छोहगरो।

१ जुओ पा० प्र० पृ० ५६ (ग=क)
२ जुओ पा० प्र० पृ० ५७ (ज=च)
३ जुओ पा० प्र० पृ० ५५ (क=ग)

संयुक्त 'कादि' लोप

३ संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष अने स–एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्राय लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे जेमके,

क–भुक्तम् भुत–भुत्त।	ड–खड्ग खगो–खग्गो।
मुक्त मुत–मुत्तो।	षड्ज सजो–सज्जो।
शक्त सतो–सत्तो।	त–उत्पलम् उपल–उप्पल।
[1]सिक्थम् सिथं–सित्थं।	उत्पाद उपाओ–उप्पाओ।
ग–दुग्धम् दुधं–दुद्धं।	द–मद्गु मगु–मग्गू।
मुग्धम् मुधं–मुद्धं।	[2]मुद्गर –मुगरो–मुग्गरो।
ट–[3]कैटफलम् कफल–कप्फल।	प–[4]गुप्त गुत–गुत्तो।
षट्पद उपओ–छप्पओ।	सुप्त –सुत–सुत्तो।

१ जुओ पालीप्र० पृ० ८१ (स=त) (क्थ=थ)

२ क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ अने प्फ ना स्थानमा अनुक्रमे क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ तथा प्फ थाय छे

३ ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध अने ब्भ ना स्थानमा अनुक्रमे ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध अने ब्भ थाय छे

४ जुओ पालीप्र० पृ० ८४ (नियम–३०)

५ जु० पा० प्र० पृ० २० (नियम–३१)

६ जु० पा० प्र० पृ० ८१–(स=त

श—आश्लिष्ट आलिद्धो।	निष्ठुर निठुर—निट्ठुरो।
[1]निश्चल निचल—निच्चलो।	निष्पुंसनम् निपुंसन—निप्पुंसण।
श्चोतति चुअइ।	[4]शुष्कम् सुक—सुक्क।
[2]श्मश्रु मम्सू।	षष्ठ छठ—छट्ठो।
श्मशानम् मसाण।	स—[5]निस्पृह निपह—निप्पहो।
हरिश्चन्द्र हरिअन्दो।	[6]स्कन्द कन्दो।
श्लक्ष्णम् लण्ह।	स्खलित खलिओ।
ष—[3]गोष्ठी गोठी—गोट्ठी।	स्तव. तवो।
तुष्ट तुठ—तुट्ठो।	स्नेह नेहो।

संयुक्त 'मादि' लोप.

८. संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती म, न अने य नो प्राकृतमां प्राय लोप थई जाय छे. अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे. जेमके—

म—युग्मम् युग—युग्ग।	स्मर सरो।
रश्मि रमि—रस्सी[7]।	स्मेरम सेर।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ३८—(च्छ=च्छ) निच्छल।

२ श्मश्रु मस्सु पा० प्र० पृ० ७१ टिप्पण

३ जू० पा० प्र० पृ० ७३—नि० ३८—(ष्ठ=ठ ष्ट=ठ)

पृ० ३७ (ष्क=क—नि० ८७) पृ० ३० (ष्प=प नि ४८)

४ शुष्कम् सुक्ख (पा० प्र० पृ० ३७)

५ जू० पा० प्र० पृ० ३६ (स्प=प) पृ० ३७ (स्क=क)

पृ० ३९ (स्त=त—नि० ८८) पृ० ३८ (स्थ=थ स्ख=ख)

६ स्कन्द खन्दो, खन्दो—पाली प्र० पृ० ३. *टिप्पण.

७ जू० पा० प्र० पृ० ० —(स्म=स्स)

न—धृष्टद्युम्न धट्ठज्जुणो[1]। [2]य—कुड्यम् कुड—कुड्ड।

[3]ग्न नग—नग्गो। व्याघ वाहो।

ग्न लग—लग्गो। श्यामा सामा।

संयुक्त 'व्यंजन' लोप

१ संयुक्त व्यंजनना पूर्ववर्ती वा परवर्ती ल, व, ब, विसर्ग अने र नो प्राय लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे उदाहरण —

ल—उल्का उका—उक्का। [4]ब—अब्द अद —अद्दो।

वल्कलम् वकल—वक्कल। लुब्धक लुधअ—लुद्धओ।

ले—विक्लव विकव—विक्कवो। शब्द सद—सद्दो।

श्लक्ष्णम् सण्ह। स्तब्ध—थध—थद्धो।

[5]र—तस्त भत—अत्थो। विसर्ग—दु खित दुखिअ—दुक्खिओ।

पक्वम् पिक—पिक्क। दु सह दुसह—दुस्सहो।

श्वेत्र खेत्ओ। नि सहम् निसह—निस्सह।

क्ष्वोटक खोडओ। नि सरति निसरइ—निस्सरइ।

नत थओ।

१ आ शब्दमा ण नो द्विभाव थयो नथी

२ जु० पा० प्र० पृ० ८८ (नि० ९९)

३ जु० पा० प्र० पृ० ३१ (नि०   )

४ जु० पा० प्र० पृ० ३०—३१ (नि० ३८—३३)

  जु० पा० प्र० पृ० ३ —३३ (नि ३४—३०)

५ जु० पा० प्र० पृ० ३ (नि० ८२)

'र—अर्क अक—अक्को । ' र—क्रिया किया ।
वर्ग वग—वग्गो । ग्रह गहो ।
दीर्घ दिघ—दिग्घो । चक्रम् चक्र—चक्क ।
वार्ता वता—वत्ता । रात्रि राति—रत्ती ।
सामर्थ्यम् सामथ्य—सामत्थ । धात्री धति—धत्ती ।

अपभ्रंशमा प्राय परवर्ती ' र ' नो लोप विकल्पे थाय छे

प्रिय पिओ प्रिउ, पिउ ।

[सूचना—ज्या पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बे जातना व्यजननो लोप प्राप्त होय त्या प्रयोगो प्रमाणे लोपनु विधान करवु जोईए, जेमके,

पूर्ववर्तीनो लोप— परवर्तीनो लोप—

द—उद्विग्न उविग—उव्विग्गो । य—काव्यम् कव—कव्व ।
द्विगुण बिउणो । माल्यम् मल—मल्ल ।
द्वितीय बीओ । व—द्विजाति दुआई ।
ह—कल्मषम् कमस—कम्मस । द्विप दिओ ।
शुल्वम् सुव—सुव्व ।
र—सर्वम् सव—सव्व ।

पूर्ववर्ती अने परवर्तीनो वारा फरती लोप—
न—उद्विग्न —उव्विग—उव्विग्गो । द—द्वारम् वार ।
ग—उद्विग्न—उव्विण—उव्विण्णो । व—द्वारम् दार ।

आ बधा उदाहरणोमा त्रीजो, चोथो अने पाचमो, ए त्रणमाथी कोई एक नियम द्वारा लोपनो संभव छे]

१ जु० पा० प्र० पृ० १० (नि० १०)
२ जु० पा० प्र० पृ० ११—१३ (नि० ? —१६)

'द्र' लोप[1]

६. 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द्र' ना 'र' नो लोप प्राकृतमाँ विकल्पे थाय छे:

चन्द्रः चन्द्रो, चंदो । द्रव-[2] द्रवो, दवो । द्रहः द्रहो, दहो । द्रुम- द्रुमो, दुमो । भद्रम् भद्रं, भदं । रुद्रः रुद्रो, रुदो । समुद्रः समुद्रो, समुदो ।

'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'

७. केटलाक संस्कृत शब्दोना छेवटना व्यंजननो 'अ' थाय छे.— शरत् सरओ । भिषक्[3] भिसओ । इत्यादि.

'कादि' नो 'य'

८. अवर्णथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला, असंयुक्त अने अवर्णान्त क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व-एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां सामान्य रीते 'य' थाय छे. उदाहरणो आ प्रमाणे छे.

क—तीर्थकर- तित्थयरो । शकटम् सयढं ।

ग—नगरम् नयरं । मृगाङ्कः मयंको ।

च[4]—कचग्रहः कयग्गहो । काचमणिः कायमणी ।

ज[5]—प्रजापतिः पयावई । रजतम् रययं ।

---

१ आ नियम एक 'चन्द्र' शब्दने लागतो नथीः चन्द्रम् चन्द्रं ।

२ जु० पा० प्र० पृ० १२ (नि० १५)

३ भिषक्-भिसक्को (पाइअकोश)

४ जुओ पा० प्र० पृ० ५६-(च=य)

५ जु० पा० प्र० पृ० ५७-(ज=य)

त—पातालम् पायालं । रसातलम् रसायल ।

द्—गदा गया । मदनः मयणो ।

यं—नयनम् नयणं । दयालु· दयालू ।

वँ—लावण्यम् लायण्णं ।

खादिनो 'ह'

९. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमा 'ह' थाय छे. जेमके.

ख—मुखम् मुहं । मेखला मेहला । लिखति लिहइ । शाखा साहा

घं—जघनम् जहण । माघः माहो । मेघ मेहो । श्लाघते लाहइ ।

थ—कथयति कहइ । आवसथ आवसहो । नाथ. नाहो । मिथुनम् मिहुणं ।

धं—इन्द्रधनुः इन्दहणू । बधिर. बहिरो । बाधते बाहइ । व्याध. वाहो । साधुः साहू ।

भ—स्तनभरः थणहरो । नभस् नह । सभा सहा । स्वभावः सहावो । शोभते सोहइ ।

---

१ आ विधान ('य' नो पण 'य' करवानु विधान) बीजा नियमनो बाध करे छे.

२ क्याय कोई एकाद शब्दमा इकारथी पर आवेला 'व' नो पण 'य' थई जाय छेः—पिबति पियइ ।

३ जु० पा० प्र० टि० ५६ (घ=ह)

४ ,, ,, ,, ,, ६० (थ=ह)

५ ,, ,, ,, ,, ६२ (भ=ह)

[प्राकृतमां ख, घ,-थ, ध अने भ-नो 'ह' थवानुं जणाव्युं छे तो पण शौरसेनी, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां तेम थतुं नथी.]

थ—ध

(१) शौरसेनीमां विकल्पे अने अपभ्रंशमां क्यांय क्यांय शब्द मध्यस्थित 'थ' नो 'ध' थाय छे.

सं०	प्रा०	शौ०—अ०
कथम्	कह	कध, कहं।
कथयति	कहेइ	कधेदि, कधेइ, कहेइ
कथितम्	कहिअ	कधिद, कहिअ।
नाथ	नाहो	नाधो नाहो।
राजपथ	रायपहो	राजपधो राजपहो।

घ—ख, ध—थ, भ—फ[1]

(२) चूलिकापैशाचीमां 'घ' नो 'ख', 'ध' नो 'थ' अने 'भ' नो 'फ' थाय छे

	सं०	प्रा०	चू० पै०
घ—	घर्म	घम्मो	खम्मो।
	मेघ	मेहो	मेखो।
	व्याघ्र	वग्घो	वक्खो।
ध—	मधुरम्	महुरं	मथुरं।
	बान्धव	बन्धवो	पन्थवो।
	धूली	धूली	थूली।

---

१ केटलाक वैयाकरणोने मते शब्दनी आदिमां आ नियम लागतो नथी

	सं०	प्रा०	चू०पै०
भ—	रभस	रहसो	रफसो ।
	रम्भा	रभा	रंफा ।
	भगवती	भगवई	फकवती

झ—छ

(२) हेमचन्द्रने मते चूलिकापैशाचीमा 'झ' नो 'छ' थाय छे

झर्झर	झज्झरो	छच्छरो ।
निर्झर	निज्झरो	निच्छरो ।

ट—ड

१०. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असयुक्त 'ट' नो प्राकृतमा ड थाय छे

ट—घट घडो । घटते घडइ । नट नडो । भट भडो ।

डु—तु

(१) पैशाचीमा 'डु' नो 'तु' पण थाय छे.

सं०	प्रा०	पैशाची
कुटुम्बकम्	कुडुबअ	कुतुबक, कुडुबक ।
वटुकम्	वडुअ	वतुअ, वडुअ ।
पटु	पडु	पटु पतु ।

ठ—ढ

११. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असयुक्त 'ठ' नो प्राकृतमा 'ढ' थाय छे

१ पालीमा तो क्याय सयुक्त 'ट' नो पण 'ड' थाय छे — लेट्टु लेड्डु । निघण्टु निघण्डु । पा० प्र० पृ० ४८ (ट=ड)

ठ—कमठः कमढो। कुठारः कुढारो। पठति पढइ। मठः मढो। शठः सढो।

ड—ल.

१२. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ड' नो 'ल' थाय छेः

ड—क्रीडति कीलइ। गरुडः गरुलो। तडागम् तलायं। वडवामुखम् वलयामुहं।

ड—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम केटलाक वैयाकरणो माने छेः

सं०	प्रा०	चू० पै०
डमरुकः	डमरुओ	टमरुको।
तडागम्	तलायं	तटाकं।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा।
मण्डलम्	मडलं	मटलं।

ढ—ठ

(२) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छेः

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गाढम्	गाढं	काठं।	ढक्का	ढक्का	ठक्का।
दंष्ट्रा	दाढा	दाठा	षण्ढ.	संढो	सठो।

---

१. पालीभाषामां प्रायः सर्वत्र ड नो ळ थाय छेः-('जु० पा० प्र० पृ० ४३ (ड-ळ)'

ण—न

(३) पैशाचीमां 'ण' नो 'न' थाय छे

सं०	प्रा०	पै०
गण	गणो	गनो।
गुण	गुणो	गुनो।

न—ण

१३ स्वरपरवर्ती, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे

कनकम् कणयं। नयनम् नयणं। मदन मयणो। मानते माणइ। वचनम् वयणं। वदनम् वयणं।

न—ण

१४. संस्कृतमां शब्दनी आदिमां रहेला असंयुक्त 'न' नो विकल्पे 'ण' थाय छे

नदी णई, नई। नर णरो, नरो। नयति णेइ, नेइ।

प—व

१५. स्वरपरवर्ती, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' थाय छे

उपमा उवमा। उपसर्ग उवसग्गो। गोपति गोवई। प्रदीप पईवो। महिपाल महिवालो।

---

१ जुओ० पा० प्र० पृ० ५८ (ण=न)

२ जु० पा० प्र० पृ०६३ (न=ण)

३ „ „ „ ६१ (प=व)

'प—व

१६. अवर्णथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित[1] 'प' नो प्राकृतमा 'व' ज थाय छे

कलाप कलावो । कपालम् कवाल । कपिलम् काविल । काश्यप कासवो । कुणपम् कुणव । तपति तवइ । पापम् पाव । शपथ सवहो । शाप सावो ।

प—वँ

(१) अपभ्रंशमा तो 'प' ने स्थाने 'वँ' पण बोलाय छे

सं०	प्रा०	अ०
शपथ	सवहो	सवँधु, सवधु ।

फ—भ, ह

१७. स्वरथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'फ' नो प्रयोगानुसार 'भ' अने 'ह' थाय छे

फ—भ—रेफ रेभो । शिफा सिभा ।

फ—ह—मुक्ताफलम् मुत्ताहल ।

फ—भ, ह—गुफति गुभइ, गुहइ । शफरी सभरी, सहरी । सफलम् सभल, सहल । शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ ।

फ—भ

(१) अपभ्रंशमा पण 'फ' नो 'भ' थाय छे

सं०	प्रा०	अ०
सफलम्	सभल, सहल	सभलु

१ आ नियम पछीना नियमनो अपवाद छे

वँ—प

(१) केटलाक वैयाकरणोने मते चूलिकापैशाचीमां 'ब' ने स्थाने 'प' थाय छे:[1]

सं०	प्रा०	चू०पै०
बालक	बालओ	पालओ।
बान्धव	बन्धवो	पन्धवो।

[2]ब—व

१८ स्वरपरवर्ती, एक पदस्थित अने असंयुक्त 'ब' नो 'व' थाय छे

अलाबू अलावू।[3] शबलम् सवलं।

प—वँ

(१) अपभ्रंशमां 'म' ने बदले 'वँ' पण बोलाय छे

स०	प्रा०	अ०	
कमलम्	कमल	कवँलु,	कमलु।
तथा	तह तहा,	तिवँ,	तिम।
भ्रमर	भमरो, भसलो,	भवँरु,	भमरु।
यथा	जह जहा,	जिवँ,	जिम।

---

१ जु० प्रा० प्र० पृ० ८२ (ब=प)
२ ,, ,, ,, ,, ,, (ब=व)
३ ,, ,, ,, ,, ,, अलाउ अलाऊ।

य=ज[1]

'१६, संस्कृत शब्दनी आदिमां आवेला 'य'नो प्राकृतमां 'ज' थाय छे.[2]

यमः जमो । यशः जसो । याति जाइ ।

य—य

(१) मागधीमां 'य' नो 'ज' न थतां 'य' ज रहे छे:

सं०	प्रा०	मा०
याति	जाइ	यादि ।
यथास्वरूपम्	जहासरूवं	यधाशलूवं ।
यानपात्रम्	जाणवत्तं	याणवत्तं ।

र—ल

(१) मागधीमां 'र' नो 'ल' थाय छे; अने पैशाचीमां तो ए विकल्पे थाय छे:

सं०	प्रा०	मा०	पै०
करः	करो	कलो	करो कलो ।
नरः	नरो	नलो	नरो नलो ।
विचारः	विआरो	विआलो	विचालो विचारो ।

ल—ळ[3]

(१) पैशाचीमां 'ल' नो 'ळ' थाय छेः

कमलम्	कमलं	कमळ ।
कुलम्	कुल	कुळं ।

---

१ गवयः गवजो गवयो पाली॰ प्र॰ पृ॰ ६२.

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे तो लागतो पण नथीः यथाख्यातम् अहक्खाय । यथाजातम् अहाजाय । पृ० १०मां जणावेलो बीजो नियम क्याय शब्दनी आदिमां पण लागे छे एथी अहीं 'यथाख्यात' अने 'यथाजात' नो आदिनो 'य' लोपाएलो छे.

३ जुओ पा० प्र० पृ० ४३ (ड=ळ)

जलम्	जल	जळ।
शीलम्	सील	सीळ।
सलिलम्	सलिल	सलिळ।

शा—स ष—स[1]

१०. संस्कृतमां वपराता 'श' अने 'ष' नो प्राकृतमां 'स' थाय छे

श—कुश कुसो। दश दस। नृशंस निससो।
विंशति विसइ। वश वसो। शब्द सद्दो।
श्यामा सामा। शुद्धम् सुद्ध। शोभते सोहइ।

ष—कषाय कसायो। घोषति घोसइ। निकष निहसो।
षण्ड सडो।

श, ष—विशेष विसेसो। शेष सेसो।

स—श

(१) मागधीमां तो 'स' नो 'श' थाय छे अने पैशाचीमां तो प्राकृतनी प्रमाणे छे

सं०	प्रा०	मा०
पुरुष	पुरिसो	पुलिशे।
सारस	सारसो	शालशे।
श्रुतम्	सुअ	शुद।
शोभनम्	सोहण	शोभण।
हंस	हंसो	हंशे।

[1] तु० पा० प्र० पृ० ६ (श=स, ष=स)

[1]ह—घ

२१. सस्कृतमा अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो प्राकृतमा विकल्पे 'घ' थाय छे

सहार —सघारो, सहारो। सिंह —सिंघो, सीहो।



---

१ एवो पण एकाद प्रयोग मळे छे, ज्या स्वरथी पर आवेला 'ह' नो पण 'घ' थाय छे दाह —दाघो, दाहो।

प्रकरण ४

संयुक्त व्यजनोना सामान्य फेरफारो

२२. संस्कृतना 'क्ष' नो विशेषे करीने प्राकृतमा 'ख' थाय छे अने क्याय क्याय तो प्रयोगानुसारे 'क्ष'नो 'छ' अने 'झ' पण थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'क्ष' नो 'क्ख' 'च्छ' अने 'ज्झ' थाय छे

[1]क्ष=ख क्ष=छ[2] क्ष=झ

क्षय खओ। क्षीणम् खीण। क्षीरम् खीर। क्ष्वेटक खेडओ। क्ष्वोटक खोडओ।

क्षण [3] छणो, [खणो]। क्षतम् छय। [4]क्षमा छमा [खमा]। क्षार छारो। क्षीणम् छीण। क्षीरम् छीर। क्षुण्ण छुण्णो। क्षुतम् छीअ। क्षुध् छुहा। क्षुर छुरो। क्षेत्रम् छेत्त।

क्षीयते झिज्जइ। क्षीणम् झीणं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७ (क्ष=ख, क्ष=छ) क्ष–झ–टिप्पण पृ० १६

२ पालीभाषामा 'भ' ना 'च' पण थाय छे –(जु० पा० प्र० पृ० १७ भ=च)

३ 'क्षण' शब्दना 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनु रूप 'छण' थाय छे अने समय अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे जु० पा० प्र० पृ १७– (क्ष=छ, क्षण खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथिवी' अर्थ होय त्यारे तेनु 'छमा' रूप थाय छे अने खमवु–क्षमाकरवी–अर्थमा तो 'खमा' रूप ज वपराय छे,

[1]क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ

इक्षुः इक्खू। ऋक्षः रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्खं। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खणं। प्रक्षीणम् पक्खीणं। प्रक्षेपः पक्खेवो। सादृश्यम् सारिक्खं।

अक्षि अच्छि। इक्षुः उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्षः रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छं। कक्षः कच्छो। कक्षा कच्छा। कुक्षिः कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअयं। दक्षः दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीणं। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मीः लच्छी। वक्षः वच्छं। वृक्षः वच्छो। सदृक्षः सारिच्छो। सादृश्यम् सारिच्छं।

प्रक्षीणम् पज्झीणं।

क्ष=ᳲक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ᳲक थाय छे:

यक्षः	जक्खो	यᳲके।
राक्षसः	रक्खसो	लᳲकशे।

२३. संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छे:

[3]ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्खं। पुष्करम् पोक्खरं। पुष्करिणी पोक्खरिणी। अवस्कन्दः अवक्खंदो। स्कन्दः खंदो। स्कन्धो खंधो। स्कन्धावारः खंधावारो।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७–(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ–टिप्पण)

२ क्ष्मः अच्छो, इक्को। व्यादृक्षः धक्को। लाक्षा लाखा। पा० प्र० पृ० १८

३ जु० पा० प्र० पृ० ३६–३७ (ष्क=क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

सयुक्त प, स=स[1]

(१) मागधीमा सयुक्त 'प' के 'स' ने स्थाने 'स' थाय छे.[2]

उष्मा	उम्हा	उस्मा।
कष्टम्	कट्ठ	कस्ट।
धनुष्खण्डम्	धणुक्खड	धनुस्खंडं।
निष्फलम्	निष्फलं	निस्फलं।
विष्णु.	विण्हू	विस्नु।
शष्पम्	सप्फ	सस्प।
शुष्कम्	सुक्क	सुस्कं।
प्रस्खलति	पक्खलइ	पस्खलदि।
बृहस्पति	बुहप्फई	बुहस्पदी।
मस्करी	मक्खरी	मस्करी।
विस्मय	विम्हयो	विस्मये।
हस्ती	हत्थी	हस्ती।

२४ संस्कृत शब्दना 'त्य' नो प्राकृतमा 'च' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'त्य' नो च्च थाय छे[3]

त्य=च[4]

त्याग चाओ। त्यागी चाई। त्यजति चयइ।

त्य=च्च

प्रत्यय· पच्चओ। प्रत्यूष पच्चूसो। सत्यम् सच्च।

---

१ जुओ० पा० प्र० पृ० ८७ नि० ६८.

२ एक 'ग्रीष्म' शब्दने आ नियम नथी लागतो

३ आ नियम 'चैत्य' शब्दने लागतो नथी चैत्यम चइत्त, चेइअ–(ऐ=अइ अने अन्त स्वरवृद्धि.)

४ जु० पा० प्र० पृ० ७०–(त्य=च, त्य=च्च)

२०. प्रयोगानुसारे क्याय 'त्व' नो 'च,' 'थ्व' नो 'छ,' 'द्व' नो 'ज' अने 'ध्व' नो 'झ' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'त्व' नो च्च, 'थ्व' नो 'च्छ,' 'द्व' नो 'ज्ज' अने 'ध्व' नो 'ज्झ' थाय छे.

[1]त्व=च्च

कृत्वा किच्चा। चत्वरम् चच्चर। ज्ञात्वा णच्चा। दत्त्वा दच्चा। भुक्त्वा मोच्चा। श्रुत्वा सोच्चा।

थ्व=च्छ

पृथ्वी पिच्छी।

ध्व=झ

[2]ध्वजः झओ।

द्व=ज्ज

विद्वान् विज्जं।

ध्व=ज्झ

बुध्वा बुज्झा। साध्वसम् सज्झसं।

२१. संस्कृतमा ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'थ्य', 'श्च', 'त्स' अने 'प्स' नो प्राकृतमा 'च्छ' थाय[3] छे.

थ्य–पथ्यम् पच्छं। पथ्या पच्छा। मिथ्या मिच्छा। सामर्थ्यम् सामथ्थ–सामच्छं।

[4]श्च—आश्चर्यम् अच्छेरं। पश्चात् पच्छा। पश्चिमम् पच्छिमं। वृश्चिकः विंछिओ।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ३८ (टिप्पण–चत्वरम् चच्चर)

२ ध्वज धजो–(पा० प्र० पृ० ३२–नि० ३८)

३ जू० प० प्र० पृ० २१ (थ्य=च्छ) पृ० ३८–(श्च=च्छ) पृ० २९–(त्स=च्छ) पृ० ३८–(प्स=च्छ)

४ एक मात्र 'निश्चल' शब्दने आ नियम लागतो नथी: निश्चल=निचलो, पाली–निचलो

त्स—उत्सव उच्छवो। उत्साह उच्छाहो। उत्सुक उच्छुओ। चिकित्सति चिइच्छइ। मत्सर मच्छरो। संवत्सर संवच्छरो।

प्स—अप्सरा अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।

श्च—श्च

(१) प्राकृतमा 'श्च' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमा तो एथी उलटु थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि।
गच्छ	गच्छ	गश्च।
तिर्यक्	तिरिच्छि	तिरिश्चि।
पिच्छिल	पिच्छिलो	पिश्चिले।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि।
वत्सल	वच्छलो	वश्चले।

[1]द्य, य्य, [2]र्य—ज

२७ पदनी आदिमा रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे

द्य—द्युति—जुई। द्योत—जोओ।

द्य—अवद्यम् अवज्जं। मद्यम् मज्जं। वैद्य वेज्जो।

य्य—जय्य जज्जो। शय्या सेज्जा।

र्य—कार्यम् कज्जं। पर्याप्तम् पज्जत्तं। पर्याय पज्जाओ। भार्या भज्जा। मर्यादा मज्जाया। वर्यम् वज्जं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १८ (द्य=ज, द्य=ज्ज) पालीमा केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे—पृ० १९—(द्य—य्य, टिप्पण)

२ पालीमा तो 'र्य नो स्थर य्य के रिय थाय छे—(जु० पा० प्र० पृ० १७—१८)

र्य—य्य[1]

(१) शौरसेनीमा 'र्य' नो विकल्पे 'य्य' थाय छे

आर्यपुत्र	अज्जउत्तो	अय्यउत्तो,	अज्जउत्तो ।
कार्यम्	कज्जं	कय्य,	कज्ज ।
पर्याकुल	पज्जाउलो	पय्याकुलो,	पज्जाकुलो ।
सूर्य	सुज्जो	सुय्यो,	सुज्जो ।

द्य—य्य[2]

(१) मागधीमा 'द्य' नो 'य्य' थाय छे

अद्य	अज्ज	अय्य ।
मद्यम्	मज्ज	मय्य ।
विद्याधर	विज्जाहरो	विय्याहले ।

[3]ध्य, ह्य—झ

२८. पदादिभूत 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'झ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ध्य' तथा 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छे

ध्य—ध्यानम् झाण । ध्यायति झायइ ।

उपाध्याय उवज्झायो । बध्यते बज्झइ । विन्ध्य विंझो[4] ।

साध्यम् सज्झ । स्वाध्याय सज्झाओ ।

[5]ह्य—गुह्यम् गुज्झ । नह्यति नज्झइ । मह्यम् मज्झ ।

सह्य सज्झो ।

---

१ जूओ टिप्पण २ जु पृ० ३३ ।

२ जूओ टिप्पण १ लु पृ० ३३ ।

३ जू० पा० प्र० पृ० १०–(ध्य=झ, ध्य=ज्झ)

४ अनुस्वारथी अने गुरु के दीर्घस्वरथी पर आवेला कोई पण व्यंजनना स्थानमा अहीं जणावेला द्विरुक्त (ज्ज, ज्झ वगेरे) विधानो थता नथी माटे ज 'विन्ध्य' नु 'विंज्झो' नहि पण 'विंझो' थयु जूओ पा० प्र० पृ० १९ टि० सध्या सझा ।

५ पालीमा 'ह्य' नो 'य्ह' थाय छे—(पा० प्र० पृ० २२–ह्य=य्ह)

र्त–ट

२९ संस्कृतना 'र्त'[1] नो प्राकृतमां सामान्य रीते 'ट्ट'[2] थाय छे

कैवर्त केवट्टो। नर्त जट्टो। नर्तकी नट्टई। प्रवर्तते पयट्टइ। राजवर्तकम् रायवट्टय। वर्ती वट्टो। वर्तुलम् वट्टुल। वार्ता वट्टा। सवर्तितम् सवट्टिअ।

न्त=न्द

(१) शौरसेनीमां क्याय क्याय 'न्त' नो 'न्द' थाय छे

अन्तःपुरम्	अन्तेउर	अन्देउर।
निश्चिन्त	निचिंतो	निचिंदो।
महान्	महंतो	महंदो।

१ २९मो नियम नीचे जणावेला शब्दोमां लागतो नथी अर्थात् नीचेना शब्दोमां 'र्त' नो 'ट्ट' थतो नथी

आवर्तक आवत्तओ।	प्रवर्तक पवत्तओ।
आवर्तनम् आवत्तण।	प्रवर्तनम् पवत्तण।
उत्कर्तितम् उक्कत्तिअ।	मुहूर्त मुहुत्तो।
कर्तरी कत्तरी।	मूर्त मुत्तो।
कार्तिक कत्तिओ।	मूर्ति मुत्ती।
कीर्ति कित्ती।	वर्तिका वत्तिआ।
धूर्त धुत्तो।	वार्तिकम् वत्तिअ।
निवर्तक निवत्तओ।	संवर्तक संवत्तओ।
निवर्तनम् निवत्तण।	संवर्तनम् संवत्तण।
निर्वर्तक निव्वत्तओ।	

(जुओ पृ० १६ नि० ७, संयुक्त 'लाद' लाप)

२ जु० पा० प्र० पृ० ५८ (त=ट)

[1]म्न, ज्ञ—ण

३० सस्कृतना 'म्न' अने 'ज्ञ' नो प्राकृतमा 'ण' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे

म्न—निम्नम् निण्ण। प्रद्युम्नः पज्जुण्णो।

ज्ञ—प्रज्ञा पण्णा। विज्ञानम् विण्णाण। आज्ञा अण्णा[2]।

ज्ञानम् णाण। सज्ञा सणा[3]।

[4]ज्ञ, ञ्ज, ण्य, न्य—ञ्ञ

(१) प्राकृतमा 'ज्ञ' नो 'ण' थाय छे त्यारे मागधीमा 'ज्ञ' नो 'ञ्ञ' थाय छे अने 'ञ्ज,' 'ण्य' अने 'न्य' नो पण 'ञ्ञ' थाय छे

ज्ञ—अवज्ञा	अवण्णा	अवञ्ञा।
प्रज्ञा	पण्णा	पञ्ञा।
सर्वज्ञ	सव्वण्णू	शव्वञ्ञे।
ञ्ज—अञ्जलि	अञ्जली	अञ्ञली।
धनञ्जय	धणजयो	धणञ्ञए।
प्राञ्जल	पजलो	पञ्ञले।
ण्य—अब्रह्मण्यम्	अबम्हण्ण	अबम्हञ्ञ।
पुण्यम्	पुण्ण	पुञ्ञ।
पुण्यवान्	पुण्णवतो	पुञ्ञवते।
न्य—अभिमन्यु	अहिमन्नू	अहिमञ्ञू।
कन्यका	कन्नया	कञ्ञया।
सामान्यम्	सामन्न	शामञ्ञ।

१ जुओ पा० प्र० पृ० ४८ (म्न=न) टिप्पण जुओ पा० प्र० पृ० २४ (ज्ञ=ण) टिप्पण

२-३ जुओ पृ ३४ टिप्पण ४ थु

४ जुओ पा० प्र० पृ० २३-२४ (ज्ञ=ञ्ञ, ण्य=ञ्ञ, न्य=ञ्ञ)

[1]स्त–थ

३१ संस्कृतना 'स्त'नो प्राकृतमा 'थ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे [2]

स्तव थवो । स्तम्भ थभो । स्तब्ध थद्धो [ठद्धो] स्तुति थुई । स्तोकम् थोअ । स्तोत्रम् थोत्त । स्त्यानम् थीण ।

अस्ति अत्थि । पर्यस्त पल्लत्थो । प्रशस्त पसत्थो । प्रस्तर पत्थरो । स्वस्ति सत्थि । हस्त हत्थो ।

र्थ, स्थ—स्त

(१) 'र्थ' अने 'स्थ' नो मागधीमा 'स्त' थाय छे

अर्थपति	अत्थवई	अस्तवदी ।
सार्थवाह	सत्थवाहो	शस्तवाहे ।
उपस्थित	उवट्ठिओ	उवस्तिदे ।
सुस्थित	सुट्ठिओ	सुस्तिदे ।

[3]ष्ट–ठ

३२ संस्कृतना 'ष्ट' नो प्राकृतमा 'ठ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे [4]

---

१ नू० पा० प्र० पृ० २७–(स्त=थ, स्त=त्थ)

२ 'समस्त' अने 'स्तम्ब' शब्दना 'स्त' नो 'थ' थतो नथी समस्तम् समत्त । स्तम्ब तम्बो ।

३ नू० पा० प्र० पृ० २६ (ष्ट=ट्ठ)

४ इष्टा, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थतो नथी इष्टा इट्टा । उष्ट्र उट्टो । संदष्टम् संदट्ट । जूओ पा० प्र० पृ० २८ टिप्पण ।

अनिष्टम् अणिट्ठ । इष्ट इट्ठो । कष्टम् कट्ठं । काष्टम् कट्ठं । दष्टः दट्ठो । दृष्टिः दिट्ठी । पृष्ट. पुट्ठो । मुष्टि. मुट्ठी । यष्टिः लट्ठी । सुराष्ट्रा· सुरट्ठा । सृष्टि. सिट्ठी ।

ट्ट, ष्ठ—स्ट

(१) 'ट्ट' अने 'ष्ठ' नो मागधीमां 'स्ट' थाय छे.

ट्ट—पट्ट पट्टो पस्टे । भट्टारिका भट्टारिया भस्टालिका

भट्टिनी भट्टिणी भस्टिणी ।

ष्ठ—कोष्ठागारम् कोट्ठागार कोस्टागालं ।

सुष्ठु सुट्ठु शुस्टु ।

ष्ट—सट

(१) पैशाचीमां 'ष्ट' ना स्थाने 'सट' बोलाय छे.

कष्टम् कट्ठं कसट ।

दृष्टम् दिट्ठं दिसट ।

[1]ड्म, [2]क्म—प

६६ संस्कृतना 'ड्म' अने 'क्म'नो[3] प्राकृतमां 'प' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे.

[4]कुड्मलम् कुपल ।

रुक्मिणी रुप्पिणी ।

१-२ पालीमां तो 'ड्म' नो 'डुम' अने 'क्म' नो 'कुम' थाय छे-(जु० पा० प्र० ८९)

३ कोई एक ठकाणे 'क्म' नो 'प्म' पण थाय छे -रुक्मी रुप्मी, रुप्पी.

४ कुड्मलम्-कुडुमल (पा० प्र० पृ० ८२ टिप्पण)

[1]ष्प, स्प–फ

३४ संस्कृतना 'ष्प' अने 'स्प' नो 'फ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्प' तथा 'स्प' नो 'प्फ' [2]थाय छे

ष्प—निष्पाव निप्फावो । निष्पेष निप्फेसो । पुष्पम् पुप्फ ।
शष्पम् सप्फ ।

स्प—स्पन्दनम् फंदण । प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी ।
बृहस्पति बुहप्फई ।

[3]ह्व–भ

३५ प्राकृतमां 'ह्व' नो 'भ' अने पदमध्यस्थित '[illegible]' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे

जिह्वा जिब्भा जीहा । विह्वल विब्भलो, विह्वलो ।

[4]न्म–म्म

३६ संस्कृतना 'न्म' नो 'म्म' थाय छे

जन्म जम्मो । मन्मथ वम्महो । मन्मन मम्मण ।

[5]ग्म–म्म

३७ संस्कृतना 'ग्म' नो 'म्म' विकल्पे थाय छे

तिग्मम् तिम्म, तिग्म । युग्मम् जुम्म, जुग्ग ।

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ३९ (स्प=फ, स्प=प्फ, ष्प=प्फ)

२ पदमध्यस्थित 'स्प' अने 'ष्प' नो प्राय प्प पण थाय छे

निष्पुंसनम् निप्पुंसण । परस्परम् परोप्पर ।
निष्प्रभ निप्पहो । बृहस्पति बुहप्पई ।
निस्पृह निप्पिहो । जू० पाली प्र० पृ० ३९

३ जूओ पा० प्र० पृ० ३८–(ग ह्वर=गब्भर) टिप्पण तथा पृ० ६४–ह्व=भ)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ४८–(न्म=म्म)

५ पालीमां प्राय ग्म' नो 'गुम' थाय छे –(जू० पा० प्र० पृ० ४९)

[1]श्म, ष्म, स्म, ह्म, क्ष्म–म्ह

३८ संस्कृतमा प्रयोजाता 'श्म', 'ष्म', 'स्म', 'ह्म' अने पक्ष्मना 'क्ष्म'नो प्राकृतमां 'म्ह' [2]थाय छे:

श्म—कश्मीराः कम्हारा । कुश्मानः कुम्हाणो ।

ष्म—ऊष्मा उम्हा । ग्रीष्म. गिम्हो ।

स्म—अस्मादृशः अम्हारिसो । विस्मय. विम्हओ ।

ह्म—ब्रह्मा बम्हा । ब्राह्मणः बम्हणो । ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर सुह्माः सुम्हा ।

क्ष्म—पक्ष्मलम् पम्हलं । पक्ष्माणि पम्हाइ ।

(१) अपभ्रंशमां 'स्म' ना स्थाने 'म्भ' पण बोलाय छे.

ग्रीष्म.	गिम्हो	गिम्भो,	गिम्हो ।
श्लेष्मा	सिम्हो	सिम्भो,	सिम्हो ।

[3]श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण, क्ष्म–ण्ह

३९ संस्कृतमा प्रयोजाता 'श्न', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण', 'क्ष्ण' अने सूक्ष्मना 'क्ष्म'नो 'ण्ह' थाय छे:

श्न—प्रश्नः पण्हो । शिश्न· सिण्हो ।

ष्ण—उष्णीषम् उण्हीसं । कृष्ण. कण्हो । निष्णु. निण्हू विष्णुः विण्हू

स्न—ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्नुत पण्हुओ । स्नातः ण्हाओ ।

ह्न— मह्नु. जण्हू । वाह्निः वण्ही ।

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ५७–(श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह)

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे लागतो नथीः—रश्मिः रस्सी । स्मरः सरो—जुओ पाली प्र० पृ० ५०–(स्म=स)

३ जुओ पा० प्र० पृ० ४६ (नियम–६३) तथा पृ० ८७ स्न=ण्ह, ष्ण=ण्ह. पृ० ४८ टिप्पन तीक्ष्णः तिखिणो, तिण्हो, तिण्हो । पृ० ८९ टिप्पन पूर्वाह्ण· पुब्बण्हो ।

ह्ण— अपराह्ण अवरण्हो । पूर्वाह्ण. पुव्वण्हो ।
क्ष्ण— तीक्ष्णम् तिण्हं । श्लक्ष्णम् सण्हं ।
क्ष्म— सूक्ष्मम् सण्हं ।

[1]स्न—सिन

(१) प्राकृतमां 'स्न' नो 'ण्ह' थाय छे त्यारे पैशाचीमां तो क्यांय क्यांय 'स्न' ने बदले 'सिन' बोलाय छे.

स्नातम्	ण्हाय	सिनात ।	
स्नुषा	सुण्हा, ण्हुसा	सिनुसा,	सुनुसा ।

[2]ह्ल—ल्ह

४० संस्कृतना 'ह्ल'नो प्राकृतमां 'ल्ह' थाय छे:

कह्लारम् कल्हार । प्रह्लाद पल्हाओ ।

[3]ज्ञ—ञ

४१ संस्कृतना 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ञ' विकल्पे थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ज्ञ' नो 'ज्ञ' थाय छे

अभिज्ञ अहिज्ञो, अहिण्णू । आज्ञा अज्ञा, आणा । आत्मज्ञ. अप्पज्ञो, अप्पण्णू । इङ्गितज्ञ इङ्गिअज्ञो, इङ्गिअण्णू । दैवज्ञ देवज्ञो, देवण्णू । प्रज्ञा पज्ञा, पण्णा । प्राज्ञ पज्ञो, पण्णो । मनोज्ञम् मणोज्ञ, मणुण्ण । सर्वज्ञ सव्वज्ञो, सव्वण्णू । संज्ञा संना, सण्णा ।

[4]र्ह–रिह

४२ 'र्ह' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिह' थाय छे

अर्हति अरिहइ । अर्ह अरिहो । गर्हा गरिहा । वर्ह वरिहो ।

---

१ जूओ प्रा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६३) स्नानम् सिनान । स्नुषा सुणिसा, सुण्हा, (ण्हुसा)

२ पालीमां 'ह्ल 'नो 'हिल' थाय छे ह्लाद हिलादो–पा० प्र० पृ० ३२

३ जु० पाली प्र० पृ० २४ टिप्पण–प्रज्ञानम् पञ्ञान ।

४ जूओ पा० प्र० पृ० ११ (नियम १३)

र्श, र्ष-रिस

४३ संस्कृतना 'र्श' अने 'र्ष' नो प्राकृतमां 'रिस' विकल्पे थाय छे:

र्श—आदर्शः आयरिसो, आयंसो। दर्शनम् दरिसणं, दसणं। सुदर्शन, सुदरिसणो, सुदंसणो।

र्ष—वर्षम् वरिसं, वासं। वर्षशतम् वरिससयं, वाससयं। वर्षा वरिसा, वासा।

ल-इल

४४ संस्कृतना संयुक्त 'ल' नो 'इल' थाय छे:

अम्लम् अबिलं। क्लाम्यति किलम्मइ। क्लाम्यन् किलंतं। क्लिष्टम् किलिट्ठं। क्लिन्नम् किलिन्न। क्लेशः किलेसो। ग्लायति गिलाइ। ग्लानम् गिलाणं। प्लुष्टम् पिलुट्ठं। प्लोष पिलोसो। म्लायति मिलाइ। म्लानम् मिलाणं। श्लेष सिलेसो। श्लेष्मा सिलिम्हा। श्लोकः सिलोगो। श्लिष्टम् सिलिट्ठ। शुक्लम् सुइलं।

र्य-रिअ

४५ संस्कृतना 'र्य' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिअ' थाय छे

आचार्यः आयरिओ। गाम्भीर्यम् गंभीरिअं। गाभीर्यम् गहीरिअं। चौर्यम् चोरिअं। धैर्यम् धीरिअं। ब्रह्मचर्यम् बम्हचरिअं। भार्या भारिआ। वर्यम् वरिअं। वीर्यम् वीरिअं। स्थैर्यम् थेरिअं। सूर्यः सूरिओ। सौन्दर्यम् सुंदरिअं। शौर्यम् सोरिअं।

---

१ तु० पा० प्र० पृ० ११ टिप्पण–अर्श. अरिसो। आर्षम् आरिस।

२ ,, ,, ,, ,, ३१ (नि० ३०)

३ आ नियम क्याय क्याय लागतो पण नथी.—क्लम. कमो। प्लव पवो।

४ जुओ पृ० ३३–२७ मा नियम उपरनुं टिप्पण

र्य—रिय

(१) प्राकृतनी पेठे पैशाचीमां पण क्यांय क्यांय 'र्य' ने बदले 'रिय' बोलाय छे:

भार्या भज्जा भारिया, भज्जा।

ह्य—य्ह

४६ 'ह्य' नो 'य्ह' प्राकृतमां विकल्पे थाय छे:

गुह्यम्· गुय्हं, गुज्झं[१]।
सह्यः सय्हो, सज्झो।

र्वी—उवी

४७ स्त्रीलिंगि पदने अंते वर्तता संयुक्त 'र्वी'नो प्राकृतमां 'उवी' थाय छे:

गुर्वी गुरुवी। तन्वी तणुवी। पृथ्वी पुहुवी। बह्वी बहुवी[३]। मृद्वी मउवी।



---

१ जूओ पृ० ३८–१९मुं टिप्पण।
२ जूओ नि० २८–पृ० ३४
३ पडुः पड्डुवी (पालि प्र० पृ० २६२ स्त्रीप्रत्यय).

प्रकरण ५



उपर एटले प्रकरण २-३-४मा आपेला नियमो सामान्य नियमो कहेवाय छे एटले ज्यां कोई बीजो खास नियम न लागतो होय त्यां ए ज नियमो लागू थाय छे. आ नीचे जे नियमो आपवामा आवे छे ते विशेष नियमो छे एटले ज्यां आ नियमोनी प्राप्ति थती होय त्यां सामान्य नियमो न लगाडतां प्रथम आ ज नियमो लगाववाना छे.

स्वरना विशेष विकारो

४८ 'अ' विकार

(क) [1]अ=आ—

नीचे जणावेला शब्दोमां आदिना 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे

अभियाति	आहिआई, अहिआई।	प्रतिस्पर्धी	पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी।
अस्पर्श	आफंसो, अफंसो।	प्रवचनम्	पावयण, पवयण।
चतुरन्तम्	चाउरंत, चउरंत।	प्ररोह	पारोहो, परोहो।
दक्षिण	दाहिणो, दक्खिणो।	प्रवासी	पावासू, पवासू।
परकीयम्	पारकेर, परकेर।	प्रसिद्धि	पासिद्धी, पसिद्धी।
परकीयम्	पारक्क, परक्क।	प्रसुप्त	पासुत्तो, पसुत्तो।
द्रुत	दुणा, दुण।	मनस्वी	माणसी, मणसी।
प्रकटम्	पागड, पगड।	मनस्विनी	माणसिनी, मणसिणी।
प्रतिपत्	पाडिवआ, पडिवआ।	समृद्धि	सामिद्धी, समिद्धी।
प्रतिसिद्धि	पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी।	सदृक्ष	सारिच्छो, सरिच्छो

इत्यादि।

---

१ प्रा० प्र० पृ० ५२-(अन्त्या)

(ख) [1]अ=इ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'इ' थाय छे–ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

ईषत् इसि। उत्तम उत्तिमो। कतम कइगो। कृपण किविणो। दत्तम् दिण्ण। मरिचम् मिरिअ। मध्यम मज्झिमो। मृदङ्ग मुइगो। वेतस वेडिसो। व्यजनम् विअण। व्यलीकम् विलीअ। स्वप्न सिविणो।

वैकल्पिक उदाहरणो —

अङ्गार इगारो, अगारो। ललाटम् णिडाल, णडाल।
पक्वम् पिक्क, पक्क। सप्तपर्ण छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो।

(ग) अ=ई—

नीचे आपेला शब्दना आद्य 'अ' नो विकल्पे 'ई' थाय छे

हर हीरो, हरो।

(घ) [2]अ=उ—

नीचे सूचवेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'उ' थाय छे–ते क्यांय नित्य थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

अभिज्ञ	अहिण्णू।	गवय	गउओ।
आगमज्ञ	आगमण्णू।	गवया	गउआ
कृतज्ञ	कयण्णू।	ध्वनि	झुणी।
विज्ञ	विण्णू।	विष्वक्	वीसु
सर्वज्ञ	सव्वण्णू।		[3]इत्यादि।

१ पाली प्र० पृ० ५२ (अ=इ)

२ पाली प्र० पृ० ५२–(अ=उ)

३ बीजा पण प्रयोगानुसारी शब्दो 'आदि' शब्दथी समजवाना छे,

वैकल्पिक उदाहरणो

खण्डित	खुडिओ,	खंडिओ।
चण्डम्	चुड,	चड।
प्रथमम्	पुढम, पढुम, पुढुम,	पढम।
स्वपिति	सुवइ,	सोवइ।

(ङ) [1]अ=ए—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ए' थाय छे–ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे

अत्र	एत्थ।	ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेर।
अन्तःपुरम्	अन्तेउर।	[2]शय्या	सेज्जा।
अन्तश्चारी	अंतेआरी।	सौन्दर्यम्	सुन्देर।
कन्दुकम्	गेन्दुअ।		

वैकल्पिक उदाहरणो—

आश्चर्यम् अच्छेर, अच्छरिअ। पर्यन्तः पेरंतो, पज्जंतो।
उत्कर उक्केरो, उक्करो। वल्ली वेल्ली, वल्ली।

(च) अ=ओ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ओ' थाय छे—ते क्याय नित्ये थाय छे अने क्याय विकल्पे थाय छे:

नमस्कार नमोक्कारो। पद्मम् पोम्म। परस्परम् परोप्पर।

वैकल्पिक उदाहरणो—

अर्पयति ओप्पेइ, अप्पेइ। स्वपिति सोवइ, सुवइ।
अर्पितम् ओप्पिअ, अप्पिअ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२–(अ=ए)

२ सेय्या शय्या (पाली)

(उ) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययांत शब्दमां आवेला 'म' ना 'अ' नो विकल्पे 'अइ' थाय छे

जलमयम्	जलमइअ,	जलमय ।
विषमयम्	विसमइअ,	विसमअ ।
दु खमयम्	दुहमइअ,	दुहमय ।
सुखमयम्	सुहमइअ	सुहमय ।

(ऊ) अ=आइ—

न पुन –न [1]उणाइ, न उणो ।
पुन –पुणाइ, पुणो ।

(ऋ) 'अ' लोप—

अरण्यम्–रण्ण, अरण्ण ।
अलाबू –लाउ, अलाऊ ।

४९ 'आ' विकार—

(क) आ=अ—

नीचे सूचवेला शब्दोमां अने अव्ययोमां चिह्नित 'आ' नो 'अ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[2]आचार्य आयरिओ ।	महाराष्ट्र मरहट्ठो ।
कांसिक कसिओ ।	मांसम् मस ।
कांस्यम् कस ।	वांशिक वसिओ ।
पाण्डव पडवो ।	श्यामाक सामओ ।
पांसन पसणो ।	सांयात्रिक सजत्तिओ ।
पासु पसू ।	सांसिद्धिक. ससिद्धिओ [3]इत्यादि ।

---

१ अहीं 'पुन ' शब्दना आदि ' प नो लोप थएलो छे– जुओ पृ० २६ टिप्पण २ जु।

२ पाली प्र० पृ० ७२ [आन्त]

३ जुओ पृ० ८ नि० १ ।

वैकल्पिक उदाहरणो—

उत्खातम् उक्खय, उक्खाय। पूर्वाण्ह पुव्वण्हो, [1]पुव्वाण्हो।
कालक कलओ, कालओ। बलाका बलया, बलाया।
कुमार कुमरो कुमारो। ब्राह्मण बम्हणो, बाम्हणो।
खादिरम् खइर, खाइर। स्थापित ठविओ, ठाविओ।
चामर चमरो, चामरो। (परिष्ठापित परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ।
तालवृन्तम् तलवेंट, तालवेंट। संस्थापित संठविओ, संठाविओ।)
नाराच नराओ, नाराओ। हालिक हलिओ, हालिओ इत्यादि
प्राकृतम् पयय, पायय।

अव्ययो—

अथवा अहव, अहवा। तथा तह, तहा।
यथा जह, जहा। वा व, वा। हा ह, हा इत्यादि।

(ख) आ=इ —

नीचेना शब्दोमां निश्चित 'आ' नो नित्य 'इ' थाय छे
आचार्य आइरिओ आयरिओ।
कूर्पास कुप्पिसो, कुप्पासो।
निशाकर. निसिअरो, निसाअरो।

(ग) आ=ई —

खल्वाट खल्लीडो।
स्त्यानम् ठीण (थाण[2])।

(घ) आ=उ—

आर्द्रम् उल्लं। सास्ना सुण्हा। स्तावक थुवओ।

---

१ आ बन्ने रूपो आचार्य हेमचंद्रने सम्मत नथी प्रा० व्या० अ० ८ १—६७ पृ० १३

२ जुओ पृ० ३७ नि० ३१

वैकल्पिक—

युधिष्ठिर जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो ।

द्विगुण दुउणो, बिउणो ।

द्वितीय दुइओ, बिइओ ।

(घ) [1]इ=ए—

मिरा मेरा

वैकल्पिक—

किंशुकम् केसुअ, किंसुअ ।

(ङ) [2]इ=ओ—

द्विवचनम् दोवयण ।

वैकल्पिक—

द्विधा [3]दोहा, दुहा ।

(च) नि=ओ—

वैकल्पिक—

निर्झर ओज्झरो, निज्झरो ।

५१ ई—विकार

(क) [4]ई=अ—

हरीतकी [5]हरडई ।

---

१ पाली प्र० पृ० ७३–(इ=ए)

२ पाली प्र० पृ० ७३– (इ=ओ)

३ साधारण रीते आ बन्ने शब्दनो प्रयोग 'कृ' धातुनी पूर्व थाय छे – द्विधा क्रियते दुहा किज्जइ, दोहा किज्जइ । द्विधा कृतम् दुहा इ(कि)अ, दोहा इ(कि)अ ।

४ पाली प्र० पृ० ५३– ई=अ)

५ हरीतकी हरीटकी (पाली)

(ग) उ=ई—

क्षुतम् छीअ।

(घ) उ=उ—

दुर्भग दूहवो, दुहओ।	दुःसह दूसहो, दुस्सहो।
मुसलम् मूसल मुसल।	सुभग सूहवो, सुहओ।

(ङ) उ=ओ—

कुतूहलम् कोउहल, कुऊहल।

९३ ऊ–विकार

(क) ऊ=अ—

दुकूलम् दुअल्ल, दुउल्ल। सूक्ष्मम् [3]सण्ह, सुण्ह।

(ख) ऊ=इ—

नूपुरम् निउर, नूउर।

(ग) ऊ=ई—

उद्व्यूढम् उव्वीढ, उव्वूढ।

(घ) ऊ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'उ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[4]कण्डूयते कडुअइ।	भ्रू भुमया।
कण्डूया कंडुया।	वातूल वाउलो।
कण्डूयनम् कडुयण।	हनूमान् हणुमतो।

---

१ पाली प्र० पृ० ५४ (उ=ओ)

२ पाली प्र० पृ० ५५ (ऊ=अ) सरखावो भ्रूकुस भ्रकुस। भ्रूकुटि भ्रकुटि।

३ 'सूक्ष्म' अर्थने सूचवता 'श्लक्ष्ण' शब्द उपरथी 'सण्ह' रूपने उतारवुं विशेष सरल लागे छे–("श्लक्ष्ण सूक्ष्म दभ्र कृश तनु' ९१ अमरको० तृतीयकाण्ड)

४ अहीं 'कण्डूय' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

वैकल्पिक—

कुतूहलम् कोउहल्लं, कोउहलं।
मधूकम् महुअ, महूअं।

(ड) ऊ=ए—

नूपुरम् नेउर, नूउरं।

(च) ऊ=ओ –

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'ओ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे —

[1]कूर्परम् कोप्पर। ताम्बूलम् तंबोल।
कूष्माण्डी कोहण्डी। तूणीरम् तोणीरं।
[2]गुडूची गलोई। मूल्यम् मोल्ल।
स्थूलम् थोर।

वैकल्पिक—

तूणम् तोण, तूण। स्थूणा थोणा, थूणा।

६४ ऋ—विकार

(क) ऋ=आ—

कृशा कासा, किसा। मृदुत्वम् माउक, मउत्तण।
मृदुकम् माउक, मउअ।

(ख) [3]ऋ=इ—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'इ' थाय छे–ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे.

उत्कृष्टम् उक्किट्ठ। ऋद्धिः इद्धी। कृपि इसी।

---

१ कूर्पर कप्परो (पाली)
२ गुडूची गोळोचा—पाली प्र० पृ० ५५ (उ–ओ)
३ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=इ)

कृच्छ्रम् किच्छं । कृतिः किई । कृत्तिः किची । कृत्या किश्चा ।
कृपः किवो । कृपणः किविणो । कृपा किवा । कृपाणम् किवाणं ।
कृशः किसो । कृशानुः किसाणू । कृपितः किसिओ । कृसरा किसरा ।
गृष्टिः गिट्ठी । गृद्धिः गिद्धी । घुसृणम् घुसिणं । घृणा घिणा ।
तृप्तम् तिप्पं । दृष्टम् दिट्ठं । दृष्टिः दिट्ठी । धृतिः धिई ।
नप्तृकः नत्तिओ । नृपः निवो । नृशंसः निससो । पृथक् पिहं ।
पृथ्वी पिच्छी । बृंहितः बिंहिओ । भृङ्गः भिंगो । भृङ्गारः भिंगारो ।
भृगुः भिऊ । मातृ माई (मातृणाम् माईण) मृदङ्गः मिइंगो ।
मृष्टम् [1]मिट्ठं । वितृष्णः विइण्हो । वृश्चिकः विच्छुओ । वृषभ् विसं ।
वृत्तिः वित्ती । वृद्धकविः विद्धकई । वृष्टः विट्ठो । वृष्टिः विट्ठी ।
वृसी विसी । व्याहृतम् वाहिअं (च) । शृगालः सिआलो ।
शृङ्गारः सिंगारो । सकृत् सइ । समृद्धिः समिद्धी । सृष्टम् सिट्ठं ।
सृष्टिः सिट्ठी । स्पृहा छिहा । हृतम् हिअं । हृदयम् हिअयं ।

वैकल्पिक—

धृष्टः धिट्ठो, धट्ठो । पृष्टम् [2]पिट्ठं, पट्ठं । [पृष्टिः पिट्ठी, पट्ठी]
बृहस्पतिः बिहप्फई, बहप्फई । मसृणम् मसिणं, मसणं ।
[3]मातृगृहम् माइहरं, माउहरं । मातृमण्डलम् माइमंडलं, माउमंडलं ।
मातृष्वसा माइसिआ, माउसिआ । मृगाङ्कः मिअंको । मयंको ।

---

१ आ शब्द, रसने सूचवे छे मीठो रस रस सिवाय बीजा अर्थमां ए रूप वपरातुं नथी.

२ आ रूप समासमां पूर्वपद तरीके वपराय छे, उत्तरपद तरीके नथी वपरातुं महिपृष्ठम्–महिव(प)ट्ठं ।

३ ज्यारे 'मातृ' शब्द गौण होय त्यारे तेथी बनेला तथा रूपोमां तेना 'ऋ' नो 'उ' अने 'इ' थाय छे.

मृत्यु मिच्चू, मच्चू । वृद्ध विद्धो, वुड्ढो । वृन्तम् विंट, वेंट । शृङ्गम् सिंग, सग ।

(ग) [1]ऋ=उ—

नीचेना शब्दोमा 'ऋ' नो 'उ' थाय छे

ऋजु उज्जू । ऋतु उऊ । ऋषभ उसहो । जामातृक जामाउओ । नप्तृक नत्तुओ । निभृतम् निहुअ । निवृतम् निउअ । निर्वृतम् निव्वुअ । निर्वृति निव्वुई । परभृत परहुओ । परामृष्ट परामुट्ठो । पितृक पिउओ । पृथक् पुह । पृथिवी पुहई । पृथ्वी पुहुवी । प्रभृति पहुडि । प्रवृत्ति पउत्ती । प्रवृष्ट पउट्ठो । प्राभृतम् पाहुड । प्रावृत पाउओ । प्रावृष् पाउसो । भृति भुई । भ्रातृक भाउओ । मातृक माउओ । मातृका माउआ । मृणालम् मुणाल । मृदङ्ग मुइंगो । वृत्तान्त वुत्तंतो । वृद्ध वुड्ढो । वृद्धि वुड्ढी । वृन्दम् वुंद । वृन्दावन वुन्दावणो । विवृतम् विउअ । वृष्ट वुट्ठो । वृष्टि वुट्ठी । स्पृष्ट पुट्ठो । संवृतम् संवुअ । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

निवृत्तम् निउत्त, निअत्त । बृहस्पति बुहप्फई, बहप्फई । मृषा मुसा, मोसा । वृन्दारका वुंदारया, वंदारया । वृषभ उसहो, वसहो ।

(घ) ऋ=ऊ—

मृषा मूसा, मुसा । (वै०)

(ङ) [2]ऋ=ए—

वृन्तम् वेंट, विंट । (,,)

---

१ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=उ)

२ पाली प्र० पृ० ३ (ऋ=ए) टिप्पण ।

(च) ऋ=ओ—

मृषा मोसा, मुसा। वृन्तम् वोंट विंट। (वै०)

(छ) ऋ=अरि—

दृप्त दरिओ।

(ज) ऋ=दि—

आदृत आदिओ।

(झ) ऋ=रि—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' थाय छे—ते क्याय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे

[1]अन्यादृश अन्नारिसो। अन्यादृक्ष अन्नारिच्छो। अन्यादृक् अन्नारि। अमूदृश अमूरिसो। अमूदृक्ष अमूरिच्छो। अमूदृक् अमूरि। अस्मादृश अम्हारिसो। अस्मादृक्ष अम्हारिच्छो। अस्मादृक् अम्हारि। ईदृश एरिसो। ईदृक्ष एरिच्छो। ईदृक् एरि। एतादृश एआरिसो। एतादृक्ष एआरिच्छो। एतादृक् एआरि। कीदृश केरिसो। कीदृक्ष केरिच्छो। कीदृक् केरि। तादृश तारिसो। तादृक्ष तारिच्छो। तादृक् तारि। भवादृश भवारिसो। भवादृक्ष भवारिच्छो। भवादृक् भवारि। यादृश जारिसो। यादृक्ष जारिच्छो। यादृक् जारि। युष्मादृश तुम्हारिसो। युष्मादृक्ष तुम्हारिच्छो। युष्मादृक् तुम्हारि। सदृश सरिसो। सदृक्ष सरिच्छो। सदृक् सरि।

विकल्पे—

ऋजु रिज्जू, उज्जू। ऋणम् रिण, अण। ऋतु रिऊ, उउ। ऋषभ रिसहो, उसहो। ऋषि रिसी, इसी।

---

१ अहीं 'अन्यादृश' वगेरे शब्दोमां स्वतन्त्र ऋ नथी किन्तु 'दृ' मां 'ऋ' छे, 'द' लोप माटे जुओ पृ० १० नि० २।

ऋ=इ—

(१) उपर्युक्त 'अस्मादृश' थी माडी 'सदृक्' सुधीना व या शब्दोना 'दृ' ना 'ऋ' नो पैशाचीमां 'इ' थाय छेः

अस्मादृशः	अम्हारिसो	अम्हादिसो—अम्हातिसो ।
अन्यादृशः	अन्नारिसो	अन्नातिसो ।
ईदृश.	एरिसो	एतिसो ।
कीदृशः	केरिसो	केतिसो ।
तादृशः	तारिसो	तातिसो ।
भवादृशः	भवारिसो	भवातिसो ।
यादृशः	जारिसो	जातिसो ।
युष्मादृशः	तुम्हारिसो	तुम्हातिसो
सदृशः	सरिसो	सतिसो

५५ ए—विकार

(क) [१]ए=इ—

केसरम् किसरं, केसर । चपेटा चविडा, चवेडा । देवर. दिअरो, देवरो । वेदना विअणा, वेअणा । (वै०)

(ख) ए=ऊ—

स्तेन· थूणो, थेणो । (वै०)

५६ ऐ—विकार—

(क) ऐ=अअ—

उच्चैस् उच्चअं । नीचैस् नीचअं ।

---

१ जूओ पृ० १२ (त, द—त)

२ पालीमां कोइ ठेकाणे 'ए' नो 'ओ' थाय छे देव=दोसो—(पा० प्र० पृ० ५५—ए=ओ)

(ख) [1]ऐ=इ—

शनैश्चरः सणिच्छरो । सैन्धवम् सिंधवं ।

सैन्यम् सिन्नं, सेन्न । (वै०)

(ग) [2]ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं ।

चैत्यवन्दनम् चीवंदणं, चेइयवंदणं । (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छेः

ऐश्वर्यम् अइसरिअं । कैतवम् कइअवं । चैत्यम् चइत्तं । दैत्यः दइच्चो । दैन्यम् दइन्न । दैवतम् दइअव । भैरवः भइरवो । वैजवनः वइजवणो । वैतालीयम् वइआलीअं । वैदर्भः वइदब्भो । वैदेशः वइएसो । वैदेहः वइएहो । वैशाखः वइसाहो । वैशालः वइसालो । वैश्वानरः वइस्साणरो । स्वैरम् सइर । इत्यादि.

वैकल्पिक—

कैरवम् कइरवं, केरवं । कैलास. कइलासो, केलासो । चैत्रः चइत्तो, चेत्तो । दैवम् दइव्व, देव्वं । वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ । वैरम् वइर, वेर । वैशम्पायनः वइसंपायणो, वेसंपायणो । वैश्रवण. वइसवणो, वेसवणो । वैशिकम् वइसिअं, वेसिअं । इत्यादि.

५७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नन्न, अन्नुन्नं । आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं ।

[3]प्रकोष्ठः पवट्ठो, पउट्ठो, । मनोहरम् मणहर, मणोहर ।

---

१ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=इ) २ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=ई)

३ ज्यारे आ शब्दमां 'ओ' नो 'अ' थाय छे त्यारे ज तेना 'त' अने 'क' नो 'व' पण थाय छे.

शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा।
सरोरुहम्	सररुह,	सरोरुह।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वास सूसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोत्र गउओ। गोत्रा गउआ। गो गउ–गऊ।

ओ=आअ—गो गाअ–गाओ (पुलिंग)

गो गाअ–गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ–विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअय।	पौर	पउरो।
कौरव	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिस।
कौल	कउलो।	मौनम्	मउण।
कौशलम्	कउसल।	मौलि	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउह।
गौरवम्	गउरवं।	सौराः	सउरा।

(ख) [1]औ=आ—

गौरवम् गारवम्

---

१ पाली प्र० पृ० ५ (औ=आ) टिप्पण पालीमा कोई काई ठेकाणे 'औ' नो 'अ' पण थाय छे (औ=अ)–पालीप्र पृ० ५ टिप्पण.

(ग) [1]औ=उ

नीचेना शब्दोमा 'औ' नो 'उ' थाय छे.

दौवारिकः दुवारिओ। पौलोमी पुलोमी । मौञ्जायनः मुंजायणो । शौण्ड. सुंडो । शौद्धोदनिः सुद्धोअणी । सौगन्ध्यम् सुगन्धत्तणं । सौन्दर्यम् सुंदेर । सौवर्णिक सुवण्णिओ ।

कौक्षेयकम् कुच्छेअयं, कोच्छेअयं । (वै०)

(घ) औ=आव—

नौः नावा ।



---

१ पाली प्र० ए० ५-(औ=उ)

प्रकरण ६

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

५९ क-विकार—

[1]क=ख—

कर्परम् खप्परं। कील. खीलो।
कीलकः खीलओ। [2]कुब्जः खुज्जो।

[3]क=ग—

अमुकः अमुगो।
असुकः असुगो।
आकर्षः आगरिसो।
आकार आगारो।
उपासक उवासगो।
एक. एगो।
एकत्वम् एगत्त।
कन्दुकम् गेंदुअं।
तीर्थकरः तित्थगरो।
दुकूलम् दुगुल्ल।
मदकल मयगलो।
मरकतम् मरगयं।
श्रावक सावगो।
लोक लोगो।

क=च—

[4]किरातः चिलाओ।

क=भ—

शीकरः सीभरो, सीअरो। (वै०)

क=म—

चन्द्रिका चन्दिमा।

---

१ पाली प्र० पृ० ५९ (क=ख)
२ 'खुज्ज' शब्द 'कुबडा' अर्थमा ज वपराय छे.
३ पाली प्र० पृ० ५९ (क=ग)
४ 'चिलाअ' शब्द 'भिल्ल' अर्थमा ज वपराय छे.

ट=व—

[1]प्रकोष्ठ पवट्ठो, पउट्ठो।

क=ह—

चिकुर चिहुरो। निकष निहसो। स्फटिक फलिहो। शीकर सीहरो, सीअरो। (वै०)

६० ख-विकार—

ख=क—

शृङ्खलम् सङ्कल। शृङ्खला सङ्कला।

६१ ग-विकार—

ग=म—

पुंनागानि पुनामाइ। भागिनी भामिणी।

ग=ल—

छाग छालो। छागी छाली।

ग=व—

दुर्भग [2]दूहवो। सुभग सूहवो।

६२ च-विकार—

च=ज—

पिशाची पिसाजी, पिसाई। (वै०)

च=ट—

आकुञ्चनम् आउण्टण।

च=ल—

पिशाच पिसल्लो, पिसाओ। (वै०)

---

१ जुओ पृ० ५०—टिप्पण ३।

२ ज्यारे 'दु'नो 'दू' अने 'सु'नो 'सू' थतो नथी त्यारे 'ग' नो 'व' पण थतो नथी—जुओ उ-विकार (१) उ-ऊ पृ० ५८

३ पाली प्र० पृ० ९ (च=ज)

च=स—

खचित खसिओ, खइओ। (वै०)

६३ ज-विकार

ज=झ—

जटिल झडिलो, जडिलो। (वै०)

६४ ट-विकार

ट=ड—वैटम वेडबो। शकटः सयडो। सग्र सडा।

[1]ट=ल—स्फटिक फलिहो।

चपेटा चविला, चविडा। (वै०)

[2]पाटयति फालेइ, फालेइ। ,,

६५ ठ विकार

ठ=ल—अङ्कोठ अंकोलो।

अङ्कोठतैलम अंकोल्लतेल।

ठ=ढ—पिठर पिढडो, पिढरो (वै०)

६६ ण-विकार

[3]ण=ल—वेणु वेलू, वेणू। (वै०)

६७ त-विकार

त=च— तुच्छम् चुच्छ।

त=छ— तुच्छम् छुच्छ।

त=ट—तगर टगरो। तूवर टूवरो। त्रसर टसरो।

---

१ पाली प्र० पृ० ७८–(ट–ड) मा किया केटलेक ठेकाणे 'ट'नो 'ळ' पण थाय छे —(ट–ळ पृ० ७७)

२ अहीं 'पाटि' धातुना रूपो समजवाना ।

३ पाली प्र० पृ० ८ (ण–ळ) वेणु=वेळु–५ ।

प्रा ९

त=ड—

नीचेना शब्दोमा 'त' नो 'ड' थाय छे–ते वर्णाय नित्ये अने वयाय विरले थाय छे —

पताका पडाया।
[1]प्रति पडि।

[प्रतिकरोति पडिकरइ। प्रतिनिवृत्तम् पडिनिअत्त। प्रतिपत् पडिवया। प्रतिपन्नम् पडिवन्न। प्रतिभास पडिहासो। प्रतिमा पडिमा। प्रतिश्रुत् पडंसुआ। प्रतिसारः पडिसारो। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी। प्रतिहासः पडिहासो। प्रतिहार पडिहारो।]

प्रभृति पहुडि।	मृतकम् मडय।
प्राभृतम पाहुड।	व्यापृत वावडो।
बिभीतक बहेडओ।	सूत्रकृतम् सुय (सूअ) गड।
	हरीतकी हरडई। इत्यादि

वैकल्पिक—

अवहृतम्	अवहडं,	अवहय।
अवहृतम्	ओहड,	ओहय।
आहृतम्	आहड,	आहय।
कृतम्	कड,	कय।
दुष्कृतम्	दुक्कड	दुक्कय।
मृतम्	मड,	मय।
वेतस	वेडिसो,	वेअसो।
सुकृतम्	सुकड	सुकय।

[1] प्रा॰ ग्र॰ (८.१) प्रा॰ सू॰ ८८

त=ण—

अतिमुक्तकम् अणिउंतयं । गर्भित गब्भिणो ।

त=र—

सप्तति: सत्तरी ।

त=ल—

अतसी अलसी । सातवाहन सालवाहणो ।

सातवाहनी सालआहणी— साल्लाहणी ।

वैकल्पिक—

पलितम् पलिलं, पलिअं ।

त=व— आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं ।

पीतलम् पीवलं, पीअलं ।

त=ह—

[2]वितस्ति विहत्थी ।

वैकल्पिक—

कातर काहलो, कायरो ।

भरत भरहो, भरओ ।

मातुलिङ्गम् माहुलिंगं, माउलिंगं ।

वसति वसही, वसई ।

६८ थ-विकार

थ=ढ—

प्रथम पढमो । मेथि मेढी । शिथिर (ल.) सिढिलो ।

वैकल्पिक—

निशीथ निसीढो, निसीहो ।

[3]पृथिवी पुढवी, पुहवी ।

---

१ जुओ पृ० ६८, २ टिप्पण ।

२ वितस्ति विदत्थि-(त=द) पाली प्र० पृ० ३०

३ पृथिवी पठवी-(थ=ठ) पाली प्र० पृ० ५५

ध=ह—

पृथक् पिधं, पिह।

६९ द-विकार

[1]द=ड—

[2]दंश डस इत्यादि.

[2]दह डह इत्यादि.

वैकल्पिक—कदनम् कडण, कयण। दग्ध डड्ढो, दड्ढो। दण्ड डंडो, दंडो। दम्भ डम्भो, दम्भो। दर्भ डब्भो, दब्भो। दष्ट डट्ठो, दट्ठो। दर डरो, दरो। दशनम् डसण, दसण। दाह डाहो, दाहो। दोला डोला, दोला। दोहद डोहलो, दोहलो।

द=ध—दीप्[3] धीप्, दीप्। दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ। (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे

एकादश एआरह। द्वादश बारह। त्रयोदश तेरह।

(ख) द=र—कदली करली[4]। गद्गदम् गग्गर।

[5]द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ[6]। प्रदीप्तम् पलित्त। दोहद दोहलो। कदम्ब कलम्बो, कयम्बो। (वै०)

द=व—कदर्थित कवट्टिओ।

द=ह—ककुदम् कउह।

---

१ पाली प्र० पृ० ५९—(द=ड)

२ अहीं आ बन्ने धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

३ अहीं 'दीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

४ आ शब्दनो अर्थ 'कळ' थतो नथी.

५ पाली प्र० पृ० ६०—(द=ळ—दोहद दोहळो)

६ अहीं 'प्रदीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

७० ध-विकार

ध=ढ—निषध निसढो ।

औषधम् ओसढ, ओसह । (वै०)

७१ न-विकार

न=ण्ह—नापित ण्हाविओ, नाविओ । (वै०)

[1]न=ल—निम्ब लिंबो, निंबो । (वै०)

७२ प-विकार

[2]प=फ—पनसः फणसो । परिघ फलिहो । परिखा फलिहा । परुष फरुसो । [3]पाटि फाडि । [पाटयति फाडेइ इत्यादि] पारिभद्र फालिहद्दो ।

प=म—आपीड आमेलो, आवेडो । नीप नीमो, नीवो । (वै०)

प=ब—प्रभूतम् बहुत ।

प=र—पापर्द्धि पारद्धी ।

७३ ब-विकार

[4]ब=भ—बिसिनी भिसिणी ।

ब=म—कबन्ध कमन्धो ।

ब=य—कबन्ध कयन्धो । (वै०)

७४ भ-विकार.

भ=व—कैटभ केढवो ।

---

१ पाली प्र० पृ० ४१–(न=ल)

२ पाली प्र० पृ० ४०–(प=फ) परुष–फरुसो (पाली)

३ अहीं 'पाट' धातुना बधां रूपो समजवाना छे

४ पाली प्र० पृ० ४२–(ब=भ)

थ–ध—

पृथक् पिधं, पिह ।

६९ द–विकार

[1]द=ड—

[2]दंश डस इत्यादि.

[2]दह डह इत्यादि.

वैकल्पिक—कदनम् कडण, कयण । दग्ध डड्ढो, दड्ढो । दण्ड डंडो, दंडो । दम्भ डम्भो, दम्भो । दर्भ डब्भो, दब्भो । दष्ट डट्ठो दट्ठो । दर डरो, दरो । दशनम् डसण, दसण । दाह डाहो, दाहो । दोला डोला, दोला । दोहद डोहलो, दोहलो ।

द=ध—दीप्[3] धीप्, दीप् । दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ । (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे

एकादश एआरह । द्वादश बारह । त्रयोदश तेरह ।

(ख) द=र—कदली करली[4] । गद्गदम् गग्गर ।

[5]द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ[6] । प्रदीप्तम् पलित्त । दोहद दोहलो । कदम्ब कलम्बो, कयम्बो । (वै०)

द=व—कदर्थित कवट्टिओ ।

द=ह—ककुदम् कउह ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५०–(द=ड)

२ अहीं आ बधा धातुना बधा रूपो समजवाना छे

३ अहीं 'दीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

४ आ शब्दनो अर्थ 'केळ' थतो नथी

५ पाली प्र० पृ० ५०–(द=ळ–दोहद दोहळो)

६ अहीं 'प्रदीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

७० ध-विकार

ध=ढ—निषध निसढो।
औषधम् ओसढं, ओसहं। (वै०)

७१ न-विकार

न=ण्ह—नापित ण्हाविओ, नाविओ। (वै०)
[1]न=ल—निम्ब लिंबो, निंबो। (वै०)

७२ प-विकार

[2]प=फ—पनसः फणसो। परिघ फलिहो। परिखा फलिहा। परुष फरुसो। [3]पाटि फाडि। [पाटयति फाडेइ इत्यादि] पारिभद्र फालिहद्दो।
प=म—आपीड आमेलो, आवेडो। नीप नीमो, नीवो। (वै०)
प=व[4]—प्रभूतम् वहुत्त।
प=र—पापर्द्धि पारद्धी।

७३ ब-विकार

[4]ब=भ—बिसिनी भिसिणी।
ब=म—कबन्ध कमन्धो।
ब=य—कबन्ध कयन्धो। (वै०)

७४ भ-विकार.

भ=व—कैटभ केढवो।

---

१ पाली प्र० सू० ८१—(न=ल)
२ पाली प्र० सू० ८०—(प=फ) परुष—फरुसो (पाली)
३ अहीं 'पाट' धातुना नवा रूपो समजवाना छे
४ पाली प्र० सू० ६२—(ब=भ)

७५ म-विकार

म=ढ—विषम विसढो, विसमो। (वै०)

म=व—मन्मथ वम्महो।

अभिमन्यु अहिवन्नु, अहिमन्नू। (वै०)

म=भ—भ्रमर भसलो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

नीचेना शब्दोमां 'मु' ना 'म' नो लोप थाय छे अने 'म'नो लोप थया पछी शेष रहेल ('मु' ना) 'उ' ने स्थाने अनुनासिक 'उ' (उँ) थाय छे

अतिमुक्तकम् अणिउँतयं। कामुक काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ [1]य-विकार

य=आह—कतिपयम् कइवाहं।

य=ज्ज—उत्तरीयम् उत्तरिज्जं, उत्तरीअं। (वै०)

तृतीय तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=त—युष्मदीयः तुम्हकेरो। युष्मादृश—तुम्हारिसो। [2]युष्मद्—तुम्ह। इत्यादि।

[3]य=ल—यष्टि लट्ठी।

[4]य=व—कतिपयम्—कइअवं (वै०)

---

१ कोई स्थानमां य नो 'र' पण थई जाय छे
स्नुषा—ण्हारु— [पाल—सिनव]

२ अहीं 'युष्मद्' शब्दना बधी जातना रूपोने पण समजवाना छे युष्मत्पुत्र—तुम्हपुत्तो इत्यादि

३ पालि प्र० पृ० ६३—(य=ल)

४ पालि प्र० पृ० ६३—(य=व)

य=ह—छाया [1]छाही, छाया । सच्छायम् सच्छाहं, सच्छाय (वै०)

७८ र-विकार

र=इ—गिरि गिडी । [2]पिठर पिहडो । भेर भेडो ।

र=डा—पर्याणम् पडायाण, पल्लाण ।

र=ण—करवीर कणवीरो ।

[3]र=ल—नीचेना शब्दोमां 'र' नो 'ल' थाय छे-तेमां क्यांय नित्य अने क्यांय विकल्पे थाय छे

अपद्वारम् अवद्दालं ।	[4]भ्रमर भसलो ।
अङ्गार इंगालो ।	मुखर मुहलो ।
करुण कलुणो ।	युधिष्ठिर जहुट्ठिलो ।
कातर काहलो ।	रुग्ण लुक्को ।
किरात चिलाओ ।	वरुणः वलुणो ।
चरणः चलणो ।	शिथिर सिढिलो ।
दरिद्र दलिद्दो ।	मत्सार सकालो ।
दरिद्राति दलिद्दाइ ।	सुकुमार सोमालो ।
दारिद्र्यम् दालिद्दं ।	स्थूर थूलो ।
परिखा फलिहा ।	स्थूरभद्र थूलभद्दो ।
परिघ फलिहो ।	हरिद्र हलिद्दो ।
पारिभद्र फालिहद्दो ।	हरिद्रा हलिद्दा । इत्यादि

---

१ आ शब्दनो अर्थ 'नीळे' छे 'छायो' न थाय छे

२ 'पिठर' शब्दनुं रूप 'पिढर' थाय छे, पण 'पिढड' थतुं नथी—जुओ पृ ८० (ठ=ढ)

३ सरखावो मागधी र—ल (पृ २६)

४ 'भ्रमर' शब्दनुं रूप 'भसल' थाय पण 'भमल' न थाय.

वैकल्पिक—

जठरम्	जढल,	जढर।
निष्ठुर	निठ्ठलो,	निठ्ठुरो।
बठर	बढलो,	बढरो।

७९ ल-विकार

[1]ल=ण—नीचेना शब्दोमां आदिना 'ल' नो नित्ये अने विकल्पे 'ण' थाय छे

ललाटम् णलाड, [2]णिलाड।

वैकल्पिक—

लाङ्गलम्	[3]णङ्गल,	लङ्गल।
लाङ्गूलम्	णङ्गूल,	लङ्गूल।
लाहल	णाहलो,	लाहलो।

ल=र—स्थूलम् थोर।

८० व-विकार

व=भ—विह्वल भिब्भलो, विब्भलो, विहलो[4]। (वै०)

व=म—शबर समरो। [5]श्रवण वेसमणो

नीवी नीमी, नीवी। स्वप्न सिमिणो, सिविणो (वै०)

८१ श-विकार

[6]श=छ—शमी छमी। शाव छावो।

शिरा छिरा, सिरा (वै०)

---

१ पाली प्र० पृ० ६३ (ल=न)—ललाटम् नलाट।

२ तुओ पृ० ८ (अ=इ)

३ लाङ्गलम् नाङ्गल पाली [पृ० ३९

४ 'विह्वल' शब्दनुं भिन्न रूप थतुं तथा—जूओ ह्व-भ

५ पाली प्र० पृ० ६३—(श=छ) छाप छापो।

श=ह—एकादश एआरह, एआरस। दश दह, दस। दशबलः दहबलो, दसबलो। दशमुख. दहमुहो, दसमुहो। दशरथः दहरहो, दसरहो। द्वादश बारह, बारस। त्रयोदश तेरह, तेरस इत्यादि।

८२ ष-विकार.

ष=छ—[1]षट् छ [षट्पदः छप्पओ। षण्मुखः छंमुहो। षष्ठः छट्ठो। षष्ठी छट्ठी]

ष=ण्ह—स्नुषा सुण्हा, सुसा[2]। (वै०)

ष=ह—पाषाण. पाहाणो, पासाणो। प्रत्यूष. पच्चूहो, पच्चूसो (वै०)

८३ स-विकार

स=छ—सप्तपर्ण. छत्तिवण्णो। सुधा छुहा।

स=ह—दिवस· दिवहो, दिवसो। (वै०)

८४ ह-विकार

ह=र—उत्साह[4] उत्थारो, उच्छाहो।

८५ लोप

नीचेना शब्दोमां नीचे जणावेला व्यंजनोनो लोप विकल्पे थाय छे:

'क' लोप—प्राकार· पारो, पायारो।

व्याकरणम् वारणं, वायरणं।

'ग' लोप—आगत आओ, आगओ

---

१ पाली प्र० पृ० ६४—(ष=छ) षट् छ।

२ अहीं 'षट्' शब्दना रूपा रूपो समजवाना छे.

३ जुओ पृ० ४२ 'स्न-सिन' अने एनुं टिप्पण।

४ 'उत्साह' शब्दनुं 'उच्छार' रूप थाय नहि.

'ज' लोप—दनुज दणू, दणु ओ । दनुजवध दणुवहो, दणुअवहो ।
भाजनम् भाण, भायण । राजकुलम् राउल, रायउल ।
'द' लोप—उदुम्बर उम्बरो, उउंबरो । दुर्गादेवी दुग्गावी, दुग्गाए (ए) वी । पादपतनम् पावडण, पायवडण ।
पादपीठम् पावीढ, पायवीढ ।
'य' लोप—किसलयम् किसल किसलय ।
कालायसम् कालास, कालायस ।
हृदयम् हि अ, हिअय । सहृदय सहिओ, सहिअयो ।
'व' लोप—

अवट अडो, अवडो । आवर्तमान अत्तमाणो आवत्तमणो । एवमेव एमेव, एवमेव । जीवितम् जीअ, जीविअ । तावत् ता, ताव । देवकुलम् देउल, देवउल । प्रावार पारओ, पावारओ । यावत् जा, जाव ।

लोप—
केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि यञ्जननो पण लोप थई जाय छे
च अ । चिह्नम् इध । पुन उणो इ यादि ।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

[सूचना —आ नीचे संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफ रोने आपवामा आवे छे अने साथे जे जे शब्दोना वैकल्पिक बब्बे रूपो थाय छे तेओनु बीजु रूप लक्ष्यमा रहे ए माटे तेने पण अहीं आवा [ ] कौंसमा जणावी दीधु छे]

८६ क

(क) [1]क्त=क्क—

मुक्त मुक्को [मुत्तो] । शक्त सक्को [सत्तो] ।

(ख) ग्ण=क्क—

[2]रुग्ण लुक्को [लुग्गो] ।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्क [माउत्तण] ।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्ट डक्को [डट्ठो] ।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्खं, [तिण्हं] ।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भ खंभो [थंभो]

---

१ पाओ प्र० पृ० ८१ (टिप्पण)

२ दष्ट ट्टगा (पा० प्र० पृ० ८९ टिप्पण ष्ट=ट्ठ)

३ जुओ पृ० ८३–३ टिप्पण

(ग) स्थ=ख—

स्थाणुः खाणू ।

(घ) स्फ=ख—

स्फेटकः खेडओ ।

स्फेटिकः खेडिओ ।

स्फोटकः खोडओ ।

८८ ग्ग, ङ्ग

(क) क्त=ग्ग—

रक्तः रग्गो [रत्तो]

(ख) ल्क=ङ्ग—

शुल्कम् सुंङ्ग, (चुंगी- हिं०) [सुक्क]

८९ च्च

(क) त्त=च्च—

कृत्तिः किच्ची ।

(ख) थ्य=च्च—

तथ्यम् तच्चं [तच्छ]

९० च्छ, छ

(क) स्थ=छ—स्थगितम् छइअ [थइअं]

(ख) स्प=छ—स्पृहा छिहा ।

(ग) स्प=च्छ—निस्पृहः निच्छिहो [निप्पिहो] ।

९१ ज्ज, ज

९२ ज्झ

न्ध=ज्झ—

(धातु) इन्ध् इज्झा (समिन्ध् समिज्झाइ। वि+इन्ध् विज्झाइ)

९३ ञ्चु

श्चि=ञ्चु—

[1]वृश्चिकः विञ्चुओ, [विछिओ]

९४ ट्ट

(क) र्त=ट्ट—वर्तनम् वट्टणं। मृत्तिका मट्टिआ।

वृत्त वट्टो।

(ख) र्थ=ट्ट—कदर्थित कवट्टिओ।

(ग) स्त=ट्ट—पर्यस्त पलट्टो।

९५ ट्ठ, ठ

(क) र्थ=ट्ठ—

[3]अर्थः [4]अट्ठो [अत्थो]

चतुर्थ चउट्ठो [चउत्थो]

(ख) स्त=ठ—

स्तभ्यते ठभिज्जइ।

[5]स्तब्धः ठड्ढो [थड्ढो]

---

१ वृश्चिकः विच्छिको (पाली)

२ पाली प्र० पृ० ५८–(त=ट)

३ अर्थः अत्थो, अट्ठो, अट्ठा–(पाली प्र० पृ० ३० टिप्पण)

४ 'अट्ठ' शब्दना प्रयोग 'प्रयोजन' अर्थमां थाय छे अने 'अत्थ' शब्दनो 'धन' अर्थमां थाय छे.

५ स्तब्धः थद्धो। स्तम्भः थंभो–(स्त=थ पाली प्र० पृ० २७)

स्तम्भ[1] ठंभ (धातु)

स्तम्भः[2] ठंभो।

स्त्यानम् ठीण। [थीणं]

(ग) स्थ=ठ—विसंस्थुलम् विसठुलं।[3]

स्थ=ड्ढ— अस्थि[4] अड्ढि।

९६ ड्ड

(क) र्त=ड्ड—

गर्तः गड्डो।

(ख) र्द=ड्ड—

कपर्दः	कवड्डो।	
गर्दभः	गड्डहो	[गद्दहो]
छर्द्	छड्ड	(धातु)
छर्दयति	छड्डेइ।	
छर्दिः	छड्डी।	
मर्दितः	मड्डिओ।	
विच्छर्दः	विच्छड्डो।	
वितर्दिः	विअड्डी।	
संमर्दः	समड्डो।	

१ आ 'स्तम्भ' धातुने अहीं असंदार्थक ज लेवानो छे.

२ 'स्तम्भ' शब्दनो अर्थ पण 'स्तम्भ' धातुनी जेवो ज समजवानो छे

३ पाली प्र० पृ० २८-(स्थ=ठ)

४ अस्थि अट्ठि (पाली प्र० पृ० २९-स्थ=ट्ठ)

९७ 'ड्ढ, ढ

नीचे जणावेला शब्दोमा संयुक्त 'ध' नों ड्ढ अने ढ थाय छे —

(क) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध=ड्ढ—

अर्धम्	अड्ढ	[अद्ध]
ऋद्धि	इड्ढी,	[इद्धी]
दग्ध	दड्ढो ।	
विदग्ध	विअड्ढो	
वृद्ध	वुड्ढो,	[विद्धो]
वृद्धि	वुड्ढी ।	
श्रद्धा	सड्ढा,	[सद्धा]
स्तब्धः	ठड्ढो ।	

(ख) र्ध=ढ—मूर्धा मुढा, [मुद्धा]

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त=ण्ट—

वृन्तम् वेण्ट (तालवृन्तम् तालवेण्ट)

न्द=ण्ड—

कन्दरिका कण्डलिआ ।

भिन्दिपाल भिण्डिवालो ।

(ग) ञ्च=ण्ण—

पञ्चदश पण्णरह ।

पञ्चाशत् पण्णासा ।

---

१ प्रा॰ प्र॰ पृ॰ ८२-(द्ध न्त, र्ध-ड्ढ, स्थन्दन)

२ उत्तम पद-(प्रा॰ प्र॰ पृ॰ ७८, न्त=ट)

(ख) द्त=ण्ण—

[1]दत्तम् दिण्ण ।

(ग) ह्न=ण्ण—

मध्याह्न मज्झण्णो, [मज्झण्हो]

९९ त्थ

(क) त्स=त्थ—

[2]उत्साहः उत्थारो ।

(ख) त्म=त्थ—

अध्यात्म अज्झत्थ [अज्झप्पं]

१०० द्ध

ष्ट=द्ध— आश्लिष्ट आलिद्धो ।

न्त, न्ध

[3]न्य=न्त—

मन्यु मन्तू । [मन्नू]

ह्न=न्ध—

चिह्नम् चिन्ध [चिण्ह]

१०१ प्प, प्फ, फ

[4]त्म=प्प—

आत्मा अप्पा । [अत्ता]

आत्मान अप्पाणो [अत्ताणो]

---

१ 'दत्त' शब्दनु 'दिण्ण' के 'दिन्न' रूप थतु नथी

२ उत्साह =उस्साहो–(पाली प्र० पृ० ३०)

३ जुओ पृ० ३५, २ने एनु चालु टिप्पण।

४ पालीभाषामा 'त्म' नो 'तुम' थतो जणाय छे –आत्मा आतुमा, अत्ता–(पाली प्र० पृ० ४०)

ष्म=प्फ, फ—

भीष्म भिप्फो।

श्लेष्मा[1] सेफो [सिलिम्हो]

स्म=प्प—

भस्म भप्पो [भम्हो]

१०२ ब्भ, म्ब, म्भ

र्ध्व=ब्भ—

ऊर्ध्वम् उब्भ [उद्ध]

म्र=म्ब—

आम्रम् अम्ब।

ताम्रम् तम्ब।

(क) श्म=म्भ—

कश्मीरा कम्भारा [कम्हारा]

(ख) ह्म=म्भ—

ब्राह्मण बम्भणो [बम्हणो]

ब्रह्मचर्यम् बम्भचेर [बम्हचेर]

१०३ र

(क) र्य=र—

आश्चर्यम् अच्छेर। तूर्यम् तूर। धैर्यम् धीर, [धिज्ज] पर्यन्त पेरतो। [पज्जतो] ब्रह्मचर्यम् बम्हचेर। शौण्डीर्यम् सोंडीर। सौन्दर्यम् सुन्देर।

(ख) र्ह=र—

दशार्ह दसारो।

(ग) त्र=र—

धात्री धारी।

---

१ श्लेष्मा=सिलेसुमा, सेम्हो–(पाली प्र० पृ० ४१, मन्दुम्)

२ पाली प्र० पृ० १७–(मज्झ नि० १८)

१०४ ळ, ळ्ह

ष्ठ=ळ—

कूष्माण्डी कोहळी [कोहण्डी]

र्य=ल्ह—

[1]पर्यस्तम् पल्हट्ट, [पल्लत्थं]

पर्याणम् पल्हाणं ।

सौकुमार्यम् सोअमल्हं ।

१०५ स्स

[2]स्प=स्स—

बृहस्पतिः बहस्सई [बहप्फई]

वनस्पतिः वणस्सई [वणप्फई]

१०६ ह

(क) क्ष=ह— दक्षिणः दाहिणो [दक्खिणो]

(ख) ख=ह — दुःखम् दुह [[3]दुक्ख]

दुःखितः दुहिओ [दुक्खिओ]

(ग) र्थ=ह— तीर्थम् तूहं [तित्थं]

(घ) र्घ=ह— दीर्घः दीहो, [दिग्घो]

(ङ) र्प=ह— कार्षापणः काहावणो ।

(च) ष्प=ह— [4]बाष्पः बाहो

---

१ पर्यस्तिका पल्लत्थिका–(पाली प्र० पृ० १६–टिप्पण)

२ वनस्पति वनप्पति–(पाली प्र० पृ० ३९–स्प=प्प)

३ पाली प्र० पृ० ८–नियम १० (ख)

४ आ शब्द, बे अर्थमा प्रसिद्ध छे–एक तो आसु अने बीजो बाफ; तेमा ज्यारे ए बाफ–गरमी–नो वाचक होय त्यारे तेनु 'बाह' ने बदले 'बप्फ' रूप थाय छे ।

(छ) ष्म=ह– कुष्माण्डी कोहण्डी।
कुष्माण्डम् कोहण्डं।

१०७ द्विर्भाव

(क) नीचे जणाव्या प्रमाणे चिह्नित व्यंजनोनो द्विर्भाव थाय छे–
ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:—

ऋजुः उज्जू।	यौवनम् जुव्वणं।
तैलम् तेल्लं।	विचाकिलम् वेइल्लं।
प्रभूतम् बहुत्तं।	व्रीडा विड्डा इत्यादि।
प्रेम पेम्मं।	
मण्डूकः मंडूक्को।	

वैकल्पिकः–	अस्मदीयम् अम्हकेरं	अम्हक्केरं,	अम्हकेरं।
	एकः	एक्को,	एओ।
	कर्णिकारः	कण्णिआरो,	कणिआरो।
	कुतूहलम्	कोउहल्लं,	कोउहलं।
	चिअ	[1]च्चिअ,	चिअ (एव)
	चेअ	च्चेअ,	चेअ (एव)
	तूष्णीकः	तुण्हिक्को,	तुण्हिओ।
	दैवम्	दइव्वं,	दइवं।
	नखः	नक्खो,	नहो।
	निहितम्	निहित्तं,	निहिअ।
	नीडम्	नेड्डं,	नीडं।

१ 'चिअ' अने 'चेअ' ए बन्ने अवधारण सूचक अव्यय (हे० ८–२–१८४) अने संस्कृतमा वपराता 'चैव' साथे वि., समानता धरावे छे–उच्चारना कारणने लीधे ए बन्ने 'चैव' माथी पण थइ शके छे.

मूकः	मुक्को,	मूओ।
मृदुकम्	माउक्कं,	माउअं।
व्याकुलः	वाउल्लो,	वाउलो।
व्याहृतः	वाहित्तो,	वाहिओ।
सेवा	सेव्वा,	सेवा।
स्रोतस्	सोत्तं,	सोअं।
स्त्यानम्	थिण्णं,	थीणं।
स्थूल.	थुल्लो,	थोरो।
स्थाणुः	खण्णू,	खाणू।
हूतम्	हुत्त,	हूअं इत्यादि।

(ख) समासमा आवेला उत्तरपदना आदिना व्यंजननो द्विर्भाव विकल्पे थाय छे —

आलान-स्तम्भः	आणाल-खंभो,	आणाल-क्खंभो।
कुसुम-प्रकरः	कुसुम-पयरो,	कुसुम-प्पयरो।
दुः-सह॰	दु-सहो,	दु स्सहो।
देव-स्तुति.	देव-थुई,	देव-त्थुई।
नदी ग्राम	नइ गामो,	नइ ग्गामो।
निः-सहम्	नि सहं,	नि-स्सहं।
हर-स्कन्दा.	हर-खंदा,	हर-क्खंदा।

१०८ शब्द-विशेष विकार

जे शब्दोमा कोई पण सामान्य के विशेष नियम न लागु पडतां चिह्नित भागना केटलाक विशेष विकारो थाय छे, ते आ नीचे आपवामा आवे छे.—

अयस्कारः एक्कारो।

आश्चर्यम् अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं अच्छरीअं।

---

१ जुओ पृ॰ १–टिप्पण २ जु।

२ आश्चर्यम्=अच्छरियं, अच्छयिरं, अच्छेर–(पाली प्र॰ पृ॰ ४८ टिप्पण)

उदूखलः	ओहलो	[उऊहलो]
उलूखलम्	ओक्खलं	[उलूहलं]
कदलम्	केलं,	[कयलं]
कदली	केली,	[कयली]
कर्णिकारः	कण्णेरो,	[कण्णिआरो]
कुतूहलम्'	कोहलं,	[कोउहल]
चतुर्गुणः	चोग्गुणो,	[चउग्गुणो]
चतुर्थः	चोत्थो,	[चउत्थो]
चतुर्थी	चोत्थी,	[चउत्थी]
चतुर्दश	चोद्दह,	[चउद्दह]
चतुर्दशी	चोद्दसी,	[चउद्दसी]
चतुर्वारः	चोव्वारो,	[चउव्वारो]
'त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीसा ।	
त्रयोदश	तेरह ।	
त्रयोविंशतिः	तेवीसा ।	
त्रिंशत्	तीसा ।	
नवनीतम्	नोणीअं, लोणीअं ।	
'नवफलिका	नोहलिआ ।	
नवमालिका	नोमालिआ ।	
निषण्णः	णुमण्णो,	[णिसण्णो]
पूगफलम्	पोप्फलं ।	
पूगफली	पोप्फली ।	
पूतरः	पोरो ।	
प्रावरणम्	पङ्गुरणं, पाउरण,	[पावरणं]

१ अत्=ओ–वार्धा प्र० पृ० ४४ नि० ५३

बदरम्	बोर।	
बदरी	बोरी।	
मयूख	मोहो,	[मऊहो]
रुदितम्	रुण्ण।	
लवणम्	लोणं	[लवण]
विचकिलम्	वेइल्ल।	
विंशति	वीसा।	
सुकुमार	सोमालो	[सुकुमालो]
[1]स्थविर	थेरो।	

१०९ शब्द—सर्वथाविकार—

आ नीचे ते शब्दो आपवामां आवे छे जे केटलेक अंशे के सर्वथा (पोताना मूळ रूपथी) अन्य रूपवाळा थई जाय छे —

अधस् हेट्ठ।
अप ओ, [अव]
अप्सरस अच्छरसा, अच्छरा।
अयि ऐ[2]।
अव ओ, [अव]
आयुः आउस, [आऊ]
आरब्ध आढत्तो, [आरद्धो]
इदानीम् एण्हिं, एत्ताहे, दाणिं [इआणिं]
शौ० दाणिं।
त्रस्तम् हित्थ, तट्ठ [तत्थ]
दिश् दिसा।
दुहिता धूआ, [दुहिआ]
दंष्ट्रा दाढा।
द्रह, हरो।
द्रहक हरओ।
धनुष् धणुह, [धणू]
धृति दिही, [धिइ]

---

१ स्थविर =थेरो–(पाली)

२ आ सिवाय बीजे स्थाने 'ऐ' ना प्रयोग थइ शको–(जुओ पृ० १–टिप्पण)

ईषत्[1] कूर, [ईसि]
उत ओ, [उअ]
उप उ, ओ, [उव]
उभयम् अवह, उवह, [उभय]
ककुभ् कउहा।
क्षिप्तम् छूढ [खित्त]
क्षुध् छुहा।
गृहम्[2] घर।
छुप्त छिक्को [छुत्तो]
तिर्यक्[3] तिरिआ, तिरिच्छि।
पदाति पाइक्को [पयाई]
प्रावृष् पाउसो।
पितृष्वसा[4] पिउच्छा, पिउसिआ।
पूर्वम् पुरिम पुव्व। स्त्री० पुरव।

बहिस् बाहिं, बाहिर।
बृहस्पति भयस्सई [बहस्सई]
भगिनी बहिणी, [भइणी]
मलिनम् मइल [मलिण]
मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ।
मार्जारः मजरो, वजरो [मज्जारो]
वनिता विलया, [वणिआ]
विद्वान् विउओ।
वृक्षः रुक्खो, [वच्छो]
वैडूर्यम् वेरलिअ, वेउज्ज।
शुक्ति सिप्पी, [सुत्ती]
स्तोकम्[5] थेव, थोव, थोक्क [थोअ]
स्त्री इत्थी [थी]
श्मशानम्[6] सीआण, सुसाण [मसाण]
हृदयम् हिअय पं० हितप, हितपज।

---

१ [illegible] रूप थाय छे, किन्तु [illegible] नहि

२ 'गृहपति' शब्दनु घर० न बदले गहवइ रूप थाय छे

३ तिर्यच् तिरिच्छो–(पाला) पा० प्र० पृ० २८ नि० १०)

४ पितृष्वसा पिउआ (पा० प्र० पृ० ३८ [illegible])

५ स्तोकम् थोक–([illegible] पृ० २३)

६ श्मशानम् [illegible] (पा० प्र० पृ० ५१–[illegible])

११० अन्त स्वरवृद्धि—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित संयुक्त व्यंजननी वच्चे नीचे जणाव्या प्रमाणे स्वरो उमेराय छे —

			उमेरातो स्वर
[1]अग्नि	अगणी	[अग्गी]	अ
अर्हन्	अरहन्तो अरिहंतो, अरहंतो ।		अ, इ, उ
[2]अर्ह	अरह. अरिह, अरुह ।		,,
[3]कृत्स्न	कसिणो ।		इ
[4]कृष्ण	कसणो, कसिणो	[किण्हो]	अ, इ
क्रिया	किरिया	[किया]	इ
क्ष्मा	छमा ।		अ
चैत्यम्	चेइअ ।		इ
छद्म	छउम	[छम्म]	उ
[5]ज्या	जीआ ।		ई
तप्त	तविओ	[तत्तो]	इ
[6]द्वारम्	दुवार	[दार]	उ
द्वादश	दुवालस ।		,,
दिष्ट्या	दिट्ठिआ ।		इ
[7]पद्मम्	पउम	[पोम्म]	उ

---

१ अग्नि अग्नि, अगिनि, गिनि—(पा० प्र० पृ० ४९)
२ अहीं 'अर्ह' धातुना नथी रूपो समजवाना छे.
३ कृत्स्न कसिणो, किण्हो, सिण्णो—(पा० प्र० पृ० ४७)
४ आ नवे पो वर्ण क रंग अर्थमां ज वपराय छे
५ ज्या जिया—(पा० प्र० पृ० ४८—य=इ)
६ द्वार दुवार, दार (पा० प्र० पृ० ३२ टिप्पण)
७ पा० प्र० पृ० ४९—(म=उम्—पद्मम् पदुम)

			उमेरातो स्वरः
[1]प्लक्षः	पलक्खो ।		अ
भव्यः	भविओ ।	[भव्वो]	इ
मूर्खः	मुरुक्खो,	[मुक्खो]	उ
रत्नं	रयणं ।		अ
[2]वज्रम्	वइरं	[वज्जं]	इ
शार्ङ्गम्	सारंगं ।		अ
[3]श्री	सिरी ।		इ
[4]श्व·	सुवे ।		उ
[5]श्लाघा	सलाहा ।		अ
[6]स्निग्धम्	सणिद्ध, सिणिद्धं,	[निद्ध]	अ, इ
स्नुषा	[7]सुनुसा	[सुण्हा, ण्हुसा सुसा]	उ
[8]सूक्ष्मम्	सुहुम, सुहम ।		उ, अ
[9]स्नेहः	सणेहो नेहो ।		अ
स्याद्	सिआ		इ

१ प्लक्ष· पिलक्खो–(प्रा० प्र० पृ० ३१ नि० ३७)

२ वज्र वजिरो–(पा० पृ० १३ टिपण)

३ श्री· सिरी–(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ श्वः सुवे, स्वे–(पा० पृ० ३३ टिप्पण) श्वः सुव=सुवे–
जूओ पृ० ४६ अ=ए

५ श्लाघा सिलाघा–(पा० पृ० ३१)

६ स्निग्धम् सिनिद्धो, निद्धो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

७ जूओ पृ० ७३ तथा ४१

८ सूक्ष्मम्= सुखुम–(पा० पृ० १८ टिप्पण)

९ स्नेह· सिनेहो, स्नेहो, सनेहो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

		उमरातो स्वर
स्याद्वादः	सिआवाओ।	इ
स्रुघ्नम्	सुरुग्घ।	उ
[1]स्वः	सुवो।	,,
स्वे	सुवे।	,,
स्वप्न	सिविणो।	इ
[2]ह्य	हिओ [ग्हो]	,,
[3]ह्री	हिरी	इ

१११ अक्षर-व्यत्यय—

आ नीचे जे शब्दोमा चिह्नित अक्षरोनो परस्पर व्यत्यय—पूर्वापरभाव–थइ जाय छे ते आपवामा आवे छे —

अचलपुरम्	अलचपुर।	
आलान	आणालो	
करेणू	कणेरू।	
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठ।	
लघुकम्	हलुअ	[लहुअ]
[4]ललाटम्	णडाल	[णलाड]
वाराणसी	वाणारसी।	
हरिताल	हलिआरो	[हरिआलो]
ह्रद	द्रहो	[हरो]

१ समासान्तगत 'स्व श दनु सुव' ने बदले 'स' रूप थाय छे स्वजन सजणो

२ ह्य हीयो, हिय्यो–(प ० पृ० २२ टिप्पण)

३ ह्री हिरी (पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ जुओ पृ० ७२ ल=ण

अपभ्रंश–आदेशो

(१) नीचे जणावेला शब्दोना अपभ्रंश रूपो आ प्रमाणे छे.

अन्यादृश	([1]अन्नादि (इ) स)	अन्नाइस । [2]अवराइस ।
ईदृक्		एह ।
ईदृश	(ईदि (इ) स)	अइस ।
कीदृक्		केह ।
कीदृश	(कीदि (इ) स)	कइस ।
तादृक्		तेह ।
तादृश	(तादि (इ) स)	तइस ।
यादृक्		जेह ।
यादृश	(जादि (इ) स)	जइस ।
वर्त्म		विच्च ।
विषण्ण		वुन्न ।

अपभ्रंशना उमेरणो

(१) अपभ्रंशमा कोइ कोइ शब्दमा कोइ कोइ अक्षरनो वधारा तरीके उमेरो थइ जाय छे —

उक्तम्	उत्त	वुत्त	('व' नो वधारो)
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर	('अ' नो वधारो)
व्यासः	वासो	व्रासु, वासु	('र' नो वधारो)



---

१ आ ( ) कोउसमा आपेला रूपो अपभ्रंशरूपोनी पूर्वावस्थाना सूचक छे. आ शब्दोना प्राकृतरूपो जोवा माटे जुओ पृ० ५८ क्र=रि पृ० ५९ क्र=इ ।

२ जेम ' अन्य ' शब्दनु ' अन्यादृश ' रूप थाय छे तेम आ ' अवराइस ' शब्द जोता तेना मूळरूप तरीके ' अपरादृश ' रूप पण कल्पी शकाय ।

संधि प्रकरण ८

१[1] प्राकृतमां जूदां जूदां बे [2]पदोनां स्वरोनो संधि थाय छे अने ते पण प्रयोगानुसारे विकल्पे थाय छे.—

स्वरसंधि—

अ+अ=आ—मगह+अहिवई=मगहाहिवई, मगहअहिवई [मगधाधिपतिः]

दंड+अहीसो=दंडाहीसो, दण्डअहीसो [दण्डाधीशः]

अ=आ=आ—विसम+आयवो=विसमायवो,विसमआयवो [विषमातपः]

आ+अ=आ—रमा+अहीणो=रमाहीणो, रमाअहीणो [रमाधीनः]

आ+आ=आ—रमा+आरामो=रमारामो, रमाआरामो [रमारामः]

इ+इ=ई —मुणि+इणो–मुणीणो, मुणिइणो [मुनीनः]

इ+ई=ई—मुणि+ईसरो–मुणीसरो, मुणिईसरो [मुनीश्वरः]

दहि+ईसरो–दहीसरो, दहिईसरो [दधीश्वरः]

---

१ जे बे पदोनां स्वरोमां संधि थवानो छे, ते बे पदो सामासिक होय के असामासिक होय अर्थात् कोई प्रकारे जूदां जूदां होवां जोईए. जेमके, सामासिक–दंड+अहीसो दंडाहीसो, दंडअहीसो ।

असामासिक–दंडस्स+ईसो–दंडस्सेसो, दंडस्स ईसो ।

प्राकृत साहित्यमां विशेषे करीने सामासिक पदोनां स्वरोमां संधि थएलो जणाय छे अने असामासिक पदोमां तो तेनो प्रयोग घणो ज विरल थएलो छे. असामासिक पदोमां संधि करवा जतां घणे ठेकाणे अर्थबोध दुर्लभ थई जाय छे माटे ज असामासिक करतां सामासिक पदोमां संधि–प्रयोगनो प्रचार वधु थएलो लागे छे अने ए अनुसारे अहीं उदाहरणोमां पण सामासिक पदोनी ज साध विशेष करेली छे. कोई ठेकाणे तो फक्त एक ज पदमां पण संधि थएलो छे.—

काहि+इ–काही, काहिइ [करिष्यति]

बि+इओ–बीओ बिइओ [द्वितीयः]

२ जूओ पाविम० संधिकल्प नि० ३–पृ० ५८

ई+इ=ई—गामणी+इइहासो–गामणीइहासो, गामणी इइहासो [ग्रामणीतिहास]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो–गामणीसरो, गामणीईसरो [ग्रामणीश्वर]

उ+उ=ऊ–भाणु+उवज्झायो–भाणूवज्झायो, भाणुउवज्झायो [भानूपाध्याय]

साउ+उअय–साऊअय, साउउअय [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो,–साहूसवो, साहुऊसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअर–वहूअर, वहूउअर [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ–कणेरु+ऊसिअ–कणेरूसिअ,कणेरुऊसिअ [करेणूच्छ्रितम्]

अ+इ=ए—वास+इसी–वासेसी, वासइसी [व्यासर्षि]

आ+इ=ए—रामा+इअरो,–रामेअरो रामाइअरो [रामेतर.]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो–वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वर]

आ+ई=ए—विलया+ईसो–विलयेसो, विलयाईसो [वनितेश].

अ+उ=ओ- गूढ+उअर–गूढोअर, गूढउअर [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ–रमा+उवचिअ–रमोवचिअ,रमाउवचिअ [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ–सास+ऊसासा–सासोसासा,सासऊसासा,[श्वासोच्छ्वासौ]

आ+ऊ=ओ–विज्जुला+ऊसुमिअ–विज्जुलोसुमिअ,विज्जुलाऊसुमिअ [विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व–दीर्घ विधान—

२ प्राकृतमा सामासिक शब्दोमा प्रयोगानुसार (क्याय नित्ये अने क्यांय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छे —

---

१ जूओ पालि प्र० सधि० नि० २ पृ० ५७

[1]ह्रस्वनो दीर्घ–अन्त+वेई–अन्तावेई [अन्तर्वेदि]
सत्त+वीसा–सत्तावीसा [सप्तविंशति]
पइ+हर– पईहर, पइहर [पतिगृहम्]
भुअ+यत–भुआयतं, भुअयत [भुजायन्त्रम्]
वारि+मई–वारीमई, वारिमई [वारिमती]
वेलु+वण–वेलूवण, वेलुवण [वेणुवनम्]
[2]दीर्घनो ह्रस्व–गोरी+हर–गोरिहर, गोरीहर [गौरीगृहम्]

---

१ सरखावो वैदिक प्रयोग–
अष्ट+कपालम्–अष्टाकपालम् ।
अष्ट+हिरण्या–अष्टाहिरण्या ।
अष्ट+पदी–अष्टापदी (काशिका–६–३–१२६)
सरखावो संस्कृत प्रयोग—
दान+कर्ण –दानाकर्ण ।
उप+नत्–उपानत् ।
केश+केशि–केशाकेशि । वगेरे(काशिका–६–३–११५ थी १३९)
सरखावो पाली प्रयोग–
सम्म+धम्मो—सम्माधम्मो ।
सम्म+सबुद्धो—सम्मा सबुद्धो । (पा० प्र०पृ० ७४ संधिकल्प, नि० ११ तथा आ नियमनु टिप्पण)
२ सरखावो वैदिक प्रयोग—
अजा+क्षीरेण–अजक्षीरेण ।
ऊर्णा+म्रदा–ऊर्णम्रदा ।
अजा+त्वम्–अजत्वम् ।–(का० ६–३–६३–६४)
सरखावो संस्कृत प्रयोग—
शिला+वहम् —शिलवहम्
ग्रामणी+पुत्र –ग्रामणिपुत्र ।
ब्रह्मबन्धू+पुत्र —ब्रह्मबन्धुपुत्र ।
(का० ६–३–६१ थी ६६ तथा ४३–४५)

जउँणा+यड–जउणयड, जउणायड [यमुनातटम्]
नई+सोत्त–नइसोत्त, नईसोत्त [नदीश्रोत]
मणा+सिला–मणसिला, मणासिला [मन शिला]
वहू+मुह–वहुमुह, वहुमूह [वधूमुखम्]
सिला+खलिअ–सिलखलिअ, सिलासलिअ
[शिलास्खलितम्]

संधिनिषेध—

३ 'इ' 'ई' के 'उ' 'ऊ' पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थतो नथी अने 'ए' के 'ओ' पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थतो नथी-

पहावलि+अरुणो–पहावलिअरुणो [प्रभावल्यरुण]
वहू+अवऊढो–वहुअवऊढो [वध्ववगूढ]
वणे+अवइ–वणे अडइ [वनेऽटति]
अहो+अच्छरिअ—अहो अच्छरिअ [अहो आश्चर्यम्]

४ स्वर पर रहेता क्रियापदमां स्वरनो संधि थतो नथी –

होइ+इह–होइ इह [भवति इह भवतीह]

५ उद्वृत्त स्वर पर रहेता प्रायः पूर्वना स्वरनो संधि थतो[2] नथी

निसा+अरो–निसाअरो [निशाक (च) र]

---

१ स्वरनी साथे रहेलो व्यंजन लोपाया पछी जे स्वर शेष रहे छे तेनु नाम उद्वृत्त स्वर छे –(असंयुक्त 'कादि' लोप–पृ० १०)

२ केटलेक ठेकाणे तो उद्वृत्त स्वर पर रहवा पण संधि थई गएलो छे —

कुम्भ+आरो=कुम्भारो (कुम्भकार)
चक्क+आओ=चक्काओ (चक्रवाक)
साल+आहणो=सालाहणो (सातवाहन)
सु+उरिसो=सूरिसो (सुपुरुष)इत्यादि

[1]स्वरलोप—

६ स्वर पर रहेता पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसारे लोप थाय छे

तिअस+ईसो–तिअसीसो [त्रिदशेश]

नीसास+ऊसासा–नीसासूसासा [निश्श्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे

केण+अवि–केणवि, केणावि [केनापि]

कह+अपि–[2]कहपि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपि–किं पि, किमवि [किमपि]

त+अपि–त पि, तमवि [तदपि]

८ स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थइ 'ति' ने स्थाने 'त्ति' थाय छे

तहा+इति–तहात्ति, तहत्ति [तथेति]

पिओ+इति–पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९ व्यंजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे

किं+इति–किंति [किमिति]

जं+इति–जंति [यदिति]

दिट्ठ+इति–दिट्ठति [दृष्टमिति]

न जुत्त+इति–न जुत्त ति [न युक्तमिति]

१० त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला त्यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्राय लोप थई जाय छे —

त्यदादि–त्यदादि एस+इमो–एसमो [एषोऽयम्]

---

१ जुओ पालि० स० नि० १ (क) पृ० ५५।

२ जुओ „ „ „ २६ पृ० ८३।

त्यदादि–अव्यय अम्हे[1] एत्थ अम्हेत्थ [वयमत]

अव्यय–अव्यय जइ एत्थ जइत्थ [यद्यत्र]

अव्यय–त्यदादि जइ अहं जइहं [यद्यहम्]

जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यञ्जनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला 'विसर्ग'नो ओ थाय छे —

अग्रत =अग्गओ ।

अन्त +विस्रम्भ =अतोवीसम्भो ।

पुरत =पुरओ ।

मन शिला=मणोसिला ।

मार्गत =मग्गओ ।

सर्वत =सव्वओ ।

म=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे –
गिरिम्=गिरिं । जलम्=जलं । फलम्=फलं । वृक्षम्–वच्छं ।

१३ स्वर पर रहेला अन्त्य म'नो अनुस्वार विकल्पे थाय[2] छे
उसभम्+अजिअ=उसभं अजिअ, उसभमजिअ [ऋषभमजितम]

---

१ पालि प्र० स० नि० १–(ग) पृ० ९८–र+अह गह ।

२ कोई ठेकाणे डबल 'म्म'नी आदिमां रहेला 'म'नो पण अनुस्वार थई जाय छे जेमके वणम्मि–वणंमि (वने)

३ जूओ पालि प्र० स० पृ० ७७–य+आहु–यमाहु (यदाहु) धन+एव–धनमेव ।

ङ, ञ, ण, न=अनुस्वार

१४ व्यंजन पर रहेतां 'ङ', 'ञ', 'ण' अने 'न' ने स्थाने अनुस्वार थाय छे:

ङ-पङ्क्ति=पंति-पंती। पराङ्मुख=परमुह-परंमुहो।
ञ-कञ्चुक=कंचुक-कंचुओ। लाञ्छन=लंछण-लंछणं।
ण-षण्मुख=छंमुख-छंमुहो। उत्कण्ठा=उक्कंठा।
न-विन्ध्य=विंध-विंझो। सन्ध्या=संझा।

(१) शौरसेनीमां 'इ' अने 'ए' पर रहेतां अन्त्य 'म' पछी विकल्पे '[1]ण' उमेराय छे:

युक्तम् इदम्	जुत्त+इणं जुत्तमिणं	= जुत्तं णिणं, जुत्तं इणं।
सदृक्षम् इदम्	सरिस+इणं सरिसमिणं	= सरिसं णिणं, सरिसं इणं।
किम् एतत्	किं + एअं किमेअं	= किंणेदं किमेदं।
एवम् एतत्	एव + एअं एवमेअं	= एवं णेदं, एवमेदं।

अनुस्वार आगम.

१५ नीचे जणावेला शब्दोना अन्त्य व्यंजननो लोप थई अंत्य स्वर उपर अनुस्वार थाय छे:

ऋधक् इह। ऋधक्क् इहग। तत् तं। पृथक् पिहं। यत् जं।
विष्वक् वीसुं। सम्यक् सम्मं। साक्षात् सक्खं।

---

१ जूओ प्रा० प्र० सं० नि० २० पृ० ८०—चिर आयाति=चिरं णायादि, चिरआयादि।

१६ नीचे जणावेला शब्दोना प्रथम स्वर उपर, द्वितीय स्वर उपर अने तृतीय स्वर उपर प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वार थाय छेः

प्रथम स्वर उपर—अश्रु अंसु । कर्कोटः कंकोडो । कुड्मलम् कुंपलं । गुच्छम् गुंछं । गृष्टिः गिंठी, गिट्ठी । त्र्यस्रम् तंसं । दर्शनम् दंसणं । पुच्छम् पुंछं । पर्शुः पंसू । बुघ्नम् बुंधं । मार्जारः मंजारो, मज्जारो । मूर्धा मुंढा । वक्रम्-वंकं । वृश्चिकः-विंछिओ । श्मश्रु मंसू ।

द्वितीय स्वर उपर—इह इहं [इहमेगेसिं] प्रतिश्रुत् पडंसुआ । मनस्वी-मणंसी । मनस्विनी मणंसिणी । मनःशिला मणंसिला, मणासिला । वयस्य वयंसो ।

तृतीय स्वर उपर—अतिमुक्तकम्-अणिउंतयं, अइमुंतय, अइमुत्तयं । उपरि-अवरिं ।

कोइ स्थळे मात्र छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार थाय छेः
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए–
देवंनागसुवन्न किन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए[१] ।
[देवनागसुवर्णकिन्नरगणसद्भूतभावार्चिते]

१७ जे स्थळे स्वरथी शरु थतुं पद बेवडायुं होय त्यां वच्चे 'म' विकल्पे उमेराय छेः

एक+एकं एकमेकं, एकेकं (एकैकम्)
एक+एकेण एकमेकेण, एकेकेण (एकैकेन)
अंग+अंगम्मि अंगमंगम्मि, अंगअंगम्मि (अङ्गेअङ्गे) इत्यादि ।

---

१ जुओ पा० प्र० स० नि० १८ पृ० ७८, नि० २४-पृ०८१
२ 'श्रुतस्तव'ना छेल्ला श्लोकनु बीजु चरण छे—
जुओ पुक्खरवर दी-(प्रतिक्रमण)

अनुनासिकविधान—

१८ कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग अने पवर्ग पर रहेता अनुस्वारने स्थाने अनुक्रमे ङ, ञ, ण, न अने म विकल्पे थाय छे[1]

कवर्ग—अङ्गणम् अंगण, अङ्गण। पङ्क पंको, पङ्को ।
लङ्घनम् लंघण, लङ्घण। शङ्ख संखो, सङ्खो।

चवर्ग—कञ्चुक कंचुओ, कञ्चुओ। लाञ्छनम् लंछण, लञ्छण।
अञ्चितम् अंचिअ, अञ्चिअ । संध्या संझा, सञ्झा

टवर्ग—कण्टक कंटओ, कण्टओ। उत्कण्ठा उकंठा, उक्कण्ठा।
काण्डम् कंड, कण्ड। षण्ढः संढो, सण्ढो।

तवर्ग—अन्तरम् अंतर, अन्तर । पन्थ पंथो, पन्थो ।
चन्द्र चंदो, चन्दो। बान्धव बंधवो, बन्धवो।

पवर्ग—कम्पते कंपइ, कम्पइ। वंफइ, वम्फइ [काङ्क्षति]
कलम्ब कलंबो, कलम्बो। आरम्भः आरंभो, आरम्भो।

'अनुस्वार' लोप

१९ नीचे जणावेला शब्दोमां प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वारनो लोप[2] थाय छे

त्रिंशत्-तीसा। विंशति वीसा। संस्कृतम्-सक्कय।
संस्कार—सक्कारो। इत्यादि।

वैकल्पिक—
इदानीं इआणिं, इआणि। एवं एव, एवं।

---

१ आ नियमने कोई नित्य बाधरूपे स्वीकारे छे
२ जूओ पा० प्र० म० नि० १३-पृ० ७१।
३ जूओ पा० प्र० म० नि० २७-पृ० ८२।
४ मरहट्ठाओ संस्कृत-सक्कय।

कथम् कह, वह ।
कास्यम् कास, कसं ।
किं कि, किं ।
किंशुकम् केसुअ, किंसुअ ।
दाणिं दाणि, दाणिं [इदानीम्]
नून नूण, नूण ।

पासू पासु, पसू ।
मासलम् मासल, मसल ।
मासम् मास, मस, ।
समुखम्—समुह, समुह ।
सिंह —सीहो, सिंघो ।
इत्यादि ।

प्रकरण ९

उपसर्ग–अव्यय निपात

उवसग्गा—

प–प्र—परूवेइ (प्ररूपयति) पभासेइ (प्रभाषते)

परा–परा—पराघाओ (पराघात.) पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव–अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)

ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं–सम्—संखिवइ (संक्षिपति) सखित्त (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु–अनु—अणुजाणइ (अनुजानाति) अनुमई (अनुमति)

ओ, अव–अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतारः)

ओआसो, अवयासो (अवकाश.)

ओ[1] नि, नी–निर्—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्)

निग्गओ (निर्गतः) नीसहो (निस्सहः)

दु, दू–दुर्—दुन्नयो (दुर्नयः) दूहवो (दुर्भग)

अभि, अहि–अभि–अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्राय·)

वि–वि—विउव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनय·) वेणइआ (वैनयिकी)

अधि, अहि–अधि—अज्झायो (अध्याय.) अहीइ (अधीते)

सु, सू–सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभग·)

उ–उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गतः) उप्प-
विआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति–अति—अईओ (अतीतः) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः)

अतिसओ (अतिशय.) अच्चन्त (अत्यन्तम्)

णि, नि–नि—णिवेसो (निवेश.) सनिवेसो (सन्निवेश.) निवि-
सइ (निविशते)

---

[1] फक्त 'माल्य' शब्दनी पूर्वमां ज 'निर्' नो 'ओ' थाय छे.

पडि, पति, परि–प्रति[1]—पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा)
परिट्ठा (प्रतिष्ठा)

परि, पलि–परि—परिवुडो (परिवृत) पलिहो (परिघ)

इ, पि, वि, अपि अवि–अपि—पिहेइ (पिदधाति) पिहित्ता (पिधाय)
विंपि, किमवि, किमपि (किमपि) कोइ, कोवि (कोऽपि)

ऊ, ओ, उव–उप—ऊज्झायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)

आ–आ—आयासो (आयास) आयतो (आयान्त)

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्य प्रयुज्यते ॥

अव्वयाइ (अव्ययानि)

अहो, हहो, हा, हे, नाम, अहह, हीसि, अहह अने अरिरिहो विगेरे अनेक अव्ययो छे अने ते बधानो प्रयोग संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां पण थाय छे तो पण अहीं नीचे केटलाक विशेष अव्ययोनी नोंध करीए छीए —

अइ	अति	अतिशय.
अइ	अयि	संभावना
अईव	अतीव	विशेष
अओ	अत	आथी, पछी.
अकट्टु	अकृत्वा	नहि करीने.
अग्गओ	अग्रत	आगळथी.
अग्गे	अग्रे	आगे, आगळ.
अंग	अङ्ग	संबोधन
अज्ज	अद्य	आज

[1] का 'स्था' धातुनो पूर्वनो न 'प्रति' नो 'परि' थाय छे.

प्रकरण ९

उपसर्ग–अव्यय निपात

उवसग्गा—

प–प्र—परूवेइ (प्ररूपयति) पभासेइ (प्रभाषते)

परा–परा—पराघाओ (पराघात.) पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव–अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)

ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं–सम्—संखिवइ (संक्षिपति) संखित्त (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु–अनु—अणुजाणइ (अनुजानाति) अनुमई (अनुमति)

ओ, अव–अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतारः)

ओआसो, अवयासो (अवकाशः)

ओ[1], नि, नी–निर्—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्)

निग्गओ (निर्गतः) नीसहो (निस्सहः)

दु, दू–दुर्—दुन्नयो (दुर्नयः) दूहवो (दुर्भग.)

अभि, अहि–अभि- अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्राय)

वि–वि —विकुव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनयः) वेणइआ (वैनयिकी)

अधि, अहि–अधि—अज्झायो (अध्यायः) अहीइ (अधीते)

सु, सू–सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभगः)

उ–उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गतः) उप्प-त्तिआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति–अति—अईओ (अतीतः) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः)

अतिसओ (अतिशय) अच्चन्त (अत्यन्तम्)

णि, नि–नि—णिवेसो (निवेशः) सनिवेसो (सन्निवेश.) निवि-सइ (निविशते)

---

[1] फक्त 'मान्य' शब्दनी पूर्वेना ज 'निर्' नो 'ओ' थाय छे.

त्यदादि–अव्ययः अम्हे[1] एत्थ अम्हेत्थ [वयमत्र]

अव्यय–अव्ययः जइ एत्थ जइत्थ [यद्यत्र]

अव्यय–त्यदादिः जइ अहं जइहं [यद्यहम्]

जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यंजनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला 'विसर्ग 'नो ओ थाय छेः—

अग्रत =अग्गओ ।

अन्तः+विस्रम्भ.=अंतोवीसंभो ।

पुरत.=पुरओ ।

मन.शिला=मणोसिला ।

मार्गत.=मग्गओ ।

सर्वत =सव्वओ ।

म्=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे[2] –

गिरिम्=गिरिं । जलम्=जलं । फलम्=फलं । वृक्षम्=वच्छं ।

१३ स्वर पर रहेता अन्त्य 'म' नो अनुस्वार विकल्पे थाय[3] छेः

उसभम्+अजिअं=उसभं अजिअं, उसभमजिअं [ऋषभमजितम्]

---

१ पालि प्र० स० नि० १–(ग) पृ० ६५–तं+अहं=तेहं ।

२ कोई ठेकाणे डबल 'म्म' नी आदिमां रहेला 'म्' नो पण अनुस्वार थई जाय छे. जेमके–वणम्मि=वणंमि (वन)

३ जूओ पालि प्र० स० पृ० ७७–यं+आहु=यमाहु (यदाहुः) धनं+एव=धनमेव ।

[1]स्वरलोप—

६ स्वर पर रहेतां पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसारे लोप थाय छे:

तिअस+ईसो–तिअसीसो [त्रिदशेशः]

नीसास+ऊसासा–नीसासूसासा [निश्श्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे:

केण+अवि–केणावि, केणावि [केनापि]

कहं+अपि–[2]कहंपि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपि–किं पि, किमवि [किमपि]

तं+अपि–तं पि, तमवि [तदपि]

८ स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थइ 'ति' ने स्थाने त्ति' थाय छे:

तहा+इति–तहात्ति, तहत्ति [तथेति]

पिओ+इति–पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९ व्यंजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे:

किं+इति–किंति [किमिति]

जं+इति–जंति [यदिति]

दिट्ठं+इति–दिट्ठंति [दृष्टमिति]

न जुत्तं+इति–न जुत्तं ति [न युक्तमिति]

१० त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला त्यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्राय: लोप थई जाय छे:—

त्यदादि–त्यदादिः एस+इमो–एसमो [एषोऽयम्]

१ जुओ पालि० सं० नि० १ (क) पृ० ५५।

२ जुओ „ „ „ २६ पृ० ८३।

अरे	अरति (अरइ)	रतिकलह.
अल	अलम्	सामर्थ्य, निषेध, पूरतु
अलाहि	अलहि	निवारण, निषेध
अवस्स	अवश्यम्	अवश्य
अवसें (अप०)	अवश्येन	"
अवस	अवश्यम्	"
अवरिं	उपरि	उपर.
अव्वो		सूचना, पश्चात्ताप, सभाषण, विस्मय, सताप, आदर, भय, अपराध, खेद, दुख, आनद.
असइ	असकृत्	अनेकवार.
अह	अथ	आरभ.
अहत्ता	अधस्तात्	नीचे
अहवइ (अप०)	अथवा	पक्षांतर
अहव, अहवा	अथवा	"
अहा	यथा	जेम
अहे	अधः	नीचे
अहो	अहो	ओहो (आश्चर्य)
आम	ओम्	स्वीकार
आवि	आवि	प्रकट
आहच्च	आहत्य	बलात्कार.
आहरजाहर(अप०)	एहिरेयाहिरे	आवरोजावरो
इ		पादपूरक.
इओ	इत	आथी, एथी, वाक्यारभ.

इक्कसरिअ	एकसृतम् (?)	सप्रति.
इत्थत्त	इत्थत्वम्	ए प्रकारे.
इत्थत्थो	इत्यर्थ	ए अर्थ.
इयाणि	इदानीम	हमणा.
एम्वहि(अप०)	,,	,,
इर	किल	निश्चय
इह	इह	अहीं.
इह	ऋधक्	सत्य.
इहय	ऋधक्	,,
इहरा	इतरथा	अन्यथा
इ	किम्	प्रश्न, गर्हा.
ईसिं	ईषत्	थोडुं.
ईसि	,,	,,
उ	तु	तो.
उअ	उत	पश्य—जो.
उट्ठबइस (अप०)	उत्तिष्ठविश	ऊठबेश.
उत्तरओ	उत्तरत	उत्तरथी, उत्तरमा.
उत्तरसुवे	उत्तरश्व	आवती काल पछी.
उद	उत	विकल्प, अपि.
उदाहु	उताहो	विकल्प.
उप्पिं	उपरि	उपर.
उवरिं	,,	,,
उवरि	,,	,,
उ		गर्हा, क्षेप, विस्मय, सूचना
एअं	एतत्	ए.

एक्कइआ एक्कइआ एक्कया	एकदा	एक वखत
एक्कमरिअ	एकसृतम् (?)	सप्रति
एक्कसि इक्कसि (अप०)	एकशः	एकवार
एक्कसि इक्कसि	एकदा	एक वखत
एक्कसिअ इक्कसिअ	,,	,,
एगइआ एगया	एकदा	एक वखत
एगयओ	एकैकत	एक एक
एगततो	एकान्तत	एक तरफी
एगअम	ऐकयम्	एक प्रकार
एतावता एयावया	एतावता	एटले
एत्थ एत्थ	अत्र	अहीं
एत्थु एत्तहे (अप०)	अत्र	,,
एत्तहे (अप०)	इत	आथी, एथी, वाक्यारंभ
एव	एव	नक्की, ए ज प्रमाणे
य्येव[1] (शौ०)	,,	,,

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ७८ नि० १७

वा + एव= वा यव। तमु + एव=तमु येव।

न + एव=न येव। ते + एव=ते येव।

बोधि + एव=बोधि येव। सो + एव=सो यव।

जि (अप०)		ज "तासु जि" तेनो ज
एव	एवम्	एम, ए प्रमाणे
एम्व (अप०)	”	”
एवमेव	एवमेव	एम ज
एमेव	”	”
एम्वइ (अप०)	,	”
ऐ	अयि	संभावना
आ		सूचना, पश्चात्ताप
कओ	कुत	क्यांथी.
कउ कहंतिहु } (अप०)	,	
कत्थइ	कुत्रचित्	कोइ ठेकाणे
कल्ल	कल्यम्	काले
कह कहं }	कथम्	केम, केवी रीते
केम, केम्व, किम, किम्व किह किध } (अप०)	,	”
कहि कहिं }	कुत्र	क्यां
केत्थु (अप०)	,	,
कालओ	कालत	काळे करीने, वखते
काहे	काह (?)	क्यारे
किं		प्रश्न, गर्हा,
किंचि	किंचित्	कांई,

किणा / किण्णा / किणो	किंनु	प्रश्न.
		”
किर	किल	नक्की.
किल	”	”
केवचिर	कियच्चिरम्	केटला लांबा समय सुधी
केवच्चिरेण	कियच्चिरेण	”
केवल		एकलु
केहि (अप०)		तादर्थ्यसूचन “रग्गहो केहि” स्वर्गने माटे
खलु		नक्की
खाइअ (यं)		वळी
खाइ (अप०)		अनर्थक–स्वलपूरक.
खेत्तओ	क्षेत्रत	क्षेत्रमां, क्षेत्रथी
खु		नक्की
गब्भो	गर्भत	गर्भे
गुणओ	गुणत	गुणे
घइ (अप०)		अनर्थक–स्वलपूरक.
घुग्घ (अप०)		घुघु—घेटानुं अनुकरण.
च	च	अने.
च्च		नक्की.
चिअ / चेअ	चेव	”
जइ	यदि	जो
छुडु (अप०)	”	”
जओ	यत	जेथी कारण के.

जणि, जणु (अप०)		जाण्ये, 'इव'नुं सूचन.
जत्थ	यत्र	ज्यां–जेमां.
जेत्थु, जत्तु (अप०)	यत्र	ज्यां–जेमां.
जति	यदि	जो.
जदि	यदि	"
जह, जहा	यथा	जेम, जे रीते.
जेम, जेम्व, जिम, जिम्व, जिह, जिध (अप०)	"	"
जहेव	यथैव	"
जं	यत्	जे, के.
जाव	यावत्	ज्यासुधी.
जाम, जाउ, जामहिं (अप०)	"	"
जावज्जीवं	यावज्जीवम्	जीवता सुधी.
जुअंजुअं	युतंयुतम् (?)	पृथक्‌पृथक्–जुदुंजुदुं.
जेण	येन	जे तरफ.
जे	ये	पादपूरक.
झगिति		संप्रति.
झत्ति	झटिति	शीघ्र–झट.
ण	न	निषेध.
णइ		अवधारण.

ण		वाक्यालंकार,
ण (शौ०)	ननु	वितर्क.
णमो	नम	नमस्कार.
णवर		केवळ.
णवरि		अनतर.
णवर	नवरम्	विशेष,
णवि		विपरीतता,
णाइ	नैव (?)	निषेध,
णाइ	"	"
णाणा	नाना	जूदुजुदु,
णिच्च	नित्यम्	नित्य,
णूण	नूनम्	नक्की. तर्क,
णूण	"	"
णो	नो	निषेध,
त	तत्	वाक्यारंभ, ते,
तजहा	तद्यथा	जेमके,
तए	तदा	त्यारे, त्यारपछी,
तओ	तत	तेथी
तत्तो	"	"
तदो	"	,
तणेण (अप०)		तादर्थ्यसूचन.
तत्थ	तत्र	त्यां, तेमां.
तेत्तहे (अप०)	,	"
तप्पभिइ	तत्प्रभृति	त्यारथी,
तह } तहा }	तथा	तेम, तेवी रीते.

तेम, तेम्व, तिम, तिम्व, तिह, तिध	(अप०) तथा	तेम, तेवी रीते
तहेव	तवेव	तेम, तेवी रीते
तहि	तत्र	त्यां–तेमां,
तहिं	,,	,,
ताव	तावत्	त्यांसुधी, त्यारथी त्यारभ,
ताउ, ताम, तामहिं	(अप०) तावत्	,,
तिरिय	तिर्यक्	वांकु,
तिरो	तिरः	छूपावु
तीअ	अतीतम्	अतीत
तु	तु	तो.
तेण	तेन	ते तरफ,
तेंथु, तत्तु	(अप०) तत्र	त्यां–तेमां,
'तेहिं	(अप०)	तादर्थ्य सूचन
तो	तु	तो.
तो (अप०)	ततः, तदा	तेथी, त्यारे,
थू	थूत्	तिरस्कार,
दर	दर	अडधु, ओछु,
दिवारत्त	दिवारात्रम्	गत–दिवस,
दिवा, दिआ, दिवा	दिवा	दिवस
दिवे (अप०)	,,	
दुट्ठ	दुष्ट	दुष्ट, खराब,

दुहओ	द्विधा	बन्ने बाजुथी
दुहा	,,	बन्ने रीते, बे भागे.
दे	,,	समुखीकरण, सत्रोधन.
धणिय		बाढ
धुव	ध्रुवम्	ध्रुव, चोकस
ध्रुवु (अप०)	,,	,,
न	न	निषेध
नउ, नाइ, नावइ, न (अप०)	ज्ञायते (?)	गू० नो जाण्ये, इव' अर्थनु सूचन; हि० नाइ.
नत्थि	नास्ति	नथी.
नहि	नहि	निषेध
नाहिं (अप०)	,	,
निच्च	नित्यम	नित्य
नून, नूनं	ननम्	वितर्क
	,,	
नेव	नैव	नहि ज
नो	नो	निषेध
पच्चुअ	प्रत्युत	उल्टु
पच्चलिउ (अप०)	,,	
पगे	प्रगे	प्रात काळे
पच्छा	पश्चात्	पछी
पच्छइ (अप०)	,,	,,

पडिरूव (पं) पतिरूवं (पं) पग्गिरूव (पं)	प्रतिरूपम्	सरखुं.
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
पर	परम्	परतु.
पर (अप०)	,,	,,
परमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख, विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्पर	परम्परम्	परम्पर.
अवरोप्पर अवरुप्पर (अप०)	,,	,,
पसय्ह	प्रसह्य	हठात्.
पाडिक्क	प्रत्येकम्	एकएक.
पाडिएक्क	,,	,,
पातो	प्रात	सवारे.
पायो पाओ	प्राय	प्राय, घणुं करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखु, जेवु.
पि	अपि	पण.
पुण	पुन	फरीने, वळी.

पुणरुत्त	पुनरुक्तम्	,, कृतकरण.
पुणो	पुन.	फरीने, वळी.
पुणु (अप०)	,,	,,
पुणरवि	पुनरपि	फरीपण, वळीपण.
पुरओ	पुरत	आगळ.
पुरत्था	पुरस्तात्	,,
पुरा	पुरा	पहेला, भूतकाळ.
पुहू	पृथक्	जूदु.
पिहू	,,	,,
पेच्च	प्रेत्य	परलोक.
वले	वले	निर्धारण–चूंटी काढवु, निश्चय.
बहिद्धा	बहिर्धा	बहार.
बहिया	बहिर्	,,
बहि	,,	,,
भुज्जो	भूय	फरीने.
भो !	भो	आमत्रण.
मग्गतो	मार्गत.	पाछळ.
मणय	मनाक्	थोडु.
मणाउं (अप०)	,,	,,
मणे	मने	विमर्श.
माइ	माऽति	निषेध.
मामि		सखीनु सबोधन.
मिव	मा+इव	जेवु
मुसा	मृषा	खोटु.

वे	वं	निश्चय,
वेव		आमत्रण.
मे वे	,,	भय, वारण, विषाद, आमंत्रण
सइ	सदा	सदा.
सइ	सकृत्	एकवार
सक्खं	साक्षात्	प्रत्यक्ष
सज्जो	सद्य	शीघ्र
सणियं	शनैं	धीरे
सद्धिं	सार्धम्	साथे
सपक्खं	सपक्षम्	बराबर सामे
सपडिदिसिं	सप्रतिदिग्	,,
समं	समम्	साथे
समाणु (अप०)	समानम्	,,
सम्मं	सम्यक्	ठीक, सारु
सयं	स्वयम्	जाते, पोते
सया	सदा	सदा
सव्वओ	सर्वत	बधे, बधेथी
सव्वत्थ	सर्वत्र	बधे.
सव्वेत्तहे (अप०)	,	,,
सह	सह	साथे
सहु (अप०)	,,	,,
सहसा	सहसा	अविमर्श, शीघ्र, त्वरा.
सायं	सायम्	संध्या, साम
सिय (अ)	स्यात्	कदाच

सिया (आ)	,,	,,
सुवत्थि	स्वस्ति	कल्याण.
सुवे	श्वः	आवती काले.
से		अथ, वाक्यारंभ.
सेव	तदेवं	समाप्ति, स्वीकार.
हञ्जे (शौ०)	,,	दासीनु आमंत्रण.
हंता	हन्त	कोमलामंत्रण-हा.
हंद	हन्त	गृहाण—ले.
हदि	हन्त	खेद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य, गृहाण.
हद्धी	हाधिक्	खेद, निर्वेद.
हरे	हरे	क्षेप, संभाषण, रतिकलह.
हला		एला—सखीनुं संबोधन.
हले	हाऽऽले !	सखी—,,
हव्व	हव्यम्	शीघ्र.
हाहा	हाहा	खेद.
हिर		निश्चय.
हीमाणहे (शौ०)		विस्मय, निर्वेद.
हीही (शौ०)		खीखी (विदूषकनुं हसवु)
हु		निश्चय, वितर्क, विस्मय, संभावना.
हुहुरु (अप०)		'घुरुर' के 'घरर' अवाजनुं अनुकरण.
हु		दान, पृच्छा, निवारण.
हेद्वा	अधः	नीचे.

आ उपरांत ते बीजा सर्वादिशब्दजन्य (यत्ता, कत्ता विगेरे) अव्ययो छे, तेनो उल्लेख तद्धित प्रकरणमां आववानो छे. खरु विचारिए तो—

" इयन्त इति संख्यानं निपातानां न विद्यते "



निपात

आगळ जणाव्या प्रमाणे देश्यप्राकृत ए, प्रस्तुत प्राकृतनु एक अंग छे तेमां जे जे शब्दोनो प्रयोग थएलो छे ते बधा शब्दो 'निपात' ने नामे ओळखाय छे. कारण के, ए शब्दोनी रचना, कोई जातनी व्युत्पत्ति के वर्णविकारनी अपेक्षा राखती नथी. किंतु ए, लौकिक संकेत अने उच्चारण उपर निर्भर छे अहीं एवा—देश्यप्राकृतमां वपराता केटलाक—निपातो आपीए छीए:

		अर्थ—
अगया	अमुरा	
अन्न (च्छ) क	अकाण्डम्	अकाले
अल्ल		दिन,
*आऊ	आप	पाणी
*आसीसा	आशी	आशिष
*उज्जल्लो	उज्ज्वल–बली	बलवान्
कोड्ड	कुतूहलम्	कोड
*कत्थइ	क्वचित्	
*कन्दुट्ट	कन्दोत्थम्	उत्पल
*कुतु	कुतुदम्	मुख
करसी	श्मशानम्	
*खुड्डुओ	क्षुल्लक	
*गेडु	गेन्दम्	दडो

*गोणो	गौ	
*गावी	"	
*घायणो	गायन	
चचिक	म्यासक	कुभारनुं एक जातनु उपकरण
ठिठि	किभिर्	
।उदृ	पुष्करी	तिनाव
*जम्मण	जन्म	
झसुर	ताम्बूलम्	
णामुकसिअ	कार्यम्	
णेलच्छो	पण्डक	नपुंसक, हीजडो
*तेआलीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेंतालीश
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	ते (त्रे) पन
तिगिच्छि	पौष्प रजः	पुष्पनी रज
*ढिंढि	रिढ्रिक	
*धिरत्थु	धिगस्तु	
*निहेलण	निलयनम्	घर.
पक्लो	पक्कल	समर्थ
*पञ्चावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पचावन.
*पणपन्ना	"	"
पल्हि	कर्पास	कपास
*पडिसिद्धी / पाडिसिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोर	
*बइल्लो	बलीवर्द	बळद
*भट्टिओ	भर्तृकः	विष्णु

*आ निशानीवाळा शब्दो सम्कृत शब्दो साथे समानता धरावे छे

भवतो	भवान्	तमे
बहिद्धा	बहिर्धा	मैथुन, बहि
मघोणो	मघवा	इन्द्र
महन्तो	महान्	
मुव्वहइ	उद्वहति	
लज्जालुइणी	लज्जावती	लाजवतीनो छोड.
विउसग्गो	व्युत्सर्ग	त्याग
वोसिरण	व्युत्सर्जनम्	,,
वम्हलो	अपस्मार	रोगविशेष–वाई
वड्डयर	बृहत्तरम्	वडेरु
वढो	वट	
सक्खिणो	साक्षी	
साहुली	शाखा	

अपभ्रंशमा आवता केटलाक निपातो—

देश्य शब्दो

अप्पण	आत्मीय	आपणु.
घोड्ड	कौतुक	कोड.
खेड्ड	क्रीडा	खेल, रमत
जाइट्ठिआ	यद्दृष्टिका	जे जे जोयु.
झकट		
ढकरि	अद्भुत	
दडवड	अवस्कन्द	दडवडवु
द्रवक्क	भय	
द्रेहि	दृष्टि	

नवख	नवक	नोखु, नवु, हि० अनोखा.
नालिअ	मूढ	
निच्चट्ट	(नित्यस्थ–निच्चट्ठ) गाढ.	
मब्भीस	मा भैषी	मा बीश–भय न पाम.
रवण्ण	रमण	रम्य.
वट	(वट ?)	मूढ
विट्टाल[1]		वटाळ, वटलावु.
सड्ढल		असाधारण.
हेल्लि	(हे आलि!)	हे सखी.

आ उपरांत बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छे. ते माटेनी विशेष माहिती, हेमचन्द्रकृत 'देशीनाममाला' ने जोवाथी मळी शके तेम छे आवा केटलाक शब्दो 'षड्भाषाचन्द्रिका' मां पण नोंधाएला छे.



१ आ शब्दनो विशेष संबंध सं० 'विपरिवर्त' के 'परिवर्त' साथे होई शके. [illegible] [illegible] अने [illegible] ए त्रणेनी उत्पत्ति एक सरखी लागे छे.

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामा नामोना बे विभाग छे. जेमके–स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम. पण प्राकृतभाषामा तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोइ रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामा प्रयोजातुं ज नथी, एथी प्राकृतमा बधा नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे.

अकारांत, आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत. [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थता होवाथी एने उपरनी गणत्रीमा जूदा गण्या नथी.]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार.

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी; कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमा वपराता नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमा नरजातिना गणाय छे.
२ तरणि, प्रावृष् अने शरद् ए त्रण नामो प्राकृतमा नरजातिमां रहे छे.

३ नेत्रवाचक शब्दो तेनी खास जाति उपरात नरजातिमां पण वपराय छे.

४ वचन, विद्युत्, कुल, उन्दस् माहात्म्य, दुःख अने भाजन वगेरे शब्दो पोत पोतानी खास जाति उपरात नरजातिमा पण रहे छे.

५ गुण. देव, बिंदु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह अने वृक्ष वगेरे शब्दो पोतानी जाति उपरात नान्यतरजातिमा पण वपराय छे.

६ गरिमन्, महिमन् वगेरे ' इमन् ' छेडावाळा नामोने अने पीणिमा (पीनत्व), पुप्फिमा (पुष्पत्व) वगेरे ' इमा ' छेडावाळा नामोने तेओनी खास जाति उपरात नारीजातिमा पण समजवाना छे.

७ अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि अने ग्रन्थि वगेरे नामो पोत पोतानी जाति उपरात नारीजातिमा पण वपराय छे.

वचन—विभक्तिओ

१ गूजरातीनी पेठे प्राकृतमा द्विवचननो प्रयोग ज नथी, तेने बदले सर्वत्र बहुवचनथी काम चलावाय छे अने ' द्वित्व ' अर्थनी विशेष स्पष्टता माटे बहुवचनात नामनी साथे तेना विशेषणरूपे विभक्त्यन्त ' द्वि ' शब्दनो व्यवहार थाय छे.

२ चतुर्थी अने षष्ठी ए बन्ने विभक्तिना प्रत्ययो एक सरखा होवाथी चतुर्थी विभक्ति, षष्ठी विभक्तिमा समाई जाय छे तो पण कोइ स्थळे अर्थविशेषमा नाममात्रनुं चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवु पण थतुं होवाथी ए बन्ने विभक्तिओने जूदी जूदी गणावेली छे एथी विभक्तिओनी सख्यामा प्राकृत अने संस्कृतनी समानता छे.

प्रत्ययो

नीचे जणावेला प्रत्ययो नरजातिना अने नान्यतरजातिना दरेक अकारांत नामोथी योजी शकाय छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
पढमा	०	०.
बीआ	म्	०
तइआ	ण	हि, हिं, हिँ
चउत्थी / छट्ठी	स्स, ०	ण
पंचमी	त्तो. ओ, उ, हि, हिंतो, ०	त्तो, ओ, उ हि, हिंतो, सुंतो.
सत्तमी	सि, म्मि, ०	सु
संबोहण (संबोधन)	०	०

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा प्रत्ययोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

शौरसेनी

पंचमी	दो, दु.

मागधी

पढमा	०
चउत्थी / छट्ठी	ह

थशाची

पचमी	तो, तु

अपभ्रश

पढमा	उ, ०	०
बीआ	उ, ०	०
तइआ	ण, म	हिं
चउत्थी } छट्ठी }	सु, स्सु, हो, ०	ह, ०
पचमी	हु हे	हु
सत्तमी	०	हिं
सबोहण	उ, ०	हो,०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

ज्या ज्या प्राकृत प्रत्ययोमा ० छे त्या आ प्रमाणे समजवानु छे

पढमा—पुलिंगी प्रत्येक अकारात नामनु प्रथमानु एकवचन ओकारात थाय छे, अने बहुवचन आकारात थाय छे

बीआ—पुलिंगी अकारात नामनु द्वितीयानु बहुवचन आकारात अने एकारात थाय छे.

चउत्थी—मात्र तादर्थ्यने सूचववा माटे अकारात नामनु चोथीनु एकवचन सस्कृतनी जेवु पण थाय छे मात्र एक 'वध' शब्दथी तादर्थ्य अर्थमा सस्कृतना 'आय' प्रत्ययनी जेवो वधारानो 'आइ' प्रत्यय पण लागे छे. आर्षप्राकृतमा तो केटलेक स्थळे आ 'आइ' प्रत्ययने बदले 'आए' प्रत्यय पण वपराय छे अने ते हरकोइ शब्दने लागी शके छे.

पचमी—अकारात नामनु पचमीनु एकवचन आकारात पण थाय छे.

सप्तमी—अकारात नामनु सप्तमीनुं एकवचन एकारात पण थाय छे.

सबोहण—पुलिंगी अकारात नामनु सबोधननु एकवचन आकारात अने ओकारात थाय छे तथा सबोधनना विभक्ति विनानुं ए अकारात नाम पण वपराय छे अने सबोधनना बहुवचनना रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवा थाय छे.

प्रत्ययो लागता नामना मूळ अगमा थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे

पंचमी—पचमीना एकवचननी पूर्वना अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेता पण अत्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे.

पचमीना बहुवचनना ' स ' अने ' ह ' थी शरू थता प्रत्ययो पर रहेता अकारात नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' अने ' ए ' थाय छे.

तइया, छट्ठी, सत्तमी — तृतीयाना एकवचनना ' ण ' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता पूर्वना नामनो कोइ पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो ' सि ' प्रत्यय लागता मूळ अगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे आ ' सि ' प्रत्ययवाळु रूप विशेषे करीने [1]आर्षप्राकृतमा वपराय छे

---

१ " एयासता सव्वावती लोगसि "—आ० प्र० श्रु० प्र० अ० उ० १ " लोगास परमदसी " आ० प्र० श्रु० तृ० अ० उ० २,

सप्तमीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेता अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे

शौरसेनी—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—प्राकृतमा पंचमीना एकवचनना प्रत्ययो लगता मूळ अगनो जे फेरफार जणाव्यो छे ते शौरसेनीमा पण लागु थाय छे बाकी बधा शौरसेनीना रूपाख्यानो प्राकृतनी प्रमाणे छे.

मागधी—प्रत्ययने लगता नियमो

प्रथमा—ज्या शून्य छे त्या मागधीमा पुलिंगी अकारांत नामनु प्रथमानु अने सबोधननु एकवचन 'एकारांत' थाय छे मागधीनु आ एकारांत रूप आर्षप्राकृतमा पण वपराएलु छे अने आ एक ज रूपनी वपराशने लीधे ए आर्षप्राकृतने पण ' अर्धमागधी ' तरीके जणाववामा आवेलु छे [1]

चउत्थी } छट्ठी मागधीमा चोथी अने छट्ठी विभक्तिमा अकारांत के आकारांत नामथी एकवचनमा ' ह ' अने बहुवचनमा ' हँ ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे अने ते बन्ने प्रत्ययो लागता पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे बाकीना बधा मागधी रूपो शौरसेनी प्रमाणे समजी लेवाना छे उपर जणावेलो बहुवचननो ' हँ ' प्रत्यय प्राकृतमा पण वापरी शकाय छे

पैशाची—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—शौरसेनीमा पंचमीना एकवचनमा जे फेरफार जणाव्यो छे ते पैशाचीमा पण समजवानो छे बाकी बधा पैशाचीना

× × × × ×

रूपाख्यानो शौरसेनी प्रमाणे समजवाना छे

---

१ जुओ हे० प्रा० व्या० अ० ८, पा० ४, सू० २८७

अपभ्रंश—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा } ज्यां शून्य छे त्या अपभ्रंशमां प्रथमा अने द्वितीया
बीआ } विभक्तिमां (एकवचन अने बहुवचनमां) अकारांत नाम आकारांत थइने वपराय छे अने एमने एम पण वपराय छे. तथा प्रथमाना एकवचनमा पुंलिंगी अकारांत नाम प्राकृतनी पेठे ओकारांत थइने पण वपराय छे.

चउत्थी } ज्या शून्य छे त्या मूळ अंग जेमनु तेम वपराय
छट्ठी } छे अने दीर्घांत थइने पण वपराय छे.

सत्तमी—ज्या शून्य छे त्या मूळ अग इकारांत अने एकारांत थइने वपराय छे.

संबोहण—ज्या शून्य छे त्या संबोधनना बधा रूपाख्यानो प्रथमा विभक्ति जेवा समजवाना छे.

अपभ्रंश-प्रत्यय लागतां अंगमा थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्राकृत प्रत्ययो लागता मूळ अंगमा के प्रत्ययोमा जे फेरफार थाय छे ते ज फेरफार अपभ्रंशना ए प्रत्ययों लागता पण समजवानो छे अने ए उपरांत तृतीयाना बहुवचननो प्रत्यय लागता मूळ अंग आकारांत थाय छे अने एमनु एम पण वपराय छे.

चउत्थी } चोथी, पांचमी अने छट्ठी विभक्तिना एकवचनना
पंचमी } अने बहुवचनना प्रत्ययो लागता मूळ अंगना अन्त्यस्वरनो
छट्ठी } दीर्घ विकल्पे थाय छे तथा सातमीना बहुवचननो ज
सत्तमी } प्रत्यय लागता पण मूळ अंगमा पूर्वोक्त फेरफार थाय छे.

संबोहण—अपभ्रंशनु (एकवचन अने बहुवचननुं) संबोधनी रूप प्रथमानी पेठे समजवानुं छे अने बहुवचननो ' हो ' प्रत्यय लागता मूळ अंगना अन्त्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे.



પુંલિંગ અને નપુંસકલિંગ

અકારાંત શબ્દનાં પ્રાકૃત રૂપાખ્યાનો (પુંલિંગ–નરજાતિ).

વીર[1]

	એકવ૦	બહુવ૦
પ૦	વીરો, (વીરે)[2]	વીરા.
બી૦	વીર	વીરે, વીરા.
ત૦	વીરેણ, વીરેણં	વીરેહિ, વીરેહિં, વીરેહિँ.
ચ૦ છ૦	વીરસ્સ	વીરાણ, વીરાણં, (વીરાઈં.)
તા૦ ચ૦	વીરાય, વીરસ્સ	,, ,,

---

૧ [1] વીર નાં પાલિરૂપો

૧	વીરો	વીરા (વીરસે).
૨	વીરં	વીરે.
૩	વીરેન	વીરેહિ, વીરેભિ
૪	વીરાય, વીરસ્સ	વીરાનં.
૫	વીરા, વીરસ્મા, વીરમ્હા	વીરેહિ, વીરેભિ.
૬	વીરસ્સ	વીરાનં.
૭	વીરે, વીરસ્મિં, વીરમ્હિ	વીરેસુ.
૮ સં૦	વીર, વીરા	વીરા.

નોંધ: પાલ્ય૦ આમ કરવા અકારાંત 'બુદ્ધ' શબ્દ જેવા રૂપો ઉતરવા ટિપ્પણો.

૨ ( ) આ નિશાનમાં આપેલા રૂપો પ્રાકૃત છે.

૩ વીર+ સ – વીરો (જુઓ પ્રકરણ ૮, ... – અનુસાર ૧૨)

पं०	वीरत्तो,	वीरत्तो,
	वीराओ, वीराउ,	वीराओ, वीराउ,
	वीराहि,	वीराहि, वीरेहि,
	वीराहिंतो,	वीराहिंतो, वीरेहिंतो,
	वीरा	वीरासुंतो, वीरेसुंतो
स०	वीरसि, वीरम्मि,[1]	वीरेसु, वीरेसुं
	वीरे	
संबो०	वीरो, (वीरे)	वीरा.
	वीर, वीरा	

'वह' (वध) शब्दना रूपो 'वीर' शब्दनी जेवा ज समजी लेवा जे विशेष छे ते आ प्रमाणे

ता० च० वहाय, वहाइ, वहस्स (एकवचन)

आर्षप्राकृतमा जे शब्दने ता० चतुर्थीनो सूचक 'आए' प्रत्यय लागेलो छे तेनु रूप आ प्रमाणे छे:

ता० च० मोक्ख—मोक्खाए,[3] मोक्खाय, मोक्खस्स (एकवचन)
" हिअय—हिअयाए[4] हिअयाय, हिअयस्स "

---

१ जूओ प्रकरण २, दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर-९

२ जूओ प्रकरण ८, म=अनुस्वार १० (नि १५)

३ जूओ सूत्रकृतागसूत्र प्र० श्रु० अ० ४० उ० गा० ०९— "उवसग्गो नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वए ज्जा" इत्यादि

४ जूओ आचारागसूत्र प्र० श्रु० प्र० अ० उ० —"स नमि अपेगे अच्चिणाए वहति, मसाए साणियाए ॥ हिययाए" इत्यादि

ता० च० मस—मसाए मसाय, मसम्स (एकवचन)
,, अजिण—अजिणाए, आजिणाय, अजिणस्स ,,

ए प्रमाणे अरिहत (अर्हत्), धम्म (धर्म), गधव्व (गन्धर्व), मणुस्स (मनुष्य), पिसाअ (पिशाच), नायपुत्त (ज्ञातपुत्र), सुगत, गोण, गउअ, गाअ (गो), भिसअ (भिषक), सरअ (शरत्), सय, नर, सुर, असुर, उरग (-य), नाग (-य), जक्ख (यक्ष), किंनर वगेरे बधा अकारात पुलिंग शब्दोना रूपो समजी लेवा.

वीर (शौरसेनीरूपो[1])

प० ए० वीरादो, वीरादु

बाकी बधा प्राकृत प्रमाणे.

वील[2] (वीर) (मागधीरूपो)

प० ए० वीले

उ० वीलाह वीलम्स वीलाह, वीलाण, वीलाण

बाकी बधा शौरसेनी प्रमाणे

वीर (पैशाचीरूपो[3])

प० ए० वीरातो, वीरातु

बाकी बधा शौरसेनी प्रमाणे.

---

१ शौरसेनी, मागधी वगेरेना जे रूपो प्राकृतथी जूदा थाय छे ते ज अहीं जणावेल छ

२ जूओ पृ० २८ र-ल

३ पैशाचीमां ण प्रत्ययना उपयो। कर । वगले (पृ० २३) 'ण न' नियमने जूओ ३ वीर+ण-वीरन

४ वीर+ण वीरन

वीर (अपभ्रंशरूपो)

	एकव०	बहुव०
१	वीरु, वीरो, वीर, वीरा	वीर, वीरा
२	वीरु, वीर, वीरा,	वीर, वीरा.
३	वीरेण, वीरेण, वीरें.	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
४–६	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु वीराहो, वीरहो वीर, वीरा	वीराह, वीरह, वीर, वीरा
५	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहु, वीरहु
७	वीरि वीरे	वीराहिं, वीरहिं
८ (सं०)	वीरु ! वीरो ! वीर ! वीरा !	वीराहो ! वीरहो ! वीर ! वीरा !

'वीर' शब्दना उपर जणावेला बधी जातना रूपो प्रमाणे प्रत्येक पुलिंगी अकारांत शब्दना शौरसेनी रूपो, मागधीरूपो, पैशाची रूपो अने अपभ्रंश रूपो समजी लेवाना छे



अकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नपुंसकलिंग-नान्यतरजाति)

अकारांत नपुंसक नामोना बधी जातना रूपाख्यानो बनाववाना सघळी प्रक्रिया उपर प्रमाणे छे जे काइ खास भेद छे ते आ प्रमाणे छे

१ वीर+उ=वीरु–जूओ स्वरलोप–८ पृ० ९८

प्रत्ययो

प०	म्	णि, इँ, इ.
बी०	"	" " "
स०	०	" " "

१ अकारांत नान्यतरजातिना नामने लागता उपर जणावेला बधा प्रत्ययो कोई पण नान्यतरजातिना नामने लगाडवाना छे

२ शौरसेनी[1], मागधी अने पैशाचीमा पण ए ज प्रत्ययोनो उपयोग थाय छे

३ 'णि, इँ, इ' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगनो अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे.

४ संबोधनमा—ज्यां शून्य छे त्यां—एकवचनमां नान्यतर नामोनुं मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवुं थाय छे.

कुल[2]

	एकव०	बहुव०
प०	कुलं[3]	कुलाणि, कुलाइँ, कुलाइ.
बी०	"	" " "
स०	कुल !	" " "

१ शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना रूपाख्यानो करती वखते ते ते भाषाना स्वरविकार अने व्यंजनविकारना नियमो तरफ लक्ष्य राखवुं जोईए.

२ नपुंसकलिंगी अकारांतना पालिरूपो

कुल

प०	कुलं	कुला, कुलानि
बी०	कुलं	कुले, कुलानि

शेष 'वीर' ना पालिरूपोना जेवां—जुओ पालिप्र० पृ० ११२, क्लीबलिंग 'चित्त' शब्द

३ कुल+म्=कुलं—जुओ म=अनुस्वार — ७० पृ० ०३.

बाकी बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवा थाय छे.

ए रीते गुण, देव, सोमव (सोमपा), गोव (गोपा), कररुह, [1]सिर (शिरस्), नभ, नह (नभस्), दाम (दामन्), सेय (श्रेयस्), वय (वचस्–वयस्), सुमण (सुमनस्), सम्म (शर्मन्), चम्म (चर्मन्) वगेरे शब्दोना रूपो जाणी लेवाना छे

अपभ्रंश

नान्यतरजातिना रूपाख्यानोमां अपभ्रंशमां जे खास विशेषता छे ते आ प्रमाणे

१ प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां प्राकृतनी पठे त्रण प्रत्ययो न लागता मात्र एक 'इ' प्रत्यय लागे छे अने एनी पूर्वनो स्वर विकल्पे दीर्घ थाय छे

२ जे नान्यतर शब्दने छेडे 'क' प्रत्यय लागेलो होय तेने प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमां 'उ' प्रत्यय लागे छे.

---

१ जे शब्दो 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा छे ते प्राकृतमां नरजातिना गणाय छे (पृ० १२३–नामनी जातिओ) पण पालिमां एवा 'अस्' छेडावाळा शब्दोने (मनोगणने) नरजातिना अने नान्यतरजातिना गणवामां आव्या छे पालिप्र० पृ० १३३–१३४ अने तेनु टिप्पण

प्राकृतमां अने पालिमां ए 'अस्' अने 'अन्' छेडावाळा शब्दोना बधा रूपो 'वीर' अने 'कुल'नी जेवा थाय छे तो पण आर्षप्राकृतमां अने पालिमां ए शब्दोना केटलाक रूपो 'वीर' अने 'कुल' थी जुदा थाय छे जेमके

मण, मन (मनस्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० ए० मनसा	तृ० ए० मणसा	(मनसा)
	प० ए० मणसो	(मनस)

रूपाख्यानो

कुल

१	'कुलु, कुलं, कुला	कुलाइं, कुलइं.
२	" " "	" "

च० छ० ए० मनसो	च० छ० ए० मनसो	(मनसः)
स० ए० मनसि	स० ए० मणसि	(मनसि)

कम्म (कर्मन्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० ए० कम्मना, कम्मुना	तृ० ए० कम्मणा, कम्मुणा	(कर्मणा)
च० छ० ए० कम्मुनो	च० छ० ए० कम्मुणो	(कर्मणः)
पं० ए० कम्मना, कम्मुना	प० ए० कम्मणा, कम्मुणो	(कर्मणः)
स० ए० कम्मनि	स० ए० कम्मणि	(कर्मणि)

उदाहरण–" सिरसा, मणसा मत्थएण वंदामि "–मुनिवदनसूत्र.

" मणसि काउ गुलियं खाइ " प्राकृतकथासंग्रह–उदायननी कथा पृ० १२, पं० २२.

" कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ "–

उत्तराध्ययन अ० २५, गा० ३३.

आ आर्ष रूपोनी सिद्धिने माटे आ० हेमचंद्रे " शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् " (८–४–४४८) ए सूत्रने रचेलु छे.

'स्थामन्' वगेरे शब्दना पालिरूपोनी विशेषता माटे जूओ पालि० प्र० पृ० १३५, अ० ११–१२.

आर्षप्राकृतमा पण केटलेक स्थळे ' स्थामन् ' वगेरे शब्दना रूपो ए पालिरूपोनी जेवा वपरायेला छे.

* जूओ अध्याय–अध्ययन तथा जिज्ञासु–पद्मावती ना–पृ० १२९.

कुलअ (कुलक)

१	[1]कुलउ	कुलआइं, कुलअइ.
२	,,	,, ,,

बाकी बधां रूपो 'वीर' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे समजी लेवाना छे.

अकारांत-सर्वादि-शब्द

नीचेना शब्दोने 'सर्वादि' तरीके गणवामा आवे छे: सव्व-अप० साहु, सव्व (सर्व), वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, [2]उवह, उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्ण (न्न) यर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, [3]पुरिम, पुव्व (पूर्व) अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दाक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स,सुव (स्व), अंतर, [4]तं (तद्), ज (यद्) [5]अमु (अदस्), इम (इदम्), एत

---

१ कुलअ + उ = कुलउ-जूओ स्वरलोप-६ पृ० ९६.

२ 'उवह' रूप आ० हेमचंद्रने संमत नथी-हे० प्रा० व्या० ८-२-१३८ पृ० ६५. आर्षप्राकृतमा 'उभयोकाल' प्रयोगमा 'उभय' ने बदले 'उभयो' के 'उभओ' ("उभओकाल पि अजिअसंतिथय"–अजितशांतिस्तवन गा० ३९) रूप पण वपराएलु छे.

३ जूओ पृ० ८७ शब्द-सर्वथा विकार.

४ जेम संस्कृतमा 'तद्' नी जेवु 'त्यद्' पण एक सर्वनाम छे तेम ए सर्वनाम पालिमा पण छे, एना रूपो 'त' नी जेवा थाय छे

स्यो त्ये

त्य त्ये पालिप्र० पृ० १८३ नु छेल्लु टिप्पण. प्राकृतमा तो आ 'त्य' सर्वनाम मळतु नथी

५ आ शब्दना रूपो उकारांत शब्दोना प्रसंग आववाना छे.

(एतद्), इक, एक, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्)कि, अप० काइं, कवण (किम्), भैवन्त (भवत्).

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे.

२ 'अमु' अने 'दु' शब्द सिवायए बधा सर्वादि शब्दो अकारांत छे, तेथी तेना बधी जातना बधा रूपाख्यानो पुंलिंगमा 'वीर' अने नपुंसकमा 'कुल' नी जेवा समजवाना छे. ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छेः

३ प्रथमाना बहुवचनमा सर्वादि शब्दोना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमा वपराय छे.

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमा 'एसिं' प्रत्यय विकल्पे लागे छे.

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमा 'त्थ' 'स्सिं' 'हिं' अने 'म्मि' प्रत्यय लागे छे.

रूपाख्यानो (नरजाति)

³सव्व (प्राकृत)

एकव०	बहुव०
प०—सव्वो (सव्वे)	सव्वे.
बी०—सव्वं	सव्वे, सव्वा.

१ संख्यावाचक शब्दोना प्रकरणमा 'उभ' अने 'दु' शब्दना रूपो आवशे.

२ जुओ पृ० १२१ भवतो।

३ 'सव्व' शब्दना पालि रूपो माटे जुओ पृ० १३० उपरनुं पेटु टिप्पण. खास भेद आ छे

प० तथा सं० बहुव० सव्वे.

छ० ,, सव्वेस, सव्वेसान.

तथा पंचमीना एकवचनमा 'वीरा' नी पेठे 'सव्वा' अने सप्तमीना एकवचनमा 'वीरे' नी पेठे 'सव्वे' रूप थता नथी.

त०—सव्वेण, सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहि, सव्वेहिँ
च० ऊ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाण, (सव्वाहँ)
प०—सव्वत्तो,	सव्वत्तो,
सव्वाउ, सव्वाओ,	सव्वाउ, सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि, सव्वेहि,
सव्वाहिंतो,	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
स०—सव्वत्थ, सव्वसिंस, सव्वहिं, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं.

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमां 'सव्व' शब्दना बधा रूपो 'सव्व' ना प्राकृत रूपो जेवा छे पचमीना एकवचनमा विशेषता छे ते 'वीर'[1] ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी.

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमा अने छट्ठी विभक्तिमा 'शव्व' ना मागधी रूपो 'वीर'[2] ना मागधी रूपो जेवा जाणवा अने बाकी बधा 'सव्व' ना शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवा.

---

१ जुओ पृ० १२२. २ जुओ पृ० १३२

सव्व (पैशाची)

पंचमीनुं एकवचन ' [1]वीर ' ना पैशाचीरूप प्रमाणे अने बाकी बधा ' सव्व ' ना शौरसेनी रूपो प्रमाणे.

सव्व, [2]साह (अपभ्रंश)

	एकव०	बहुव०
१	सव्वु, सव्वो, सव्व, सव्वा	सव्वे, सव्व, सव्वा
२	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा.
३	सव्वेण, सव्वेण, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं, सव्वहिं.
४–६	सव्वस्सु, सव्वासु, सव्वसु, सव्वहो, सव्वाहो, सव्व, सव्वा	सव्वेसिं, सव्वह, सव्वाह, सव्व, सव्वा.
५	सव्वहा, सव्वाहा	सव्वहु, सव्वाहु.
७	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं.

बाकी बीजा बधा सर्वादिओना रूपो पण ए 'सव्व' (प्राकृत, शौरसेनी) शव्व (मागधी) अने सव्व (अपभ्रंश) नी पेठे करी लेवानां छे. तो पण केटलाक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सर्वादिना रूपो नीचे प्रमाणे आपीए छीए

---

१ जूओ पृ० १३७.

२ अपभ्रंशमां 'सव्व' ने स्थाने 'साह' शब्द पण वपराय छे अने एना बधां रूपो 'सव्व' ना रूपोनी पेठे थाय छे.

त, णं (तत्)

१	स, सो (मा० शे)	ते, णे
२	त, ण	ते, ता, णे, णा
३	तेण तेणं, तिणा णेण, णेणं (पै० नेन)	तेहि, तेहिं, तेहिँ णेहि, णेहिं, णेहिँ
४–६	तस्स, तास (मा० ताह) णस्स से	तेंस, तेसिं, ताण, ताणं, णेसिं, णाण, णाणं, सिं (मा० ताह)
५	तो, तम्हा, तत्तो ताओ, ताउ ताहि, ताहिंतो ता (शौ० मा० तादो, तादु) (पै० तातो, तातु)	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि तेहि, ताहिंतो, तेहिंतो तासुंतो तेसुंतो

---

१ केटलाक प्रयागाने अनुसारे त न बदले ण पण वपराय छे हे० प्रा० व्या० ८–३–७०–पृ० ९८

त ना पालिरूपो माटे जुओ पाल्प्र० पृ० १४१–१४२ त (तद्) शब्द

प०	सो	त
ना०	त, न	ते, ने
त०	तेन नन	तेह, तभि, नाह, नाभ इत्यादि

२ ' तास ' ने बदले ' से ' रूप पण कोइ वैयाकरण वापरे छे हे० प्रा० व्या० ८–३–८१–पृ० ९७

णत्तो,	णत्तो,
णाओ, णाउ,	णाओ, णाउ,
णाहि,	णाहि, णेहि,
णाहिंतो,	णाहिंतो, णेहिंतो,
णा	णासुंतो, णेसुंतो.
७ तहि, ताला, तइआ	तेसु, तेसुं,
तम्मि, तस्सिं, तहिं, तत्थ,	
णम्मि, णस्सिं, णहिं, णत्थ	णेसु, णेसुं.

'त' शब्दना प्राकृतरूपो साथे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेष रूपो जणावेला छे.

'सव्व' ना अपभ्रंशरूपोनी पेठे 'त' शब्दना अपभ्रंशरूपो पण समजी लेवा. जे फेर छे ते आ प्रमाणेः

प० ए०	सु, सो, स, सा, त्रं.[२]
बी० ए०	सु, स, सा, त्रं.

जं (यत्)

प०	जो (मा० जे)	जे.
बी०	जं	जा, जे.
त०	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ.
च० छ०	जस्स, जास (मा० जाह)	जेसिं, जाण, जाणं, (मा० जाहँ).

१ आ त्रणे रूपो 'तदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ आ 'त्रं' रूप त्रणे लिंगमां काम आवे छे.

३ 'ज' ना पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १४१ य (यद्) शब्द.

प०	जम्हा, जत्तो,	जत्तो,
	जाओ जाउ	जाओ, जाउ,
	जाहि, जाहिंतो, जा	जाहि, जेहि,
	(शो० मा० जादो, जादु)	जाहितो, जेहितो,
	(पै० जातो, जातु)	जासुतो, जेसुतो.
म०	जम्मि, जस्सि, जहिं, जत्थ	
	जाहे जाला, जइआ,	जेसु, जेसु.[1]



'ज' ना अपभ्रंशरूपो 'सव्व' ना अपभ्रंशरूपोनी पेठे करी लेवा. विशेषता आ प्रमाणे.

प० ए०–जु, जो, ज, जा, ध्रुं[2]

बी० ए०–,, ,, ,, ,,



[3](क) किम्

प०–को (मा० के)	के.
बी०–कं	के, का.
त०–केण, केग, किणा	केहि, केहिं, केहिँ.
च० छ०–कस्स, कास	कास, केसिं, काण, काणं.
(मा० काह)	(मा० काहँ)

१ आ त्रणे रूपो 'यदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ आ रूप त्रणे लिंगमां सरखुं छे.

३ जेवां 'सव्व' ना पालिरूपो छे तेवां 'क' ना पण छे. विशेषता एटली छे के, च० छ० ए० किस्स. स० ए० किस्मिं, किम्हि–आ रूपो वधारानां थाय छे–पाल्प्र० पृ० १४९

पं०–कम्हा, किणो, कीस, कत्तो,	कत्तो,
काओ, काउ,	काओ, काउ,
काहि, काहिंतो, का	काहि, केहि,
(शौ० मा० कादो, कादु)	काहिंतो, केहिंतो,
(पै० कातो, कातु)	कासुंतो, केसुंतो.
स० कम्मि, कस्सिं, कहिं, कत्थ	
[1]काहे, काला, कइआ	केसु, केसुं.

क, कवण, काइं (किम्) अपभ्रंश

अपभ्रंश रूपाख्यानने प्रसंगे 'क' ने स्थाने 'कवण' अने [2]'काइ' शब्द पण वपराय छे.

'क' ना अपभ्रंशरूपो अने 'सव्व' ना अपभ्रंशरूपो बन्ने सरखा छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे

प० ए० कु, को, क, का
कवणु, कवणो, कवण, कवणा

बी० ए० कु, क, का
कवणु, कवण, कवणा

प० ए० किहे कहा, काहा
कवणिहे, कवणहा, कवणाहा

---

१. आ त्रण रूपो 'कदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ 'काइ' (काइ) ना रूपाख्यानो इकारांत नामना अपभ्रंश रूपोनी जेम जाणवाना छे.

इम[1] (इदम्)

प०	अयं, इमो (मा० इमे)	इमे
बी०	इम, इणं, ण	इमे, इमा, णे, णा.
त०	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं (पै० नेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ. (एहि, एहिं, एहिँ) णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च० छ०	इमस्स, अस्स, से (मा० इमाह)	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं. (मा० इमाहँ)
प०	इमत्तो, इमाउ, इमाओ इमाहि, इमाहिंतो इमा (शौ० मा० इमादो, इमादु) (पै० इमातो, इमातु)	इमत्तो, इमाउ, इमाओ, इमाहि, इमेहि, इमाहिंतो, इमेहिंतो इमासुंतो, इमेसुंतो.
स०	इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं, (एसु, एसुं).

---

१ 'इम'ना पालिरूपो 'सव्व'ना पालिरूपो जेवा छे. 'सव्व'ना रूपो करता जे विशेष छे ते आ छे

प०	अय	
त०	अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि.
च० छ०	अस्स, इमस्स	एस, एसान, इमेस, इमेसान,
प०	अस्मा, अम्हा इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि.
स०	अस्मिं, अम्हि इमस्मि, इमम्हि	एसु, इमेसु

—पालिप्र० पृ० १४४-१४५ इम (इदम्) शब्द

आय (इदम्) अपभ्रंश

'सव्व' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'आय' ना अपभ्रंश रूपो समजी लेवा.

प०—आयु, आयो　　आये, आय, आया
　　आय, आया

बी०—आयु, आय, आया　　आय, आया.
　　आयेण, आयेण,　　आयेहिं, आयहिं, आयाहिं
　　आयें　　　　　　　वगेरे.

एअ[1] (एतद्)

प०—एस, एसो,　　एए (शौ० मा० एदे)
　　इण, इणमो
　　(मा० एशे, एश[2])　(पै० एते)

बी०—एअ　　एए, एआ
　　(शौ० मा० एद)　(शौ० मा० एदे, एदा)
　　(पै० एत)　　(पै० एते, एता)

त०—एएण, एएण, एइणा　　एएहि, एएहिं, एएहिँ

---

१ आ 'एअ' शब्दने शौरसेनी अने मागधीमा रूपाख्यानने प्रसगे 'एद' शब्द समजवाना छे अने पैशाचीमा 'एत' शब्द समजवानो छे

'एत' ना पालिरूपो 'सब्ब' ना पालिरूपोनी जेवा छे

प० एसो　　एते

बी० एत　　एते वगेरे

जेम सस्कृतमा अन्वादेशने सूचववा 'एत' ने बदले 'एन' रूप वपराय छे तेम पालिमा पण छे—जूओ पालिप्र० पृ० १४४ एत (एतद्) शब्द अने ए उपरनु टिप्पण

२ एस—एश—जूओ स—श पृ० २७

(शौ० मा० एदेण, एदेण, एदिणा) (शौ० मा० एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ)

(पै० एतेन, एतिना) (पै० एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ)

च० छ०–से, एअस्स सिं, एएसिं, एआण, एआण.

(शौ० एदस्स) (शौ० एदेसिं, एदाण, एदाण)

(मा० शे, एदाह) (मा० शिं, एदाहँ, एदाण, एदाण)

(पै० एतस्स) (पै० एतेसिं, एतान)

प०–एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो एअत्तो,

एआउ, एआओ, एआउ, एआओ,

एआहि, एआहिंतो, एआ एआहि, एएहि,

(शौ० मा० एदादु, एदादो) एआहिंतो, एएहिंतो,

(पै० एतातु, एताती) एआसुंतो, एएसुंतो.

स०–एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एएसु, एएसु

एअम्मि, एअस्सिं

एद, एअ (एतत्) अपभ्रंश

। सव्व 'ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'एद' के 'एअ' ना अपभ्रंश रूपो करी लेवा. जे फेरफार छे ते आ प्रमाणे

प०–एहो एइ

बी०–,, ,,

अकारांत-सर्वादि-शब्द (नान्यतर जाति)

सर्वादि शब्दना बधी जातना नपुंसकलिंगी रूपाख्यानो पुलिंगी सर्वादि प्रमाणे छे. मात्र प्रथमा अने द्वितीयामां जे विशेष छे ते 'कुल'[1] नी पेठे समजी लेवानो छे. जेमके,

सव्व (सर्व)

प०— सव्व सव्वाणि, सव्वाइँ, सव्वाइ.
बी०— " " " "

बाकीना, 'सव्व'[2] ना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाची रूपो प्रमाणे.

सव्व (अपभ्रंश).

प०— सव्वु, सव्व, सव्वा सव्वाइ, सव्वइं.
बी०— " " " " "

सव्वअ (सर्वक-अपभ्रंश)

प०— सव्वउ, सव्वआइं, सव्वअइं.
बी०— " " "

बाकीना, 'सव्व' ना[3] अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

त (तत्)

प०— त, ण ताणि, ताइँ, ताइ.
णाणि, णाइँ, णाइ.
बी०— त, ण " " "

बाकी बधां[4] पुलिंगी 'त' प्रमाणे.

---

१ जूओ पृ० १३४. २ जूओ पृ० १३८-१४० ३ जूओ पृ० १४०. ४ जूओ पृ० १४१.

त (अपभ्रंश)

पु०— [1]त्रं, तु, त, ता ताइं, तइं.

बी०— " " " " " "

तअ (तक–अपभ्रंश)

पु०— त्र, तउ तआइं, तअइं

बी०— " " " "

बाकी बधां, 'त' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ज (यत्)

पु०— ज जाणि, जाइं, जाइं

बी०— ज जाणि, जाइं, जाइं.

बाकीनां, पुलिंगी 'ज' प्रमाणे

ज (अपभ्रंश)

पु०— [4]ध्रु, जु, ज, जा जाइं, जइं

बी०— " " " " " "

जअ

पु०— ध्रु, जउ जआइं, जअइं

बी०— " " " "

बाकीनां, 'ज' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

---

१ जूओ पृ० १४२ २ जूओ पृ० १४२. ३ जूओ पृ० १४२–१४३ ४ जूओ पृ० १४३ ५ जूओ पृ० १४३.

किं

प०—	किं	काणि, काइँ, काइं.
बी०—	,,	,, ,, ,,

बाकीना, पुंलिंगी '[1]क' नी पेठे

किं (अपभ्रंश)

प०—	किं, [2]काइ, कवणु, कवण, कवणा	काइं, कइं, कवणाइं, कवणइ, काईइ, काइइ, कीइं[3], किइं.
बी०—	किं, काइ, कवणु, कवण, कवणा	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

बाकी बधा, 'क' ना [4]अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

इम (इदम्)

प०—	इणं, इणमो, इद	इमाणि, इमाइँ, इमाइं.
बी०—	,, ,, ,,	,, ,, ,,

शेष, पुंलिंगी '[5]इम' नी जेवा.

इम, इमअ (अपभ्रंश)

प०—	इमु	आयाइं, आयइं.
बी०—	,,	,, ,,

बाकीना, 'इम' ना [6]अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

---

१ जुओ पृ० १४३–१४८. २ जुओ पृ० १४४. ३ का + ईइं=कीइं–जुओ पृ० ९६ स्वरलोप. ४ जुओ पृ० १४४. ५ जुओ पृ० १८५. ६ जुओ पृ० १८६.

एअ (एतत्)

प०	एस, एअं, इणं, इणमो	एआणि, एआइँ, एआइं.
नी०	एअ	" " "

शेष, पुलिंगी 'एअ' नी पेठे.

एह, एअ (अपभ्रंश)

प०	एहु	एईइं, एइइं.
नी०	"	"

शेष 'एअ' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

'युष्मद्' अने 'अस्मद्' ना रूपो त्रणे लिंगमा एक सरखा थाय छे अने ए आ प्रमाणे छे.

तुम्ह (युष्मद्)

प– एकव०—त, तु, तुव, तुह, तुम (त्वम्)

---

१ जूओ पृ० १४६ २ जूओ पृ० १४७.

३ तुम्ह (युष्मद्)-पालिरूपो

१	त्वं तुवं	तुम्हे (वो)
२	त्वं (तुम्ह) तुवं तवं तं	तुम्हे, तुम्हाकं (तुम्ह) (वो)
३–५	त्वया, तया (प०–त्वम्हा) (त०–ते)	तुम्हेहि, तुम्हेभि (त०–वो)
४–६	तव, तुय्ह, तुम्ह (ते)	तुम्हाकं (वो)
७	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

–जूओ पालिप्र० पृ० १५१.

बहुव०—भे, [1]तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

दु– एकव०—तं, तुं, तुम, तुवं, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

बहुव०—वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे (युष्मान्–वः)

त– एकव०—भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

बहुव०—भे, तुब्भेहि, उज्झेहि, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं–(युष्माभिः)

पं– एकव०—तुय्ह, तुब्भ, तहिंतो, (त्वत्)

तइत्तो, तइओ, तइउ, तईहिंतो.

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहितो, तुवा.

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिंतो, तुमा.

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिंतो, तुहा.

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भा.

बहुव०—तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भेहिंतो, तुब्भासुंतो, तुब्भेसुंतो. (युष्मत्)

तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहितो, तुय्हेहिंतो, तुय्हासुंतो, तुय्हेसुंतो.

उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहितो, उय्हेहिंतो, उय्हासुंतो, उय्हेसुंतो.

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिंतो, उम्हेहिंतो, उम्हासुंतो, उम्हेसुंतो.

---

१ युष्मद्-शब्दना रूपोमां आवेला 'ब्भ' नो विकल्पे 'ज्झ' अने 'म्ह' थाय छे. तुब्भे, तुज्झ, तुम्हे इत्यादि.

च० छ०—एकव०—तइ, तु, ते तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह (तुभ्यम् तव ते)

बहुव०—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भ, तुब्भाण, तुब्भाण, तुवाण, तुवाण, तुमाण, तुमाण, तुहाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाण तुम्हाहँ (युष्मभ्यम्–युष्माकम्–व)

स०— एकव०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि) तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि

बहुव०—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु (युष्मासु) [1]तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, [2]तुब्भासु,

---

[3]अम्ह (अस्मद्)

प०— एकव०—म्मि, अम्मि, अम्हि, ह, अह, अहय (अहम्) (मा० हगे)

---

१ २ आ रूपो आ० हेमचन्द्रना मते थता नथी—हे० प्रा० व्या० ८–३–१०३, पृ० १०२.

३ अम्ह (अस्मद)–पालिरूपो

१ अह	मय अम्हे (अस्मा) (नो)
२ मं, ममं (अम्ह)	अम्हाकं, अम्हे (अम्ह) (अस्मा) (नो)
३–५–मया (त०–मे)	अम्हाहि, अम्हेभि (त०–नो)
४–६–मम, ममं (मे) मय्हं, अम्हं	अस्माकं, अम्हाकं (च०–नो)
७ मयि	अम्हेसु (अस्मासु)

—जुओ पालिप्र० पृ० १ ३–१५४

बहुव०—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, मे (वयम्)
(मा० हगे)

द्वि- एकव०—णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिम,
अहं-(माम्-मा)

बहुव०—अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्-नः)

त- एकव०—मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे (मया)

बहुव०—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)

प- एकव०—मइत्तो, मइओ, मइउ, मईहिंतो. (मत्)
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, ममा.
महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा.
मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो,
मज्झा.

बहुव०—ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि,-(अस्मत्)
ममाहिंतो, ममेहिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो.
अम्हत्तो, अम्हाउ, अम्हाओ, अम्हाहि, अम्हेहि,
अम्हाहिंतो, अम्हेहिंतो, अम्हासुंतो, अम्हेसुंतो.

च, छ- एकव०—मे, मइ, मम, मह, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं
(मह्यम्-मे-मम)

बहुव०—णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं अम्हे, अम्हो,
अम्हाण,-णं, ममाण,-णं, महाण,-णं, मज्झाण-णं,
अम्हाहँ (अस्मभ्यम्-अस्माकम्-नः)

स- एकव०—मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)
अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि.

बहुव०—[1]अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु (अस्मासु)
[2]अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, [3]अम्हासु.

तुम्ह (युष्मद्) अपभ्रंश

	प०—तुहु	तुम्हइ, तुम्हे
	बी०—पइं, तइं	,, ,,
	त०—,, ,,	तुम्हेहिं.
च०	छ०—तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हह
	प०—,, ,, ,,	,,
	स०—पइं, तइं	तुम्हासु, तुम्हासु

अम्ह (अस्मद्) अपभ्रंश

	प०—हउं	अम्हइं अम्हे.
	बी०—मइं	,, ,,
	त०—मइं	अम्हेहिं.
च०	छ०—महु, मज्झु	अम्हह
	प०—,, ,,	
	स०—मइं,	अम्हासु, अम्हासु

आकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

आकारांत नामोना रूपाख्यानोनो प्रयोग विशेष विरल छे तो पण प्रसंगवशे तेना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जणावीए छीए

---

१ जुओ पृ० १२७—तइया छ ते सप्तमी.

२–३ जुओ पृ० १६१ नुं टिप्पण हे० प्रा० व्या० ८–३–११७, पृ० १०४

१ अकारान्त नामने लागता प्रत्ययो आकारांत नामने लगाडवाथी तेना रूपाख्यानो तैयार थाय छे
२ मात्र एक पञ्चमीनो 'हि' प्रत्यय आकारात नामने लागता नथी.
३ प्रत्यय विनाने स्थळे एटले ज्या शून्य छे त्या मूळ अंगने ज रूपाख्यान तरीके समजवु
४ संबोधनना रूपो प्रथमानी जेवा थाय छे

हाहा

प०—हाहा	हाहा.
बी०—हाहा	"
त०—हाहाण, हाहाण	हाहाहिं, हाहाहिं, हाहाहि
च० छ०—हाहस्स	हाहाण, हाहाण
[ता० च० हाहे, हाहस्स	" "]
प०—हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो	हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो हाहासुंतो.
स०—हाहा (ह) म्मि	हाहासु, हाहासुं
सं०—हे हाहा !	हे हाहा !

ए रीते गिरालवा ([1]गिरालपा) गोवा (गोपा) अने सोमवा (सोमपा) वगेरे शब्दोना रूपो समजवा

---

१ षड्भाषाचंद्रिकाने मते कृदन्तथी बनेला नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे यथा 'गिरालपा' 'गोपा' अने 'सोमपा' नु प्राकृत

नान्यतर जातिमा तो कोई शब्द आकारांत होतो ज नथी (जुओ पृ० १२३—नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार—नि० २)

आकारांत शब्दना शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना रूपो 'हाहा' ना प्राकृत रूपो जेवा थाय छे, ज्यां जे विशेष छे ते 'वीर' नी पेठे समजवानो छे

आकारांत शब्दना अपभ्रंशना रूपो 'वीर' ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा प्राय बनाववाना छे

इकारांत, उकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति) प्रत्ययो.

नरजातिना अने नान्यतरजातिना दरेक इकारांत अने उकारांत नामोने नीचे जणावेला प्रत्ययो लगाडवाना छे

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प०—	०	अउ अओ, णो. ■
बी०—	+	णो, ०

रूप 'किलालप' 'गोप' अने 'सामप' बने छ अने साम यतु होवाथी ए त्रणे शब्दोना रूपो बराबर 'वीर' नी जेवा थाय छे
" विषय " २-२-४७, पृ० ८५ षड्भाषाच०

षड्भा०	हे०
प० ए० किलालवो	प० ए० किलालवा
,, गावो	,, गावा
सामवो	,, सोमपा

षड्भाषा०ना उपर्युक्त नियमने बदले आ० हेमचन्द्र आ नियम करे छे ते माटे जुओ पृ० १२३—नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार—नि० १.

त०—	णा	+
च० छ०—	णो, +	+
पं०—	णो, +	+
स०—	+	+
सं०—	*	अउ, अओ, णो, ०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो.

१ ज्या ज्या ० छे त्या मूळ अंगने, अंते दीर्घ करीने वापरवानु छे.

२ ज्या ज्या + छे त्या अकारात नामने लगता [1]प्रत्ययो पण समजवाना छे. मात्र पचमीनो एक 'हि' प्रत्यय लेवानो नथी.

३ ज्या * छे त्यां (संबोधनना एकवचनमा) मूळ अंगने अंते विकल्पे दीर्घ करवानो छे.

४ पंचमीना स्वरादि, सकारादि अने हकारादि प्रत्ययो पर रहेता अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

५ तृतीया, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययो पर रहेता अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

६ उकारात नामोने प्रथमाना बहुवचनमा एक 'अवो' प्रत्यय पण वधारे लागे छेः—भाणु + अवो=भाणवो (सं० भानवः)

---

[1] जुओ पृ० १२५. 'प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो' ना मथाळा नीचे (पृ० १२६ मा) जणावेलु कार्य अहिं—इकारात अने उकारातमा—थतु नथी.

रूपाख्यानो

इसि (ऋषि)

प०	[1]इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.
बी०	इसिं	इसिणो, इसी.
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ.
च०, छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं.

१ कोईने मते इकारांत अने उकारांत शब्दोनुं प्रथमानुं एक वचन द्वितीयाना एकवचननी जेवुं पण थाय छे—जेमके—इसी, इसिं। विहू, विहुं। हे० प्रा० व्या० ८-३-१९, पृ० ८४.

इकारांतनां पालिरूपो.

इसि

१	इसि	इसी, इसयो.
२	इसिं	इसी, इसयो.
३	इसिना	इसीहि, इसीभि.
४-६	इसिनो, इसिस्स	इसीनं.
५	इसिना, इसिस्मा, इसिम्हा	इसीही, इसीभि.
७	इसिस्मि, इसिम्हि	इसिसु, इसीसु.
सं०	इसि !, इसे !	इसी !, इसयो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमां पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे. "सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, अधिपतिनो, जानिपतिनो" वगेरे.

पालिमां अग्गि (अग्नि), मुनि, आदि, गिरि, रस्सि (रश्मि) सखि (सखि) अने गामणि (ग्रामणी) शब्दोना रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे[1]

[ता० च० इसये, इसिणो, इसिस्स इसीण, इसीणं]
च० छ०– (माग० इशिह) (मा० इशिहँ)
प० इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसित्तो, इसीओ, इसीउ,
इसीउ, इसीहिन्तो इसीहिन्तो, इसीसुंतो.

अग्गि.

एकव०	बहुव०
प०–अग्गिनि, गिनि	अग्गियो (वधाराना रूपो)
स०–अग्गिनि	"
स०–अग्गि !	

मुनि

ऊ०–मुने (मुने)	(वधाराना रूपो)

आदि

स०–आदो (आदौ)	(वधाराना रूपो)
आदु	
आदि	
आदिनि	

गिरि

स०– गिरे	(वधाराना रूपो)

रंसि

त०– रंसिन	(वधाराना रूपो)

सखि

प०––सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा.
बी०–सखार	
सखान	सखानो, सखिनो,
सखाय	सखायो, सखी.
सखं	

स०—भाणुसि, भाणुम्मि　　　भाणूसु, भाणूसु

सं०—भाणु ! भाणू !　　　भाणुणो ! भाणवो ! भाणओ !
　　　　　　　　　　　　भाणउ ! भाणू !

ए प्रमाणे जउ (यदु) धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, घणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, सकु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), [1]खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयभु (स्वयभू) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पेशाचीना रूपो समजवाना छे

---

५ अभिभुना

स०　　　　　　　　　　　　　　　　अभिभू ! अभिभूवो !

बाकीना 'भानु' प्रमाणे

सहभू, सब्बञ्ञू

(वधाराना)

१–२–स० बहुवचन　　　सहभुनो

१–२–स०　,,　　　सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुना

–पालिप्र० पृ० ९२–९३

बाकीना 'अभिभू' प्रमाणे

१ आ छल्ला पाच शब्दोना सबोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे हे खल्पु ! हे गोत्तभु ! हे सरभु ! वगेरे.

[1]अमु (अदस्)

[आ शब्द सर्वादिमां छे छता एना रूपो विशेषे करीने 'भाणु' ना रूपो साथे मळता आवे छे माटे एने 'भाणु' ना रूपो पछी मूकवामा आव्यो छे.]

प०— अह, अमू, [2]असो — अमुणो, अमवो, अमउ, अमओ, अमू.

बी०— अमुं — अमुणो, अमू.

स०— अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि — अमूसु, अमूसु

शेष रूपो 'भाणु' नी जेवा

---

१ अमु (अदस्) नां पालिरूपो

१	अमु	अमू, अमुयो
२	अमु	" "
३	अमुना	अमूहि, अमूभि.
४–६	अमुनो अमुस्स (स० अमुष्य)	अमूस, अमूसान.
५	अमुना, अमुस्मा (स० अमुष्मात्) अमुम्हा	अमूहि, अमूभि.
७	अमुस्मि (स० अमुष्मिन्) अमुम्हि	अमूसु

जुओ पालिप्र० पृ० १४७.

२ आ आर्षरूप स० 'असौ' उपरथी थयेलु छे–जुओ पृ० ७ नि० १२ औ=ओ. " असो तत्तमकासी य ' सूत्रकृ० अ० १, उ० ३, गा० ८.

' इसि ' अने ' भाणु ' शब्दना प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना वधाराना रूपो जणावेला छे.

अपभ्रंशमा जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे

अपभ्रंशभाषाना प्रत्ययो.

	एकव०	बहुव०
प०—	०	०.
बी०—	०	०.
त०—	ण, ए, म्	हिं.
च० छ०—	०	हु, ह
पं०—	हे	हु.
स०—	हि	हिं, हु.
स०—	०	हो, ०.

ज्या ज्या ० छे त्या मूळ अगने ज अते विकल्पे दीर्घ करीने वापरवानु छे.

अपभ्रंशना बधा प्रत्ययो पर रहेता मूळ अगने अते विकल्पे दीर्घ थाय छे

अपभ्रंश–रूपाख्यानो

इसि

प०—	इसि, इसी	इसि, इसी
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	इसिण, इसिण, इसीण, इसीण, इसिए, इसीए, इसिं, इसीं	इसिहिं, इसीहिं.

च० छ०–	इसि, इसी	इसिहु, इसीहुं, इसिहं, इसीहं.
पं०–	इसिहे, इसीहे	इसिहु, इसीहु.
स०–	इसिहि, इसीहि	इसिहिं, इसीहिं; (इसिहु, इसीहु)
सं०–	इसि ! इसी !	इसिहो ! इसीहो ! इसि ! इसी !

ए प्रमाणे दरेक इकारांत पुंलिंगी शब्दना अपभ्रंश रूपो समजवाना छे.

भाणु.

प०–	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू.
बी०–	,, ,,	,, ,,
त०–	भाणुण, भाणुण, भाणूण, भाणूण, भाणूए, भाणूए, भाणु, भाणू	भाणूहिं, भाणूहिं.
च० छ०–	भाणु, भाणू	भाणुहु, भाणूहु; भाणुहं, भाणूहं.
पं०–	भाणुहे, भाणूहे	भाणुहु, भाणूहु.
स०–	भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं, (भाणुहु, भाणूहु)
सं०–	भाणु ! भाणू !	भाणुहो ! भाणूहो ! भाणु ! भाणू !

ए प्रमाणे दरेक उकारांत पुंलिंगी शब्दना अपभ्रंश रूपो समजवाना छे.

पं०—(शौर० इसिदो, इसिदु)
(माग० इशिदो, इशिदु)
(पैशा० इसितो, इसितु)
स० [1]इसिसि, इसिम्मि — इसीसु, इसीसु
स० हे इसि ! हे इसी ! — हे इसउ ! हे इसओ ! हे इसिणो ! हे इसी !

त० प०—सखिना (प०—सखारा, सखारस्मा) सखेहि, सखीभि सखारेहि, सखारेभि.
च० छ०—सखिस्स — सखान, सखारान
सखिनो
स०—सखे — सखेसु, सखारेसु
स०—सख !, सखे !, — सखायो !
सखा !, सखि ! — सखाना !,
सखी ! — सखानो !

गामनी

प० गामनी — गामना, गामनिनो
बी० गामनीन, गामान — ,, ,
प०—गामनिना
स०— — गामनासु
स०— गामनि ! — गामनी !, गामनिनो !
बाकीना 'इसि' प्रमाणे

ए बधा रूपो माटे जूओ पालिप्र० पृ० ८७–९ अने त उपरना टिप्पणो

१ जूओ पृ० १२७, सप्तमीना 'सि' प्रत्ययनुं उदाहरण— "तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भं" आचारांग सूत्र, त्रीजी चूलिका—महावीरनो अधिकार

खास विशेषता:

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा 'इन्' छेडा-वाळा 'इकारांत' नामोना अंत्य 'न्' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे 'आ' थाय छे:

हे दंडिआ ! हे दंडि !

हे सुहिआ ! हे सुहि (सुखिन्)

हे तवस्सिआ ! हे तवस्सि !

हे कंचुइआ ! हे कंचुइ ! (कञ्चुकिन्)

हे मणस्सिआ ! हे मणस्सि ! (मनस्विन्)]

ए प्रमाणे अग्गि (अग्नि), मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), साधि, रासि (राशि), गिरि, रवि, कइ (कवि) कवि, (कपि कवि), अरि, तिमि, समाहि (समाधि), निहि (निधि), विहि (विधि), [1]दंडि (दण्डिन्), करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्),

---

१ प्राकृतमां अने पालिमां 'दंडि' वगेरे 'इन्' छेडावाळा शब्दोना रूपो साधारण इकारांत शब्दनी पेठे थाय छे. तो पण पालिमां ए 'इन्' छेडावाळा शब्दोना केटलाक वधारना रूपो साधारण इकारांत करतां जुदां पडे छे अने ते बधां आ प्रमाणे छे (जे रूपो जुदां पडे तेने वधारे मोटा अक्षरोमां मूकेलां छे).

१	दंडी	दंडी, दंडियो, दंडिनो.
२	दंडिय, दंडिनं, दंडि	दंडी, दंडिये, दंडिने, दंडिनो.
३	दंडिना	दंडीहि, दंडीभि.
४	दंडिनो, दंडिस्स	दंडीनं
५	दंडिना, दंडिम्हा, दंडिस्मा	दंडीहि, दंडीभि.
६	दंडिनो, दंडिस्स	दंडीनं

[1]गामणि (ग्रामणी), पणि (प्रणी), सेणाणि (सेनानी), पहि (प्रधी) अने सुहि (सुधी) वगेरे शब्दोना प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो समजवाना छे.

---

[2]भाणु (भानु)

प०–भाणू	भाणुणो, भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू
बी०–भाणु	भाणुणो, भाणू
त०–भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ
च० छ०–भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूण

---

७ दंढिनि दण्डिने दाडिस्मि, दण्डिम्हि — दण्डीसु दण्डिनेसु

स० दाहि ! — दडी ! दंडिनो !

–पालिप्र० पृ० १३२ 'दडी' अने तेनुं टिप्पण

१ आ छेल्ला पाच शब्दाना सबोधनना एकवचनमा ते ते शब्दनु एकलु मूळ अग ज वपराय छे हे गामणि ! हे पणि ! हे सेणाणि ! वगेरे

२ उकारातना पालिरूपो

भानु

१ भानु	भानू, भानवो
२ भानु	,
३–५ भानुना	भानूहि, भानूभि
५ भानुस्मा, भानुम्हा	
४–६ भानुनो, भानुस्स	भानून

[ता० च०–भाणवे भाणुणो, भाणुस्स]

(माग० भाणुह)	(माग० भाणुहँ)
प०–भाणुणो, भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो भाणूसुंतो

(शौर० भाणुदो, भाणुदु)

(माग० भाणुदो, भाणुदु)

(पैशा० भानुतो, भानुतु)

---

७ भानुंसि, भानुम्हि	भानूसु
स० भानु !	भानू ! भानवे ! भानवो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमा पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमा 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे 'हेतुनो, जन्तुनो, गरुनो" वगेरे

पालिमा हेतु, जन्तु अभिभू, सहभू, सब्बञ्ञू शब्दना रूपोमा विशेषता छे ते आ प्रमाणे –

हेतु, जतु

बहुवचन

१ हेतुयो, जतुयो (वधाराना रूपो)

२ ,, ,,

एकवचन

७ हेतो स० (हेतो) (वधाराना रूपो)

अभिभू (वधाराना रूपो)

१ अभिभू	अभिभू, अभिभुवो
२ अभिभुं	

इकारांत अने उकारांत शब्दना प्राकृत रूपाख्यानो
(नान्यतर जाति)

[1]दहि (दधि)

१ [2]दहिं	दहीणि, दहीइँ, दहीइ
२ ,,	,, ,, ,
स०–दहि !	,, ! ,, ! ,, !

बाकी बधा तेते भाषा प्रमाणे इकारांत पुलिंगी 'इसि' नी जेवां

---

१ जूओ अकारांत नपुंसक नामोनुं प्रकरण अने तेने लगता प्रत्ययो तथा नियमो—पृ० १३३–१३४

२ केटलाकने मते इकारांत अने उकारांत नपुंसक नामोना प्रथमाना अने द्वितीयाना एकवचनमां आवां बे रूपो थाय छे

दहि, दहिँ (स० दधि, दधिँ)

महु, महुं (स० मधु, मधुं)

—हे० प्रा० व्या०–८–३–२५, पृ० ८५

सादृश्ये षष्ठीमां संस्कृतना रूपने मळतुं 'दहिणो' (दध्नः) अने 'महुणो' (मधुनः) रूप पण वपराय छे

नपुंसकलिंगी इकारांतना अने उकारांतना पालिरूपो

'दधि'

१ दधि (दधिं) दधी, दधीनि

२ दधिं ,, ,,

शेष, इकारांत पुल्लिंगी 'इसि' प्रमाणे.

---

३ 'गामनी'ना पालिरूपो

गामनि गामनी, गामनीनि

गामनिं ,, ,,

शेष इकारांत पुल्लिंगी 'गामनी' प्रमाणे

ए प्रमाणे सत्थि (सक्थि), वारि, अच्छि (अक्षि), सुरि (सुरि), अइरि (अतिरि) अने गामणि (ग्रामणी) वगेरे शब्दोना रूपो पण समजवा.

महु (मधु)

१	महु	महूणि, महूइँ, महूइ
२	,,	,, ,, ,,
स०	महु [1]	,, ,, ,,

बाकी बधा ते ते भाषा प्रमाणे उकारांत पुंलिंगी 'भाणु' नी जेवा

ए प्रमाणे दारु, वत्थु (वस्तु), चित्तगु (चित्रगु), सुगु, वसु, अंबु, असु–अस्सु (अश्रु) जउ (जतु), बहु अने लहु (लघु) वगेरे शब्दोना रूपो पण समजवा.

---

१ 'मधु'

१ मधु मधू, मधूनि

२ मधु ,, ,,

शेष, उकारांत पुंलिंगी 'भानु' प्रमाणे

'गोत्रभू' ना पालिरूपो

गोत्रभु गोत्रभू, गोत्रभूनि

गोत्रभु गोत्रभू, गोत्रभूनि

शेष, उकारांत पुंल्लिंगी 'आभभू' प्रमाण –

जूओ पालिप्र० पृ० ११३–११८ अने एना टिप्पण

[1]अमु (अदस्)

प०– अह, अमु	अमूइ, अमूई, अमूणि	
बी०– अमुं	" " "	

बाकी बधा [2]पुलिंगी 'अमु' नी पेठे.

दहि (अपभ्रंश)

१ दहि	दहीइ, दहिइ
२ "	" "

बाकी बधा 'इसि' ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा.

महु (अपभ्रंश)

१ महु	महूइ महुइं
२ "	" "

बाकी बधा 'भाणु' ना अपभ्रंश रूपोनी जेवा.

[3]ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

ऋकारात नामोनी बे जात छे–केटलाक ऋकारात नाम विशेष्यरूपे वपराय छे अने केटलाक ऋकारात नाम विशेषणरूपे वपराय छे

---

१ 'अमु' ना पालिरूपो

१ अमु	अमू
२ "	"

शेष पुलिंगी 'अमु' पेठे–जूओ पालिप्र० पृ० १४८

२ जूओ पृ० १६६

३ जूओ पृ० १२३ नामना प्रकारो.

विशेष्यरूप—जामायर (जामातृ), पियर (पितृ), भायर (भ्रातृ) वगेरे ।

विशेषणरूप—कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ), भत्तार (भर्तृ) वगेरे ।

[आ भेदने लीधे एक जातना पण ए बन्ने नामोना रूपोमा विशेष अंतर छे.]

ऋकारांत (विशेष्यवाचक).

१. प्रथमानुं अने द्वितीयानु एकवचन बाद करता बधी विभक्तिओमा विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे.

२. प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो 'अर' थाय छे.

३. प्रथमाना एकवचनमा विशेष्यवाचक ऋकारांत नामनु आकारांत रूप पण विकल्पे वपराय छे.

४. संबोधनना एकवचनमा विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य ऋ नो 'अ' अने 'अर' विकल्पे थाय छे.

[सूचना -उपर जणाव्या प्रमाणे प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमा ऋकारांत नाम अकारांत अने उकारांत बने छे माटे तेना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया, 'जिण' अने 'भाणु' ना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी समजवानी छे. अहीं तो मात्र सरळता माटे तेना रूपाख्यानो आपीए छीए.]

पिउ, पिअर (पितृ)

प०	पिआ, पिअरो (मा० पिअले)	पिअरा, पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिऊ.
बी०	पिअर	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ.
त०	पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ, पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ.
च०, छ०	पिअरस्स (मा० पिअलाह) पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, (मा० पिअलाहँ) पिऊण, पिऊणं.
पं०	पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहितो,	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो, पिऊसुंतो.[1]

---

१ ऋकारांतनां पालिरूपो

पितु

१	पिता	पितरो (पिता).
२	पितर	पितरो, पितरे.
३	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि.
४–६	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरान, पितान. पितून, पितुन्नं.
५	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि.
७	पितरि	पितरेसु, पितुसु, पितूसु.
सं०	हे पित ! पिता !	पितरो !

—जूओ पालिप्र० पृ० ९४ अने एनुं टिप्पण.

पिअरत्तो, पिअराओ,	पिअरत्तो, पिअराओ,
पिअराउ,	पिअराउ
पिअराहि,	पिअराहि, पिअरेहि,
पिअराहिंतो,	पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो,
पिअरा	पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
(शौ० पिअरादो, पिअरादु)	
(मा० पिअलादो, पिअलादु)	
(पै० पिअरातो, पिअरातु)	
स०– पिअरे,	पिअरेसु, पिअरेसुं,
पिअरंसि, पिअरम्मि,	पिऊसु, पिऊसुं
पिउंसि पिउम्मि,	
सं०– हे पिअ ! पिअर ! पिअरो !	पिअरा ! पिउणो ! पिअवो,
पिअरा ! पिअर !	पिअओ, पिअउ, पिऊ ।

ए रीते जामायर, जामाउ (जामातृ), भायर, भाउ, (भ्रातृ) वगेरे शब्दोना रूपो समजवाना छे

ऋकारान्त (विशेषणवाचक)

१. प्रथमानु अने द्वितीयानु एकवचन बाद करता बधी विभक्तिओमा विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे

२ प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमा ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो आर थाय छे

३ प्रथमाना एकवचनमा विशेषणवाचक ऋकारांत नामनु आकारांत रूप पण विकल्पे बने छे

४ संबोधनना एकवचनमा विशेषणवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ' नो विकल्पे 'अ' थाय छे

[1]दाउ, दायार (दातृ)

	एकवचन	बहुवचन
प०–	दाया, दायारो (मा० दायाले)	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ.
बी०–	दायार	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ.
त०–	दायारेण, दायारेणं, दाउणा	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ.
च०, छ०–	दायारस्स, (मा० दायालाह) दाउणो, दाउस्स.	दायाराण, दायाराणं, (मा० दायालाहँ) दाऊण, दाऊणं.
पं०–	दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायाराहिंतो, दायारा,	दायारत्तो, दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायारेहि, दायाराहिंतो, दायारेहिंतो. दायारासुंतो, दायारेसुंतो,

---

१ ऋकारांत विशेषणनां पालिरूपो

दातु

	एकवचन	बहुवचन
१	दाता	दातारो.
२	दातारं	दातारो, दातारे.
३	दातारा, दातुना	दातारेहि, दातारेभि.
४–६	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातानं, दातारानं, दातूनं.
५	दातारा	दातारेहि, दातारेभि.
७	दातरि	दातारेसु, दातूसु
सं०	हे दात ! दाता !	दातारो !

–जुओ पालिप्र० पृ० ९५ अने एनुं टिप्पण.

दाउणो, दाउत्तो,	दाउत्तो,
दाऊओ, दाऊउ,	दाऊओ, दाऊउ,
दाऊहिंतो	दाउहिंतो, दाउसुंतो.

(शौ० दायाराटो, दायारादु)

(मा० दायालादो, दायालदु)

(पै० तायारातो, तायारातु)

स०—	दायारे, दायारम्मि, दायारम्मि,	दायारेसु, दायारेसुं,
	दाउम्मि दाउम्मि	दाऊसु, दाऊसुं.
स०—	हे दाय !, दायार !,	दायारा, दाउणो, दायवो,
	दायारो !, दायारा !	दायओ, दायउ, दाऊ.

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोना रूपो समजवाना छे.



ऋकारांतना प्राकृत रूपाख्यानोनी साथे ज (तेना) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण विशेषतावाळा रूपाख्यानो आपेला छे



ऋकारांतना अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे

आगळ कह्या प्रमाणे दरेक ऋकारांत अंग, अकारांत अने उकारांत थया पछी ज प्राकृतमा वापरी शकाय छे तो ए—मूळ ऋकारांतना—अकारांत अंगना अपभ्रंशरूपो 'वीर'ना अपभ्रंशरूपो जेवा करवाना छे अने ए उकारांत अंगना, 'माणु'ना अपभ्रंशरूपो जेवा समजवाना छे कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमा आवता इकारांत थतु होय तो तेना अपभ्रंशरूपो 'इसि'ना अपभ्रंशरूपो जेवा जाणी लेवा.

उदाहरण तरीके एक ‘पितृ’ शब्दना नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ अगो सभवी शके छे –

पिअ, पिद; पिइ, पिदि; पिउ, पिदु; पिअर, पिदर.

ए आठमाना ‘पिअ’ अने ‘पिद’ तथा ‘पिअर’ अने ‘पिदर’ ना अपभ्रशरूपो ‘वीर’ना अपभ्रश रूपो जेवा जाणवा. ‘पिइ’ ‘पिदि’ना अपभ्रशरूपो ‘इति’ना अपभ्रशरूपो जेवा समजवा अने ‘पिउ’ने ‘पिदु’ ना अपभ्रशरूपो ‘भाणु’ना अपभ्रशरूपो जेवा करी लेवा

(कोइ पण [1]ऋकारात शब्दना अपभ्रशअगो करती वखते तेना प्राकृत अगो तरफ अने प्रयोगो तरफ लक्ष्य राखवु)

---

१ केटलाक ऋकारात शब्दोना अपभ्रश अगोने अहीं आपीए छीए –

कर्तृ=	कत्त, कत्ति, कत्तु
	कट्ट, कट्टि, कट्टु
नेतृ=	नेअ, नेइ, नेउ.
	नेद, नेदि, नेदु.
पोतृ=	पोद, पोदु
	पोअ, पोउ
भर्तृ=	भत्त, भत्ति, भत्तु
	भट्ट, भट्टि, भट्टु.
भ्रातृ=	भाय, भाइ, भाउ
	भाद, भादि, भादु
होतृ=	होद, होदु
	होअ, होउ

ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नान्यतरजाति)

सुपिअर, सुपिउ (सुपितृ)

प०—	सुपिअर	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि
बी०—	सुपिअर	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि
स०—	सुपिअर! सुपिअ! सुपिअर!	सुपिअराइ, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपिऊणि.

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुलिंगी पिउ, पिअर (पितृ)नी जेवा छे.

दायार, दाउ (दातृ)

प०—	दायार	दायाराइ, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि.
बी०—	दायार	दायाराइ, दायाराइ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि.
स०—	हे दाय! हे दायार!	दायाराइ, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइ, दाऊइँ, दाऊणि.

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुलिंगी दायार, दाउ (दातृ)नी जेवा छे.

नपुंसकलिंगी ऋकारांतना अपभ्रंशरूपो 'कुल', 'दहि', अने 'महु' ना अपभ्रंशरूपो जेवा जाणवाना छे (जूओ पुलिंगी ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपो विषेनुं लखाण).

एकारांत अने 'ओकारांतना प्राकृत रूपाख्यानो

एकारांत अने ओकारांत नामोना रूपाख्यानो प्राकृतमां उपलब्ध थता नथी, तो पण ए शब्दोने छेडे 'अ' (स्वार्थिक-क) लगाडी तेना रूपाख्यानो बनावाय छे अने ते ते भाषा प्रमाणे ते बधा रूपाख्यानो पुंलिंगमां अकारांत ('जिण') नी जेवां छे, नपुंसकमां अकारांत ('कुल') नी जेवां छे अने स्त्रीलिंगमां स्त्रीलिंगनी प्रक्रिया प्रमाणे बने छे.

---

१ प्राकृतमां 'गो' शब्दना 'गोण' 'गाअ' 'गउ' एवा त्रण अंगो बने छे (जूओ पृ० १२० प० १ तथा पृ० ६१ ओ=अउ, आअ) अने रूपाख्यानने प्रसंगे ए त्रण अंगो वपराय छे तेम पालिमां 'गो' शब्दना 'गोण' (गोन) 'गु' अने 'गवय' एवा अंगो बने छे (जूओ पालिप्र० पृ० ९८ अ० ३२ अने तेनुं टिप्पण) अने रूपाख्यानने प्रसंगे वपराय छे प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंग मूळ 'गो' अंग नथी वपरातुं आर्षप्राकृतमां मूळ 'गो' अंग अने ते द्वारा थएला रूपो पण (जूओ पृ० १३६ 'कम्म'नां आर्षरूपो माटेनुं टिप्पण) मळी आवे छे तेम पालिमां ए मूळ 'गो' अंगना पण रूपो—जे रूपो आर्षप्राकृतमां वपराएला छे—छे अने ते आ प्रमाणे

गो

१	गो	गावो, गवो
२	गाव	गावो,
	गव	गवो
	गावुं	
	गवुं	
३	गावेन	गोहि, गोभि.
	गवेन	
	गवा	

जेमके-स० सुरे-प्रा० सुरेअ[1]। स० ग्लौ-प्रा० गिलोअ। इत्यादि।

सुरेअ

सुरेओ	सुरेआ।
सुरेअ,	सुरेए, सुरेआ।
सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

४-५	गावस्स	गोन, गुन,
	गवस्स	गव.
६	गावा, गावस्मा,	गोहि, गोभि.
	गावम्हा	
	गवा, गवस्मा, गवम्हा	गवेहि, गवामि.
७	गावे, गावस्मिं, गावम्हि	गावेसु
	गवे, गवस्मिं, गवम्हि	गवेसु
		गोसु.
सं०—गो !		गावो, गवो—

जुओ पालिप्र० पृ० ९७-९८

आर्षप्राकृतनुं उदाहरण—" अन्ने होरं गव पचोइए "—
सूत्र० प्र० श्रु० अ० २, उ० ३ गा० ५.
" गो—महिस—गवेलयप्पभूया "—
भगव० शत० २, उ० ५ तुंगियानो
अधिकार. (पृ० २७७ रा० जि०)

औकारांत 'नौ' शब्दनुं प्राकृत अंग 'नाव' बने छे (जुओ पृ० ६२ औ=आव) " एग मह नाव सयासव अभा ... (ना)वा तेहिं "= भगव० श० १, उ० ६ (प्रश्नोत्तर-२२७ पृ० १७१ रा० जि०)

२ जुओ षड्भाषा० पृ० ६८.

गिलोअ

गिलोओ	गिलोआ ।
गिलोअ	गिलोए, गिलोआ ।
गिलोएण, गिलोएणं,	गिलोएहि, गिलोएहिं गिलोएहिँ ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

---

२ केटलेक ठेकाणे एकारांत अने ओकारांत नामोनुं प्राकृतरूप, संस्कृतना सिद्धरूप उपरथी पण बनाववामां आवे छे सुराहि (सं० सुराभि) सुरासु (सं० सुरासु) इत्यादि

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द व्यंजनांत संभवी शक्तो नथी,[1] एथी एना ते ते भाषाना बधा रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवाना छे फक्त 'अत्' अने 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपोमां विशेषता छे अने ए आ प्रमाणे छे

---

१ जूओ प्रकरण ३–अंत्यव्यंजनलोप षड्भाषाचंद्रिकाने मते छेडे धातुवाळा व्यंजनांत नामोना छेवटना व्यंजनमां 'अ' उमेराय छे अने बीजा व्यंजनांत नामोने छेडे स्वार्थिक 'अ' (क) प्रत्यय उमेराय छे एथी ए बधा नामोना रूपो अकारांत नामनी जेवा थाय छे (पृ० ११६ "हलोऽत्") धातु–गोदुह् + अ = गोदुह अधातु–मुगिर् + अ = मुगिर मुह्व + अ = मुहुअ (मुहुक)

'अत्' छेडावाळा नामो (नरजाति)

जे नामो [1]मत्वर्थीय 'अत्' छेडावाळा छे के वर्तमानकृदत तरीके वा भविष्यत्कृदत तरीके 'अत्' छेडावाळा छे ते नामोना अत्य 'अत्' नो प्राकृतमा 'अत' थाय छे, तेथी एना बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे अकारात 'वीर' नी जेवा बने छे

फक्त आर्षप्राकृतमा एवा केटलाक नामोना रूपो संस्कृतना सिद्धरूपो उपरथी पण बनाववामा आवेला छे

भगवन्त =	[2]भगवतो
भगवता=	भगवया
भगवत =	भगवओ इत्यादि.

[3]शौरसेनी

शौरसेनीमा कृतवत्, भवत्, भगवत् अने सपादितवत् शब्दना अत्य व्यजननो मात्र प्रथमाना एकवचनमा अनुस्वार थाय छे:

कयव	(कृतवान्)
भव	(भवान्)
[4]भगव	(भगवान्)

---

१ आ 'अत' उपरात मत्वर्थीय बीजा पण अनेक आदेशो थाय छे ते माटे जूओ तद्धितप्रकरणमा 'मतु' ना आदेशो

२ "थुय भगवतो" "भगवया महावीरेण" "भगवओ महावीरस्स"–(भगव० राय० पृ० २३९–२४१–२४५)

३ शौरसेनीने लगती अपवाद विनाना बधी प्रक्रिया मागधी, पैशाची अने अपभ्रशमा पण समजी लेवी.

४ आ रूप आर्षप्राकृतमा प्रथमामा अने द्वितीयामा पण वपरायलु छे "भगव महावीरे" "भगव गोयम"–(भगव० राय० पृ० २३२)

सपाइअव (सपादितवान्)
सपाटिदवं

रूपाख्यानो

'भगवत (भगवत्)
भयवत

१	भगवतो	भगवता
	(शौ० मा० दै० भगव)	
	(मा० भगवते)	
२	भगवत	भगवते, भगवता

अत्' छेडावाळा नामना पालिरूपो

१ भगवत

१	भगवा	भगवतो, भगवता
२	भगवत	भगवते.
३	भगवता भगवतन	भगवताहि, भगवतमि
४–६	भगवतो भगवतस्स	भगवत, भगवतान
५	भगवता, भगवता भगवतस्मा, भगवतम्हा	भगवताह, भगवतेभि
७	भगवति, भगवत भगवतसि, भगवताम्ह	भगवतेभु
स०	भगध, भगव भगवा (भगवा)	भगवतो भगवता

[जूओ पृ० १८२ 'भगवत' ना आषरूपो]

—जूओ पालिप्र० पृ० ११६–११७–११८ अने एनां टिप्पण

३	भगवतेण, भगवतेण	भगवतेहि, भगवतेहिं, भगवतेहिँ
स०–	भगवत!, भगवता!, भगवतो!	भगवता

(शौ० मा० पै० भगव, भगव!)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे

---

[1]भवत (भवतु)

१	भवतो (शौ० मा० पै० भव) (मा० भवते)	भवते
२	भवत	भवते, भवता
३	भवतेण, भवतेण	भवतेहि, भवतेहिं, भवतेहिँ
स०	भवन्त, भवता, भवतो	भवता!

---

१ पालिमां 'भवत' शब्दना विशेष रूपो आ प्रमाणे छे

१ भवतो, भोतो, भवन्ता (बहुवचन)

३ भवता, भोता, भवतेन (एकवचन)

४–६ भवतो, भोतो, भवन्तस्स (,,)

स०–भो!, भन्ते! भोत! ( )

,, भवन्तो, भोन्तो भवन्ता, भोन्ता (बहुवचन)

'भन्त' शब्दनुं पालिमां (सं० 'भद्र' उपरथी) 'सं०भ' रूप पण वपराय छे — जुओ पालिप्र० पृ० ११८–११९–१२० अने तेनां टिप्पणो

(शौ० मा० पै० भवं, भव)

(मा० भवंते, भंते)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'सव्व' नी पेठे.

'भवंत (भवत्—वर्तमानकृदंत)

१	भवंतो (मा० भवंते)	भवता.
२	भवंतं	भवंते, भवंता.
३	भवंतेण, भवंतेणं	भवंतेहि, भवंतेहिं, भवंतेहिँ.
सं०	भयन्त ! भवंतो ! भवंता ! (मा० भवंते !)	भवंता.

ए प्रमाणे बधा ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवा.

'अत्' छेडावाळां वर्तमानकृदंतनां पालिरूपो.

१ गच्छत (गच्छत्—वर्तमानकृदंत)

१	गच्छं, गच्छतो	गच्छतो (गच्छं) गच्छता.
२	गच्छतं	गच्छते.

शेष बधा 'भगवत' प्रमाणे.

केटलाक 'अत्' छेडावाळा नामोना पालिरूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे:

'महत' (महत्) अने अरहंत (अर्हत्) शब्दना प्रथमाना एकवचनमां 'महा' अने 'अरहा' (आर्षप्रा० अरहा) रूप वधारे थाय छे.—पालि प्र० पृ० ११८–११९.

[1]भवमाण (भवत्–वर्तमानकृदंत)

१	भवमाणो,	भवमाणा.
	(मा० भवमाणे)	
२	भवमाण	भवमाणे, भवमाणा.
३	भवमाणेण,	भवमाणेहि, भवमाणेहिं,
	भवमाणेण	भवमाणेहिँ.

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी लेवा.

भविस्संत (भविष्यत्–भविष्यत्कृदंत)

१	भविस्संतो	भविस्संता.
	(मा० भविस्संते)	
२	भविस्संत	भविस्संते, भविस्संता.
३	भविस्संतेण,	भविस्संतेहि,
	भविस्संतेण	भविस्संतेहिं,
		भविस्संतेहिँ.

स०	भविस्संत ! भविस्संतो !	भविस्संता.
	भविस्संतो !	
	(मा० भविस्संते)	

(शौ० मा० पै० भविस्सं ![2] भविस्स !)

ए प्रमाणे बधा 'वीर' प्रमाणे.

भविस्समाण (भविष्यत्–भविष्यत्कृदंत)

भविस्समाणो भविस्समाणा.

---

१ कृदंतना आ 'अत्'ने स्थाने 'अंत' अने 'माण' एवा बे आदेशो थाय छे–जुओ कृदंतप्रकरण

२. संस्कृत 'भविष्यन्!' उपरथी.

(मा० भविस्समाणे)

भविस्समाण	भविस्समाणे, भविस्समाणा.
भाविस्समाणेण, भविस्समाणेण	भाविस्समाणेहि, भविस्समाणेहिं, भविस्समाणेहिँ

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी पेठे.

नान्यतरजाति

उपर जणावेला नामोना क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामा बराबर 'कुल'नी जेवा थाय छे अने बाकी बधा ते ते भाषा प्रमाणे पुलिंगी रूपोनी जेवा थाय छे, जेमके,

[1]भगवंत

१	भगवत	भगवताणि, भगवताइं, भगवताइ.

---

१ 'भगवत'ना पालिरूपो (नान्यतरजाति)

१	भगव, भगवत	भगवता, भगवतानि. भगवति
२	भगवत	भगवते, भगवतानि, भगवति

शेष, 'भगवत'नी पेठे

'गच्छत' (गच्छत्)ना पालिरूपो

१	गच्छ, गच्छत	गच्छता, गच्छतानि.
२	गच्छत	गच्छते, गच्छतानि

शेष, पुलिंगी 'गच्छत'नी पेठे --जूओ पालिप्र० पृ० १३८ अने एना टिप्पण.

२	भगवंतं	भगवंताणि, भगवंताइँ, भगवंताइ.
सं०	भगवंत !	भगवंताणि, भगवंताइँ, भगवताइं.

बाकी बधा पुंलिंगी 'भगवंत'नी पेठे.

अपभ्रंशरूपो

अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल'नी जेवां थाय छे. जेमके,

भगवंत (नरजाति)

१	भगवंतु, भगवंतो भगवंत, भगवंता	भगवंत, भगवंता.
२	भगवंतु, भगवंत, भगवंता	भगवंत, भगवंता.
३	भगवंतेण, भगवतेणं भगवंतें	भगवंतेहिं, भगवताहिं, भगवंतहिं.
४–६	भगवंतासु, भगवतसु, भगवतस्सु, भगवताहो, भगवतहो, भगवत, भगवता	भगवताहं, भगवंतहं, भगवंत, भगवता.
५	भगवताहु, भगवतहु, भगवंताहे, भगवंतहे	भगवताहु, भगवतहुं.
७	भगवंति, भगवंते	भगवताहिं, भगवंतहिं.
सं०	भगवंतु, भगवंतो, भगवंत, भगवंता	भगवताहो, भगवंतहो, भगवंत, भगवंता.

भगवंत (नान्यतरजाति)

१ भगवतु, भगवत, भगवंताइं, भगवंतइं.
भगवंता

२ भगवंतु, भगवंत, भगवताइं, भगवतइं.
भगवता

बाकी बधां 'भगवंत' नां अपभ्रंशरूपो प्रमाणे.

'अन्' छेडावाळां नामो (नरजाति)

१ 'अन्' छेडावाळां नामोना नकारांत अंगना छेवटना 'अन्'नो 'आण' विकल्पे थाय छेः

अद्धाण, अद्ध (अध्वन्), अप्पाण, अप्प (आत्मन्), उच्छाण, उच्छ (उक्षन्), गावाण, गाव (ग्रावन्) जुवाण, जुव (युवन्) तक्खाण, तक्ख (तक्षन्) पूसाण, पूस (पूषन्) बम्हाण, बम्ह (ब्रह्मन्); महवाण, महव (मघवन्), मुद्धाण, मुद्ध (मूर्द्धन्) रायाण, राय (राजन्) साण, स (श्वन्), सुकम्माण, सुकम्म (सुकर्मन्) इत्यादि.

२ 'अन्'नो 'आण' थया पछी ए 'आण' छेडावाळां नामोनां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर'नी जेवां जाणवानां छे. जेमके;

अद्धाण

१ अद्धाणो अद्धाणा.
(मा० अद्धाणे)

२ अद्धाणं अद्धाणे, अद्धाणा. इत्यादि.

रायाण

१ रायाणो रायाणा

(मा० लायाणे)

२ रायाण रायाणे, रायाणा. इत्यादि.

सुकम्माण

१ सुकम्माणो सुकम्माणा

(मा० शुकम्याणे)

२ सुकम्माण सुकम्माणे, सुकम्माणा.
इत्यादि

---

३ ज्यारे 'आण' थतो नथी त्यारे पण 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपो बनाववानी रीत आ प्रमाणे छे

प्रत्ययो

प०—	+, ०	णो, ०
बी०—	इण, ०	णो, ०
त०—	णा, ०	०
च०, छ०—	णो, ०	इण, ०
पं०—	णो, ०	०
स०—	०	०
सं०—	+, ०	णो, ०

१. ज्यां शून्य छे त्यां अकारांत 'वीर'नी जेवी प्रक्रिया समजवानी छे

२ ज्यां + आ निशान छे त्यां 'अन्' छेडावाळा नामना अंत्य 'न्' नो 'आ' विकल्पे थाय छे.

३. 'णो' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे.

४. 'इणं' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो स्वर लोपाय छे.

पूस (पूसन्)

प०—	पूसा, पूसो (मा०—पूशे)	पूसाणो, पूसा।
बी०—	पूसिणं, पूसं	पूसाणो, पूसे, पूसा।
त०—	पूसणा, पूसेण, पूसेणं	पूसेहि, पूसेहिं, पूसेहिँ।
च०, छ०—	पूसाणो, पूसस्स (मा० पूशाह)	पूसिणं, पूसाण, पूसाणं। (मा० पूशाहँ)
पं०—	पूसाणो, पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसाहिंतो, पूसा (शौ० पूसादो, पूसादु) (मा० पूशादो, पूशादु) (पै० पूसातो, पूसातु)	पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसेहि, पूसाहिंतो, पूसेहिंतो, पूसासुंतो, पूसेसुंतो।
स०—	पूसे, पूसम्मि पूसंसि	पूसेसु, पूसेसुं।
सं०—	हे पूसा! हे पूसो, पूस!	हे पूसाणो, हे पूसा।

महव

१	महवा, महवो (शौ० [1]महवं) (मा० महवे)	महवाणो, महवा.

१ 'मघवं' पण थाय छे. आ रूप आर्षप्राकृतमा पण वपराएलुं छे: "मघवं पागसासणे"—कल्पसूत्र.

२	महविण, महवं	महवाणो, महवे, महवा.
३	महवणा, महवेण, महवेण	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ
४–६	महवाणो, महवस्स	महविण, महवाण, महवाण.
	(मा० महवाइ)	(मा० महवाहँ)

बाकी बधा 'पूस' प्रमाणे

---

[1]अप्प (आत्मन्)

१. 'आत्मन्' शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'णिआ' अने 'णइआ' प्रत्यय वधारे लागे छे.

---

१ 'अन्' छेडावाळा नामोना पालिरूपो

[अन्' छेडावाळा नामोना पालिरूपो विशेष अनियमित होवाथी अहीं जरा वीगतथी आपेला छे —]

अत्त, आतुम (आत्मन्)

१	अत्ता, आतुमा	अत्ता, अत्तानो, आतुमानो.
२	अत्तान, अत्त, आतुमान, आतुम	अत्तानो, अत्ते, आतुमानो.
३	अत्तना, अत्तेन, आतुमेन	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
४–६	अत्तनो, अत्तस्स, आतुमस्स	अत्तान, आतुमान.

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिण, अप्पं	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेण	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ।
च०,-छ०	अप्पाणो, अप्पस्स	अप्पिणं, अप्पाण, अप्पाण।
	(मा० अप्पाह)	(मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधा रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी समान छे.

२ राय (राजन्)

१. तृतीया, पचमी, पछी अने सप्तमीना बहुवचनमा 'राजन्' शब्दनो 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे

५	अत्तना, अत्तसा, अत्तम्हा, आतुमस्मा, आतुमम्हा	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते, अत्तस्मिं, अत्तम्हि आतुमे, आतुमस्मिं, आतुमम्हि	अत्तनेसु आतुमेसु
८ स०	अत्त! अत्ता! आतुम! आतुमा!	अत्तानो! अत्ता! आतुमानो!

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा.
२	राजान राज	राजानो.
३	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि.

२. 'णा' अने पचमी तथा षष्ठीना 'णो' प्रत्यय पर रहेता 'राजन्' शब्दनो 'रण्' आदेश विकल्पे थाय छे

४–६	रण्णो (रन्नस्स) राजिनो, राजस्स	रण्ण, राजून, राजान
३	रण्णा राजस्मा, राजम्हा	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि.
७	रण्णे, राजिनि, राजस्सि, राजम्हि	राजुसु राजेसु
८ सं०	रान, राजा	राजानो, राजा

ब्रह्म (ब्रह्मन् प्रा० बम्ह)

१	ब्रह्मा	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)
२	ब्रह्मान, ब्रह्म	,,
३–५	ब्रह्मुना (ब्रह्मना)	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि (ब्रह्मुहि, ब्रह्मुभि)
४–६	ब्रह्मस्स ब्रह्मुना	ब्रह्मान ब्रह्मून
७	ब्रह्मनि ब्रह्मे	ब्रह्मसु
८ सं०	ब्रह्म (ब्रह्मा)	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)

अद्ध (अध्वन्)

१	अद्धा	अद्धा, अद्धानो
२	अद्धान	अद्धाने
३–५	अद्धुना	अद्धानेहि, अद्धानेभि
४–६	अद्धुनो	अद्धान
७	अद्धनि अद्धाने	अद्धानेसु
८ सं०	अद्ध !	अद्धा ! अद्धानो !

३ 'णो', 'णा' अने सप्तमीना एकवचनमां 'राजन्' शब्दनो 'राइ' आदेश विकल्पे थाय छे.

विशेषता:

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां 'अन्' छेडावाळा नामोना अंत्य 'न्' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे अनुस्वार थाय छे

युव (युवन्=प्रा० जुव)

१	जुवा (यूनो)	जुवा, जुवाणो जुवाणा
२	जुवाण, जुव	जुवाणे, जुवे
३	जुवाणा, जुवाणेण, जुवेण	जुवाणेहि जुवाणेभि जुवेहि, जुवेभि
४–६	जुवाणस्स, जुवस्स	जुवाणाण, जुवाण
५	जुवाणा, जुवाणस्मा, जुवाणम्हा	जुवाणेहि जुवाणेभि जुवेहि, जुवेभि
७	जुवाणे, जुवाणस्मि, जुवाणम्हि, जुवे, जुवस्मि, जुवम्हि	जुवाणेसु जुवासु, जुवसु
८ स०	जुव, जुवा, जुवाण, जुवाणा	जुवाणो जुवाणा

['मघव' (मघवन्) नां रूपो 'जुव' जेवां अने 'मघवत' (मघवन्) नां रूपो 'गुणवत' नी जेम]

मुद्ध (मूर्धन्=प्रा० मुद्धा)

१	मुद्धा	मुद्धा, मुद्धाणो.
२	मुद्ध	मुद्धाणे,

हे अप्पं !, अप्प !

(सं० भवन्) भव, भव !]

(सं० भगवन्) हे भयव !, भयव !.

हे रायं !, राय !.

हे सुकम्म !, सुकम्म !.

३–५ मुद्धना	
७ मुद्धनि	मुद्धानेसु

शेष 'वीर'नी जेवा.

सा (श्वन्–प्रा० स, साण)

१ सा,	सा, सानो
२ स, सान	से, साने
३ सेन, साना	सेहि, सेभि. (साहि, साभि)
	सानेहि, सानेभि.
४–६ सस्स	सान
४—साय	
५ सा, सस्मा,	सेहि, सेभि
सम्हा, साना	सानेहि, सानेभि
७ से, सस्मिं,	सासु
सम्हि, साने	
८ सं० स	सा, सानो

आ उपरात दव्हधम्म (दढधम्म), पचक्खधम्म, गाडीवधन्व, विरसकम्म, विवत्तच्छद (विवृत्तछद्म=विअट्टछउम), पृथुलोम, अयव्वन (अद्धवण) अने वत्तह (वृत्रहन्) वगेरे अनेक शब्दो 'अन्' छेडावाळा छे. तेमां 'पचक्खधम्म' अने 'गाडीवधन्व'ना रूपो 'सा'

प०—	राया,	रायाणो. राइणो,
	रायो	राया.
	(मा० लाये)	
बी०—	राइण,	रायाणो, [1]राइणो,
	राय	राये, राया.
त०—	राइणा, रण्णा	राईहि, राईहिं, राईहिँ.
	रायेण, रायेणं	रायेहि, रायेहिं, रायेहिँ.
च० छ०—	रण्णो, राइणो	राईण, राईणं.
	रायस्स	रायाण, रायाणं.
	(ता०—रण्णे)	
	(मा० लायाह)	(मा० लायाहँ)
पं०—	रण्णो, राइणो,	राइत्तो, राईओ,
	रायत्तो, रायाओ,	राईउ, राईहि,
	रायाउ, रायाहि,	राईहिंतो, राईसुंतो,
	रायाहिंनो, राया	रायत्तो, रायाओ,
		रायाउ,
		रायाहि, रायेहि,
		रायाहिंतो, रायेहिंतो,
		रायासुंतो, रायेसुंतो.

(श्वन) नी जेवा थाय छे. 'विस्सकम्म 'थी 'अद्धन्न' सुधीना शब्दोनां रूपो 'वीर 'नी जेवा थाय छे अने बाकी रहेला 'दल्हधम्म' अने 'वत्तह 'ना रूपोमा थोडी विशेषता छे ते पालिप्रकाशथी समजी लेवी—जूओ पालिप्र० पृ० १२१–१२९ अने एना टिप्पणो.

१ सं० 'राज्ञः ' उपरथी 'रण्णो ' रूप पण थाय छे—जूओ म्न, श्र–ण पृ० ३६ तथा पृ० ९७ विसर्ग=ओ.

(शौ० रायादो, रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)

स०— राइसि, राइम्मि — राईसु, राईसुं.
रायसि, रायम्मि, राये — रायेसु, रायेसुं.

सं०— राया, रायो, राय — रायाणो, राइणो, राया.
(शौ० पै० राय, राय, राया, रायो)
(मा० लाय, लाय, लाया, लाये)

'अन्' छेडावाळा नामोना प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना साधारण रूपो आपेला छे फक्त 'राजन्' शब्दना पैशाचीरूपोमा आ एक खास विशेषता छे

पैशाची

एकवचन	बहुवचन
त०—[1]राचिञा, रञ्ञा[2] (राज्ञा)	बी०—राचिञो, रञ्ञो (राज्ञः)
च० छ०—राचिञो, रञ्ञो (राज्ञः)	
प०— " " "	
स०— राचिञि, रञ्ञि (राज्ञि)	

नान्यतरजाति

उपर जणावेला 'अन्' छेडावाळा नामोना क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामा बराबर 'कुल' नी जेवा थाय छे अने बाकी बधा ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवा थाय छे. जेमके;

१ सरखावो 'राजन्' ना पालिरूपो—पृ० १९३

२ जुओ ञ्ञ मागधी (पृ० ३६) मागधीनी पेठ पैशाचीमा पण 'ज्ञ,' 'ण्य' अने 'न्य' ना 'ञ्ञ' थाय छे.

सुपूस, सुपूसाण (सुपूषन्)

१ सुपूस[1], सुपूसाणि, सुपूसाइँ
सुपूसाइ
सुपूसाण सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ
सुपूसाणाइ
२ सुपूस, सुपूसाणि, सुपूसाइँ
सुपूसाइ
सुपूसाण सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ
सुपूसाणाइ

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी पेठे.

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१ सुअप्प[2] सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ,
सुअप्पाइ
सुअप्पाण सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ,
सुअप्पाणाइ.
२ सुअप्प सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ,
सुअप्पाइ
सुअप्पाण सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ,
सुअप्पाणाइ.

शेष, पुंलिंगी 'अप्प' नी पेठे

---

१ सुपूस गयण.
२ सुअप्प कुलं.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१	सुराय[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ.
२	सुराय	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइ
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइ.

शेष बधा पुलिंगी 'राजन्' नी जेवा

अपभ्रंशरूपो

ए नामोना अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल'नी जेव थाय छे. जेमके,

पूस, पूसाण (पूषन्—नरजाति)

१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण पूसाणा.
२	पूसु, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा
३	पूसेण, पूसेणं, पूसें पूसाणेण, पूसाणेणं पूसाणें	पूसेहिं, पूसाहिं, पूसहि पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणाहिं.

१ सुराजन्‌ नगर.

४–६	पूसासु, पूससु, पूसस्सु	पूसाह, पूसह
	पूसाहो, पूसहो,	पूस, पूसा
	पूस्स, पूसा,	
	पूसाणासु, पूसाणसु,	पूसाणाह, पूसाणह
	पूसाणस्सु, पूसाणाहो, पूसाणहो,	पूसाण, पूसाणा
	पूसाण, पूसाणा	
५	पूसाहु, पूसहु,	पूसाहु, पूसहु
	पूसाहे, पूसहे	पूसाणाहु, पूसाणहु
	पूसाणाहु, पूसाणहु,	
	पूसाणाहे, पूसाणहे	
७	पूसि, पूसे	पूसाहिं, पूसहिं
	पूसाणि, पूसाणे	पूसाणाहिं, पूसाणहिं
८ (सं०)	पूसु, पूसो,	पूसाहो, पूसहो
	पूस, पूसा	पूस, पूसा
	पूसाणु, पूसाणो,	पूसाणाहो, पूसाणहो,
	पूसाण पूसाणा	पूसाण, पूसाणा

सुपूस, सुपूसाण (नान्यतरजाति)

१	सुपूसु,	सुपूसाइ, सुपूसइ
	सुपूस, सुपूसा	
२	सुपूसु,	सुपूसाइ, सुपूसइ
	सुपूस, सुपूसा	

बाकी बधां, 'पूस'ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे

ए ज प्रमाणे राय, अप्प वगेरे 'अन्' छेडावाळा नामोना बधा अपभ्रश रूपो करी लेवाना छे

[पूस, अप्प, राय वगेरे शब्दोना शौरसेनीरूपोनो पण अपभ्रशमा उपयोग थइ शके छे]

'अस्' छेडावाळा नामो (नरजाति)

प्राकृतमा अने पालिमा 'अस्' छेडावाळा नामोना रूपो अकारात शब्दोनी जेवा थाय छे[1] जेमके,

सुमण (सुमनस्)

१	सुमणो	सुमणा
२	सुमण	सुमणे, सुमणा
३	सुमणेण, सुमणेण	सुमणेहि, सुमणेहिं, सुमणेहिँ

इत्यादि बधा ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवा समजवा

१ जुओ पृ० १२३ (नामनी जातिओ)

२ पृ० १०—अत्यव्यंजनलोप

३ पालिमा 'पुमस्' (सं० पुम्) शब्दना रूपोमा विशेषता छे ते आ प्रमाणे

पुम (पुमस्)

१	पुमा	पुमा
	पुमा	पुमानो
२	पुमान	पुमानो
	पुम	पुमान, पुमे
३	पुमाना	पुमानेहि,
	पुमुना	पुमानेभि,
	पुमेन	पुमेहि, पुमेभि

ए प्रमाणे सुवय (सुवचस्) सुमेह (घ) (सुमेधस्) विमण (विमनस्) पवय (प्रवयम्) अने दुव्वय (दुर्वचस्) वगेरे शब्दोना रूपो समजवा

स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग नामो पाच प्रकारना छे, जेमके—आकारात, इकारात, ईकारात, उकारात, ऊकारात ।

आकारात

१ प्राकृतमा आकारात नामो बे जातना छे, जेमके—केटलाक आकारात नामोनु मूळरूप (सस्कृतमा) अकारात होय छे ते अने केटलाक आकारात नामोनु मूळरूप (सस्कृतमा) अकारात नथी

४–६	पुमुनो	पुमान
	पुमस्स	
५	पुमाना	पुमानाह, पुमानभि
	पुमुना	
	पुमा, पुमस्मा	पुमेहि पुमभि
	पुमम्हा	
७	पुमाने	पुमानसु
	पुमे	पुमासु, पुमेसु
	पुमस्मि, पुमम्हि	
८ स०—	पुम,	पुमानो
	पुम	पुमा

'चन्द्रमस्' शब्दनु प्रथमाना एकवचनमा 'चंदिमा' रूप थाय छे अने बाकीना रूपो अकारातनी जेवा थाय छे'—जुओ पालिप्र० पृ० १३०–१३१ अने एना टिप्पणो।

ओपगवी, ओपगवा (औपगवी), वेई, वेआ (वैदी), सुप्पणेयी, सुप्पणेया (सौपर्णेयी), अक्खिई, अक्खिआ (आक्षिकी), थेणी, थेणा (स्थैणी) पुम्ही, पुम्हा (पौम्नी), साहणी, साहणा (साधनी) कुरुचरी, कुरुचरा (कुरुचरी) इत्यादि ।

३ छाया अने हरिद्रा शब्द प्राकृतमा ईकारांत पण बने छेः छाही, छाया (छाया), हलद्दी, हलद्दा (हरिद्रा)

स्त्रीलिंगी नामोने लागता प्राकृत प्रत्ययो

प०—	०	[1]आ, उ, ओ, ०
बी०—	म्	[1]आ, उ, ओ, ०
त०—	अ, [2]आ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०, छ०—	अ, [2]आ, इ ए	ण, णं
प०—	अ, [2]आ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिंतो	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
स०—	अ, [2]आ, इ, ए	सु, सुं

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ 'त्तो' अने 'म्' सिवायना प्रत्ययो पर रहेता पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे.

२ 'म्' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

३ ज्यां शून्य (०) छे त्यां शब्दोनुं मूळरूप पण वपराय छे अने जो मूळरूप ह्रस्वान्त होय तो तेने दीर्घांत करीने वापरवानु छे

१ आ प्रत्यय ईकारांत नामने ज लागी शके छे.

२ आ प्रत्ययने आकारांत नामने लगाडवानो नथी.

४ संबोधनना एकवचनमा ईकारांत अने ऊकारांत नामोनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी जेवु थाय छे

५ संबोधनना एकवचनमा इकारांत अने उकारांत नामोना अंत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

६ जे आकारांत शब्दोनु मूळ (संस्कृत) रूप अकारांत होय छे, ते शब्दोना अंत्य 'आ'कारनो, संबोधनना एकवचनमा 'ए' विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

७ संबोधनना एकवचनमा, बीजा [1]आकारांत शब्दोनु मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखु थाय छे

विशेषता

शौरसेनी, पैशाची अने मागधीमा पण स्त्रीलिंगी नामोने प्राकृतना ज प्रत्ययो लगाडवाना छे मात्र मागधीमा छट्ठी विभक्तिमा फेर छे अने ए आ प्रमाणे छे

फक्त आकारांत नामोने मागधीमा छट्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय अने बहुवचनमा 'हँ' प्रत्यय लागे छे जेमके,

मालाह	मालाहँ

स्त्रीलिंगी नामोने लागता अपभ्रंश प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
प०–	०	उ, ओ, ०
बी०–	०	उ, ओ, ०

१ जूओ पृ० २०४ नि० ५.

त०—	ए	हिं
च० छ०—	हे, ०	हुं, ०
पं०—	हे	हु
स०	हि	हिं
सं०—	०	हो, ०

अपभ्रंश प्रत्ययने लगता नियमोः

१ अपभ्रंशना प्रत्ययो लागता नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व अने दीर्घ थाय छे.

२ ज्यां शून्य छे त्यां पण उपरनो नियम लागु थाय छे.

प्राकृत रूपाख्यानो

[1]माला

प०—	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—	मालं	मालाउ, मालाओ, माला

[1] आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

माला

१	माला	माला, मालायो.
२	मालं	माला, मालायो.
३–५	मालाय	मालाहि, मालाभि.
४–६	मालाय	मालानं.
७	मालाय	मालासु.
	मालायं	
८ स०—	माले	माला, मालायो.

—जुओ पालिप्र० पृ० ९९–१००–१०१

त०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिँ, मालाहिं
च०,छ०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	[1]मालाण, मालाणं
	(मा० मालाह)	(मा० मालाहँ)
पं०—	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुंतो
स०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०—	[2]माले !, माला !	मालाउ !, मालाओ !, माला !

ए रीते नावा (नौ) गउआ (गौका) सद्धा (श्रद्धा), मेहा (मेधा) पण्णा (प्रज्ञा), तण्हा (तृष्णा), विज्जा (विद्या), पुच्छा (पृच्छा) चिंता, छुहा (क्षुध्-छुह) कउहा (ककुभ् कउह), निसा (निशा) अने दिसा (दिशा) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो 'माला' नी पेठे छे.

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां मागधीनो 'हँ' प्रत्यय पण लागे छे. जेमके—सरिआ + सरिआणं, सरिआहँ। माला+ मालाण, मालाहँ।

२ 'अम्मा' शब्दनुं संबोधननुं एकवचन 'अम्मो' पण थाय छे.

वाया (वाचा)

प०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.
स०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया

शेष रूपो ' माला 'नी जेवा.

ए रीते अच्छरसा (अप्सरस्), आसिसा (आशिष्), धूआ, दुहिआ ((दुहितृ), नणदा (ननान्द), नावा (नौ), पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसृ), बाहा (बाहु), माआ, माअ (य) रा, (मातृ) माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) अने ससा (स्वसृ) वगेरे आकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

---

[1]गइ (गति)

प०—	गई	गईउ, गईओ, गई
बी०—	गइ	गईउ, गईओ, गई

---

१ इकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

रत्ति (रात्रि)

१	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
२	रत्तिं	,,
३–५	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि
४–६	रत्तिया	रत्तीनं
७	रत्तिया	रत्तीसु
	रत्तियं	
८	रत्ति	रत्ती, रत्तियो

—जुओ पालिप्र० पृ० १०१–१०२

त०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईहि, गईहिं, गईहिँ
च०, छ०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईण, गईणं
प०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए, गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो	गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो, गईसुंतो
स०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईसु, गईसुं ([1]गइसु, गइसुं)
सं०—	गई ! गइ !	गईउ, गईओ, गई

ए प्रमाणे जुत्ति (युक्ति) माइ (मातृ) भूमि, जुवइ (युवति) धूलि, रइ (रति), बुद्धि, मइ (मति), दिहि, धिइ (धृति) अने सिप्पि, सुत्ति (शुक्ति) वगेरे इकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

[सं० 'रात्र्य' उपरथी पालिमा 'रत्यो,' 'रात्र्या' अने 'रात्र्या' उपरथी 'रत्या,' 'रात्र्याम्' उपरथी रत्यं अने 'रत्तिं' तथा 'रात्रौ' उपरथी 'रत्तो' रूपो पण बने छे]

१ जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१६

धेणु (धेनु)

प०—	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०—	धेणु	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
त०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च०, छ०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो	धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
स०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं०—	धेणू ! धेणु !	धेणूउ, धेणूओ, धेणू

१ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

यागु (यवागू)

१	यागु	यागू, यागुयो
२	यागु	,, ,,
३–५	यागुया	यागूहि, यागूभि
४–६	यागुया	यागून
७	यागुया यागुयं	यागूसु.
८ सं०	यागु	यागू, यागुयो.

—जूओ पालिप्र० पृ० १०६–१०७

ए प्रमाणे गउ, कच्चु, विज्जु (विद्युत्), उज्जु (ऋजु), पियगु (प्रियङ्गु) माउ (मातृ) दद्दु (दद्रु) पड्डु (पट्टु), गुरु, लहु (लघु) अने कण्डु वगेरे उकारांत शब्दोना रूपो 'धेणु' नी पेठे समजवाना छे

---

[1]नई (नदी)

प० –	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
बी० –	नइ	नईआ, नईउ, नईओ, नई
त० –	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि, नईहिं, नईहिँ

---

१ ईकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो

नदी

१	नदी	नदी, नदियो (नज्जो)
२	नदिं, नदिय	„ „ „
३–५	नदिया (नज्जा)	नदीहि, नदीभि
४–६	नदिया (नज्जा)	नदीनं
७	नदिया (नज्जा) (नज्जं)	नदीसु
८ सं०	नदि	नदी, नदियो (नज्जो)

—जुओ पालिप्र० पृ० १०३–१०४–१०५–१०६ तथा एना टिप्पणो

[सं० नद्य, नद्या, नद्यां अने नद्याम् उपरथी पालिमां उपर्युक्त नज्जो, नज्जा, नज्जा अने नज्जं रूपो बनेला छे—जुओ पृ० ३३ अ० २७ –द्य, य्य, र्य=ज्ज]

च०, छ०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईण, नईण
प०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए, नईत्तो, नईओ, नईउ, नईहिंतो	नइत्तो, नईओ, नईउ, नईहिंतो, नईसुंतो
स०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईसु, नईसुं
सं०—	नइ !	नईआ, नईउ, नईओ, नई

ए प्रमाणे गाई (गो) वावी (वापी), कयली (कदली), नारी, कुमारी, तरुणी, समणी (श्रमणी), साहुवी, [1]साहुणी (साध्वी), पुहवी (पृथ्वी), वाराणसी तणुवी (तन्वी) इत्थी (स्त्री) अने बहिणी (भगिनी) वगेरे ईकारांत शब्दोना रूपाख्यानो 'नई' नी पेठे छे

[2]वहू (वधू)

प०—	वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
बी०—	वहुं	वहूउ, वहूओ, वहू

---

१ जुओ पृ० ४१—वी—उवी अने ते उपरनुं टिप्पण

२ ऊकारांत स्त्रीलिंगी नामना पालिरूपो

वधू (प्रा० वहू)

१	वधू	वधू वधुयो
२	वधुं	„
३–५	वधुया	वधूहि, वधूभि,
४–६	वधुया	वधूनं

त०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ वहूए	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
च०,छ०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूण, वहूणं
प०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए वहुत्तो, वहूओ, वहूउ वहूहिंतो	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ, वहूहिंतो, वहूसुंतो
स०—	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूसु, वहूसुं
स०—	वहु !	वहूआ, वहूउ, वहूओ, वहू

ए प्रमाणे अज्जू (आर्या) पङ्गू, कणेरू, वामोरू, कदू (कद्रू) पीणोरू (पीनोरू) अने कक्कधू (कर्कन्धू) वगेरे ऊकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

प्राकृतना स्त्रीलिंगी रूपाख्यानोनी पेठे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण रूपाख्यानो समजवाना छे—शौरसेनीमा, मागधीमा अने अपभ्रंशमा पचमीना एकवचनमा (प्राकृतना 'ओ' अने 'उ' ने बदले) 'दो' अने 'दु' प्रत्यय वापरवाना छे, पैशाचीमा एने बदले 'तो' अने 'तु' वापरवाना छे अने मागधीनी जे खास विशेषता छे ते जणावी छे[1]

---

७ वधुया वधूसु
वधुय

८ स०—वधु वधू, वधुयो

—जूओ पाल्प्रि० पृ० १०७–१०८

१ जुओ पृ० २०९

अपभ्रंशरूपाख्यानो

माला

१	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला
२	माला, माल	मालाउ, मालउ, मालाओ, मालओ माल, माला.
३	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं.
४–६	मालाहे, मालहे माला, माल	मालाहु, मालहु, माला, माल
५	मालाहे, मालहे मालत्तो, मालादो मालादु, मालाहिंतो,	मालाहु, मालहु मालत्तो, मालादो मालादु मालाहिंतो, मालासुंतो
७	मालाहि, मालहि	मालाहि, मालहिं
८ सं०	माला, माल	मालाहो, मालहो माल, माला

मइ

१	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
२	मइ, मई	मइउ, मईउ मइओ, मईओ मइ, मई
३	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं

४–६	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु,
	मइ, मई	मइ, मई.
५	[1]मइहे, मईहे	मइहु, मईहु.
७	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं.
८ स०	मइ, मई	मइहो, मईहो,
		मइ, मई.

पइट्ठी (प्रविष्टा–पविट्ठा)

१	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ,
		पइट्ठिओ, पइट्ठीओ,
		पइट्ठी, पइट्ठि.
२	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ,
		पइट्ठिओ, पइट्ठीओ,
		पइट्ठी, पइट्ठि.
३	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं.
४–६	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु,
	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठी, पइट्ठि.
५	[1]पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु.
७	पइट्ठिहि, पइट्ठीहि	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
८ स०	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो
		पइट्ठी, पइट्ठि

धेणु

१	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ
		धेणुओ, धेणूओ

१ 'माला 'ना पंचमीना रूपानी पेठ अहीं मइत्तो, पइट्ठित्तो वगेरे रूपो पण समजवां–जूओ पृ० २१५

		धेणु, धेणू.
२	धेणुं, धेणूं	धेणुउ, धेणूउ
		धेणुओ, धेणूओ.
		धेणु, धेणू.
३	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं.
४–६	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु,
	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू.
५	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु.
७	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
८ स०—	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो,
		धेणु, धेणू

वहू

१	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
२	वहूं, वहुं	वहुउ, वहूउ
		वहुओ, वहूओ,
		वहु, वहू
३	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
४–६	वहुहे, वहूहे,	वहुहु, वहूहु,
	वहु, वहू	वहु, वहू.
५	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु

७ वहुहिं, वहूहि	वहुहिं, वहूहि.
८ स०–वहु, वहू	वहुहो, वहूहो
	वहु, वहू.

ए प्रमाणे बधा आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत शब्दोना अपभ्रंशरूपो बनावी लेवाना छे

[1]सर्वादि (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना प्राकृतरूपो, शौरसेनीरूपो, मागधीरूपो, पैशाचीरूपो, अने अपभ्रंशरूपो पूर्वे जणावेला साधारण स्त्रीलिंगी शब्दो प्रमाणे समजवाना छे

केटलाक स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना प्राकृत रूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे

[स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना 'आकारांत' अंगना रूपो 'माला'नी जेवा करवाना छे. ईकारांत अंगना रूपो 'नई'नी जेवा करवाना छे अने उकारांत अंगना रूपो 'धेणु'नी जेवा करवाना छे].

१ स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना पालिरूपो--

सव्वा (सर्वा) ना वधाराना रूपो

४–६ सव्वस्सा (सं० सर्वस्याः) सव्वासं (सं० सर्वासाम्)
सव्वासानं

७ सव्वस्सं (सं० सर्वस्याम्)—जुओ पालिप्र० पृ० १४० अने टिप्पण.

बाकी बधां 'माला'ना पालिरूपो जेवां

ती, ता, [२]णी, णा (तत्[३])

१	सा	तीआ, तीउ, तीओ, ती
		ताउ, ताओ, ता

१ पत्री अने त्रीजीना एकवचनमा तथा छठ्ठीना बहुवचनमा आ ईकारात अगनो प्रयोग थतो नथी

२ जूओ पृ० १४१ नु ण उपरनु टिप्पण

३ ता (तद्) ना वधाराना रूपो

१	सा	
३–५	तस्सा (स० तस्या)	ताहि ताभि
	ताय	नाहि, नाभ
	नस्सा	
	नाय	
	अस्सा	
४–६	तस्साय, तस्सा { स० तस्यै, तस्याः }	तास (स० तासाम्)
	ताय	तासान
	नस्साय, नस्सा	नास नासान
	नाय	
	अस्साय अस्सा	आस आसान
	तिस्साय, तिस्सा	सान
७	तस्स (स० तस्याम्)	
	तस्सा	
	नस्स, नस्सा	
	अस्स, अस्सा	
	तिस्स, तिस्सा	
	ताय, ताय	
	नाय, नाय	

यानी बधा माला 'ना पेठ

—जूओ पालिप्र० पृ० १८३ अने टिप्पण

२	त	तीआ, तीउ, तीओ, ती,
	ण	ताउ, ताओ, ता
३	तीअ, तीआ तीइ तीए,	तीहि, तीहिं, तीहिँ,
	ताअ, ताइ, ताए	ताहि, ताहिं, ताहिँ,
	(पै० नाए)	
४–६	से,	सिं,
	(तास) तिस्सा, तीसे	(तेसिं)
	तीअ, तीआ, ताइ, तीए,	
	ताअ, ताइ, ताए	ताण, ताण
स०	–(ताहि) तीअ, तीआ,	
	तीइ, ताए,	
	ताअ, ताइ, ताए	

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी पेठे

['णी' अने 'णा' अगना रूपो पण 'नई' अने 'माला'नी पेठे थाय छे]

जी[1], जा (यत्)

१	जा	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ जाओ, जा
२	ज	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ, जाओ, जा
४–६	जिस्सा, जीसे,	जाण, जाण
	जाअ, जाआ,	
	जीइ, जाए	
	जाअ, जाइ,	
	जाए	

---

१ जुओ पृ० २१९ उपरनु टिप्पण १

७ (जाहि), जीअ, जीआ,
जीइ, जीए,
जाअ, जाइ,
जाए

शेष रूपो 'नई' नी अने 'माला' नी जेवा.

---

[1]की, का (किम्)

१	का	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.
२	कं	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.

४–६ किस्सा, कीसे, (कास)
कीअ, कीआ, कीइ, कीए
काअ, काइ, काए काण, काणं.

७ (काहि), कीअ, कीआ,
कीइ, कीए,
काअ, काइ, काए

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा.

इमा, [2]इमी (इदम्)

१	इमिआ, इमा, इमी	इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी,

---

१ जुओ पृ० २१९ उपरनु टिप्पण १.

२ इम (इदम्) ना पालिरूपो:

१	अयं	इमा, इमायो.
२	इमं	,, ,,

		इमाउ, इमाओ, इमा
३	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए (पै० नाए)	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ (आहि, आहिं, आहिँ)
४–६	से, इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए	सिं इमीण, इमीणं, इमाण, इमाणं,

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी जेवा

३–५	इमाय	इमाहि, इमाभि
४–६	इमाय, इमिस्सा, इमिस्साय अस्सा, (सं० अस्याः) अस्साय (सं० अस्यै)	इमासं, इमासानं
७	इमायं, इमिस्सं, अस्सं (सं० अस्याम्)	इमासु

—जुओ पालिप्र० पृ० १८०–१८५

'एआ, 'एई

१	एसा, एस, इण, इणमो	एईआ, एईउ, एईओ, एई, एआउ, एआओ, एआ
४–६	से, एईअ एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए	सिं, एईण, एईण, एआण, एआण

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवा

'अमु (अदस्)

१	•अह, अमू	अमूउ, अमूओ, अमू

शेप 'धेणु' वत्

---

१ एता (एतद्) ना पालिरूपो

१ एसा
३– एताय, एतिस्सा (सं० एतस्या)
४–६ एताय, एतिस्सा एतिस्साय { सं० एतस्यै / एतस्याः }
७ एताय एताय
एतिस्स, एतस्स (सं० एतस्याम्)
बाकी बधा माला नी पेठे
—जुओ पालिप्र० पृ० १४४
[जुओ पृ० १४० १ टिप्पण]

---

२ 'अमु' ना पालिरूपो

१	अमु, अमु,	अमू, अमुयो
२	अमु	अमू, अमुयो
३–५	अमुया	अमूहि, अमूभि
४–६	अमुया, अमुस्सा	अमूसं, अमूसान

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दना 'माआ' अने 'मायरा' आवा बे रूपो जूदा जूदा अर्थमा थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे, एथी एना शौरसेनी वगेरेना बधा रूपो 'वाया'नी जेवा समजवाना छे, जेमके,

'माआ, मायरा (मातृ)

प० माआ,	माआउ, माआओ, माआ,
मायरा	मायराउ, मायराओ, मायरा

७ अमुय	अमूसु
अमुस्स	

—जुओ पालिप्र० पृ० १४८

१ जुओ पृ० २०४, नि० ५—'मायर' ने बदले 'माअर' पण थई शके छे.

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दना पालिरूपो

मातु (मातृ)

१ माता	माता, मातरा
२ मातर	माता, मातरे
३–९ मातरा	मातरेहि, मातरेभि.
मातुया	मातूहि, मातूभि
मत्या	
४–६ मातु	मातरान, मतान,
मातुया	मातून
मत्या	
७ मातार	मातरम,
मातुया	मातूसु.
मत्या	
मातुय, मत्य	
८ सं०—मात, माता	माता, मातरा.

—जुओ पालिप्र० पृ० १०८–१०९–११० अने एनां टिप्पण.

बी०—	माअ	माआउ, माआओ, माआ,
	मायर	मायराउ, मायराओ, मायरा.
त०—	माआअ, माआइ, माआए,	माआहि, माआहिं, माआहिँ,
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराहि, मायराहिं, मायराहिँ.
च० छ०—	माआअ, माआइ, माआए	माआण, माआणं ([1]माईण)
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराण, मायराणं
प०—	माआअ, माआइ, माआए, माअत्तो, माआओ, माआउ, माआहिंतो	माअत्तो, माआओ, माआउ, माआहिंतो, माआसुंतो,
	मायराअ, मायराइ, मायराए, मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहिंतो	मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहिंतो, मायरासुंतो
स०—	माआअ, माआइ माआए,	माआसु, माआसुं
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायरासु, मायरासुं
सं०—	माआ,	माआउ, माआओ, माआ,
	मायरा	मायराउ, मायराओ, मायरा.

[माआ (मातृ=माता+माआ) नु '[2]माया' बनावीने पण 'माआ' नी जेवा ज रूपो बनावी शकाय छे]

१ जुओ पृ० ५८ मातृ=माइ+माइण (सं० मातृणाम्)
२ जुओ पृ० १८ 'कादि' नो 'य' अ० ८

['मातृ' शब्दना 'माइ' अने 'माउ' एवां पण बे अंगो बने छे, पण रूपाख्यानने प्रसंगे ते बन्नेनो प्रयोग विरल जणाय छे'.]

सं० 'दुहितृ'नुं प्राकृत रूप 'धूआ' थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे एथी एनां बधां रूपो 'माळा'नी जेवां थाय छे.



ओकारांत 'गो' शब्दना स्त्रीलिंगी अंगो त्रण थाय छे जेमके; 'गोणी, गाई अने गउ. एमाना 'गउ' ना शौरसेनी वगेरेना बधा

१ जुओ हे० प्रा० व्या० ८–३–४६–"माईण" "माऊए समन्निअं वंदे" 'षड्भाषाचंद्रिका'मा तो ए बन्ने अंगोने रूपाख्यानने प्रसंगे बधी विभक्तिओमा वापरेला छे–"इदुद् मातुः" १–२–८३ पृ० १०८. 'माइ' नां रूपो 'गाइ'नी जेवां अने 'माउ'नां रूपो 'धेणु'नी जेवां थाय छे.

२ धीतु (दुहितृ) ना पालिरूपो

१	धीता	धीता, धीतरो.
२	धीतर, धीतं	धीतये, धीतरे.
३–५	धीतरा,	धीतरेहि, धीतरेभि,
	धीतुया	धीतूहि, धीतूभि.
४–६	धीतु,	धीतूनं
	धीतुया	धीतानं, धीतरानं
७	धीतरि,	धीतूसु,
	धीतुया	धीतरेसु.
	धीतुयं	

जुओ पालिप्र० पृ० ११०–१११

३ जुओ पृ० २०४ नि ५.

४ 'गो' शब्दना प्राकृत रूपांतरोमा 'गावी' 'गोणी' 'गोता' अने 'गोपोतलिका'ने पण गणावेला छे.–महाभाष्य पृ० ५०

रूपो बराबर 'धेणु'नी जेवा थाय छे अने 'गोणी' 'गाई'ना पण शौरसेनी वगेरेना बधा रूपो बराबर 'नई'नी जेवा बने छे, जेमके,

गउ (गो)

प०—	गऊ	गऊउ, गऊओ, गउ.
बी०—	गउ	गऊउ, गउओ, गउ.
त०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊहि, गऊहिं, गऊहिँ
च० छ०—	गऊअ, गऊआ. गऊइ, गऊए	गऊण, गऊणं.
पं०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए गऊत्तो, गऊओ गऊउ, गऊहिंतो	गऊत्तो, गऊओ, गऊउ, गऊहिंतो, गऊसुंतो.
स०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊसु, गऊसुं.
सं०—	गऊ, गउ,	गउउ. गऊओ, गउ.

[1]गाई, गोणी

प०—	गाई,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.

१ स्त्रीलिंगी 'गो' शब्दना पालिरूपो.

गो

१	गो, गावी	गावी, गावो, गवो.
२	गाविं, गावं, गवं	गावी, गावो, गवो.

	गोणी	गोणीआ गोणीउ, गोणीओ, गोणी
बी०—	गाइ,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई
	गोणि	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी.
त०—	गाईअ, गाईआ, गाईइ, गाईए	गाईहि, गाईहिं, गाईहिँ
	गोणीअ, गोणीआ, गोणीइ, गोणीए	गोणीहि, गोणीहिं, गोणीहिँ.

इत्यादि यथा ' नई ' नी जेम

संख्यावाचक शब्दो

विशेषताः

१ अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना सख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमा 'ण्ह' अने 'ण्ह' प्रत्यय लागे छे एगण्ह, एगण्ह। दुण्ह, दुण्ह। उभयण्ह, उभयण्ह वगेरे.

इक, एक, एग, एअ (एक)

आ शब्दना ते ते भाषाना पुल्लिगी रूपो 'सव्व'नां जेवा थाय छे, स्त्रीलिंगी रूपो 'माला'नी जेवा थाय छे अने नपुसकलिंगी रूपो नपुसकी 'सव्व'नी जेवा थाय छे. ए प्रमाणे बधा सख्यावाचक शब्दोमा यथासंभव समजवानु छे

१उभ, उह (उभ)

आ शब्दना रूपो बहुवचनमा ज थाय छे अने पु 'सव्व'नी पेठे छे.

---

१ सख्यावाचकशब्दना पालिरूपो

(पालिप्रकाशमा पृ० १५५ थी १६८ सुधीमा सख्यावाचक शब्दोना रूपो आपेला छे)

'उभ' ना पालिरूपो

१–२ उभो।
उभे।
३–५ उभोहि, उभोभि,
उभेहि, उभेभि।
४–६ उभिन्नं।
७ उभोसु, उभेसु।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५५

प०— उभे ।

बी०— उभे, उभा ।

त०— उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ ।

च० छ०—उभण्ह, उभण्ह ।

प०— उभत्तो, उभाओ, उभाउ,
उभाहि, उभेहि,
उभाहिंतो, उभेहिंतो,
उभासुंतो, उभेसुंतो ।

स०— उभेसु, उभेसुं ।

'उभ' ना अपभ्रंश रूपो 'सव्व'ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे छे.

---

[1]दु (द्वि) त्रणे लिंगना रूपो

आ शब्दना रूपो बहुवचनमां ज थाय छे

प०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।

बी०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।

त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ,
वेहि, वेहिं, वेहिँ ।

---

१ 'द्वि'ना पालिरूपो

१-२ दुवे,
द्वे ।

३- द्वीहि, द्वीभि ।

४-६ द्विन्नं, द्विन्न ।

७ द्वीसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १०६

→ १

च० छ०—दोण्ह, दोण्ह, दुण्ह, दुण्ह,
वेण्ह, वेण्ह, विण्ह, विण्हं ।

प०— दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो,
वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो ।

स०— दोसु, दोसु,
वेसु, वेसु ।

'दु' ना अपभ्रंश वगेरेना रूपो 'भाणु' ना बहुवचनांत रूपो जेवा छे.

---

[1]ति (त्रि) त्रणे लिंगना रूपो

प०— } तिण्णि ।
बी०— }

च० छ०— तिण्ह, तिण्ह ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि' ना बहुवचन रूपो जेवा छे.

---

१ पालिमां तो 'ति' (त्रि) शब्दना रूपो पुंलिंगमां, स्त्रीलिंगमां अने नपुंसकलिंगमां जुदां जुदां थाय छे, जेमके

	ति (पुलिंग)	ति (स्त्रीलिंग)	ति (नपुंसकलिंग)
१–२	तयो ।	तिस्सो ।	तीणि
३–५	तीहि,	तीहि,	तीहि,
	तीभि ।	तीभि ।	तीभि ।
४–६	तिण्णं	(तिस्स)	तिण्ण
	तिण्णन्न	तिस्सन्न ।	तिण्णन्न ।
७	तीसु —	तीसु । —	तीसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १९७

'चउ (चतुर्) त्रणे लिंगना रूपो –

तृतीया, पचमी अने सप्तमीना प्रत्ययो पर रहेता आ शब्दना अत्य 'उ' नो दीर्घ विकल्पे थाय छे.

प०– } चत्तारो, चउरो, चत्तारि ।
बी०– }

त०– चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ,

चउहि, चउहिं, चउहिँ ।

च० छ०–चउण्ह, चउण्हं.

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'भाणु'ना बहुवचनांत रूपो जेवा छे

---

१ पालिमा 'चतु' (चतुर्) शब्दना पण त्रणे लिंगमा रूपो जुदा जुदा थाय छे, जमके

	चतु (पुलिंग)	चतु (स्त्रीलिंग)	चतु (नपुसकलिंग)
१–२	चत्तारो, चतुरो ।	चतस्सो ।	चत्तारि ।
३–५	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।
४–६	चतुन्न ।	चतस्सन्नं ।	चतुन्न ।
७	चतूसु ।	चतूसु ।	चतूसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५७–१५८

'पंच (पञ्च) त्रणे लिंगना रूपो

प०—
बी०— } पच ।

त०— पचेहि, पचेहिं, पचेहिँ,
'पंचहि, पचहिं, पचेहिँ ।

च० छ०—पंचण्ह, पचण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'जिण'ना बहुवचनात रूपो जेवा छे.

ए रीते छ (षट्), सत्त (सप्तन्), अट्ठ (अष्टन्), नव (नवन्), दह, दस (दशन्), एआरह, एगारह, एआरस (एकादश), दुवालस, बारह, बारस (द्वादश), तेरह, तेरस (त्रयोदश), चोद्दह, चोद्दस, चउद्दह, चउद्दस (चतुर्दश), पण्णरह, पण्णरस (पञ्चदश),

---

१ पञ्च (त्रणे लिंगे सरखा)

१—२ पञ्च ।
३—५ पचहि, पचभि ।
४—६ पचन्न ।
७ पचसु ।

——जुओ पालिप्र० पृ० १५८

२ व्याकरणनो नियम जोता तो 'पचेहि' वगेरे 'ए' कार वाळा रूपो ज थई शके छे, आर्षप्राकृतमां 'पचहि' वगेरे 'ए'कार विनाना पण रूपो वपराएला छे जेमके,

["पचहिं कामगुणेहिं"
"पचहिं महव्वएहिं"
"पचहिं किरिआहिं"
"पचहिं समईहिं"——श्रमणसूत्र]

माटे अहीं ए बन्ने रूपो साथे देखाडेला छे.

सोलस, सोल्ह (षोडश), सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) अने अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) ए बधा शब्दोना रूपो 'पंच'नी पेठे समजवाना छे.

कइ (कति)

(आ शब्दना रूपो बहुवचनमां ज थाय छे)

प०— } कइ
बी०— }

च० छ०—कइण्ह, कइण्हं

शेषरूपो. ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि'ना बहुवचनांत रूपो जेवा छे.

नीचे जणावेला शब्दोमां जे शब्दो आकारांत छे तेना रूपो 'माला'नी जेवा जाणवाना छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेना रूपो 'गइ'नी जेवा जाणवाना छे.

एगूणवीसा	(एकोनविंशति)	एगवीसा इक्कवीसा एक्कवीसा	(एकविंशति)
वीसा	(विंशति)		

---

१ 'कति'ना पालिरूपो (क्रमे गोठवी)

कति ।
कतीहि,
कतीभि ।
कतीनं,
कतिनं ।
कतीसु ।
—जुओ पालिप्र० पृ० १५६.

२ जुओ पालिप्र० पृ० १५९–१६०

बावीसा (द्वाविंशति)	तेतीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्)
तेवीसा (त्रयोविंशति)	चउतीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्)
चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति)	पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्)
पणवीसा (पञ्चविंशति)	छत्तीसा (षट्त्रिंशत्)
छव्वीसा (षड्विंशति)	सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्)
सत्तावीसा (सप्तविंशति)	अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्)
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति)	एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्)
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्)	चत्तालिसा (चत्वारिंशत्)
तीसा (त्रिंशत्)	एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एकचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्)
एगतीसा, एक्कतीसा, एकतीसा (एकत्रिंशत्)	
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्)	

---

१ पालिभाषामां 'चउवीसा' शब्दनुं प्रथमानुं एकवचन 'चउवीस' थाय छे (जुओ पालिप्र० पृ० १६० नि० १२७) अने ए रूप प्राकृतसाहित्यमां पण वपराएलुं छे जेमके, 'चउवीसं पि जिणवरा' (चतुर्विंशतिस्तव)

आचार्य हेमचंद्र ए 'चउवीसं' रूपने 'द्वितीया विभक्ति'नुं समजे छे अने उपर्युक्त वाक्यमां 'द्वितीया'नो अर्थ घटतो नथी पण 'प्रथमा'नो अर्थ घटे छे तेथी "क्वचित् प्रथमा'ने बदले द्वितीया' पण वपराय छे" एम ए वाक्य आपीने जणावे छे -(जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७ पृ० १०८)

वेआलिसा वेआला दुचत्तालिसा	(द्विचत्वारिंशत्)
तिचत्तालिसा तेआलिसा तेआला	(त्रिचत्वारिंशत्)
चउचत्तालिसा चोआलिसा चोआला चउआला	(चतुश्चत्वारिंशत्)
पणचत्तालिसा पणयाला	(पञ्चचत्वारिंशत्)
छचत्तालिसा छायाला	(षट्चत्वारिंशत्)
सत्तचत्तालिसा सगयाला	(सप्तचत्वारिंशत्)
अट्ठचत्तालिसा अडयाला	(अष्टचत्वारिंशत्)
एगूणपण्णासा	(एकोनपञ्चाशत्)
पण्णासा	(पञ्चाशत्)
एगपण्णासा इक्कपण्णासा एक्कपण्णासा एगावण्णा	(एकपञ्चाशत्)
बावण्णा दुपण्णासा	(द्विपञ्चाशत्)
तेवण्णा तिपण्णासा	(त्रिपञ्चाशत्)
चोवण्णा चउपण्णासा	(चतुष्पञ्चाशत्)
पणपण्णा पणपण्णासा पंचावण्णा	(पञ्चपञ्चाशत्)
छप्पण्णा छप्पणासा	(षट्पञ्चाशत्)
सत्तावन्ना सत्तपण्णासा	(सप्तपञ्चाशत्)
अट्ठावन्ना अडवन्ना अट्ठपण्णासा	(अष्टपञ्चाशत्)
एगूणसट्ठि	(एकोनषष्टि)
सट्ठि	(षष्टि)
एगसट्ठि इगसट्ठि	(एकषष्टि)
बासट्ठि	(द्विषष्टि)
तेसट्ठि	(त्रिषष्टि)
चउसट्ठि चोसट्ठि	(चतुष्षष्टि)
पणसट्ठि	(पञ्चषष्टि)
छासट्ठि	(षट्षष्टि)
सत्तसट्ठि	(सप्तषष्टि)
अडसट्ठि अट्ठसट्ठि	(अष्टषष्टि)
एगूणसत्तरि	(एकोनसप्तति)

सत्तरि	(सप्तति)
एग[1]सत्तरि / इक्कसत्तरि	(एकसप्तति)
बा(वि)सत्तरि / बावत्तरि	(द्विसप्तति)
तिसत्तरि	(त्रिसप्तति)
चोसत्तरि / चउसत्तरि	(चतुस्सप्तति)
पण्णसत्तरि	(पञ्चसप्तति)
छसत्तरि	(षट्सप्तति)
सत्तसत्तरि	(सप्तसप्तति)
अट्ठसत्तरि	(अष्टसप्तति)
एगूणासीइ	(एकोनाऽशीति)
असीइ	(अशीति)
एगासीइ	(एकाशीति)
बासीइ	(द्व्यशीति)
तेसीइ	(त्र्यशीति)
चउरासीइ / चोरासीइ	(चतुरशीति)
पणसीइ	(पञ्चाशीति)
छासीइ	(षडशीति)
सत्तासीइ	(सप्ताशीति)
अट्ठासीइ	(अष्टाशीति)
नवासीइ	(नवाशीति)
एगूणनवइ	(एकोननवति)
नवइ	(नवति)
एगणवइ / इगणवइ	(एकनवति)
बाणवइ	(द्विनवति)
तेणवइ	(त्रिनवति)
चउणवइ / चोणवइ	(चतुर्नवति)
पण्णणवइ / पञ्चणवइ	(पञ्चनवति)
छण्णवइ	(षण्णवति)
सत्त(त्ता)णवइ	(सप्तनवति)
अट्ठ(ड)णवइ	(अष्टनवति)
ण(न)वणवइ	(नवनवति)
एगूणसय	(एकोनशत)
सय	(शत)
दुसय	(द्विशत)
तिसय	(त्रिशत)
बे सयाइ–सय–	(द्विशत)

---

१ 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' शब्द पण प्रयोगानुसार वपराय छे.

तिण्णि सयाइं–त्रणसें (त्रिशत)
चत्तारि सयाइं–चारसें (चतुश्शत)
इत्यादि.

सहस्स (सहस्र)
दह(स)सहस्स (दशसहस्र)
अयुअ(त) (अयुत)
लक्ख (लक्ष)
दस(ह)लक्ख (दशलक्ष)
पयुअ(त) (प्रयुत)
कोडि (कोटि)
कोडाकोडि (कोटाकोटि)



प्रकरण ११

कारक–विभक्त्यर्थ

जेम संस्कृतमां छ कारक छे तेम अहीं प्राकृतमां पण छे अने तेनी बधी व्यवस्था संस्कृतने अनुसारे समजी लेवानी छे. परंतु जे केटलाक खास विभक्त्यर्थो छे तेने अहीं जणावी दईए छीए

१ प्राकृतमां केटलेक ठेकाणे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी अने सप्तमीने स्थाने पण षष्ठी[1] विभक्ति वपराय छे –

सीमाधरस्स वंदे [सीमाधरं वन्दे]

धणस्स लद्धो [धनेन लब्ध]

चोरस्स बीहइ [चौराद् बिभेति]

अंतेउरस्स रमिउं आगओ [अन्तःपुरे रन्तुमागत]

२ कोई कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने बदले सप्तमी वपराय छे[2] –

---

१ संस्कृतमां पण षष्ठी विभक्तिनो आवो ज उपयोग थयलो छे

मातरं स्मरति ने बदले मातुः स्मरति ।

अन्नं नो देहि „ अन्नस्य नो देहि ।

फलैस्तृप्त „ फलानां तृप्त ।

अक्षैर्दीव्यति „ अक्षाणां दीव्यति ।

वृक्षात् पर्णं पतति „ वृक्षस्य पर्णं पतति ।

महत्सु बिभ्यति „ महतां बिभ्यति ।

—जुओ "षष्ठी शेषे" (पाणि० २–३–५०) तथा "शेषे" (हे० श० २–२–८१)

२ जुओ हेमप्राकृतव्याकरण "क्वचिद्‌द्वितीयादेः" ८–३–१३५ पृ० १६२ ।

[1]नयरे न जामि [नगरं न यामि]
[2]तेसु अलकिआ पुहवी [तैरलङ्कृता पृथ्वी]

३ क्याय क्याय पचमीने बदले तृतीया अने सप्तमी वपराय छे —
[3]चोरेण बीहइ [चौराद् बिभेति]
[4]अंतेउरे रमिउ आगओ राया [अन्तःपुराद् रन्त्वा आगतो राजा]

४ कोई ठेकाणे तो [5]सप्तमाने स्थाने द्वितीया पण वपराय छे —
विज्जुज्जोय भरइ रत्तिं [विद्युद्द्योते स्मरति रात्रिम्]

---

१ सस्कृतनी रीत पण आ वाक्यमा ‘नगर’ने ‘कर्म’ कही शकाय अने ‘आधार’ पण कही शकाय एटले ‘नगरं न यामि’ अने ‘नगरे न यामि’ ए बन्ने वाक्यो शिष्टसमत छे.

२ आ वाक्यमा जो ‘तेसु सतेसु’ (तेओनी विद्यमानतामा ’) एवो अर्थ विवक्षित होय तो सस्कृतमा पण ‘तैः अलङ्कृता पृथ्वी’ आ वाक्यने बदले ‘तेषु अलङ्कृता पृथ्वी’ आवु सप्तमीवालु वाक्य थई शके छे

३–४ अहीं जो ‘चोर’ने ‘भयना कारण’ तरीके अने ‘अतःपुर’ने रमनारना ‘आधार’ तरीके कहेवानो आशय होय तो सस्कृतमा पण ‘चौरेण बिभेति’ अने ‘अन्तःपुरे रन्त्वा’ वगेरे वाक्य थई शके छे

५ आर्षप्राकृतमा ठेकठेकाणे आ ‘तेण कालेण तेण समएण’ प्रयोग वपराएला छे, एनो अर्थ ‘ते काले अने ते समये’ थाय छे, तेथी आ अने आवा बीजा प्रयोगोमा ‘सप्तमी’ विभक्तिने बदले ‘तृतीया’ विभक्ति वपराएली छे एम आचार्य हेमचन्द्र जणावे छे —(जूओ हे० प्रा० व्या ८–३–१३७ पृ १०८) त्यारे आ प्रयोगनु

विवरण करतां नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव ए प्रयोगमां आवेला 'णं' ने वाक्यालंकाररूपे मानी ए प्रयोगने 'सप्तमी' विभक्तिवाळो पण जणावे छे. आचार्य अभयदेवनी दृष्टिए ए पदोनो पदच्छेद आ प्रमाणे छे।

'ते णं काले णं, ते णं समए णं'—"'ते' इति प्राकृतशैलीवशात् 'तस्मिन्' × × × 'णं' कारोऽन्यत्रापि वाक्यालंकारार्थः, × × काले × अवसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे, × × × समये कालस्यैव विशिष्टे भागे"—जूओ भगवती सूत्र श० पृ० १८ टीका, ज्ञाता० सूत्र टीका पृ० १ समिति, उपासकदशासूत्र टीका पृ० १ समिति.

ए प्रयोगनुं विवरण करतां आचार्य मलयगिरि पण आचार्य अभयदेवनी पेठे पूर्व प्रमाणे जणावे छेः—जूओ सूर्यप्रज्ञप्तिनी टीका पृ० १ समिति.

आचार्य अभयदेव ए पदोनुं संस्कृत 'तेन कालेन तेन समयेन' पण करे छे अने आ पक्षमां तेओ आ वाक्यमां तृतीयानो अर्थ घटावे छे पण 'तृतीया' ने स्थाने 'सप्तमी' होवानी सूचना करता नथी —"अथवा तृतीयैवेयम्, ततः 'तेन कालेन हेतुभूतेन, तेन समयेन हेतुभूतेनैव"—जूओ भगवतीसूत्र प०-पृ० १८ टीका.

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननु नाम 'आख्यात' छे अने कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने 'नाम' कहेवामा आवे छे.

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे.

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सह्यभेद). प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सह्यभेद) इत्यादि ।

कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे:

कर्तरि	वर्तमानकृदत, प्रेरकवर्तमानकृदत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदत ।
कर्मणि अने भावे-सह्यभेद	वर्तमानकृदंत. भविष्यत्कृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदत, भूतकृदत, विध्यर्थकृदंत, प्रेरक-भूतकृदंत, प्रेरकविध्यर्थकृदंत ।
भावेरूप	हेत्वर्थकृदंत अने संबंधकभूतकृदंत ।

आ प्रकरणमा अहीं जणावेला क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी समजूती आपवानी छे.

कर्तरिरूप

प्राकृतमा धातुओनी बे जात छे व्यंजनात धातु अने स्वरात धातु

१ व्यंजनात धातुना छेवटना व्यंजनमा 'अ'कार उमेराया पछी ज तेना रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरण-रूप लेखाय छे:

भण् + अ–भण–भणइ (भणति)

कह् + अ–कह–कहइ (कथयति)

सम् + अ–समइ (शाम्यति)

हस् + अ–हस–हसइ (हसति)

आव् + अ–आव–आवइ (आप्नोति)

सिंच् + अ–सिंच–सिंचइ (सिञ्चति)

रुन्ध् + अ–रुन्ध–रुन्धइ (रुणद्धि),

मुस् + अ–मुस–मुसइ (मुष्णाति)

तण् + अ–तण–तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे

पा + अ–पाअ–पाअइ, पाइ (पाति)

जा + अ–जाअ–जाअइ, जाइ (याति)

धा + अ–धाअ–धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)

झा + अ–झाअ–झाअइ, झाइ (ध्यायति)

जम्भा + अ–जम्भाअ–जम्भाइ (जृम्भते)

वाअ + अ–वाअ–वाअइ, वाइ (वाति)

मिला + अ–मिलाअ–मिलाअइ, मिलाइ–(म्लायति)

विक्की+विक्के + विक्केअ–विक्केअइ, विक्केइ (विक्रीणाति)

हो + अ–होअ–होअइ, होइ (भवति)

हो + अ–होअ–होइउण, होऊण (भूत्वा)

३ 'उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव' थाय छे'

ण्हु–ण्हव्+अ–ण्हव–ण्हवइ (ह्नुते)

निण्हवइ (निह्नुते)

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननु नाम '**आख्यात**' छे अने कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने '**नाम**' कहेवामां आवे छे.

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे:

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सह्यभेद), प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सह्यभेद) इत्यादि ।

कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे:

कर्तरि	वर्तमानकृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत ।
कर्मणि अने भावे-सह्यभेद	वर्तमानकृदंत, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत, भूतकृदंत, विध्यर्थकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत, प्रेरकविध्यर्थकृदंत ।
भावेरूप	हेत्वर्थकृदंत अने संबंधकभूतकृदंत ।

आ प्रकरणमां अहीं जणावेला क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी समजूती आपवानी छे.

कर्तरिरूप

प्राकृतमां धातुओनी बे जात छे: व्यंजनांत धातु अने स्वरांत धातु

१ व्यंजनांत धातुना छेवटना व्यंजनमां 'अ'कार उमेराया पछी ज तेनां रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरणरूप लेखाय छे:

भण् + अ–भण–भणइ (भणति)

कह् + अ–कह–कहइ (कथयति)

सम् + अ–समइ (शाम्यति)

हस् + अ–हस–हसइ (हसति)

आव् + अ–आव–आवइ (आप्नोति)

सिंच् + अ–सिंच–सिंचइ (सिञ्चति)

रुन्ध् + अ–रुन्ध–रुन्धइ (रुणद्धि)

मुस् + अ–मुस–मुसइ (मुष्णाति)

तण् + अ–तण–तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे

पा + अ–पाअ–पाअइ, पाइ (पाति)

जा + अ–जाअ–जाअइ, जाइ (याति)

धा + अ–धाअ–धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)

झा + अ–झाअ–झाअइ, झाइ (ध्यायति)

जम्भा + अ–जम्भाअ–जम्भाइ (जृम्भते)

वाअ + अ–वाअ–वाअइ, वाइ (वाति)

मिला + अ–मिलाअ–मिलाअइ, मिलाइ–(म्लायति)

विक्की+विक्के + विक्केअ–विक्केअइ, विक्केइ (विक्रीणाति)

हो + अ–होअ–होअइ, होइ (भवति)

हो + अ–होअ–होइऊण, होऊण (भूत्वा)

३ उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव' थाय छे

ण्हु–ण्हव्+अ–ण्हव–ण्हवइ (ह्नुते)

निण्हवइ (निह्नुते)

हु–हव्– हव–हवइ (जुहोति)

निहवइ (निजुहोति)

च्यु–चव्–चव–चवइ (च्यवते)

रु–रव्–रव–रवइ (रौति)

कु–कव्–कव–कवइ (कौति)

सू–सव्–सव–सवइ (सूते)

पसवइ (प्रसूते)

४ ऋवर्णांत धातुना अंत्य ऋवर्णनो 'अर्' थाय छे:

कृ–कर्–कर–करइ (करोति)

धृ–धर्–धर–धरइ (धरति)

मृ–मर्–मर–मरइ (म्रियते)

वृ–वर्–वर–वरइ (वृणोति, वृणुते)

सृ–सर्–सर–सरइ (सरति)

हृ–हर्–हर–हरइ (हरति)

तॄ–तर्–तर–तरइ (तरति)

जॄ–जर्–जर–जरइ (जीर्यति)

५ उपान्त्यमां ऋवर्णवाळा धातुना ऋवर्णनो 'अरि' थाय छे.

कृष्–करिस्–करिस–करिसइ (कर्षति)

मृष्–मरिस्–मरिसइ (मृष्यते)

वृष्–वरिस्–वरिसइ (वर्षति)

हृष्–हरिस्–हरिसइ (हृष्यति)

६ धातुना 'इवर्ण' अने 'उवर्ण'नो अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे.

नी–नेइ (नयति)

नेंति (नयन्ति)

उड्डी–उड्डेइ (उड्डयते)
उड्डेंति (उड्डयन्ते)
जि–जेऊण (जित्वा)
नी–नेउण (नीत्वा)

७ केटलाक धातुना उपान्त्य स्वरनो दीर्घ थाय छे
रुष्–रूस्–रूस–रूसइ (रुष्यति)
तुष्–तूस्–तूस–तूसइ (तुष्यति)
शुष्–सूस्–सूस–सूसइ (शुष्यति)
दुष्–दूस्–दूस–दूसइ (दुष्यति)
पुष्–पूस्–पूस–पूसइ (पुष्यति)
सीसइ (शिष्यते) इत्यादि ।

८ धातुना नियत स्वरने स्थाने प्रयोगानुसारे बीजो स्वर पण थाय छेः
वि०–हवइ–हिवइ (भवति)
चिणइ–चुणइ (चिनोति)
सद्दहण–सद्दहाण (श्रद्धानम्)
धावइ–धुवइ (धावति)
रुवइ–रोवइ (रोदीति) इत्यादि ।
नि०–दा–दे–देइ (ददाति, दाति, द्यति)
ला–ले–लेइ (लाति)
विहा–विहे–विहेइ (विदधाति, विभाति)
ब्रू–बे–बेमि (ब्रवीमि) इत्यादि ।

९ केटलाक धातुओनो अंत्य व्यंजन प्रयोगानुसारे बेवडो थाय छे:
वि०–फुडइ, फुट्टइ (स्फुटति)
चलइ, चल्लइ (चलति)

पमीलइ पमिल्लइ (प्रमीलति)

निमीलइ, निमिल्लइ (निमीलति)

समीलइ, सामिल्लइ, (समीलति)

उम्मीलइ, उम्मिल्लइ (उन्मीलति) इत्यादि।

नि०—जिम्मइ (जेमति) परिअट्टइ (पर्यटति)

सकइ (शक्नोति) पलोट्टइ (प्रलोटति)

लग्गइ (लगति) तुट्टइ (त्रुटति)

मग्गइ (मृगयते)। नट्टइ (नटति)

नस्सइ (नश्यति) सिव्वइ (सीव्यति)

कुप्पइ (कुप्यति) इत्यादि।

१० केटलाक धातुओना (प्राय संस्कृतनो विकरण उमेरावा पछी 'य' छेडावाला धातुओना) अंत्य व्यंजननो प्रयोगानुसारे 'ज' थाय छे

सपज्जइ (संपद्यते) सिज्जइ (स्विद्यति)

खिज्जइ (खिद्यते) सिज्जिरी (स्वेत्त्री, स्वेदयित्री)

इत्यादि।

११ उपरना नियमोथी तैयार थएला धातुना अंगने वर्तमानकाळमां नीचे जणावेला कर्तृबोधक प्रत्ययो लागे छे—

	एकव०—	बहुव०—
१ पुरुष	[१]मि,	मो, मु, म.
२ पुरुष	सि, से,[२]	इत्था, ह
३ पुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे[४]

सर्वपुरुष—सर्ववचन—ज्ज, ज्जा

१ 'मि' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारांत अगना अंत्य 'अ'नो विकल्पे 'आ' थाय छे

२ 'मो', 'मु' अने 'म' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारांत अगना अंत्य 'अ'नो विकल्पे 'आ' अने 'इ' थाय छे

३ उपर जणावेला बधा प्रत्ययो पर रहेता धातुना अकारांत अगना अंत्य 'अ'नो विकल्पे 'ए' थाय छे

[नामना रूपोमा पालिमा अने प्राकृतमा सविशेष समानता छे तेथी नामना प्रकरणमा स्थळे स्थळे समानता बतावया पालिना रूपो सविस्तर मूकेला छे पण धातुना रूपोमा तेम नथी, तेथी आ प्रकरणमा ज्या ज्या जेटली समानता छे तेटलो उल्लेख करवामा आवशे पण धातुना पालिरूपोनी वीगतथी नोंध नहि करवामा आवे]

१ केटलेक ठेकाणे 'मि' प्रत्ययने बदले 'मि' प्रत्यय पण वप रायलो छे —मर, मरामि (म्रिये) । सक, सक्कामि (शक्नोमि)।

२ 'से' अने 'ए' तथा शौरसेनीनो 'दे' अने पैशाचीना 'ते' प्रत्यय, धातुना अकारांत अगनेज लगाडवाना छे अर्थात् अकारांत सिवायना धातुना अगने ए बधे प्रत्ययो लागता नथी —

पा + सि—पासि । पा + इ—पाइ (पासे, अने पाए, रूप थाय नहि)

३ कोई ठेकाणे आ 'इत्था' प्रत्यय त्रीजा पुरुषना एकवचनमा पण वपराएलो छे —हाइत्था, रोयइ, रायइ—(रोचते)

४ 'इरे'— प्रत्यय क्वचित् क्वचित् त्रीजा पुरुषना एकवचनमा पण वपराएलो छे. जेमक—सूसइ, सूसइरे—(शुष्यति)

४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय पर रहेता तो धातुना अकारांत अगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशभाषामा वर्तमानकाळने लगती विशेषतावाळी प्रक्रिया आ प्रमाणे छे —

शौरसेनी–मागधी

१ पु०	मि	मो, मु, म ।
२ पु०	सि, से[1]	इत्था, ध, ह ।
३ पु०	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे ।

पैशाची

१ पु०		शौरसेनी प्रमाणे
२ पु०		"
३ पु०	ति, ते	शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंश

१ पु०	उं, मि	हु, मो, मु, म ।
२ पु०	हि, सि, से	हु, ह, ध, इत्था ।
३ पु०	दि, दे, इ, ए	हिं, न्ति, न्ते, इरे ।

प्राकृतमा वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागता धातुना अगमा जे जे थवानु जणाव्यु छे ते बधु शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशना वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागता पण समजी लेवानु छे

धातुने लागता कोई पण प्रत्ययो लगाडवा पहेला पण प्राकृतमा धातुने लगती जे जे प्रक्रिया (विकरण वगेरेनी प्रक्रिया)

१ जूओ पृ० २७४ ३

२ जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

जणावी छे ते बधी शौरसेनी, पैशाची, मागधी अने अपभ्रंशमा समजी लेवानी छे.

व्यंजनांत धातुना रूपाख्यानो

हस्

एकवचन

	प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– [1]मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
१ पुरुष–	हससि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसउं, हसेउं, हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा।
२ पुरुष–	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसहि, हसेहि, हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा।
३ पुरुष–	हसइ, हसेइ,	हसदि, हसेदि,	हसति, हसेति,	हसदि, हसेदि,

१ जुओ स-अ पृ० २७ नि० (१)-हशमि वगेरे.

हसए,	हसदे,	हसते,	हसदे,
हसेए,	हसेदे,	हसेते,	हसेदे,
हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसइ,
हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेइ,
			हसए,
			हसेए,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—हसमो,	प्राकृत	प्राकृत	हसहुं,
हसामो,	रूपो	प्रमाणे	हसेहुं;
हसिमो,	प्रमाणे		हसमो,
हसेमो,			हसामो,
हसमु,			हसिमो,
हसामु,			हसेमो;
हसिमु,			हसमु,
हसेमु,			हसामु,
हसम,			हसिमु,
हसाम,			हसेमु,
हसिम,			हसम,
हसेम;			हसाम,

हसेज्ज,			हसिम,
हसेज्जा ।			हसेम;
			हसेज्ज,
			हसेज्जा ।
२ पुरुष–हसइत्था,	हसइत्था,	शौरसेनी	हसइत्था,
[1]हसित्था,	हसित्था,	प्रमाणे	हसित्था,
हसेइत्था,	हसेत्था,		हसेत्था,
हसह,	हसध,		हसध,
हसेह,	हसेध,		हसेध,
हसेज्ज,	हसह,		हसह,
हसेज्जा ।	हसेह,		हसेह,
	हसेज्ज,		हसहु,
	हसेज्जा ।		हसेहु,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा ।
३ पुरुष–हसन्ति,	[2]प्राकृत	शौरसेनी	हसहिं,
हसेंति,	रूपो	रूपो	हसेहिं,
[3]हसिंति,	प्रमाणे	प्रमाणे	हसंति,
हसंते,			हसेंति,

---

१ जूओ पृ० ९६ स्वरलोप नि० ६–हस + इत्था=हसित्था ।

२ प्राकृतना हसति, हसंते वगेरे रूपो उपरथी शौरसेनीमा हसंदि, वगेरे रूपो पण प्रायः यथासंभव थइ शके छे–जूओ पृ० ३५ नि० (१) न्त=न्द ।

३ जूओ पृ० ४ नि० १–हसेंति + हसिंति ।

हसेंते,	हसिंति,
हसिते,	हसंते,
हसइरे,	हसेंते,
हसिरे,	हसिंते,
हसेइरे	हसइरे,
हसेज्ज,	हसिरे,
हसेज्जा ।	हसेइरे,
	हसेज्ज,
	हसेज्जा ।

आ रीते आगळ जणावेल बधां व्यंजनांत (धातुनां) अंगोनां वर्तमानकाळनां रूपो समजवानां छे.

स्वरांत धातुनां रूपाख्यानो

हो (भू)

स्वरांत धातुओनी प्रक्रिया व्यंजनांत धातुनी ('हस्' नी) सरखी छे. मात्र फेर आ छेः

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वचे पण 'ज्ज' 'ज्जा' विकल्पे उमेराय छे.

एकवचन

प्राकृतरू०— शौरसेनीरू०— पैशाचीरू०— अपभ्रंशरू०— मागधीरू०—

१ पुरुष—[1]होअमि,	प्राकृत	प्राकृत	होअउं
होआमि,	रूपो	रूपो	होएउं
होएमि,	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमि

---

१ पहेलेथी नव रूपो विकरणवाळां छे अने बाकी बधां विकरण विनानां छे. विकरण माटे जुओ पृ० २४५ नि० २

(अ) होएज्जमि, | होआमि
होएज्जामि, | होएमि
होएज्जेमि, | होएज्जमउ, होएज्जमि
होएज्ज, | होएज्जामि
(आ) होएज्जामि, | होएज्जेउ, होएज्जेमि
होएज्जा, | होएज्ज
होमि, | होएज्जाउ, होएज्जामि
(अ) होज्जमि, (हुज्जमि) | होएज्जा
होज्जामि, | होउ
होज्जेमि, | होमि
होज्ज (हुज्ज) | होज्जमउ, होज्जमि
(आ) होज्जामि | होज्जामि
होज्जा (हुज्जा) | होज्जेउ, होज्जेमि
होज्ज
होज्जाउ, होज्जामि
होज्जा।

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०,—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष-	होअसि	प्राकृत	प्राकृत	होअहि,
	होएसि	रूपो	रूपो	होएहि,
	होअसे।	प्रमाणे	प्रमाणे	होअसि
	होएसे			होएसि
	होएज्जसि			होअसे
	होएज्जेसि			होएसे

होएज्जसे	होएज्जाहि
होएज्जेसे	होएज्जेहि
होएज्जासि	होएज्जासि
होसि	होएज्जेसि
होज्जासि	होएज्जसे
होज्जेसि	होएज्जेसे
होज्जसे	होएज्जाहि
होज्जेसे	होएज्जासि
होज्जासि	होहि,
होज्ज	होसि
होज्जा	होज्जहि, होज्जासि
	होज्जेहि, होज्जेसि
	होज्जसे
	होज्जेसे
	होज्जाहि, होज्जासि
	होज्ज
	होज्जा।

३ पुरुष–होअइ	होअदि	होअति	होअइ,	होअदि
होएइ	होएदि	होएति	होएइ,	होएदि
होअए	होअदे	होअते	होअए,	होअदे
होएए	होएदे	होएते	होएए,	होएदे
होएज्जइ	होएज्जदि	होएज्जति	होएज्जइ,	होएज्जदि
होएज्जेइ	होएज्जेदि	होएज्जेति	होएज्जेइ,	होएज्जेदि
होएज्जए	होएज्जदे	होएज्जते	होएज्जए,	होएज्जदे
होएज्जेए	होएज्जेदे	होएज्जेते	होएज्जेए,	होएज्जेदे

होएज्जाइ	होएज्जादि	होएज्जाति	होएज्जाइ,	होएज्जादि
होइ	होदि	होति	होइ,	होदि
होज्जइ	होज्जदि	होज्जति	होज्जइ,	होज्जदि
होज्जेइ	होज्जेदि	होज्जेति	होज्जेइ,	होज्जेदि
होज्जए	होज्जदे	होज्जते	होज्जए,	होज्जदे
होज्जेए	होज्जेदे	होज्जेते	होज्जेए,	होज्जेदे
होज्जाइ	होज्जादि	होज्जाति	होज्जाइ,	होज्जादि
होज्ज	होज्ज	होज्ज		होज्ज
होज्जा	होज्जा	होज्जा		होज्जा

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—होअमु	प्राकृत	प्राकृत	होअहुं
होआमु	रूपो	रूपो	होएहु
होइमु, होएमु	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमु
होअमो			होआमु
होआमो			होइमु
होइमो, होएमो			होएमु
होअम			होअमो
होआम			होआमो
होइम, होएम			होइमो
होएज्जमु			होएमो
होएज्जामु			होअम
होएज्जिमु			होआम

होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होमु
होमो
होम
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु
होज्जेमु
होज्जमो
होज्जामो
होज्जिमो
होज्जेमो
होज्जम
होज्जाम
होज्जिम
होज्जेम
होज्ज

हाइम
होएम
होएज्जहुं
होएज्जेहुं
होएज्जमु
होएज्जामु
होएज्जिमु
होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होहुं
होमु
होमो
होम
होज्जहुं
होज्जेहुं
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु

प्राकृतरू०	शौरसेनीरू०	पैशाचीरू०	अपभ्रंशरू०
होज्जा			होज्जेमु
			होज्जमो
			होज्जामो
			होज्जिमो
			होज्जेमो
			होज्जम
			होज्जाम
			होज्जिम
			होज्जेम
			होज्जाहु
			होज्ज
			होज्जा ।

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष—होअह	होअह, होअध	शौरसेनी	होअहु
होएह	होएह, होएध	प्रमाणे	होएहु
होएज्जह	होएज्जह, होएज्जध		होएज्जहु, होएज्जेहु
होएज्जेह	होएज्जेह, होएज्जेध		होएज्जाहु
होएज्जाह	होएज्जाह, होएज्जाध		होज्जहु, होज्जेहु
होज्जह	होज्जह, होज्जध		होज्जाहु
होज्जेह	होज्जेह, होज्जेध		होहु
होज्जाह	होज्जाह, होज्जाध		होअह, होअध
होह	होह, होध		होएह, होएध
होअइत्था	होअइत्था		होएज्जह, होएज्जध

होएइत्था	होएइत्था			होएज्जेह, होएज्जेध
होएज्जइत्था	होएज्जइत्था			होएज्जाह, होएज्जाध
होएज्जेइत्था	होएज्जेइत्था			होज्जह, होज्जध
होएज्जाइत्था	होएज्जाइत्था			होज्जेह, होज्जेध
होज्जइत्था	होज्जेइत्था			होज्जाह, होज्जाध
होज्जेइत्था	होज्जइत्था			होह, होध
होज्जाइत्था	होज्जाइत्था			होअइत्था
होइत्था (होत्था[1])	होइत्था			होएइत्था
होज्ज	होज्ज, होज्जा			होएज्जइत्था
होज्जा				होएज्जेइत्था
				होएज्जाइत्था
				होज्जेइत्था
				होज्जइत्था
				होज्जाइत्था
				होइत्था
३ पुरुष—होअंति	[2]प्राकृत	शौरसेनी		होअहिं
होएंति	रूपो	प्रमाणे		होएहिं
होअते	प्रमाणे			होएज्जहिं
होएते				होएज्जेहिं
होअइरे				होएज्जाहिं
होएइरे				होज्जहिं
होएज्जंति				होज्जेहिं

---

१ आ प्रयोग आर्षप्रयोगमां 'अभूत्' अर्थमां वपराएलो छे—जुओ भूतकाळनुं प्रकरण पृ० २६४.

२ जुओ पृ० २५३, २ टिप्पण.

होज्जाहिं
होहिं
होअंति, होएंति
होअंते, होएंते
होअइरे, होएइरे
होएज्जंति, होएज्जेंति
होएज्जते, होएज्जेंते
होएज्जइरे, होएज्जेइरे
होएज्जाति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुंति)
होंते (हुंते)
होइरे
होज्जंति, होज्जेंति
होज्जते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जाति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा

होएज्जेंति
होएज्जंते
होएज्जेंते
होएज्जइरे
होएज्जेइरे
होएज्जाति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुंति)
होंते (हुंते)
होइरे
होज्जंति, होज्जेंति
होज्जंते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जाति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा।

ए रीते दरेक स्वरांत धातुनी (दा, पा, नीं, ना, नू वगेरेनी) वर्तमानकाळनी बधी प्रक्रिया 'हो'नी पेठे समजवानी छे.

भूतकाळ

(स्वरात अने व्यंजनात धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमा भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके–ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत. ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमा तद्दन जूदा जूदा छे. परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामा तेम नथी. तेमा तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे. एटलु ज नहि पण ते त्रणे काळना, त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया ते रूपमा प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामा क्याय कशो भेद जणातो नथी.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमा भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे –

१ [1]पु०
२ पु० } ईअ[2] (व्यंजनात धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०
,, } [3]सी, ही, हीअ (स्वरात धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमा पण 'ज' अने 'जा' प्रत्यय वपराय छे –होज, होजा–(अभूत्)

२ पालिमा त्रीजा पुरुषना एकवचनमा 'ई' अने 'इ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना 'ईअ' प्रत्यय साथे मळता आवे छे पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६

३ पालिमा बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमा परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना 'सी' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे जेम प्राकृतमा त्रण पुरुषमा एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरात धातुने लगाडवामा आवे छे तेम पालिमा त्रणे पुरुषमा एक सरखो 'सि' प्रत्यय स्वरात धातुने लगाडवामा आवे छे मात्र पालिनो ए 'सि' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमा अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छे पालिप्र० २१८ नि० १७९

व्यंजनांत धातु–हस + ईअ–हसीअ ।

कर + ईअ–करीअ ।

भण् + ईअ–भणीअ ।

ए रीते व्यंजनांत धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे

स्वरांत धातु–हो + सी–होसी } हो + ही–होही } हो+हीअ–होहीअ }
होअसी } होअही } होअहीअ }

पा + सी–पासी } पा + ही–पाही } पा + हीअ–पाहीअ }
पाअसी } पाअही } पाअहीअ }

ठा + सी–ठासी } ठा + ही–ठाही } ठा + हीअ–ठाहीअ }
ठाअसी } ठाअही } ठाअहीअ }

ने + सी–नेसी } ने + ही–नेही } ने + हीअ–नेहीअ }
नेअसी } नेअही } नेअहीअ }

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ ।

उड्डे + सी–उड्डेसी, उड्डेअसी, उड्डेही, उड्डेअही, उड्डेहीअ, उड्डेअहीअ ।

ए रीते स्वरांत धातुना भूतकाळना रूपो साधवाना छे

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करतां केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रंथोमां वपराएला छे, आर्षरूपोमां विशेषे करीने

पालिरूपो

एकव०

१ अहोसि

२ अहासि

३ अहोसि

–जूओ पालिप्र० पृ० २१८ नि० १८०–पृ० २१९ नि० २८१

त्था, इत्थ, इत्था, इंसु अने अंसु, ए चार प्रत्ययो वपराएला छे. तेमा 'त्था' अने 'इत्था,' घणे ठेकाणे एकवचनमा वपराया छे अने 'इंसु' तथा 'अंसु' घणे ठेकाणे बहुवचनमा वपराया छे. ए जातना केटलाएक आर्षरूपो जोवाथी एवुं अनुमान बांधी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमा 'त्था' अने 'इत्था' वपराया छे अने बहुवचनमा 'इंसु' अने 'अंसु' वपराया छे. जेमकेः—

[1]हो + त्था–होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

भुञ्ज + इत्था–भुञ्जित्था (भुक्तवान्)

---

१ आ 'होत्था' 'पहारित्थ' 'विहरित्था' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने 'करिंसु' 'पुच्छिंसु' 'आहंसु' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा शोधी शकाय छे. पालिभाषामा त्रीजा पुरुषना एकवचनमा आत्मनेपदी 'इत्थ' अने बहुवचनमा परस्मैपदी 'इंसु,' 'इंसुं,' अने 'अंसु' प्रत्ययो वपराएला छे. उपर्युक्त आर्षरूपोमा वपराएलो 'इत्था' पालिना ए 'इत्थ'नुं रूपांतर जणाय छे, 'पहारित्थ' रूपमा तो पालिनो जेवोने तेवो 'इत्थ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना 'इंसु' अने 'अंसु' ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्षरूपोमा वपराया छे. जेम संस्कृतमा ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिना रूपाख्यानोमा धातुनी पूर्वे 'अ' उमेराय छे तेम पालिमा छे पण प्राकृतमा नथी.

पालिरूपो भू

एकव० ३ अभवित्थ ('इत्थ' प्रत्ययवाळु)

बहुव० ३ अगमिंसु, अगमंसु ('इंसु' अने 'अंसु' प्रत्ययवाळुं)

—जुओ पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६–१७७ तथा पृ० ३२० 'गम'नां रूपो अने टिप्पण.

री + इत्था–रीइत्था (अरयिष्ट)
विहर् + इत्था–विहरित्था (विहृतवान्)
सेव् + इत्था–सेवित्था (सेवितवान्)
पहार् + इत्थ–पहारेत्थ (प्रधारितवान्)
गम्–गच्छ + इंसु–गच्छिंसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मुः)
प्रच्छ–पुच्छ + इंसु–पुच्छिंसु (पृष्टवन्तः)
कृ–कर + इंसु–करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षुः, चक्रुः)
नृत्य्–नच्च + इंसु–नच्चिंसु (नृत्तवन्तः)
ब्रू–आह + अंसु–आहंसु (आहुः)

संस्कृतमां भूतकाळना जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उपरथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे. जेमकेः—

सं॰— अब्रवीत्– अब्बवी (प्रा॰)
अकार्षीत्– अकासी (,,)
अभूत्– अहू (,,)
अवोचत्– अवोच (,,)
अद्राक्षुः– अदक्खू (,,)
अकार्षम्– अकरिस्स (,,) इत्यादि.

प्राचीन प्राकृतमां–आर्षप्रयोगोमां–आवां रूपाख्यानो घणां वपराएलां छे.

---

१ श्रीहेमचंद्रे पोताना प्राकृत–व्याकरणमां आ आर्षरूपो माटे कोई जातनो उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

भविष्यत्काळ

संस्कृतमा भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके–श्वस्तनभविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति). ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदा जूदा छे. परतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी–तेमा तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखा नोखा छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखा छे.

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था

---

१ भविष्यत्काळना उपर जणावेल प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमा तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुनेज लागेला छे –

भू पालिरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि, होहिस्सामि	होहाम, होहिस्साम.
२	होहिसि, होहिस्ससि	होहिथ, होहिस्सथ
३	होहिति, होहिस्सति	होहंति, होहिस्संति वगेरे

जूओ पालिप्र० पृ० २०८ 'होहिति' वगेरे रूपो.

२ पु०	हिसि, हिसे[1]	हित्था, हिह
३ पु०	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे
सर्वपुरुष सर्ववचन	ज्ज, ज्जा	

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययो:

शौरसेनीमा वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमा 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. ए उपरात पहेला पुरुषना एकवचनमा एक 'स्सं' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके;

१ पु०	स्सं, स्सिमि[2]	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम ।
२ पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था ।
३ पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे ।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'ए' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

२ संस्कृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र संस्कृतना 'स्य' ने बदले पालिमा 'स्स' वपराय छे:

परस्मैपद	१	स्सामि	स्साम
	२	स्ससि	स्सथ
	३	स्सति	स्सति
आत्मनेपद	१	स्सं	स्साम्हे
	२	स्ससे	स्सव्हे
	३	स्सते	स्संते

शौरसेनीना उपर जणावेला प्रत्ययो साथे पालिना आ प्रत्ययो मळता आवे छे:—

जूओ पालिप्र० २०८ नि० १३०

पैशाचीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु०	शौरसेनी प्रमाणे	
२ पु०	,,	
३ पु०	एय्य	शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंशना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स' अने 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. जेमके,

१ पु०	सउ, स्सिउ, समि, स्सिमि	सहु, स्सिहुं, समो, स्सिमो, समु, स्सिमु, सम, स्सिम ।
२ पु०	सहि, स्सिहि,ससि, स्सिसि, ससे, स्सिसे	सहु, स्सिहु, सह, स्सिह, सध, स्सिध, सइत्था, स्सिइत्था ।
३ पु०	सदि, सदे, सइ, सए स्सिदि, स्सिदे, स्सिइ, स्सिए	सहिं, संति, संते, सइरे । स्सिहिं, स्सिंते, स्सिंते, स्सिइरे,

---

उपर जणावेला भविष्यत्काळनां बधा प्रत्ययो पर रहेता पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

रूपाख्यानो—

भण

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष–	भणिस्सं,	भणिस्सं	शौरसेनी	भणिसउं,
	भणेस्सं,	भणेस्सं	प्रमाणे	भणेसउं,
	भणिस्सामि,	भणिस्सिमि		भणिस्सिउं
	भणेस्सामि,	भणेस्सिमि		भणेस्सिउं
	भणिहामि,			भणिसमिं
	भणेहामि,			भणेसमि
	भणिहिमि,			भणिस्सिमि
	भणेहिमि			भणेस्सिमि
सर्व पुरुष अने सर्व वचन	भणेज्ज			
	भणेज्जा			
२ पुरुष–	भणिहिसि	भणिस्सिसि	शौरसेनी	भणिसहि,
	भणेहिसि	भणेस्सिसि	प्रमाणे	भणेसहि,
	भणिहिसे	भणिस्सिसे		भणिस्सिहि
	भणेहिसे	भणेस्सिसे		भणेस्सिहि
				भणिससि
				भणेससि
				भणिस्सिसि
				भणेस्सिसि
				भणिससे
				भणेससे

			भणिस्सिसे
			भणेस्सिसे
३ पुरुष—भणिहिइ	भणिस्सिदि	मनेय्य[1]	भणिसदि
भणेहिइ	भणेस्सिदि		भणेसदि
भणिहिए	भणिस्सिदे		भणिसदे
भणेहिए	भणेस्सिदे		भणेसदे
			भणिसइ
			भणेसइ
			भणिसए
			भणेसए
			भणिस्सिदि
			भणेस्सिदि
			भणिस्सिदे
			भणेस्सिदे
			भणिस्सिइ
			भणेस्सिइ
			भणिस्सिए
			भणेस्सिए

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—भणिस्सामो	भणिस्सिमो	शौरसेनी प्रमाणे	भणिसहु
भणेस्सामो	भणेस्सिमो		भणेसहु
भणिहामो	भणिस्सिमु		भणिस्सिहु
भणेहामो	भणेस्सिमु		भणेस्सिहु

१ जुओ पृ० २३ नि० (१)

	भणिहिमो	भणिस्सिम		भणिसमो
	भणेहिमो	भणेस्सिम		भणेसमो
	भणिस्सामु			भणिस्सिमो
	भणेस्सामु			भणेस्सिमो
	भणिहामु			भणिसमु
	भणेहामु			भणेसमु
	भणिहिमु			भणिस्सिमु
	भणेहिमु			भणेस्सिमु
	भणिस्साम			भणिसम
	भणेस्साम			भणेसम
	भणिहाम			भणिस्सम
	भणेहाम			भणेस्सिम
	भणिहिम			
	भणेहिम			
	भणिहिस्सा			
	भणेहिस्सा			
	भणिहित्था			
	भणेहित्था			
२ पुरुष–	भणिहित्था	भणिस्सिह	शौरसेनी	भणिसहु
	भणेहित्था	भणेस्सिह	प्रमाणे	भणेसहु
	भणिहिह	भणिस्सिध		भणिस्सिहु
	भणेहिह	भणेस्सिध		भणेस्सिहु
		भणिस्सिइत्था		भणिसह
		भणेस्सिइत्था		भणेसह
				भणिस्सिह

भणेस्सिह
भणिसध
भणेसध
भणिस्सिध
भणेस्सिध
भणिसइत्था
भणेसइत्था
भणिस्सिइत्था
भणेस्सिइत्था
भणिसहिं
भणेसहिं
भणिस्सिहिं
भणेस्सिहिं
भणिसति
भणेसति
भणिस्सिति
भणेस्सिति
भणिसते
भणेसते
भणिस्सिते
भणेस्सिते
भणिसइरे
भणेसइरे
भणिस्सिइरे
भणेस्सिइरे

३ पुरुष—भणिहिंति	भणिस्सिति	शौरसेनी प्रमाणे	
भणेहिंति	भणेस्सिति		
भणिहिंते	भणिस्सिते		
भणेहिंते	भणेस्सिते		
भणिहिइरे	भणिस्सिइरे		
भणेहिइरे	भणेस्सिइरे		

['ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग प्राकृतनी पेठे शौरसेनी वगेरे बधी भाषाओमा करवानो छे]

ए रीते, व्यजनात धातुना भविष्यत्काळनां बधी जातना रूपो समजवाना छे अने प्राकृतरूपोनो (भणिहिइ वगेरेनो) उपयोग अपभ्रशमा यथासभव थइ शके छे

हो (भू)

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वच्चे भविष्यत्काळमा पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' विकल्पे आवे छे.

आगळ जणावेला नियमो प्रमाणे 'हो' धातुना (बधा स्वरात धातुना) छ अगो थाय छे अने ते छ अंगोने भविष्यत्काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी अने ए प्रत्ययनिमित्तक थतो फेरफार ए अगोमा करवाथी स्वरात धातुना बधा रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

छ अगो हो—हो, होअ, होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा.
पा—पा, पाअ, पाएज्ज, पाएज्जा. पाज्ज, पाज्जा
नी—नी, नीअ, नीएज्ज, नीएज्जा, निज्ज, निज्जा.

[बधा स्वरात धातुना छ छ अगो उपर्युक्त रीते करी लेवाना छे]

जे रीते 'भण्'ना बधी जातना रूपो आगळ बताववामा आव्या छे ते ज रीते आ छ ए अगना प्रत्येकना बधी जातना रूपो बनावी लेवाना छे. जेमके,

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रशरू०—
१ पुरुष—	होस्सं	होस्सिमि	शौरसेनी	होसउ
	होइस्स	होइस्सिमि	प्रमाणे	होइसउ

होएस्स	होएस्सिमि	होएसउ
होएज्जिम्स	होएज्जिस्सिमि	होएज्जिसउ
होएज्जेस्स	होएज्जेस्सिमि	होएज्जसउ
होएज्जास्स (ज्जस्स)	होएज्जा (ज्ज) स्सिमि	होएज्जासउ
होज्जिम्स	होज्जिस्सिमि	होज्जिसउ
होज्जेस्स	होज्जेस्सिमि	होज्जेसउ
होज्जास्स (ज्जस्स)	होज्जा (ज्ज) स्सिमि	होज्जासउ

[प्राकृत, शौरसेना, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनो मात्र एक ज प्रत्यय लगाडीने नमूनारूपे 'हो' ना ए ठए अगना रूपो उपर आपेला छे, ए ज प्रकारे दरेक प्रत्यय लगाडीने 'हो' ना (स्वरान्त धातुना) बधा रूपो समजी लेवाना छे]

ए ज रीते 'हो' नी पेठ पा, ला, दा, मिला, गिला अने था वगेरे स्वरांत धातुओना दरेकना उ छ अगो करी बधा रूपाख्यानो बनावी लेवाना छे

भविष्यत्कालना सस्कृत सिद्धरूपोने पण वर्णविकारना नियमो लगाडी प्राकृतमा वापरी शकाय छे जेमके —

स०— भोक्ष्याम =भोक्खामो (प्रा०)
भविष्यति=भविस्सइ („)
करिष्यति=करिस्सइ („)
चरिष्यति=चरिस्सइ („)
भविष्यामि=भविस्सामि („) इत्यादि

आर्षप्रयोगोमा केटलाक रूपो तो आ ज प्रकारना वपराएला छे.

क्रियातिपत्ति–(परोक्षभविष्य)

ज्यारे शरतवाळा बे वाक्योनु एक संयुक्त वाक्य बनेल होय अने तेमा देखाती बन्ने क्रियाओ कोइ सांकेतिक क्रिया जेवी जणाती होय त्यारे आ 'क्रियातिपत्ति' नो प्रयोग थाय छे.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना प्रत्ययोः

सर्व पुरुष, सर्व वचन } ज्ज, ज्जा, अन्त, माण

धातुने 'न्त,' 'माण' प्रत्यय लाग्या पछी तैयार थएल अकारांत अंगना ते ते भाषा प्रमाणे नामनी प्रथमा विभक्ति जेवा ज रूपाख्यानो थाय छे.

व्यंजनांत–भणेज्ज, भणेज्जा, भणतो, भणमाणो } सर्व पुरुष, सर्व वचन.

स्वरांत—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो } " "

---

[1]आज्ञार्थ

१ पुरुष– मु मो

---

१ पालिमा वपराता आज्ञार्थ अने विध्यर्थ प्रत्ययो आ प्रमाणे छे

		आज्ञार्थ		विध्यर्थ	
परस्मैपद	१	मि	म	एय्यामि (प्रा० एज्जामि) ए,	एय्याम (प्रा० एज्जाम).
	२	हि	थ	एय्यासि (प्रा० एज्जासि) ए	एय्याथ (प्रा० एज्जाह)
	३	तु	अन्तु.	एय्य (प्रा० एज्ज) ए,	एय्यु
आत्मनेपद	१	ए	आमसे.	एय्य, ए	एय्याम्हे.
	२	स्सु	व्हो.	एयो	एय्यव्हो
	३	त	अन्त.	एथ	एर

—जुओ पालिप्र० पृ० १९१ पंचमी तथा पृ० १९४ सप्तमी.

२ पुरुष— सु, *इज्जसु, *इज्जहि, *इज्जे, हि ह
(अप० इ, उ, ए)
३ पुरुष— उ (शौ० दु) न्तु
सर्व पुरुष, सर्व वचन—ज्ज, ज्जा

उपरना बधा प्रत्ययो पर रहेता धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो ए[*] थाय छे.

'मु' अने 'मो' प्रत्यय पर रहेता धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' अने 'इ' विकल्पे थाय छे.

अकारांत अंगने लागेला 'हि' प्रत्ययनो लोप थाय छे.

हस—

१ पु०—	हसामु, हसिमु, हसेमु, हसमु.	हसामो, हसिमो, हसेमो, हसमो.
२ पु०—	हससु, हसेसु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस.	हसह, हसेह.
३ पु०—	हसउ, हसेउ.	हसंतु, हसेंतु.

सर्व पु० सर्व वचन—हसेज्ज, हसेज्जा.

पालिना विध्यर्थप्रत्ययो थोडा रूपांतर साथे प्राकृतमां वपराया छे: प्राकृतमां धातुना विध्यर्थक रूपोमां जे 'एज्ज' अने 'एज्जा' नो अंश आवे छे ते पालिना 'एय्य' अने 'एय्या' नुं अकारवाळुं रूपांतरमात्र छे अने ए पालिप्रत्ययो साथे बताबेलुं छे.

* आ त्रणे प्रत्ययो धातुना अकारांत अंगने ज लागे छे.

* कोई ठेकाणे तो 'ए' ने बदले 'आ' पण थई जाय छे. जेमके—सुण-'सुणेउ' ने बदले सुणाउ (शृणोतु)

हो–

१ पु०–	होआमु, होइमु.	होआमो, होइमो,
	होएमु, होअमु,	होएमो, होअमो,
	[1]होएज्जामु, होएज्जिमु,	होएज्जामो, होएज्जिमो,
	होएज्जेमु, होएज्जमु,	होएज्जेमो, होएज्जमो,
	होज्जामु, होज्जिमु,	होज्जामो, होज्जिमो,
	होज्जेमु, होज्जमु,	होज्जेमो. होज्जमो,
	होमु, होज्ज, होज्जा.	होमो, होज्ज, होज्जा.

पूर्वे प्रमाणे 'हो' ना छ अगो बनावी आज्ञार्थना बधा रूपाख्यानो 'हस' नी पेठे साधवाना छे. अने ए रीते बधा स्वरांत धातुनां (दा, ला, पा वगेरेना) रूपाख्यानो समजवाना छे.

[शौरसेनीनो प्रत्यय मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां पण वापरवानो छे]

शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपाख्यानो

हस्

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे.
२ पु०	हससु वगेरे ,, ,,	हसह वगेरे ,, ,,
३ पु०	हसदु, हसेदु	हसंतु वगेरे ,, ,,

अपभ्रंशनां रूपाख्यानो

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हसि, हसु, हसे, हससु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसह वगेरे ,, ,

१ जुओ पृ० २५४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' नी वपराश.

३ पु०	[1]हसदु, हसेदु, हसउ, हसेउ	[2]हसतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

हो

१ पु०	होआमु वगेरे प्राकृत प्रमाणे होइ, होउ, होए,	होआमो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	होअसु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	होअह वगेरे प्राकृत प्रमाणे
३ पु०	होअदु, होएदु होअउ, होएउ	होअतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

ए रीते दरेक व्यंजनांत अने स्वरांत धातुओनां रूपो करी लेवानां छे.

विध्यर्थनी बधी प्रक्रिया आज्ञार्थना जेवी छे, विशेष ए छे के, सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां एक 'ज्जइ' प्रत्यय वधारे लागे छे, ए 'ज्जइ' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' 'ए' थाय छे

सर्वपुरुष } होज्जइ, होज्ज, होज्जा (भवेत्)
सर्ववचन } हसेज्जइ, हसेज्ज, हसेज्जा (हसेत)

[आर्षप्रयोगोमां विध्यर्थसूचक केटलाक खास रूपो मळी आवे छे, ते आ छे —

---

१ जुओ पृ० १० असंयुक्त 'हादि' गेय–दष्ट=दष्ट

२ जुओ पृ० १८ [illegible] वि० (१)

सिया	(स्यात्)
'चरे	(चरेत्)
पढे	(पठेत्)
अच्छे	(आच्छिन्द्यात्)
अब्भे	(आभिन्द्यात्)

आ रूपो विध्यर्थसूचक संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी सीधी रीते वर्णविकारना नियमो द्वारा सधाएला छे.' ते हकीकत तेने पडखे ( ) आ निशानमा आपेला रूपो उपरथी जणाइ आवे छे ए रीते बीजा संस्कृतरूपो उपरथी पण प्राकृतरूपो साधी शकाय छे]

अनियमित रूपाख्यान

'अस्—थवु

वर्तमानकाळ

१ पुरुष	अत्थि, म्हि, 'असि	अत्थि, म्हो, म्ह.
२ पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि.
३ पुरुष	अत्थि	अत्थि.

---

१ पालिमा पण त्रणे पुरुषना एकवचनमा विध्यर्थसूचक 'ए' प्रत्यय वपराएल छे (जूओ पृ० २७५ १ टिप्पण) ए अनुसारे पण आ आर्षरूपो साधी शकाय छे

२ प्राकृतमा 'अस' धातुनां घणा थोडा रूपो थाय छे, भूतकाळ सिवाय बीजा अर्थमा एक मात्र 'अत्थि' रूपथी पण काम चाली शके छे पालिमा 'अस्' ना दरेक काळवार नोखा नोखा रूपो थाय छे अने पालिना ए रूपो, संस्कृत रूपो साथे घणा मळतॉ आवे छे.

भूतकाळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } आसि, अहेसि ।

विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भविष्यत्काळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } अत्थि ।

अ (पालिरूपो)

वर्तमाना—	१ अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह (अम्हस)
	२ असि, अहि	अत्थ
	३ अत्थि	सन्ति
सत्तमी—	१ अस्स	अस्साम
(विध्यर्थ)	२ अस्स	अस्सथ
	३ अस्स, सिया	अस्सु, सियु.
पञ्चमी—	१ अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह.
(आज्ञार्थ)	२ अहि,	अत्थ.
	३ अत्थु,	सन्तु
अद्यतनी—	१ आसि	आसिम्ह
(भूतकाळ)	२ आसि	आसित्थ
	३ आसि	आसु, आसिंसु (आसु)

—जुओ पालिप्र० पृ० १७८–१९८–१९२–२२३ 'अस्' ना रूपो

३ जुओ आचारांगसूत्रनो आरंभ—

"पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहं अंसि" इत्यादि.
आ वाक्यस्थ संस्कृतना 'अस्मि' रूपनुं रूपांतर जणाय छे.

[1]कृ–करवुं

मात्र भूतकाळ अने भविष्यत्काळमा 'कृ' धातुनो 'का' आदेश थाय छेः

भूतकाळ

कासी, काही, काहीअ, काअसी, काअही, काअहीअ.

भविष्यत्काळ

फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमा 'काहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे

[2]काहिइ, काहिसि, काहिमि इत्यादि ।

दा–देवु.

मात्र भविष्यत्काळमा प्रथम पुरुषना एकवचनमा 'दा' धातुनु 'दाहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधा रूपो 'हो' धातुनी सरखा छे.

दाहं, दाहिमि, दाहिसि, दाहिइ, इत्यादि ।

---

१ 'कृ' नु भूतकाळसूचक 'अकासि' अने 'अकासिं' (त्रीजा पुरुषनु एकवचन अने प्रथम पुरुषनु एकवचन) रूप पालिमा थाय छे, ए, प्राकृतना 'कासी' रूप साथे मळतु गणाय खरु.—जूओ पालिप्र० पृ० २२५ 'कृ'ना रूपो.

२ प्राकृतरूपो साथे मळता आवता 'कृ'ना भविष्यत्काळना पालिरूपो आ प्रमाणे छे

१	काहामि	काहाम.
२	काहिसि	काहिथ.
३	काहिति	काहिंति.

—जूओ पालिप्र० पृ० २०९ 'कृ' ना रूपो.

मात्र भविष्यत्काळमा नीचेना धातुओना नीचे प्रमाणे आदेशो थाय छे

[1]श्रु– सोच्छ।	दृश–दच्छ।	भिद्–भेच्छ।
गम– गच्छ।	मुच–मोच्छ।	भुज्–भोच्छ।
रुद्– रोच्छ।	वच–वोच्छ।	
विद– वेच्छ।	छिद–छेच्छ।	

आ धातुओना भविष्यत्काळ संबंधी रूपाख्यानो 'भण' धातुनी जेवां थाय छे विशेषता ए छे के, आ धातुओने लागता भविष्यत्का-

[1] प्राकृतमा 'श्रु' वगेरे धातुओना 'सोच्छ' वगेरे अंगो बने छे तेम पालिमा पण बने छे

पालिअंगो

श्रु—	सोस्स–	प्रथम पुरुषनु एकवचन–	सोस्सं
गम—	गच्छ–		
रुद्—	रुच्छ	,,	गच्छिस्सामि
		,,	रुच्छिस्सामि
दृश	{ दक्ख / दिच्छ	तृतीय पुरुषनु एकवचन–	दिच्छति.
मुच	मोक्ख	,,	मोक्खति
वच	वक्ख	,,	वक्खति.
छिद	छेच्छ	,,	छेच्छति
भुज्	भोक्ख	,,	भोक्खति

—जूओ पालिप्र० पृ० २०६–२०७

[वर्णपरिवर्तनना नियमद्वारा 'श्रु' वगेरेना भविष्य रूपोमाथी पण उपर जणावेला प्राकृत अने पालिना नीपजावी शकाय छे. दृक्ष्यति, मोक्ष्यति, मोक्ष्यते, वक्ष्यति, छेत्स्यति, रुत्स्यति (संस्कृत) जोप्याति– जूओ धम्मपद, धम्मच्छ, नि० २२ पृ० ३० तथा–च्छ नि० २६, पृ० ३२ अने चतुक 'स्यादि' शोध पृ० १५]

ळना जेटला प्रत्ययो 'हि' आदिवाळा छे तेमाना 'हि' नो लोप विकल्पे थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमा ए वधा धातुओनु एक अनुस्वारात रूप पण वधारे थाय छे

१ पुरुप–सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि ।

२ पुरुप–सोच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि, सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे ।

३ पुरुप–सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ । सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए । इत्यादि ।

[सूचना–आख्यातने लगता वधी भापाना (प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रशना) प्रत्ययो आगळ जणावला छे, आ चालु प्रकरणमा प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे आख्यातने लगती हकीकत जणाववानी छे, तेमा मात्र प्राकृतना ज एक एक प्रत्ययद्वारा वधा उदाहरणो देखाडेला छे तो अभ्यासीए पोतानी मेळे प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे अगोने शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रश भापाना प्रत्ययो लगावी ते ते भापाना रूपो बनावी लेवा]

प्रेरकरूप

प्रेरक अग बनाववानी रीत

१ धातुने अ, ए, आव अने आवे [1]प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक अग तैयार थाय छे

---

१ पालिमा पण साधारण रीते प्रेरणाना अर्थमा 'अ,' 'ए,' 'आप' अने 'आपे' लगाडवाथी धातुमाथना चार अगो बने छे –

२ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय पर रहेता धातुना उपान्त्य 'अ'नो 'आ' थाय छे

धातु	प्रेरक अंगो
कृ–कर्	कार, कारे, कराव, करावे।
हस्	हास, हासे, हसाव, हसावे।
शम्–सम्–	साम, सामे, समाव, समावे।
दृश–दरिस्–	दरिस, दरिसे, दरिसाव, दरिसावे।
भ्रम्–भम्–	भाम, भामे, भमाव, भमावे।
क्षम्–खम्–	खाम, खामे, खमाव, खमावे। इत्यादि।

(कृ) कार, कारे, कारापे, कारापे
(पच्) पाच, पाचे, पाचाप, पाचापे.
(हन्) घात, घाते, घाताप, घातापे.
(गम्) गाम, गामे, गच्छाप, गच्छापे
(ग्रह्) गाह, गाहे, गाहाप, गाहापे
(चिन्त्) चिंताप, चिंतापे
(चुर्) चोराप, चोराप
(बुध्) बोध, बोधे, बुज्झाप, बुज्झापे.

पालिमां वपराता 'आप' अने 'आपे' ज प्राकृतमां वपराता 'आव' अने 'आवे' छे (जुओ पृ० २४ प–व, अं० १९)

—जुओ पालिप्र० पृ० २२७–२२९.

१ 'आवि' अने 'आवे' प्रत्यय पर रहेता पण आ नियम लागे छे एम कोईनो मत छे

कोई–	हेमचंद्र–
कारावइ।	करावेइ।
हासाविओ।	हसाविओ।

ए प्रकारे धातुमात्रना प्रेरक अंगो तैयार करी लेवाना छे.

३ उपान्त्यमा गुरु स्वरवाळा (स्वरादि वा व्यंजनादि) धातुने उपर जणावेल प्रत्ययो उपरात विकल्पे 'अवि' प्रत्यय लगाडवाथी पण तेनु प्रेरक अग तैयार थाय छे

धातु–	प्रेरक अगो–
तुप्–तोपि–तोसि–	तोसवि, तोस, तोसे, तोसाव, तोसावे ।
घुप्–घोपि–घोसि–	घोसवि, घोस, घोसे, घोसाव, घोसावे ।
मुप्–मोपि–मोसि–	मोसवि, मोस, मोसे, मोसाव, मोसावे ।
दुप्–दूपि–दूसि	दूसवि, दूस, दूसे, दूसाव, दूसावे ।
दोसि	दोसवि, दोस, दोसे, दोसाव, दोसावे ।
दुह्–दोहि–	दोहवि, दोह, दोहे, दोहाव, दोहावे ।
मुह्–मोहि–	मोहवि, मोह, मोहे, मोहाव, मोहावे ।
मक्ष्–माक्षि–मक्खि–	मक्खवि, मक्ख, मक्खे, मक्खाव, मक्खावे ।
तक्ष्–ताक्षि–तक्खि–	तक्खवि, तक्ख, तक्खे, तक्खाव, तक्खावे ।
पार–पारि–	पारवि, पार, पारे, पाराव, पारावे ।
चिल्ल्–चिल्लि–	चिल्लवि, चिल्ल, चिल्ले, चिल्लाव, चिल्लावे ।
जीव–जीवि–	जीववि, जीव, जीवे, जीवाव, जीवावे ।
लुञ्च्–लुञ्चि–लुंचे–	लुंचवि, लुंच, लुंचे, लुंचाव, लुंचावे ।
शुप्–शोपि–सोसि	सोसवि, सोस, सोसे, सोसाव, सोसावे.
चूप्–चूपि–चूसि–	चूसवि, चूस, चूसे, चूसाव, चूसावे ।

इत्यादि

ए रीते उपान्त्यगुरुवाळा धातुओनुं प्रेरक अग बनावी लेवानु छे.

४ भम (भ्रम) धातुनु प्रेरक अग 'भमाड' पण थाय छे.
भम–भमाड, भाम, भामे, भमाव, भमावे ।

ए रीते तैयार थएल प्रेरक अंगोने ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेना दरेक प्रकारना रूपाख्यानो तैयार थाय छे–ए रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया आगळ आवेल कर्तरिरूपाधिकारमा आवी गई छे..तो पण अहीं उदाहरण तरीके केटलाक रूपाख्यानो दर्शाववामा आवे छे.

वर्तमानकाळ

१ पु०–खामेमि, खामामि, खामामो,-[1]मु,-म, खामिमो, मु, म,
खाममि, खामेमि, खामेमो, मु,-म, खाममो, मु,-म ।
खामेमो-मु,-म,
खमावेमि, खमावामि, खमावामो,-मु,-म, खमाविमो, मु,-म,
खमावमि, खमावेमि खमावेमो,-मु,-म, खमावमो,-मु,-म,
खमावेमो,-मु, म. इत्यादि ।
खामेज्ज, खामेज्जा, खमावेज्ज, खमावेज्जा ।

भूतकाळ

सर्वपुरुष, सर्ववचन–तोसवि-सी, ही, हीअ, तोस-सी,-ही,-हीअ,
तोसे-सी,-ही,-हीअ, तोसाव-सी,-ही,-हीअ,
तोसावेसी,-ही,-हीअ । इत्यादि ।

भविष्यत्काळ

३ पु०–भक्खवि-हिइ, भक्ख हिइ, भक्खे-हिइ, भक्खाव-हिइ,
भक्खावे हिइ इत्यादि ।

१ –'मु' –'म' वगेरे प्रत्ययो मूकेला छे, तो मूळ अंगने ए प्रत्ययो लगाडी 'खामामो'नी पेठे 'खामामु' 'खामाम' वगेरे रूपो पोतानी मेळे बनावी लेवा अने हवे पछी ज्यां आवु आवे त्यां पण आ रीते ज समजी लेवु.

क्रियातिपत्ति–

सर्वपुरुष, सर्ववचन–भक्खविंतो–विमाणो,–विज्ज,–विज्जा।

भक्खतो,–क्खमाणो,–क्खज्ज,–क्खज्जा।

भक्खेंतो,–क्खेमाणो,–क्खेज्ज,–क्खेज्जा।

भक्खावतो,–क्खावमाणो,–क्खावज्ज,–क्खावज्ज।

भक्खावेंतो, -वेमाणो, -वेज्ज, -वेज्जा। इत्यादि।

विध्यर्थ–आज्ञार्थ

२. पु०–हाससु, -सेसु, हासेज्जसु, हासेज्जहि, हासेज्जे, हास।

हासेह्रु, हासेहि।

हसा-वसु,-वेसु,-वेज्जसु, वेज्जहि,-वेज्जे, हसाव।

हसावेसु, हसावेहि।

हासेज्जइ, हासेज्ज, हासेज्जा, हसावेज्जइ, हसावेज्ज, हसावेज्जा।

इत्यादि।

ए रीते प्रत्येक प्रेरक अगने बधी जातना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेना रूपाख्यानो समजी लेवाना छे.

ज्यारे प्रेरकसद्यभेद, प्रेरकवर्तमानकृदत, प्रेरकभूनकृदत अने प्रेरकभविष्यत्कृदत बनाववु होय त्यारे पण प्रेरकअगने ज ते सद्यभेद वगेरेना प्रत्ययो लगाडी तेना रूपाख्यानो बनावी लेवाना छे. (आ सबधेनी विशेष माहिती सद्यभेदाधिकार अने कृदताधिकारमा जणाववानी छे).

नामधातु

प्रेरकप्रक्रिया सिवाय संस्कृतमां बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेमके-[1]सन्नंतप्रक्रिया, यङंतप्रक्रिया, यङ्लुगंतप्रक्रिया अने नामधातुप्रक्रिया. परंतु प्राकृतमां ए प्रक्रियाओ माटे कोई खास विशेष

---

१ पालिमां पण सन्नंत, यङन्त, यङ्लुगन्त अने नामधातुनी प्रक्रिया संस्कृतनी पेठे थाय छे —

सन्नंत-	बुभुक्खति	(बुभुक्षते)
	जिघच्छति	(जिघत्सति)
	पिवासति	(पिपासति)
	जिगिसति	(जिगीषति)
		(जिहीर्षति)
	चिकिच्छति, तिकिच्छति	(चिकित्सति)
	वीमंसते	(मीमांसते)
सन्नंतप्रेरक-	बुभुक्खयति	(बुभुक्षयति)
यङंत-	लालप्पति	(लालप्यते)
	दद्दल्लति	(जाज्वल्यते)
यङ्लुगंत-	चङ्कमति	(चङ्क्रमीति)
	जङ्गमति	(जङ्गमीति)
	लालपति	(लालपीति)
नामधातु-	पब्बतायति	(पर्वतायते-पर्वत इव आचरति)
	छत्तीयति	(छात्रीयति पुत्रम्)
	अतिहत्थयति	(अतिहस्तयति-हस्तिना अतिक्रामति)
	उपवीणयति	(वीणया उपगायति)
	कुसलयति	(कुशलं पृच्छति)

—पालिप्र० पृ० २२९-२३३

विधान तो नथी अने प्राकृत साहित्यमा ए प्रक्रियाना रूपाख्यानो उपलब्ध थाय छे एथी कल्पी शकाय छेके, ते ते प्रक्रियाना(सस्कृत) सिद्ध रूपोमा, आगळ जणावेल वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार करी ते रूपोनो प्रयोग करवामा आवे (ल) छे जेमके—

संस्कृत	प्राकृत
शुश्रूषति—	सुस्सूसइ । (सन्नत)
लालप्यते—	लालप्पइ । (यङंत)
	चकमइ । (यङ्लुवत)
चङ्क्रमीति—	चम्मण । (चङ्क्रमणम्)
	इत्यादि ।

मात्र नामधातु माटे विशेषता आ छे

नामधातुओने लागेल 'य' प्रत्ययनो लोप विकल्पे थाय छे

गुरुरायते—गरुआइ, गरुआअइ (गुरुरिव आचरति–गुरुनी जेवुं आचरण करे छे)

दमदमायते—दमदमाइ दमदमाअइ (दम दम थाय छे)
लोहितायते— लोहिआए–इ, लोहिआअए–इ। (लाल थाय छे)
हसायते— हसाए–इ, हसाअए,–इ। (हसनी जेम आचरे छे)
तमायते— तमाए–इ, तमाअए–इ । (अंधारा जेवु छे)
अप्सरायते— अच्छराए,–इ, अच्छराअए–इ । (अप्सरानी जेम आचरे छे)

उन्मनायते— उम्मणाए–इ, उम्मणाअए,–इ।(उन्मना थाय छे)
कष्टायते— कट्ठाए,–इ, कट्ठाअए,–इ । (कष्टने माटे क्रमण करे छे)

धूमायते	धूमाए–इ, धूमाअए–इ।	(धूमने उद्धमे छे)
सुखायते	सुहाए–इ, सुहाअए,–इ।	(सुखने अनुभवे छे)
शब्दायते	सद्दाए, इ, सद्दाअए–इ।	(शब्द करे छे–बोलावे छे)

इत्यादि.

सक्षभेद

वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने (ह्यस्तन) भूतकाळमा धातुने 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु सक्षभेदी अंग

---

१ पालिमा सक्षभेदी अग बनाववा माटे 'य' 'इय' अने 'ईय' तथा क्याय 'इय्य' (प्रा० ईअ, इज्ज) प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे —

य—	पच्चते, पच्चति	(पच्यते)
	वुज्झते, वुज्झति	(बुध्यते)
	वुच्चते, वुच्चति	(उच्यते)
य अने इय—	तुस्सते, तुसियति	(तुष्यते)
	पुच्छते, पुच्छियति	(पृच्छयते)
	भञ्जियति	(भज्यते)
इय्य—	करिय्यति, करिय्यते	(क्रियते)
ईय—	महीयति	(मह्यते)
	मथीयति	(मथ्यते)
	करीयति	(क्रियते)
	कय्यति	
	करियति	

—जुओ पालिप्र० पृ० २३४–२३७

बने छे अने ते अगने प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अप-भ्रंश भाषाना ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेना रूपाख्यानो थाय छे.

पैशाचीनी विशेषता

पैशाचीमा धातुनु सक्षमेनी अग बनाववु होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला धातुने 'ईअ' 'इज्ज' ने बदले 'इय्य' प्रत्यय लगाडवो जोईए. जेमके,

स०	प्रा०	शौ० मा०	पै०
गीयते	गिज्जए	गिज्जदे	गिय्यते
दीयते	दिज्जए	दिज्जदे	दिय्यते
रम्यते	रमिज्जए	रमिज्जदे	रमिय्यते
पठ्यते	पढिज्जए	पढिज्जदे	पढिय्यते

कृ

'कृ' धातुनु सक्षमेदी अग बनाववु होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेला एने ('कृ' धातुने) ज 'इय्य' ने बदले 'ईर' प्रत्यय लगाडवो जोईए

स० क्रियते प्रा० करिज्जए शौ० मा० करिज्जदे[1] पै० कीरते
करीअए करीअदे

अपभ्रशनी विशेषता

सस्कृतमा थता प्रथम पुरुषना 'क्रिये' रूपने बदले अपभ्रशमा 'कीसु' रूप पण वपराय छे अने पक्षे यथाप्राप्त

---

१ करिज्जदे, करीअदे—जुओ पृ० २६ ८–७

साधारण सह्यभेदी अंगो

धातु	सह्यभेदी अंग	धातु	सह्यभेदी अंग
भण्—	भणीअ, भणिज्ज ।	पा—	पाईअ, पाइज्ज ।
हस्—	हसीअ, हसिज्ज ।	दा—	दाईअ, दाइज्ज ।
कथ्—क्ह्—	कहीअ, कहिज्ज ।	ला—	लाईअ, लाइज्ज ।
पत्—पड्—	पडीअ, पडिज्ज ।	ध्या—झा—	झाईअ, झाइज्ज ।
कथ्—बोल्ल—	बोल्लीअ, बोल्लिज्ज ।	हो—	होईअ, होइज्ज ।
		सू—	सूईअ, सूइज्ज ।

इत्यादि ।

ए रीते धातुमात्रना सह्यभेदी अंगो बनावी लेवानां छे. आ अंगोना रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया, कर्तरिरूपाधिकारमा जणावेल प्रक्रिया जेवी छे. जेमके—

वर्तमानकाल

(भण्यते ग्रन्थः)

३ पु०—(गथो) भणीअइ,—एइ, अए, एए, एज्ज, एज्जा
भणिज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए, ज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

(भण्यन्ते ग्रन्था.)

(गथा) भणीअंति, ते, एंति, एते, भणीअइरे, एइरे
भणिज्जंति, ते, ज्जेंति, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे,
भणीएज्ज, एज्जा, भणिज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

इत्यादि ।

(कथ्यसे त्वम्)

२ पु०—(तुम) बोल्लीअसि, एसि, असे, एसे,
बोल्लिज्जसि, ज्जेसि, ज्जसे, ज्जेसे

(कथ्यध्वे यूयम्)

(तुम्हे) बोलीअह, एह, बोलीएइत्था, अइत्था।

(त्वया अहं सूये)	त्वया वयं सूमहे
१ पु०–(अहं) सूईआमि, एमि, अमि,	(अम्हे) सूईआमो, मु, म,
सूइज्जामि, ज्जेमि, ज्जमि	सूईइमो, मु, म,
सूईएज्ज, एज्जा	सूईएमो, मु, म,
सूइज्जेज्ज, ज्जेज्ज।	सूईअमो, मु, म,
	सूइज्जामो, मु, म,
	सूइज्जिमो, मु, म,
	सूइज्जेमो, मु, म,
	सूइज्जमो, मु, म,
	सूईएज्ज, ज्जा,
	सूइज्जेज्ज, ज्जा।

विध्यर्थ

भणीअउ, एउ	भणीअतु, एतु।
भणिज्जउ, ज्जेउ	भणिज्जतु, ज्जेतु।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा, ज्जइ।
भणीएज्जइ	
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा, ज्जइ।
भणिज्जेज्जइ	

आज्ञार्थ

भणीअउ, एउ	भणीअतु, एतु।
भणिज्जउ, जेउ	भणिज्जतु, ज्जेतु।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा।
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा।

भूत–(ह्यस्तनभूत)

भणीअसी, ही, हीअ ।

भणिज्जसी, ही, हीअ ।

१ जे काळमा सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय धातुने नथी लागता ते काळमा तेना सह्यभेदी रूपो कर्तरिरूपो जेवा समजवाना छे, जेमके–

(अद्यतन) भूतकाळ–भण–भणीअ ।

भविष्यत्काळ–भण–भणिहिइ, भणिहिए, इत्यादि ।

क्रियातिपत्ति–भण–भणेज्ज, ज्जा, भणंतो, भणमाणो, इत्यादि ।

प्रेरक सह्यभेद

१ धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी रूप करवुं होय त्यारे धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडी, ते तैयार थएल अंगने सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडी प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी अग बनाववानुं छे.

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय लगाडया विना मात्र उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ करी अने सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडीने पण प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी अग तैयार थाय छे.

(आ सिवाय त्रीजी रीते प्रेरक सह्यभेदी अग बनी शकतुं नथी)

ए रीते तैयार थएल प्रेरक सह्यभेदी अगना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया कर्तरि रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी छे.

प्रे० सह्य० प्रे०स०अग--

कर + आवि--करावि + ईअ-- करावीअ-- करावीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर-- कार + ईअ-- कारीअ-- कारीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर + आवि--करावि + इज्ज--कराविज्ज--कराविज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर-- कार + इज्ज-- कारिज्ज-- कारिज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

हस + आवि--हसावि + ईअ-- हसावीअ-- हसावीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

हस + हास + ईअ-- हासीअ-- हासीआमि, आमि, एमि इत्यादि.

हस + हसावि + इज्ज--हसाविज्ज--हसाविज्जित्था,-विज्जेह, ज्जह, इत्यादि.

हस + हास + इज्ज--हासिज्ज--हासिज्जति, न्ते, ज्जइरे, इत्यादि.

ए रीते धातु मात्रना प्रेरक सह्यभेदी अंगो तैयार करी सर्व काळना रूपाख्यानो समजी लेवाना छे.

ज्या प्रेरक अंगने 'ईअ' अने 'इज्ज'प्रत्यय नथी लागता त्या प्रेरक अगथी सीधा पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी कर्त्तरिरूपाख्यानोनी पेठे प्रेरक सह्यभेदी रूपाख्यानो समजवाना छे.

जेमके--भविष्यत्काळ

प्रे०

कर + आवि--करावि--कराविहि-इ, ए, सि, से, -मि, विहामि, विस्सामि, विस्स

कर– कार –कारेहि-इ, ए, -सि, -से, -मिं,
रेहामि, रेस्सामि, रेस्सं

हस + आवि– हसावि–हसाविहि-न्ति, -न्ते, -इरे-त्था, ह,
विस्सामो, विहामो, विस्सामु, विहामु,
विस्साम, विहाम, विहिमो, विहिमु,
विहिम, विहिस्सा, विहित्था

हस– हास –हासेहि-इ, ए, सि, से, मि,
सेहामि, सेस्सामि, सेस्सं। इत्यादि.

क्रियातिपत्ति

करावेज्ज, ज्जा, करावंतो, करावमाणो।
कारिज्ज, कारिज्जा, कारंतो, कारमाणो। इत्यादि.

अनियमित सह्यभेदी अंगो

दृश– [1]दीस– दीसइ, दीसिज्जइ, दीसउ, दीससी, ही, हीअ।
वच– [1]वुच्च– वुच्चइ, वुच्चिज्जइ, वुच्चउ, वुच्चसी, ही, हीअ।
सह्य० प्रे० प्रे० भ०

चि– चिव्व– चिव्वइ, चिव्विहिइ, चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ, इत्यादि.
चि– चिम्म–चिम्मइ, चिम्मिहिइ, चिम्माविइ, चिम्माविहिइ, इत्यादि.
हन्– हम्म– हम्मइ, हम्मिहिइ, हम्माविइ, हम्माविहिइ, इत्यादि.
खन्– खम्म– खम्मइ, खम्मिहिइ, खम्माविइ, खम्माविहिइ, इत्यादि.
दुह्– दुब्भ–दुब्भइ, दुब्भिहिइ, दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ, इत्यादि.

---

१ वर्तमानमां, विध्यर्थमां, आशीर्थमां अने ह्यस्तनभूतमां ज आ बे आदेशो वपराय छे.

२ आ बधा आदेशो वैकल्पिक छे अने मात्र सह्यभेदनी ज गमे ते जातनी रचनामां वपराय छे.

लिह्- लिब्भ-लिब्भइ, लिब्भिहिइ, लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ, इत्यादि.

वह्- वुब्भ-वुब्भइ, वुब्भिहिइ, वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ, इत्यादि.

रुध्- रुब्भ-रुब्भइ, रुब्भिहिइ, रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ, इत्यादि.

दह्- डज्झ-डज्झइ, डज्झिहिइ, डज्झाविइ, डज्झाविहिइ, इत्यादि.

बन्ध्-बज्झ-बज्झइ, बज्झिहिइ, बज्झाविइ, बज्झाविहिइ, इत्यादि.

स+रुध् सरुज्झ-सरुज्झइ, सरुज्झिहिइ, सरुज्झाविइ, सरुज्झाविहिइ, इत्यादि

अणु+रुध् अणुरुज्झ-अणुरुज्झइ, अणुरुज्झिहिइ, अणुरुज्झाविइ, अणुरुज्झाविहिइ, इत्यादि.

उप+रुध्-उवरुज्झ-उवरुज्झइ, उवरुज्झिहिइ, उवरुज्झाविइ, उवरुज्झाविहिइ, इत्यादि

गम्- गम्म-गम्मइ, गम्मिहिइ, गम्माविइ, गम्माविहिइ, इत्यादि,

हस्- हस्स-हस्सइ, हस्सिहिइ, हस्साविइ, हस्साविहिइ, इत्यादि.

भण्-भण्ण-भण्णइ, भण्णिहिइ, भण्णाविइ, भण्णाविहिइ, इत्यादि

छुप्-छुप्प-छुप्पइ, छुप्पिहिइ, छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ, इत्यादि.

रुद्-रुव्व-रुव्वइ, रुव्विहिइ, रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ, इत्यादि,

लभ्-लब्भ-लब्भइ, लब्भिहिइ, लब्भाविइ, लब्भाविहिइ, इत्यादि

कथ्-कत्थ-कत्थइ, कत्थिहिइ, कत्थाविइ, कत्थाविहिइ, इत्यादि

भुज-भुज्ज-भुज्जइ, भुज्जिहिइ, भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ, इत्यादि.

हृ- हीर-हीरइ, हीरिहिइ, हीराविइ, हीराविहिइ, इत्यादि.

तृ- तीर-तीरइ, तीरिहिइ, तीराविइ, तीराविहिइ, इत्यादि.

कृ- कीर-कीरइ, कीरिहिइ, कीराविइ, कीराविहिइ, इत्यादि.

[प्राकृतमा 'कृ' ना सक्षभेदी अंगो वे थाय छे-कृ= 'कीर' अने 'करीअ' 'करिज्ज,' त्यारे पैशाचीमा तो 'कृ'नुं 'कीर' अग ज वपराय छे कीरते, कीरति]

जृ–जीर–जीरइ, जीरेहिइ, जीराविइ, जीराविहिइ, इत्यादि.
अर्ज विढप्प विढप्पइ,विढप्पेहिइ, विढप्पाविइ,विढप्पाविहिइ, इत्यादि.
ज्ञा–णव्व–णव्वइ, णव्वेहिइ, णव्वाविइ, णव्वाविहिइ, इत्यादि,
ज्ञा–णज्ज णज्जइ, णज्जेहिइ, णज्जाविइ, णज्जाविहिइ, इत्यादि.
वि+आ–व्या+हृ–वाहिप्प–वाहिप्पइ, वाहिप्पेहिइ, वाहिप्पाविइ, वाहिप्पाविहिइ, इत्यादि.
ग्रह–घेप्प–घेप्पइ, घेप्पेहिइ, घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ, इत्यादि,
स्पृश–छिप्प–छिप्पइ, छिप्पेहिइ, छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ, इत्यादि,
सिच् / लिह् } सिप्प सिप्पए, सिप्पेहिए, सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ, इत्यादि,
आरभ्–आढप्प–आढप्पेइ, आढप्पेहिए, आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ, इत्यादि.
जि–जिव्व–जिव्वए, जिव्वेहिए, जिव्वाविइ जिव्वाविहिइ इत्यादि.
श्रु–सुव्व–सुव्वए, सुव्वेहिए, सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ, इत्यादि
हु–हुव्व–हुव्वए, हुव्वेहिइ, हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ, इत्यादि.
स्तु–थुव्व–थुव्वइ, थुव्वेहिइ, थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ, इत्यादि.
लु–लुव्व–लुव्वइ, लुव्वेहिइ, लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ, इत्यादि.
पू–पुव्व–पुव्वइ, पुव्वेहिइ, पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ, इत्यादि.
धू–धुव्व–धुव्वए, धुव्वेहिइ, धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ, इत्यादि.

प्रकरण १३

कृदंत

[1]वर्तमानकृदंत

१ धातुना अंगने 'न्त' 'माण' अने '[3]ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु कर्तरि–वर्तमान–कृदंत बने छे.

२ धातुना प्रेरक अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक–कर्तरि–वर्तमान–कृदंत बने छे.

३ धातुना सह्यभेदी अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु सह्यभेदी–वर्तमान–कृदंत बने छे.

४ धातुना प्रेरक सह्यभेदी अगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक–सह्यभेदी–वर्तमान–कृदंत बने छे.

५ वर्तमान कृदतना 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय पर रहेता पूर्वना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे

कर्तरि वर्तमान कृदंत

पु०	न०	स्त्री०
भण्–भणतो, भणमाणो ।	भणत, भणमाण ।	भणती, भणता ।

(शौ० मा० भणदो)

---

१ कृदन्ना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया नामनी जेवी छे

२ पालिमा पण वर्तमान कृदत बनाववा माटे सर्वत्र 'अत' अने 'मान' प्रत्ययनो उपयोग थाय छे —

गच्छतो, गच्छमानो — स्त्री० गच्छती, गच्छती.

कपेतो, कुब्बतो, कुरुमानो, कपनो

खादतो, खादमानो

—पालिप्र० पृ० २४८–२४९.

३ आ प्रत्ययवाळु रूप स्त्रीलिंगमा ज वपराय छे.

[1]भणंतो, भणेमाणो । भणंतं, भणेमाण । भणंती, भणंता ।
भणमाणी, भणमाणा ।
भणेमाणी, भणेमाणा ।
भणई, भणेई ।

पा– पाअंतो, पाअमाणो । पाअत, पाअमाण । पाअती, पाअता ।
(शौ० मा० पाअंदो)
पाएंतो, पाएमाणो । पाएत, पाएमाण । पाएती, पाएता ।
पातो, पामाणो । पातं, पामाण । पाती, पाता ।
पाअमाणी, पाअमाणा ।
पाएमाणी, पाएमाणा ।
पामाणी, पामाणा ।
पाअई, पाएई ।
पाई ।

रु–रवतो, (शौ० मा० [2]रवदो) रवमाणो । रवतं, रवमाण । रवती, रवता ।
रवेंतो, रवेमाणो । रवेंत, रवेमाणं । रवेंती, रवेंता ।
रवमाणी, रवमाणा ।
रवेमाणी, रवेमाणा ।
रवई, रवेई ।

हृ०हरतो (शौ०मा०हरदो) हरमाणो । हरत, हरमाणं । हरती, हरता ।
हरेंतो हरेमाणो । हरेंत हरेमाग । हरेंती, हरेंता ।
हरमाणी, हरमाणा ।
हरेमाणी, हरमाणा ।
हरई, हरेई ।

---

१ भणंतो– जुओ दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर पृ० ४

२ रवतो + रवदो जुओ पृ० ३५ त=द,

वृषू–वरिसंतो, (शौ०मा०वरिसंदो) वरिसमाणो । वरिसंतं, वरिसमाणं।
वरिसंती,वरिसंता ।

वरिसेंतो,वरिसेमाणो । वरिसेंतं,वरिसेमाणं । वरिसेंती,वरिसेंता ।
वरिसमाणी,
वरिसमाणा ।
वरिसेमाणी,
वरिसेमाणा ।
वरिसई, वरिसेई ।

नी–नेंतो, [१](नेंदो शौ०मा०) नेमाणो। नेंतं,नेमाणं । नेंती, नेंता ।
नेमाणी, नेमाणा ।
नेई ।

तूस्–तूसंतो, (शौ०मा०तूसंदो) तूसमाणो । तूसंतं, तूसमाणं ।
तूसंती, तूसंता ।

तूसेंतो, तूसेमाणो । तूसेंत, तूसेमाणं । तूसेंती, तूसेंता ।
तूसमाणी, तूसमाणा ।
तूसेमाणी, तूसेमाणा ।
तूसई, तूसेई ।

दा–[२]देंतो (शौ०मा०देंदो) देमाणो । देंत, देमाणं । देंती, देंता ।
देमाणी, देमाणा ।
देई ।

---

१ वरिसतो + वरिसंदो – जूओ पृ० २७ स–श.
ए प्रमाणे तूसंदो,
सुरसूयंदो,
घोघविदो वगेरे।

२ जूओ पृ० २४६ नि० ६

३ दा+अ+अंतो=दा+ए–न्तो=देंतो ।
दा+अ+माणो=दा+ए+माणो=देमाणो ।

चल्–चलतो, चलमाणो । चलत, चलमाणं । चलती, चलता ।
(शौ० मा० चलदो)
चलेंतो, चलेमाणो । चलेंत, चलेमाण । चलेंती, चलेंता ।
चलमाणी, चलमाणा ।
चलेमाणी, चलेमाणा ।
चलई, चलेई ।

खिद्–खिज्जतो, खिज्जमाणो । खिज्जत, खिज्जमाण । खिज्जती, खिज्जंता ।
(शौ० मा० खिज्जदो)
खिज्जेंतो, खिज्जेमाणो । खिज्जेंतं, खिज्जेमाण । खिज्जेंती, खिज्जेंता ।
खिज्जमाणी, खिज्जमाणा ।
खिज्जेमाणी, खिज्जेमाणा ।
खिज्जई, खिज्जेई ।

त्वर { तुर–[१]तुरंतो, तुरमाणो । तुरंत, तुरमाण । तुरती, तुरता ।
तूर (शौ० मा० तुरदो)
तुरेंतो, तुरेमाणो । तुरेंत, तुरेमाण । तुरेंती, तुरेंता ।
तुरमाणी, तुरमाणा ।
तुरेमाणी, तुरेमाणा ।
तुरई, तुरेई ।

शुश्रूष्––सुस्सूसतो, (शौ० मा० सुस्सूसंदो) [२]सुस्सूसमाणो ।
लालप्य्–लालप्पतो, (शौ० मा० लालप्पंदो) लालप्पमाणो ।
(पै० [३]ळाळप्पतो)
गुरुकाय[४]–गरुअतो, (शौ० मा० गरुअंदो) गरुअमाणो ।

---

१ 'तुरतो' नी पेठे 'तूरतो' वगेरे रूपो पण करी लेवा.

२ सुस्सूसत, सुस्सूसंती वगेरे रूपो पण करी लेवा.

३ जुओ पृ० २६ ल–ळ.

४ 'गुरुकायवे' नामधातुनुं रूप छे, ए उपरथी 'गुरुकाय' ए वर्तमान कृदन्तनुं अंग बन्युं छे.

प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदंत

कर—कारतो[1], (शौ० मा० कारदो) कारमाणो ।
कारेंतो, कारेमाणो ।
करावतो, करावमाणो ।
करावेंतो, करावेमाणो ।
शुष—सोसविंतो, (शौ० मा० सोसविंदो) सोसतो, सोसेंतो,
सोसावतो, सोसावतो
सोसविमाणो, सोसमाणो, सोसेमाणो, सोसावमाणो,
सोसावेमाणो इत्यादि.

सहभेदी वर्तमान कृदत

भण—भणिज्जतो, भणिज्जमाणो, भणीअतो, भणीअमाणो । पु०—
(शौ० मा० भणिज्जदो) ([3]पै० भनिय्यतो)
भणिज्जत,—ज्जमाण, भणीअतं,—अमाण । न०—
भणिज्जती,—ता, ज्जई, भणीअती,—ता, —णीअई }
भणिज्जमाणी—णा, भणीअमाणी, भणीअमाणा । } स्त्री०—
पु०— न०— स्त्री०—
हन्—हम्मतो, हम्ममाणो, हम्मत, हम्ममाण, हम्मती, ता,
हम्ममाणी,णा,हम्मई ।

---

१ 'कार' अंग उपरथी कारती, कारेई, कारमाणी, कारत वगेरे रूपो उपजावी लेवा.

२ जुओ पृ० २९१ पदाचोनी विशेषता.

३ जुओ पृ० २३ प—न

प्रेरक सह्यभेदी कृदंत

(प्रेरक सह्यभेदी अंग बनाववानी प्रक्रिया 'प्रेरकसह्यभेद' ने जणावता जणावी छे.[1])

कर—करावि +ईअ—करावीअंतो,—अमाणो, इत्यादि ।

(शौ० मा० करावीअंदो) (पै० कराविय्यंतो)

कर—करावि + इज्ज— कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + ईअ— कारीअंतो, कारीअमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + इज्ज— कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो, इत्यादि ।

चि— चिव्व + आवि— चिव्वाविंतो, चिव्वाविज्जमाणो, इत्यादि ।

प्राकृत अने पैशाचीमा वर्तमान कृदंतना रूपो सरखा थाय छे, शौरसेनी अने मागधीमां जे विशेषता छे ते उदाहरणो साथे जणावी छे, अपभ्रंशमां शौरसेनी अने प्राकृत प्रमाणे समजवानु छे.

शौरसेनी, मागधी के पैशाचीना उदाहरणो मात्र एक ज लिंगमा मूकेला छे पण अभ्यासिए एना त्रणे लिंगी रूपो पोतानी मेळे समजी लेवा.

पैशाचीना सह्यभेदी वर्तमान कृदंतनी विशेषता जणावेली छे.

(कोइ पण भाषानुं रूप करती वखते 'वर्ण-विकार' ना नियमो लक्ष्यमा राखवा)

भूतकृदंत

कर्तरि भूतकृदंत—सह्यभेदी भूतकृदंत

---

१ जुओ पृ० २९४ प्रेरकसह्यभेद.

१ धातुना अंगने 'अ' 'द्' अने 'त' लागवाथी तेनुं (बन्ने जातनुं) भूतकृदंत बने छे.

२ 'अ' 'द्' अने 'त' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' थाय छे. ('द्' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने 'त' पैशाचीमां वपराय छे.)

कर्तरि भू० कृ०—गम+अ=गमिओ गमिदो, गमितो (गतः)
चल+अ=चलिओ चलिदो, चलितो (चलितः) इत्यादि.

सकर्मभेदी भू० कृ०—कर+अ=करिओ करिदो, करितो कडो (कृतः कटः)
पढ+अ=पढिओ पढिदो, पढितो गथो (पठितो ग्रन्थः) इत्यादि.

हस+अ=हसिअ हसिदं, हसितं (हसितम्)
लस+अ=लसिअ लसिदं, लसितं (लसितम्)
तुर+अ=तुरिअं तुरिदं, तुरितं (त्वारितम्) इत्यादि.
सुस्सूस+अ=सुस्सूसिअं सुस्सूसिदं, सस्सूसितं (शुश्रूषितम्)
चंकम+अ=चंकमिअं चंकमिदं, चंकमितं (चङ्क्रमितम्)
झा+अ=झाय झाद, झात (ध्यातम्)

---

१ प्राकृतमां भूतकृदंतने माटे मात्र 'त (अ)' प्रत्यय वपराय छे, पालिमां ए 'त' उपरांत संस्कृतना 'क्तवतु' नी पेठे बीजो 'तवंतु' प्रत्यय पण वपराय छे.

त—हुतो (हुतः)
तवतु हुतवा (हुतवान्) स्त्री० हुतवती (हुतवती)

—भूतकृदंतने लगती पालिनी प्रक्रिया संस्कृतनी प्रक्रिया साथे मळती आवे छे—पालि प्र० पृ० २५१–२५३

लु +अ=लुअं लुदं, लुतं (लूनम्)
हू +अ=हूअं हूदं, हूतं (भूतम्)

प्रेरक भू० कृ०—

१ धातुने प्रेरणासूचक 'आवि' प्रत्यय लगाड्या पछी अथवा धातुना उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ कर्या पछी भूतकृदंतनो 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक भूतकृदंत बने छे.

कर– करावि+अ–कराविअं कराविदं, करावितं (कारितम्)
कारि+ अ–कारिअं कारिदं, कारितं

हस– हसावि+अ–हसाविअं हसाविदं, हसावितं (हासितम्)
हासि+ अ–हासिअ हासिद, हासितं इत्यादि

आर्ष ग्रंथोमां के अर्वाचीन प्राकृतमां केटलेक स्थळे संस्कृतना सिद्धरूपो उपरथी पण भूतकृदंतना रूपो बनाववामां आव्या छेः

गतम्– गयं ।
मतम्– मयं ।
कृतम्– [१]कडं ।
हृतम्– हडं ।
मृतम्– मडं ।
जितम्– जिअ ।
तप्तम्– तत्ते । वगेरे

भविष्यत्कृदंत—

धातुना अंगने '[२]स्संत' 'स्समाण' अने 'स्सई' प्रत्यय लगा-

१ जूओ पानुं ६६–त=ड.

२ स्स + अंत = स्संत । स्स + माण = स्समाण ।
स्स + ई = स्सई. जूओ पृ० २९९ वर्तमानकृदंत.

डवाथी तेनुं भविष्यत्कृदंत[1] बने छेः

करिष्यन्–करिस्सतो (शौ० मा० करिस्संदो) इत्यादि ।

करिष्यमाणः–करिस्समाणो इत्यादि ।

हेत्वर्थकृदंत

१ धातुना अंगने 'तुं' 'दुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं हेत्वर्थकृदंत[2] बने छे.

२ उपर जणावेला त्रणे प्रत्ययो ('तुं' 'दुं' अने 'त्तए') पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

('दुं' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने प्राकृत तथा पैशाचीमां 'तुं' वपराय छे.)

---

१ भविष्यत्कृदंतना पालिरूपो आ प्रमाणे छे.

–गमिस्सं (गमिष्यन्) स्त्री–गमिस्सती
गमिस्संती

करिस्सं (करिष्यन्)
चरिस्स (चरिष्यन्)

'गमिष्यन्' वगेरे सिद्धरूपोने छेडे रहेला 'न्' नो अनुस्वार करवाथी पालिना 'गमिस्स' वगेरे रूपो तैयार थयेला छे–पालिप्र० पृ० २४८–२४९

२ पालिभाषामां हेत्वर्थकृदंत करवाने माटे धातुने 'तुं' 'तवे' 'तायें' अने 'तुये' प्रत्ययो लगाडवामां आवे छे :

मंतुं । कातवे (कर्तुम्) नेतवे (नेतुम्)
दक्खिताये (द्रष्टुम्) गणेतुये (गणयितुम्) वगेरे.

–जुओ पालिप्र० पृ० २५७–२५८.

तुं—दु—

भण्—भण+तु—भणिउ भणेउ, भणिदु, भनितु (भणितुम्—भणवाने माटे)
हस—हस+तुं—हसिउं, हसेउ हसिदु, हसितु (हसितुम्—हसवाने माटे)
हो—होअ—तु—होइउ, होएउ होइदु, होइतु (भवितुम्—थवाने माटे)
भण् भणावि+तु भणाविउ भणाविदु, भनावितु (भणाववा माटे)
कर कराचि+तु—कराविउ कराविदु, करावितु (कराववा माटे)
कर कार+तु कारिउं, कारेउ कारिदु, कारिदुं (कराववा माटे)
हस् हास+तु हासिउ, हासेउ हासिदु, हासितु (हसाववा माटे)
शुश्रूष् सुस्सूस+तु—सुस्सूसिउ, सुस्सूसेउ सुस्सूसिदु, सुस्सूसितु
(शुश्रूषा करवा माटे)
चङ्क्रम्य चक्रम+तु—चकमिउ, चक्कमेउ चक्कमिदु, चकमितु
(चङ्क्रमण करवा माटे) इत्यादि.

अनियमित हेत्वर्थकृदंत

कृ + तु	—	का + उ	=	काउ			(कर्तुम्)
ग्रह् + तु	—	घेत् + तु	=	घेत्तुं			(ग्रहीतुम्)
त्वर् + तु	—	तुर् + इउ	=	तुरिउ			(त्वरितुम्)
		तुर् + एउ	=	तुरेउ			
दृश् + तु	—	दट्ठ् + उ	=	दट्ठुं			(द्रष्टुम्)
मुच् + तु	—	मोत् + तु	=	मोत्तु			(मोक्तुम्)
भुज् + तु	—	भोत् + तु	=	भोत्तु			(भोक्तुम्)
रुद् + तु	—	रोत् + तु	=	रोत्तु			(रोदितुम्)
वच् + तु	=	वोत् + तु	=	वोत्तु			(वक्तुम्)

१ प्रेरकहेत्वर्थकृदंतनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी ज छे.

[1]त्तए

[2]कर् — कर + त्तए = करेत्तए / करित्तए } (कर्तुम्)

सिज्झ् — सिज्झ + त्तए = सिज्झित्तए (सेद्धुम्)

उववज्ज् — उववज्ज + त्तए = उववज्जित्तए (उपपत्तुम्)

विहर् — विहर + त्तए = विहरित्तए (विहर्तुम्)

[3]पास् — पास + त्तए = पासित्तए (द्रष्टुम्)

गम् — गम + त्तए = गमित्तए (गन्तुम्)

[4]पव्वज् — पव्वज + त्तए = पव्वइत्तए (प्रव्रजितुम्)

आहर् — [5]आहार + त्तए = आहारित्तए (आहर्तुम्)

दल् — दल + इत्तए = [6]दलइत्तए (दातुम्)

[7]अच्चासाद्— अच्चासाद + त्तए = अच्चासादेत्तए (अत्याशातयितुम्)

---

१ विशेषे करीने आ प्रत्ययनो उपयोग आर्षग्रंथोमां थएलो छे वैदिक संस्कृतना अने पालिना तुमर्थक 'तवे' प्रत्ययनी साथे आ 'त्तए' प्रत्ययनी विशेष समानता छ (जूओ पाणिनि–३–४–९ वैदिक प्र० तथा पृ० ३०७ नी १ टिप्पणी.

२ "अंत करेत्तए" "सिज्झित्तए "देवत्ताए उववज्जित्तए" "भुंजमाणे विहरित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३११ स०

३ रूवाइं पासित्तए" देवलोगं गमित्तए '–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३१२ स०

४ "पव्वजाए पव्वइत्तए" "अप्पणा आहारित्तए" "–सुपयाण दलइत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७१ स०,

५ आर्षताने लीधे 'हर्' नो 'हार' थयो छे

६ आर्षताने लीधे अहीं 'इ' आगमरूपे थयो छे

७ "सयमेव अच्चासादेत्तए'–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७२ स०

[8]समभिलोत्— समभिगेक + त्तए = समभिलोएत्तए (समभिलो वितुम्)

अपभ्रंश

धातुना अगने ' एव ' ' अण ' ' अणह ' 'अणहि' 'एप्पि' ' एप्पिणु ' ' एवि ' अने ' एविणु ' प्रत्यय लगाडवाथी अपभ्रंशनु हेत्वर्थकृदत्त बने छे

एवं—

चय्	+	एव	=	चएव	(त्यक्तुम्)
दा	+	एव	=	देव	(दातुम्)

अण—

भुज्	+	अण	=	भुजण	(भोक्तुम्)
कर	+	अण	=	करण	(कर्तुम्)

अणह—

सेव्	+	अणह	=	सेवणह	(सेवितुम्)
भुज्	+	अणह	=	भुजणह	(भोक्तुम्)

अणहिं—

मुच्	+	अणहिं	=	मुचणहिं	(मोक्तुम्)
भुज्	+	अणहिं	=	भुजणहिं	(भोक्तुम्)

एप्पि—

कर्	+	एप्पि	=	करेप्पि	(कर्तुम्)
जि	+	एप्पि	=	जेप्पि	(जेतुम्)

---

८ " सपडिदिसिं समभिलोएत्तए "–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १६८ स०,

एप्पिणु—

कर्	+	एप्पिणु	=	करेप्पिणु	(कर्तुम्)
चय्	+	एप्पिणु	=	चएप्पिणु	(त्यक्तुम्)

एवि—

कर्	+	एवि	=	करेवि	(कर्तुम्)
पाल्	+	एवि	=	पालेवि	(पालयितुम्)

एविणु—

कर्	+	एविणु	=	करेविणु	(कर्तुम्)
ला	+	एविणु	=	लेविणु	(लातुम्)

केटलेक स्थळे संस्कृतना सिद्ध रूपो उपरथी पण हेत्वर्थकृदन्तना रूपोने बनावेला छेः

लब्धुम्	–	लद्धुं ।	
रोद्धुम्	–	रोद्धुं ।	
योद्धुम्	–	जोद्धुं ।	
कर्तुम्	–	[1]कट्टुं ।	वगेरे

संबंधकभूतकृदन्त—

१ धातुना अगने ' तु ' ' अ ' ' तूण ' ' तुआण ' ' इत्ता '

---

१ जुओ पानुं ३५ तं–इ नि० २१

२ 'इत्ता', 'इत्ताण', 'आय' अने 'आए' प्रत्ययनो उपयोग खास करीने आर्षप्राकृतमां थएलो छे. पालिमां आ अर्थमां 'त्वा' (क्याय 'इत्वा' (आर्षप्रा०–'इत्ता') 'त्वान' (क्याय 'इत्वान') (आर्षप्रा०–'इत्ताण') अने 'तून' (प्रा० 'तून' के 'ऊण') प्रत्ययनो उपयोग थाय छे—

त्वा–कत्वा, करित्वा (आर्षप्रा० करित्ता) (कृत्वा)

गत्वा (गत्वा)

'इत्ताण' 'आय' अने 'आए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं संबंधक भूतकृदंत बने छे.

शौरसेनी अने मागधीमां संबंधकभूतकृदंत करवा माटे धातुने 'इय' अने 'दूण' प्रत्यय लागे छे तथा प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययो पण 'द'कारादि करीने लगाडाय छे अने 'इत्ता'

हत्वा (हत्वा)
जहित्वा} (हित्वा)
जहत्वा} (हात्वा)
छिंदित्वा (आर्षप्रा० छिंदित्ता) (छित्त्वा)
सुणित्वा (,, सुणित्ता) (श्रुत्वा)
जिनित्वा (,, जिणित्ता) (जित्वा)
पापुणित्वा (आर्षप्रा० पापुणित्ता) (प्राप्य)

त्वान— कत्वान
गत्वान
हत्वान
जहित्वान (आर्षप्रा० जहित्ताण)

तून— कत्तून
गतून
हंतून

संस्कृतमां जेम उपसर्गवाळा धातुने माटे 'क्त्वा' ने बदले 'य' वपराय छे तेम पालिमां (पालिमां उपसर्ग होवानो कांई नियम नथी) पण बनेलुं छे उपनीय (नी + त्वा)
अभिवदिय (वन्द् + इत्वा)
अभिञ्ञाय (ज्ञा + त्वा)

आर्षप्राकृतमां पण 'आय' अने 'आए' छेडावाळां संबंधक भूतकृदंतो मळे छे ने आ पालि ना 'य' छेडावाळां रूपो साथे मळतां आवे छे —पालि प्रा० पृ० २५५–२५६

'इत्ताण' प्रत्ययो पण वपराय छे

पैशाचीमा ए अर्थमा 'तून' प्रत्यय वपराय छे.

अपभ्रंशमा ए अर्थमा 'इ' 'इउ' 'इवि' अने 'अवि' तथा 'एप्पि,' 'एप्पिणु,' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे.

२ अपभ्रंश सिवायना उपर जणावेला बीजा प्रत्ययो पर रहेता प्रयोगानुसारे पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे

३ केटलेक ठेकाणे प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययोना 'त' नो लोप पण थइ जाय छे (जूओ असयुक्त 'कादि' लोप पृ० १० नि० २)

४ उपर जणावेला प्रत्ययोमा जे प्रत्ययो 'ण' छेडावाळा छे तेने अते विकल्पे अनुस्वार थाय छे

अपवाद–शौरसेनी

शौरसेनीमा 'कृ' अने 'गम्' धातुनु संबधक भूतकृदत 'कडुअ' अने 'गडुअ' बने छे (कृ + अडुअ = कडुअ–कृत्वा (गम् + अडुअ = गडुअ–गत्वा)

अपवाद–पैशाची

'ष्ट्वा' छेडावाळा संस्कृत रूपोनु सबधक भूतकृदत करवा माटे पैशाचीमा ए 'ष्ट्वा' ने बदले 'ढून' अने 'त्थून' वापरवामा आवे छे

नढून, नत्थून (स० नष्ट्वा)

तढून, तत्थून (सं० तष्ट्वा) वगेरे

अपवाद—अपभ्रंश

मात्र एक 'गम्' धातुनु सबधक भूतकृदत करवा माटे अप-

अंशना उपर्युक्त प्रत्ययो लगाडवा उपरात 'प्पि' अने 'प्पिणु' प्रत्ययो पण लगाडवाना छे:

गम् + प्पि = गम्प्पि — गत्वा ।
गम् + प्पिणु = गम्प्पिणु — गत्वा ।

भाषावार उदाहरणो

प्राकृत

हस्– हस + तुं = हसिउं, हसेउं, (हसित्वा)
हो– होअ + तुं = होइउं, होएउं, (भूत्वा)
हस्– हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हसित्वा)
हो– होअ + अ = होइअ, होएअ, (भूत्वा)
हस्– हस + तूण = हसिऊण, हसिऊण, हसेऊण, हसेऊणं (हसित्वा)
हो– होअ + तूण = होइऊण, होइऊण, होएऊण, होएऊणं (भूत्वा)
हस्– हस + तुआण = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं (हसित्वा)
हो– होअ + तुआण = होइउआण, होइउआण, होएउआण, होएउआणं (भूत्वा)
भण्–भणावि + तुं = भणाविउं (भाणयित्वा)
,, + अ – भणाविअ
,, + तूण = भणाविऊण, भणाविऊणं
,, + तुआण = भणाविउआण, भणाविउआणं

---

१ आ प्रेरक धर्मबोधक भूतकृदंत छे अने एनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनो जेवी छे.

मण्–भाण + तु = भाणिउ, भाणेउ
" + अ = भाणिअ, भाणेअ
" + तूण= भाणिऊण, भाणिउण, भाणेऊण, भाणेउण
" + तुआण, = भाणिउआण, भाणिउआण, भाणेउआण, भाणेउआण

कर–कराबि+ तु = कराविउ (कारयित्वा)
" + अ = कराविअ
" + तूण= कराविऊण, कराविऊण
" + तुआण,=कराविउआण, कराविउआण
" कार + तु = कारिउं, कारेउ
" + अ = कारिअ, कारेअ
" +तूण = कारिऊण,कारिऊण, कारेउण, कारेऊण
" तुआण,कारिउआण कारिउआण,कारेउआण,कारेउआण

शुश्रूष्–सुस्सूस + तु = सुस्सूसिउ, सुस्सूसेउ
" + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ
" + तूण= सुस्सूसिऊण सुस्सूसिउण, सुस्सूसेउण, सुस्सूसेऊण
" +तुआण=सुस्सूसिउआण, सुस्सूसिउआण, सुस्सूसेउआण सुस्सूसेउआण

चङ्क्रम्य–चक्कम+ तु = चक्कमिउ, चक्कमेउ
" + अ = चक्कमिअ, चक्कमेअ
" + तूण = चक्कमिउण, चक्कमिऊण, चक्कमेउण, चक्कमेऊण
" +तुआण=चक्कमिउआण, चक्कमिउआण, चक्कमेउआण, चक्कमेउआण.

कर– इत्ता = करित्ता (कृत्वा)
कर– इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं
कह– इत्ता = कहित्ता, (कथयित्वा)
कह– इत्ताण = कहित्ताण, कहित्ताणं
गम– इत्ता = गमित्ता, (गत्वा)
गम– इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताण
गह+ आय = [1]गहाय (गृहीत्वा)
संपेह+आए = संपेहाए (संप्रेक्ष्य)
आया+आए = आयाए (आदाय)

शौरसेनी, मागधी—

हो + इय = हविय, होत्ता (भूत्वा)
" + दूण = होदूण "
पढ + इय = पढिय, पढित्ता (पठित्वा)
पढ + दूण = पढिदूण "
रम + इय = रमिय, रंता (रन्त्वा)
रम + दूण = रंदूण "

पैशाची—

गम् + तून = गंतून (गत्वा)
रम् + तून = हसितून (हसित्वा)
पढ + तून = पढितून (पठित्वा)
कथ + तून = कधितून (कथयित्वा)

---

१ भगवतीसूत्र० श० उ० १, उ० २—" रयणानि गहाय " " पडिग्गहिय गहाय "—पृ० १७०–१७१,

अपभ्रंश—

लह + इ = लहि (लब्ध्वा)
कर + इउ = करिउ (कृत्वा)
कर + इवि = करिवि („)
कर + अवि = करवि („)
कर + एप्पि = करेप्पि („)
कर + एप्पिणु= करेप्पिणु („)
कर + एविणु = करेविणु („)
कर + एवि = करेवि („)

अनियमित संबंधक भूतकृदंत (प्राकृत)

कृ + तु = काउ,
„ + तूण = काउण, काऊण,
„ + तुआण=काउआण, काउआण
ग्रह् + तु = घेत्तु,
„ + तूण = घेत्तूण, घेत्तूण,
„ + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआण
त्वर् + तु = तुर + उ = तुरिउ, तुरेउ,
„ + अ = „ + अ = तुरिअ, तुरेअ,
„ + उण = „ + ऊण = तुरिउण, तुरिऊण, तुरेउण, तुरेऊण
„ +उआण = „ +उआण= तुरिउआण, तुरिउआण, तुरेउ-आण, तुरेउआण

दृश् + तु = दट्ठ + उ = दट्ठु
„ + तूण = दट्ठ + ऊण = दट्ठूण, दट्ठूण

„ + तुआण = दठ्ठ + उआण=दठ्ठुआण, दठ्ठुआण.

भुंज् + तु = भोत् + तुं = भोत्तुं,

„ + तूण = „ + तूण = भोत्तूण, भोत्तूणं,

„ +तुआण= „ +तुआण= भोत्तुआण, भोत्तुआण.

मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तु

„ + तूण = „ + तूण = मोत्तूण, मोत्तूण

„ + तुआण= „ +तुआण= मोत्तुआण, मोत्तुआण.

रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं

„ + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूण

„ +तुआण= रोत् +तुआण= रोत्तुआण, रोत्तुआण.

वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं,

„ + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूण,

„ + तुआण= वोत् +तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआण.

वन्द् + तु = वंदितु, वदिंतु.

[संस्कृतना सिद्ध संबधक भूतकृदंतो पण थोडा फेरफार साथे प्राकृतमा वपराया छेः

आदाय--आयाय	वन्दित्वा--वंदित्ता.
गत्वा--गत्ता, गच्चा.	विप्रजहाय--विप्पजहाय.
ज्ञात्वा--नच्चा.	श्रुत्वा--सोच्चा.
नत्वा--नच्चा.	सुप्त्वा--सुत्ता.
बुद्ध्वा--बुज्झा.	संहृत्य--साहट्टु.
मुक्त्वा--मोच्चा.	हत्वा--हता
मत्वा--मत्ता, मच्चा.	

इत्यादि]

'विध्यर्थ-कृदंत—

विध्यर्थ कृदंतनी साधना विध्यर्थ कृदंतना संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी करवानी छे, तो पण तेने लगता केटलाक प्राकृत प्रत्ययो आ रीते छे:

१ धातुने 'तव्व,' (शौ० 'दव्व') 'अणिज्ज' अने 'अणीअ' 'प्रत्यय' लगाडवाथी तेनुं विध्यर्थ-कृदंत बने छे.

२ 'तव्व' अने 'दव्व' प्रत्यय पर रहेतां प्रायः पूर्वना 'अ' नो 'इ' तथा 'ए' थाय छे.

---

१ विध्यर्थ कृदंतो लक्षभेदी होय छे.

२ विध्यर्थ कृदंत माटे पालिमां 'तब्ब,' 'तय्य,' 'य, अने 'अनीय' प्रत्यय वपराय छे:—

तब्ब—	भवितब्ब	(भवितब्यम्)
	बुज्झितब्ब	(बोद्धव्यम्)
	सयितब्ब	(शयितव्यम्)
तय्य—	जातय्य	(ज्ञातव्यम्)
	पत्तय्य	(प्राप्तव्यम्)
	दट्ठय्य	(द्रष्टव्यम्)
य—	देय्य	(देयम्)
	मेय्य	(मेयम्)
	कच्चं	(कृत्यम्)
	भच्चो	(भृत्यः)
वृद्धिवाळो य	कारिय	(कार्यम्)
	हारिय	(हार्यम्)
अनीय—	भवनीयं	
	सयनीयं	
	पापणीयं	(प्रापणीयम्)

—पालिप्र० पृ० २५४

२ विध्यर्थ–कृदंतने लागेल संस्कृत ' य ' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां ' ज्ज ' पण लागे छे.

सिद्ध रूपो उपरथी बनतां विध्यर्थ–कृदंतो—

कार्यम् – कज्जं ।	वाच्यम् – वच्चं ।
कृत्यम् – किच्चं ।	वाक्यम् – वक्कं ।
ग्राह्यम् – गेज्झं ।	जन्यम् – जन्नं ।
गुह्यम् – गुज्झं ।	भृत्यः – भिच्चो ।
वर्ज्यम् – वज्जं ।	भार्या – भज्जा ।
वद्यम् – वज्जं ।	अर्यः – अज्जो ।
भव्यम् – भव्वं ।	आर्यम् – अज्जं ।
अवद्यम् – अवज्जं ।	पाच्यम् – पच्चं । इत्यादि ।

तव्य–हस–हसिअव्वं, हसेअव्वं, हसितव्वं, हसेतव्वं । हसाविअव्वं, हसावितव्वं ।

शौ० हसिदव्वं, हसेदव्वं, हसाविदव्वं ।

सुस्सूसितव्वं, सुस्सूसेतव्वं, सुस्सूसिअव्वं, सुस्सूसेअव्वं ।

चंकमितव्वं, चंकमेतव्वं, चंकमिअव्वं, चंकमेअव्वं ।

हो–होतव्वं, होअव्वं । चि–चिन्विअव्वं, चिव्वेअव्वं,

ज्ञा–नातव्वं, नायव्वं । चिन्वितव्वं, चिव्वेतव्वं ।

अणिज्ज } हसणिज्जं, हसणीअं, हसावणिज्जं, हसावणीअं,
अणीअ } करणिज्जं, करणीअं,

सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीअं,

चंकमणिज्जं, चंकमणीअं,

वच–वयणिज्जं, वयणीअं । इत्यादि ।

य–पेयम्–पेज्जं, पेअं । पेया–पेज्जा, पेआ ।

गेयम्–गेज्जं, गेअं । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्–तव्व–घेत्तव्व ।	रुद्–तव्व–रोत्तव्व ।
भुज्–तव्व–भोत्तव्व ।	कृ–तव्व–कातव्व
वच्–तव्व–वोत्तव्व ।	कादव्व
मुच्–तव्व–मोत्तव्व ।	त्वर–तव्व–तुरिअव्व, तुरेअव्व ।
दृश्–तव्व–दट्ठव्व ।	तुरितव्व, तुरेतव्व ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमा वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमां 'इएव्वउ,' एव्वउ ' अने ' एवा ' प्रत्यय वपराय छे

कर	+	इएव्वउ	करिएव्वउ	—	कर्तव्यम् ।
कर	+	एव्वउ	करेव्वउ		
कर	+	एवा	— करेवा		
मर	+	इएव्वउ	— मरिएव्वउ	—	मर्तव्यम् ।
मर	+	एव्वउ	मरेव्वउ		
मर	+	एवा	= मरेवा		
सह	+	इएव्वउ	सहिएव्वउ	—	सोढव्यम् ।
सह	+	एव्वउ	सहेव्वउ		
सह	+	एवा	= सहेवा		
सो	+	एवा	= सोएवा	—	स्वप्तव्यम् ।
जग्ग	+	एवा	= जग्गेवा	—	जागरितव्यम् ।

कर्तरिकृदंत[1]

धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृसूचक कृदंत बने छेः

हस–इर–हसिरो (हसनार), हसिरा, री (हसनारी), हसिरं (हसनारु)।

हसाव–इर–हसाविरो (हसावनार)–रा, री (हसावनारी), रं (हसावनारुं)।

त्वर–इर–तुरिरो (त्वरा करनार) इत्यादि.

कर्तृसूचक कृदंतनी साधना, कर्तृसूचक कृदंतना संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी पण थाय छेः

पाचक–पायगो, पायओ। नायकः–नायगो, नायओ। नेता–नेआ। कर्ता–कत्ता। वक्ता–वत्ता। भर्ता–भत्ता। कुम्भकार.–कुंभआरो। कर्मकर.–कम्मगरो। स्तनंधयः–थणधयो। परंतप–परंतवो। लेखकः–लेहओ इत्यादि।

कर्तरिकृदंत (अपभ्रंश)

प्राकृतमां वपराएला 'इर'ने बदले अपभ्रंशमां 'अणअ' प्रत्यय लगाडवाथी कर्तृसूचक कृदंत बने छेः

मार + अणअ = मारणअ = मारणउ – मारकः

बोल्ल + अणअ = बोल्लणअ = बोल्लणउ – वाचकः

---

१ कर्तरिकृदंतनुं रूप बनाववा माटे पालिमां प्राकृतना 'इर'ने बदले केटलाक खास धातुथी 'उ' प्रत्यय वपराय छे अने ए ज अर्थनुं भूतकाळनुं रूप साधवा माटे साधारण रीते 'तावी' प्रत्यय वपराय छेः–

उ – विदू (वेत्ता) स्त्री० विदुनी.

तावी– भुत्तावी (भुक्तवान्) स्त्री० भुत्ताविनी

–पालिप्र० पृ० २५०–२५१.

वज्ज + अणअ = वज्जणअ = वज्जणउ — वादक:
भस + अणअ = भसणअ = भसणउ — भषक:
जा + अणअ = जाणअ = जाणउ — ज्ञायक:

प्रकरण १४

तद्धित

१ 'तेनुं आ' ए अर्थमा नामने 'केर' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमा 'आर' प्रत्यय लागे छे.

अस्मद् + केर = अम्हकेर (अस्माकमिदम् अस्मदीयम्)
 अप० अम्हारु, महारु,
युष्मद् + केर = तुम्हकेर (युष्माकमिदम् युष्मदीयम्)
 अप० तुम्हारु, तुहारु,
पर + केर = परकेरं (परस्य इदम् परकीयम्)
राज + केर = रायकेरं (राज्ञः इदम् राजकीयम्)

२ 'तेमा थएल' ए अर्थमा नामने 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय लागे छे:

इल्ल—गाम + इल्ल = गामिल्लं (ग्रामे भवम्) स्त्री० गामिल्ली।

---

१ संस्कृतनी पेठे पालिमा आ अर्थमा 'ईय' प्रत्यय वपराय छे.
 मदनीय (मदनस्स स्थानम्)—
 पालिप्र० पृ० २६०

२ आ 'आर' प्रत्यय प्रायः 'युष्मद्' 'अस्मद्' 'त्वत्' अने 'मत्' शब्दोने लागे छे.

३ 'तन्निश्रित' अर्थमा पालिमा 'ल' प्रत्यय वपराय छे.
 दुट्ठ निश्रितम् = दुट्ठुल्ल
 वेदनिश्रितम् = वेदल्ल
 पालिप्र० पृ० २६०

पुर + इल्ल = [1]पुरिल्लं (पुरे भवम्) स्त्री० पुरिल्ली।
अधस् + इल्ल = हेट्ठिल्ल (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली।
उवरि + इल्ल = उवरिल्लं (उपरि भवम्)
उल्ल—आरप + उल्ल = अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्)
तरु + उल्ल = तरुल्लं (तरौ भवम्)
नगर + उल्ल = नयरुल्लं (नगरे भवम्)

इत्यादि।

३ 'तेनी जेवुं' ए अर्थमां नामने 'व्व' प्रत्यय लागे छेः
महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मधुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ 'पणुं' अर्थमां नामने 'इमा' 'त्त' अने 'त्तण' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमां 'प्पण' प्रत्यय पण लागे छेः

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)
पीण + त्तण = पीणत्तणं, पीण + त्त = पीणत्तं।
पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)
पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तणं, पुप्फ + त्त = पुप्फत्त।
अप० वड्ड + प्पण = वड्डप्पणु, वड्डत्तणु वगेरे (वृद्धत्वम्)
विहु + प्पण = विहुप्पणु, विहुत्तणु वगेरे (विभुत्वम्)

---

१ 'जात' अर्थमां पालिमां 'इम' प्रत्यय आवे छेः–
पश्चात् जातः = पच्छिमो। उपरि जातः = उपरिमो।
पुरः जातः = पुरिमो। अधो जातः = हेट्ठिमो।
मध्ये जातः = मज्झिमो–
पालिप्र० पृ० २५९–२६०.

२ आ अर्थमां पालिमां 'त्तन' (प्रा० त्तण) प्रत्यय आवे छे.
पुथुज्जनत्त माटे पुथुज्जनत्तनं (पृथग्जनत्वम्)
पालिप्र० पृ० २६१

५ 'वार' अर्थमा नामने 'हुत्त' (आर्ष-खुत्त) प्रत्यय लागे छे:

एक + हुत्त = एगहुत्तं (एककृत्व –एकवारम्)
द्वि + हुत्त = दुहुत्त (द्विवारम्)
त्रि + हुत्त = तिहुत्त (त्रिवारम्)
शत + हुत्त = सयहुत्तं (शतवारम्)
सहस्र + हुत्त = सहस्सहुत्त (सहस्रवारम्)

६ 'वाळु' अर्थमा आवता नामने लागता 'मतु' प्रत्ययने स्थाने 'आल' 'आलु' 'इत्त' 'इर' 'इल्ल' 'उल्ल' 'मण' 'मत' अने 'वत' प्रत्यय वपराय छे

आल– रस + आल = रसालो (रसवान्)
जटा + आल = जडालो (जटावान्)
ज्योत्स्ना+ आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)
शब्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)
फटा + आल = फडालो (फटावान्)

---

१ स० कृत्वस्–कुत्त–खुत्त–हुत्त–जुओ रत्नादिनो 'ह' पृ० १९.

२ 'वार' अर्थमा पालिमा 'क्खत्तुं' (स० कृत्वस्) प्रत्यय वपराय छे

एकक्खत्तु (एकवारम्)
द्विक्खत्तु (द्विवारम्)
तिक्खत्तु (त्रिवारम्)

पालिप्र० पृ० २११

आर्षप्राकृतमा आ अर्थमा 'खुत्त' (पालि–क्खत्तु) प्रत्यय पण आवे छे तिक्खुत्तो–

"तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"–
भग० श० पृ० २३५ प० २

"महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ"–
(मु० द्वि० भु० अ० ७ पृ० ४२५ प० २ स०)

"पत्तो अणतक्खुत्तो" जीवविचारनी छेली गाथा.

आलु–	इर्ष्या	+	आलु	=	ईसालू	(ईर्ष्यावान्)
	दया	+	आलु	=	दयालू	(दयावान्)
	नेह	+	आलु	=	नेहालू	(स्नेहवान्)
	लज्जा	+	आलु	=	लज्जालू	(लज्जावान्)
					स्त्री० लज्जालुआ	(लज्जावती)
इत्त–	काव्य	+	इत्त	=	कव्वइत्तो	(काव्यवान्)
	मान	+	इत्त	=	माणइत्तो	(मानवान्)
इर–	गर्व	+	इर	=	गव्विरो	(गर्ववान्)
	रेखा	+	इर	=	रेहिरो	(रेखावान्)
इल्ल–	शोभा	+	इल्ल	=	सोहिल्लो	(शोभावान्)
	छाया	+	इल्ल	=	छाइल्लो	(छायावान्)
	याम	+	इल्ल	=	जामइल्लो	(यामवान्)
उल्ल–	विचार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विचारवान्)
	विकार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विकारवान्)
	श्मश्रु	+	उल्ल	=	मंसुल्लो	(श्मश्रुमान्)
	दर्प	+	उल्ल	=	दप्पुल्लो	(दर्पवान्)
मण–	धन	+	मण	=	धणमणो	(धनवान्)
	शोभा	+	मण	=	सोहामणो	(शोभावान्)
	भी	+	मण	=	बीहामणो	(भीमान्)
मंत–	हनु	+	मंत	=	हणुमंतो	(हनुमान्)
	श्री	+	मंत	=	सिरिमंतो	(श्रीमान्)
	पुण्य	+	मंत	=	पुण्णमंतो	(पुण्यवान्)
वंत–	धन	+	वंत	=	धणवंतो	(धनवान्)
	भक्ति	+	वंत	=	भत्तिवंतो	(भक्तिमान्)

७ संस्कृतमा आवता 'तस्' प्रत्ययने स्थाने 'त्तो' 'दो' विकल्पे वपराय छे:

सर्व + तस् = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)
एक + तस् = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)
अन्य + तस् = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यतः)
किम् + तस् = कत्तो, कुदो, कुओ (कुतः)
यत् + तस् = जत्तो, जदो, जओ (यतः)
तत् + तस् = तत्तो, तदो, तओ (ततः)
इदम् + तस् = इत्तो, इदो, इओ (इतः)

८ संस्कृतमां वपराता 'त्रप्' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां 'हि', 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय वपराय छेः

यत् + त्र = जहि, जह, जत्थ (यत्र)
तत् + त्र = तहि, तह, तत्थ (तत्र)
किम् + त्र = कहि, कह, कत्थ (कुत्र)
अन्य + त्र = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

९ 'अङ्कोठ' शब्द सिवाय बीजा शब्दने लागता 'तैल' प्रत्ययने स्थाने 'एल्ल' प्रत्यय वपराय छेः

कडु + तैल = कडुएल्लं (कटुतैलम्)
[अङ्कोठ + तैल = अंकोल्लतेल्लं (अङ्कोठतैलम्)]

१० नामने स्वार्थमां 'अ,' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय विकल्पे लागे छेः

अ— चन्द्र + अ = चंदओ, चंदो (चन्द्रकः)
हृदय + अ = हिअयअं, हिअयं (हृदयकम्)
बहुक + अ = बहुअयं, बहुअं (बहुकम्)
पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवः)
पुरा + इल्ल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

पितृ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)
हस्त + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तः)

विशेषता

पैशाचीमां स्वार्थिक 'अ' ने बदले संस्कृतनी पेठे 'क' वपराय छे:

सं० वदनकम्– प्रा० वयणय– पै० वतनक।

"वतनके वतनकं समप्पेत्तून"

प्रा० व्या० पा० ४ सू० ३१४ पृ० ७०

अपभ्रंशमां स्वार्थमां 'अ,' 'अड,' 'उल्ल' 'अडअ', 'उल्लअ' अने 'उल्लडअ' प्रत्ययो[1] वपराय छे:

दिट्ठ + अ = दिट्ठउ (दृष्टकः)
दोस + अड = दोसडु (दोषकः)
कुटी + उल्ल = कुडुल्ली (कुटिका)
हिअय + अडअ = हिअडउ (हृदयकम्)
चूड + उल्लअ चूडुल्लओ (चूडकः)
बाहुबल + उल्लडअ=बाहुबलुल्लडउ (बाहुबलकः)

११ संस्कृतमां वपराता 'पणुं' अर्थवाळा (त्व, तल्) प्रत्ययो नामने लाग्या पछी तैयार थएल ए ज नामने स्वार्थमां एना ए ज प्रत्ययो फरीवार पण लागे छे.–

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = { मउअत्तता / मउअत्तया (मृदुकत्वता) }

---

१ प्राकृतरूपावतारमां 'अडड' 'डडअ' 'अडुल्ल' 'डुल्लअ' 'डडुल्ल' 'डुल्लडड' 'अडडुल्ल' 'अडुल्लडड' 'डअडुल्ल' 'डुल्लअडड' 'डडुल्लअ' 'डुल्लडडअ' आ रीते बार प्रत्ययो पण बतावेला छे. पृ० ९५-९६-सू० ५.

अनियमित तद्धितांत रूपो

एक + सि = एक्कसि
एक + सिअं = एक्कसिअं } (एकदा)
एक + इआ = एक्कइआ

भ्रू + मया = भुमया } (भ्रूः)
ममया

शनैः + इअ = सणिअ (शनैः)

उपरि + ल्ल = अवरिल्लो (उपरि)

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं
ज + एत्तिल = जेत्तिलं } (यावत्)
ज + एद्दह = जेद्दह

अप० जेवड्डु, जेत्तुलो

त + एत्तिअ = तेत्तिअं
त + एत्तिल = तेत्तिल } (तावत्)
त + एद्दह = तेद्दहं

अप० तेवड्डु, तेत्तुलो

एत + एत्तिअ = एत्तिअ } (एतावत्)
एत + एत्तिल = एत्तिल } (इयत्)
एत + एद्दह = एद्दहं

अप० एवड्डु, एत्तुलो

क + एत्तिअ = केत्तिअं
क + एत्तिल = केत्तिल } (कियत्)
क + एद्दह = केद्दहं

अप० केवड्डु, केत्तुलो

आस्तिक = अत्थिओ । आर्षम् = आरिस ।
कानीन = काणीणो । भैक्षम् = भिक्ख ।
मदीयम् = मईय । वाङ्मयम् = वम्मय ।
पीनता = पीणया(शौ० पीणदा) कौशेयम् = कोसेय ।
(पै० पीनता) पितामह = पिआमहो ।

यदा = जया । तदा = तया ।
कदा = कया । अन्यदा = अण्णया ।
सर्वदा = सव्वया । सर्वथा = स०व्हा ।

इत्यादि०

धातुपाठ (परिशिष्ट)

आठमा अध्यायना चोथा पादमा आचार्य हेमचन्द्र प्राकृत धातुओने आ रीते आपे छे

सूत्राक	अर्थनी दृष्टिए हेमचन्द्रे मूकेलु मूळ रूप	मूळ रूपना आदेशो
२	कथ् प्रा० कह्	वज्जर पज्जर उप्पाल पिसुण संघ बोल्ल चव जप णिव्वर (दुःखकथने)
३		

४	जुगुप्स् प्रा० जुउच्छ	झुण दुगुच्छ दुगुञ्छ
५	बुभुक्ष् प्रा० बुहुक्ख	णीरव
	वीज	वोज्ज
६	ध्या प्रा० झा	झा
	गै	गा
७	ज्ञा	जाण मुण
८	उत् + ध्मा	उद्धुमा
९	श्रत् + धा	सद्दह
१०	पा प्रा० पि	पिज्ज डल्ल पट्ट घोट्ट
११	उत् + वा प्रा० उव्वा	ओरुम्मा वसुआ
१२	नि + द्रा प्रा० निद्दा	ओहीर उङ्घ
१३	आ + घ्रा प्रा० अग्घा	आइग्घ
१४	स्ना प्रा० ण्हा	अब्भुत्त
१५	सम् + स्त्या	संखा
१६	स्था	ठा थक्क चिट्ठ तिष्ठ (प्रा० चिष्ठ) निरप्प

१७	उत् + स्था	उठ्ठ उक्कुक्कुर
१८	म्लै प्रा० मिला	वा पव्वाय
१९	निर् + मा	निम्माण निम्मव
२०	क्षि प्रा० झि	णिज्झर
२१	छादू प्रा० छाय	णुम नूम, णूम सन्नुम ढक ओम्वाल पव्वाल
२२	नि + वृ–निवार प्रा० निवार	णिहोड
	पात प्रा० पाड	"
२३	दू	दूम
२४	धवल	दुम, दूम
२५	तुल	ओहाम
२६	विरेच प्रा० विरेअ	ओलुंड उल्लंड पल्हत्थ
२७	ताड	आहोड विहोड
२८	मिश्र प्रा० मीस ' / मिस्स	वीसाल मेलव

२९	उत् + धूल प्रा० उद्धूल	गुंड
३०	भ्राम प्रा० भाम	तालिभट तमाड
३१	नाश प्रा० नाम	विउड नासव हारव विप्पगाम पणार
३२	दर्श प्रा० दरिस	दाव दंस दासव
३३	उत् + घाट प्रा० उग्घाड	उग्घ
३४	स्पृह	सिह
३५	सम् + भाव	आसंघ
३६	उत् + नम् प्रा० उन्नाम	उत्थंघ उल्लाल गुलुगुंछ उप्पेल
३७	[illegible] + स्थाप प्रा० पट्ठव	पट्ठ पेण्डव
३८	वि+ज्ञाप प्रा० विण्णव	वोक्क अवुक्क

३९	अर्प प्रा० अप्प	अल्लिन नच्चुप्प पणाम
४०	याप प्रा० जाव	जव
४१	प्लाव प्रा० पाव	ओम्वाल पव्वाल
४२	विक्रोश प्रा० विक्कोस	पक्खोड
४३	रोमन्थ	ओग्गाल वग्गोल
४४	क्रम प्रा० वाम	णिहुव
४५	प्र+वाश प्रा० पयास	णुव्व
४६	लम्प	विच्छोल
४७	आ+रोप प्रा० आरोव	वल
४८	दोल	रखोल
४९	रञ्ज	राव
५०	घट प्रा० घड	परिवाड
५१	वेष्ट प्रा० वेढ	परिआल
५२	क्री वि+क्री प्रा० विक्की	क्रिण विक्के विक्किण
५३	भी	भा बीह
५४	आ+ली	अल्ली

५५	नि+ली	णिलीअ णिलुक्क णिरिग्घ लुक्क लिक्क ल्हिक्क
५६	वि+ली	विरा
५७	रु प्रा० रव	रुञ्ज रुण्ट
५८	श्रु प्रा० सुण	हण
५९	धू प्रा० धुण	धुव
६०	भू	हो हुव (शौ० भू, भुव) हव भव)
६२	,,	णिव्वड (पृथग्भवने, स्पष्टभवने च)
६३	,,	हुप्प (प्रभवने)
६५	कृ प्रा० कर	कुण
६६	कृ	णिआर (काणेक्षित-करणे)
६७	कृ	णिट्ठुह (निष्टम्भे) सदाण (अवष्टम्भे)
६८	कृ	वावम्फ (श्रमकरणे)
६९	कृ	णिव्वोड (क्रोधपूर्वं ओष्ठमालिन्ये)
७०	कृ	पयल्ल (शैथिल्यकरणे,

		लम्बने च)
७१	क्षु ,,	णीलुछ (निष्पाते आच्छोटने च)
७२	क्षु ,,	कम्म (क्षुरकरणे)
७३	क्षु ,,	गुलल (चाटुकरणे)
७४	स्मर प्रा० सर	झर झूर भर भल लढ विम्हर सुमर पयर पम्हुह
७५	वि+स्मृ	पम्हुस विम्हर वीसर
७६	व्या+हृ प्रा० वाहर	कोक्क, कुक्क पोक्क
७७	प्र+सृ प्रा० पसर	पयल्ल उवेल्ल
७८	,,	महमह (गन्धप्रसरणे)
७९	नि + सृ प्रा० नीसर	णीहर नील धाड वरहाड

८०	जागृ प्रा० जागर	जग्ग
८१	व्या + पृ प्रा० वावर	आअड्ड
८२	सं + वृ प्रा० संवर	साहर सा[illegible]
८३	आ + दृ प्रा० आदर	सन्नाम
८४	प्र + हृ प्रा० पहर	सार
८५	अव + तॄ + ओअर	ओह ओरस
८६	शक	चय तर तीर पार
८७	फक्क	थक्क
८८	श्लाघ	सलह
८९	खच	वेअड
९०	पच	सोल्ल पउल्ल
९१	मुच	छड्ड अवहेड मेल्ल उस्सिक्क रेअव णिल्लुंछ धंसाड

९२	”	णिव्वल (दु खमोचने)
९३	वञ्च	वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ
९४	रच	उग्गह, अवह, विडविड्ड
९५	समा + रच	उवहत्थ, सारव, समार, केलाय
९६	सिच	सिंच, सिंप
९७	प्रच्छ	पुच्छ
९८	गर्ज	बुक्क
९९	”	ढिक्क (वृषगर्जने)
१००	राज	अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह
१०१	मस्ज	आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प

१०२	पुञ्ज	आरोल क्माल
१०३	लस्ज	जीह
१०४	तिज	ओमुक
१०५	मृज प्रा० मज्ज	उग्घुस लुंछ पुछ पुस फुस पुस लुह हुल रोसाण
१०६	भञ्ज	वेमय मुसुमूर मूर सूर सूड विर पविरञ्ज करञ्ज नीरंज
१०७	अनु + व्रज प्रा० अणुवच्च	पडिअग्ग
१०८	अर्ज	विढव
१०९	युज	जुंज जुज्ज जुप्प

११० भुज	भुंज जिम जेम कम्म अण्ह समाण चमढ चड्डु
१११ उप + भुज	कम्मव
११२ घट	गढ
११३ सम् + घट	सगल
११४ स्फुट	मुर (हासस्फुटिते)
११५ मण्ड	चिंच चिंचअ चिंचिल्ल रीड टिविडिक्क
११६ तुड	तोड तुट्ट खुट्ट खुड उक्खुड उल्लुक्क णिलुक्क लुक्क उल्लूर

११७	घूर्ण	घुल
		घोल
		घुम्म
		पहल्ल
११८	वि + वृत् प्रा० विवट्ट	ढंस
११९	क्वथ प्रा० कढ	अट्ट
१२०	ग्रन्थ	गण्ठ
१२१	मन्थ	घुसल
		विरोल
१२२	ह्लाद	अवअच्छ
१२३	नि + सद	णुमज्ज
१२४	छिद प्रा० छिंद	दुहाव
		णिच्छल्ल
		णिज्झोड
		णिव्वर
		णिल्लूर
		लूर
१२५	आ + छिद "	ओअंद
		उद्दाल
१२६	मृद	मल
		मढ
		परिहट्ट
		खड्ड
		चड्ड
		मड्ड
		पन्नाड

१२७	स्पन्द प्रा० फंद	चुलुचुल
१२८	निर् + पद प्रा० निप्पज्ज	निव्वल
१२९	विस + वद	विअट्ट विलोट्ट फस
१३०	शद	झड पक्खोड
१३१	आ + क्रन्द्	णीहर
१३२	खिद	जूर विसुर
१३३	रुध प्रा० रुंध	उत्थंघ
१३४	नि + पेध	हक्क
१३५	क्रुध प्रा० कुज्झ	जूर
१३६	जन	जा जम्म
१३७	तन	तड तड्ड तड्डव विरल्ल
१३८	तृप	थिप्प
१३९	उप + सृप	अल्लिअ
१४०	सं + तप	झंख
१४१	वि + आप	ओअग्ग
१४२	सम् + आप	समाण

१४३	क्षिप	गलत्थ अड्डक्ख सोल्ल पेल्ल णोल्ल छुह हुल परी घत्त
१४४	उत् + क्षिप	गुलगुञ्छ उत्थघ अल्लत्थ उब्भुत्त उस्सिक्क हक्खुव
१४५	आ + क्षिप	णीरव
१४६	स्वप	कमवस लिस लोट्ट
१४७	वेप	लोट्ट आयज्झ
१४८	वि + लप	झंख वडवड
१४९	लिप	लिंप
१५०	गुप	विर णड

१९१ कृप — अवहाव

१९२ प्र + दीप — तेअव, सदुम, संधुक्क, अब्भुत
प्रा० पलीव

१९३ लुभ — संभाव

१९४ क्षुभ — खउर, पड्डुह

१९५ आ + रभ — आरभ, आढव

१९६ उपा + लभ — झंख, पच्चार, वेलव

१९७ जृम्भ — जम्भा
विजृम्भ (वअम्भ)

१९८ नम — णिसुढ (भारपूर्वकनमने)

१९९ वि + श्रम प्रा० — णिव्वा
वीसाम

१६० आ + क्रम — ओहाव, उत्थार, छुन्द

१११ भ्रम	टिरिटिल्ल टुटुल्ल ढढल्ल चक्कम भम्मड भमड भमाड तलअट झट झप भुम गुम फुम फुस ढुम टुम परी पर
११२ गम्	अई अइच्छ अणुवज्ज अवज्जस उक्कुस अक्कुस पच्चड्ड पच्छन्द णिम्मह णी

		णीण णीलुक्क पढअ रंभ परिअल्ल वोल परिअल णिरिणास णिवह अवसेह अवहर
१६३	आ + गम्	अहिपच्चुअ
१६४	सम् + गम्	अब्भिड
१६५	अभ्या + गम्	उम्मत्थ
१६६	प्रत्या + गम्	पलोट्ट
१६७	शम	पडिसा परिसाम
१६८	रम	संखुड्ड खेड्ड उब्भाव किलिकिंच कोट्टुम मोट्टाय णीसर वेल्ल

१६९	पूर	अग्घाड, अग्घव, उद्धुमा, अंगुम, अहिरेम
१७०	त्वर	तुवर, जअड
१७३	क्षर	खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ
१७४	उत् + छल	उत्थल्ल
१७५	नि + गल	थिप्प, णिट्टुह
१७६	दल	विसट्ट
	वल	वंफ
१७७	भ्रंश	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल
१७८	नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, अवहर

१७९ अव + काश	ओवास
१८० सं + दिश	अप्पाह
१८१ दृश	निअच्छ
	पेच्छ
	अवयच्छ
	अवयज्झ
	वज्ज
	सव्वव
	देक्ख
	ओअक्ख
	अवक्ख
	अवअक्ख
	पुलोअ
	पुलअ
	निअ
	अवयास
	पास
१८२ स्पृश	फास
	फस
	फरिस
	छिव
	छिह
	आलुख
	आलिह
१८३ प्र + विश	रिअ
१८४ प्र + मृश	म्हुस
प्र + मुष	

१८५	पिष	णिवह णिरिणास णिरिणज्ज रोञ्च चड्ड
१८६	भष	भुक्क
१८७	कृष्	कड्ड साअड्ड अञ्च अणच्छ अयञ्छ आइञ्छ
१८८	"	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेष	ढुढुल्ल ढंढोल गमेस घत्त
१९०	श्लिष प्रा० सिलेस	सामग्ग अवयास परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह अहिलंघ अहिलंख वच्च वम्फ मह सिह विलुंप

१९३	प्रति + ईर्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
		गुज
१९६	हस	
१९७	त्रस	ल्हिस डिभ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पल्लोट्ट पल्हत्थ
		ह्लस
२०१	नि + श्वस	
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुम णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

२०३	भास	भिस
२०४	ग्रस	घिस
२०५	अव + गाह	ओवाह
२०६	आ + रुह	चड, वलग्ग
२०७	मुह	गुम्म, गुम्मड
२०८	दह	अहिऊल, आलुंख
२०९	ग्रह	वल, गेण्ह, हर, पग, निरुवार, अहिपच्चुअ
२१६	छिद	छिन्द
	भिद	भिन्द
२१७	युध	जुज्झ
	बुध	बुज्झ
	गृध	गिज्झ
	क्रुध	कुज्झ
	सिध	सिज्झ
	मुह	मुज्झ
२१८	रुध	रुन्ध, रुम्भ

२१९ सद — सट

पत — पड

२२० क्वथ — कड्ढ

वर्ध — वड्ढ

२२१ वेष्ट — वेढ

२२२ स + वेष्ट — स + वेल्ल

मागधीना धातु

२९७ प्र + ईक्ष = प्रेक्ष प्रा० पेक्ख मा० पेस्क

आ + चक्ष प्रा० आयक्ख मा० आचस्क

केटलाक अपभ्रंश धातुओ

हुच्च (पर्याप्तौ)

१९० भू — ब्रुव

१९१ ब्रू — वुञ

१९२ व्रज — प्रस्स

१९३ दृश — गृण्ह

१९४ ग्रह — छोल्ल

१९५ तक्ष

देश्य धातुओ

गू० खटकवु

खुडुक — ,, धडकवु

धुडुक — ,, झळकवु

झलक — ,, चापवु

चप

છપાય છે.

વૈદિક પાઠાવલી. (અનુવાદ સાથે) સં. ર. છો. પરીખ

પ્રાચીન ગૂજરાતી ગદ્ય સંદર્ભ   સં. મુનિ જિનવિજય

સમ્મતિતર્ક. ભા ૨.   સં પં સુખલાલજી તથા
પં બેચરદાસ

તૈયાર છે.

પુરાતત્ત્વ પુસ્તક. ૧ લું	૫-૧૨-૦
પુરાતત્ત્વ પુસ્તક ૨ જું	૫-૧૨-
પુરાતત્ત્વ. પુસ્તક. ૩ જું	૫-૧૨-૦

